Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

SRI AUROBINDO LIBRARY
PONDICHERRY, INDIA

Fumigated AUG 1993

But thought nor word can seize eternal truth

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

igitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgac

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

॥ श्रीः ॥

माहेश्वरीयतन्त्रम् ।

श्रीमत्पण्डितलक्ष्मीनारायणविरचित-
भाषाटीकासमेतम् ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बंबई.

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

॥ श्रीः ॥

माहेश्वरीयतन्त्रम् ।

श्रीमत्पण्डितलक्ष्मीनारायणविरचित-
भाषाटीकासमेतम् ।

तदेव
क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना
मुम्बय्यां
स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणालये
मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

संवत् १९६६, शके १८३१.

अस्य सर्वेऽधिकारा राजनियमतः प्रकाशकाधीनाः सन्ति ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

भूतेश्वराय नमः ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

श्रीः ।

अथ माहेश्वरीयतंत्रम् ।

भाषाटीकासहितम् ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ गंगाधरं श्रीगिरिजासमेतं ज्वालाप्रसादं च गुरुं प्रणम्य ॥ लक्ष्म्यादिशब्देन विराजमानो नारायणोऽर्थं कथयामि तन्त्रे ॥ १ ॥

श्रीगिरिजासहित शंकरको तथा श्रीगुरु ज्वालाप्रसादको प्रणाम करि मैं लक्ष्मीनारायण तंत्रार्थ कहता हूँ ॥ १ ॥

श्रीमत्त्र्यंबकपर्वते शिवगिरिः संन्यासिनामग्रणीर्नानातंत्रविधानसाधनयुतो ह्यासीत्सतां वल्लभः ॥ तंत्रानेकक्रियासु सिद्धिमविदन्गत्वानुतापं मुहुश्चक्रे शंकरसंनिधौ सुविनयं त्यक्त्वाशनं सर्वथा ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

श्रीमान् त्र्यंबकपर्वतपर संन्यासियोंमे श्रेष्ठ अनेक तंत्रविधान साधनयुक्त सज्जनोंका प्रिय शिवगिरि नाम योगी होता भया । अनेक तंत्रक्रियाओंमें सिद्धि न प्राप्त होकर पश्चात्तापको प्राप्तभया और भोजनादिक परित्यागकर श्रीत्र्यंबकेश्वरकी शरणमें जाके विनती करता भया ॥ २ ॥

तस्मै श्रीगिरिजापतिः कथितवान्स्वप्ने प्रयो-
गाञ्छुभान्येभ्यः सिद्धिमनुत्तमामनुभवन्ना-
तश्च सिद्धाग्रणीः ॥ सोऽस्माकंबहुसेवयाक
थितवान्प्रत्यक्षसिद्धिप्रदांस्तान्मंत्रान्प्रकटी-
करोमि सुधियामानंददानद्भुतान् ॥ ३ ॥

ऐसे उपवास करि पडेहुये योगीको देखकर स्वप्नमें उत्तम प्रयोगोंको शिवजी कहते भये । जिन प्रयोगोंको प्राप्त होकर योगी उत्तम सिद्धिको अनुभव कर सिद्धोंमें श्रेष्ठ भया । सोई योगी मेरी बहुतसी

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

सेवा देखकर प्रत्यक्ष सिद्धिदेनेवाले तंत्र कहते भये। सुबुद्धियोंको आनंद देनेवाला महान् अद्भुत उन्हीं तंत्रोंको मैं प्रगट करता हूँ ॥ ३ ॥

यथा शिवागिरिं देवः स्वप्ने कथितवान्हरः ।
तेनैव विधिना वक्ष्ये तंत्रान्मंत्रसमन्वितान्॥४॥

जैसे शिवागिरिसे स्वप्नमें देव महेश्वरने कहा, उसी विधिसे मंत्रयुक्त तंत्रोंको मैं कहता हूँ ॥ ४ ॥

स्वप्ने तु गिरिशं दृष्ट्वा त्र्यंबकं वृषवाहनम् ॥
पार्वत्या सहितं देवं योगी पप्रच्छ सादरम्॥५॥

पार्वतीसहित वृषारूढ त्रिनेत्रयुक्त शंकरको स्वप्नमें देखकर आदरसहित योगी प्रश्न करता भया ॥ ५ ॥

मुनिरुवाच ।

नमामि सच्चिदानंदं जगद्योनिमुमापतिम् ॥
छिंधि मे संशयं देव नान्यथा जीवितं मम॥६॥

मुनि बोले। सत, चित्, आनंदरूप जगत्के प्रगट करनेवाले पार्वतीपतिको नमस्कार करता हूँ। हे देव !

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

मेरा संशय दूर करो बिना संशय दूर किये मेरे प्राण पारित्याग हो जायँगे ॥ ६ ॥

भवता कथितास्तंत्रास्ते कथं सिद्धिवार्जिताः॥
मया परीक्षिताः सर्वे योगयुक्तेन चेतसा॥७॥

आपने डामरादि अनेक तंत्र जो कहे हैं वो सिद्धि-रहित क्यों भये। योगयुक्त चित्त होकर मैं संपूर्णकी परीक्षा करचुका हूं ॥ ७ ॥

ईश्वर उवाच ।

ये तंत्रा लोकविख्यातास्ते सर्वे कीलिता मया ।
तस्मात्सिद्धिविहीनास्ते याता निःसारतां भुवि८॥

ईश्वर बोले—ये डामरादि अनेक तंत्र लोकमें विख्यात हैं वो सब हमने कीलित कर दिये हैं इसी कारणसे सिद्धि करके हीन पृथ्वीमें निःसारताको प्राप्त भये हैं८॥

तस्मादुत्तिष्ठ भद्रं ते कथयामि सुसिद्धिदान् ।
तंत्रानकीलितान्वत्स यैस्त्वं सिद्धो भविष्यसि९॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

हे वत्स ! तेरा कल्याण हो उठ तेरेवास्ते कील रहित सुंदर सिद्धिदेनेवाले तंत्र कहता हूं जिन तंत्रोंसे तू सिद्ध हो जायगा ॥ ९ ॥

मारणं मोहनं स्तंभं विद्वेषोच्चाटनं वशम् ।
आकर्षणं यक्षिणी च रसायनकरं तथा॥१०॥

कौन तंत्र सो कहते हैं—मारण, मोहन, स्तंभन, विद्वे-षण, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण, यक्षिणीसाधन रसायनाक्रिया, ये नव प्रयोग हैं ॥ १० ॥

प्रयोगैर्नवभिर्युक्तं तंत्रं माहेश्वराभिधम् ।
इदं तेकथयिष्यामि लोकानां हितकाम्यया॥११॥

एसे नव प्रयोगों करके युक्त ये माहेश्वर नामक तंत्र लोकोंके हितकारक तेरेवास्ते मैं कहता हूं ॥ ११ ॥

इति श्रीमद्भवानीशंकरोपासकश्रीलक्ष्मीनारायणा-
नुवादिते माहेश्वरीयतंत्रे उपोद्घातवर्णनं
नाम प्रथमोऽङ्कः ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

ईश्वर उवाच ।

अथातः कथयिष्यामि प्रयोगं मारणाभिधम् ।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणुष्वावहितो मुने ॥ १ ॥

ईश्वर बोले—हे मुने ! अब तेरेवास्ते मनुष्योंको शीघ्र सिद्धिकरनेवाला मारण नाम प्रयोग कहता हूं सावधान होके सुन ॥ १ ॥

मारणं न वृथा कार्य्यं यस्य कस्य कदाचन ।
प्राणांतसंकटे जाते कर्तव्यं भूतिमिच्छता ॥ २ ॥

मारणप्रयोग आपको कल्याण चाहे तो वृथा जिस किसीको करना योग्य नहीं है । फिर कब करना कि, जब कोई प्राणांतकी तुल्य संटक प्राप्त होवे तब करना योग्य है ॥ २ ॥

ब्रह्मात्मानं तु विततं दृष्ट्वा विज्ञानचक्षुषा ।
सर्वत्र मारणं कार्य्यमन्यथा दोषभाग्भवेत् ३ ॥

अज्ञानियोंको मारणप्रयोग करना अति अयोग्य है ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

जब ज्ञानवान् पुरुष सर्वत्र ब्रह्मात्माही विस्तृत हो रहा है, ऐसा ज्ञाननेत्रोंसे देखता है तब कोई अत्यावश्यक कार्य्यार्थं किया तो योग्य है। अन्यथा ऐसा नहीं समझता उसको प्रयोग करनेसे महान् दोषकी प्राप्ति होवेगी ३

मूर्खेण तु कृते तंत्रे स्वस्मिन्नेव समापयेत् ।
तस्माद्रक्ष्यं सदात्मानं मारणं न क्वचिच्चरेत् ४॥

यदि मूर्खने अज्ञानसे मारण प्रयोग किया तो अपने ऊपरही पडता है। इसकारणसे अपने शरीरकी रक्षा चाहे तो मारणप्रयोग कभी न करे ॥ ४ ॥

कर्त्तव्यं मारणं चेत्स्यात्तदा कृत्यं समाचरेत् ।
शत्रुपादतलात्पांसुं गृह्णीयाद्भौमवासरे ॥ ५ ॥

कदाचित् करना होवे तो इस विधिसे करना कि, शत्रुने जहाँ पांव रक्खा हो उसके पांवकी धूलि मंगलवारको लावे ॥ ५ ॥

गोमूत्रेण च सिंचित्वा प्रतिमां कारयेद्द्विषः ।
निर्जने च नदीतीरेस्थापयेत्स्थंडिलोपरि॥६॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

फिर उसको गोमूत्रसे सींच करके शत्रुकी मूर्ति करे निर्जनवनमें नदीके तीर वेदी बनाकर उसके ऊपर मूर्तिको स्थापित करे अर्थात् सीधी सुला देवे ॥ ६ ॥

लोहशूलं च निखनेत्तद्वक्षासि सुदारुणम् ।
तद्वामे भैरवं कृष्णं बालिभिः प्रत्यहं यजेत्७॥

फिर अति दारुण लोहका त्रिशूल उसकी छातीमें गाड देवे और उसके बाईं तरफ वेदीपर कालभैरवको स्थापित करे, प्रतिदिन यथोक्तविधिसे बलिदान और पूजन करे ॥ ७ ॥

एकादशबटूंस्तत्र परमान्नेन भोजयेत् ।
अखंडदीपं तस्याग्रे कटुतैलेन ज्वालयेत्॥८॥

ग्यारह बालक ब्राह्मणोंके वहांपर श्रेष्ठ अन्न अर्थात् (क्षीरान्न) से कुमारोंको भोजन करावे भैरवके अग्रभागमें अखंड दीप सरसोंके तैलका जलावे ॥ ८ ॥

व्याघ्रचर्मासनं कृत्वा निवसेत्तस्य दक्षिणे ।
दक्षिणाभिमुखो रात्रौ जपेन्मंत्रमतंद्रितः ॥९॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

शत्रुकी प्रतिमाके दक्षिणभागमें व्याघ्रांबर आसन करके आप बैठे । दक्षिणमुख करिके रात्रिमें आलस रहित इस मंत्रका जप करे ॥ ९ ॥

ॐनमो भगवते महाकालभैरवाय कालाग्नि-तेजसे अमुकं मे शत्रुं मारय२पोथय२हुंफट्स्वाहा॥

इस मंत्रका जप करना ॥

अयुतं प्रजपेदेनं मंत्रं निशि समाहितः ।
एकोनत्रिंशद्दिवसैर्मारणं जायते ध्रुवम् ॥१०॥

प्रतिदिन रात्रिको सावधान होकर इस मंत्रका दश हजार जप करे ऐसी विधि रोज करनेसे २९ दिनमें मारण निश्चय सिद्ध होगा ॥ १० ॥

इत्येवं मारणं तंत्रं सद्यः सिद्धिकरं नृणाम् ।
कथितं शिवगिरे तुभ्यं मोहनं शृणवथोऽपरम् ११॥

इस प्रकारसे हे शिवगिरि ! तेरेवास्ते शीघ्र सिद्धि

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

देनेवाला मारणतंत्र कहा । इसके उपरान्त मोहन नाम प्रयोग श्रवण करो ॥ ११ ॥

इति श्रीमद्भवानीशंकरोपासकश्रीलक्ष्मीनारायणानुवादिते माहेश्वरीयतंत्रे मारणप्रयोगो नाम द्वितीयोऽङ्कः ॥ २ ॥

ईश्वर उवाच ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं मोहनाभिधम् ।
सद्यःसिद्धिकरं नृणां शृणु योगीन्द्र यत्नतः १॥

ईश्वर बोले—इसके आगे हे योगींद्र! शीघ्र मनुष्योंको सिद्धि देनेवाला मोहन नाम प्रयोग कहता हूं सावधान होके सुन ॥ १ ॥

पेषयेत्तुलसीबीजं सहदेव्या रसेन च ॥
रवौ यस्तिलकं कुर्यान्मोहयेत्सकलं जगत्॥२

रविवारको सहदेवीके रसमें तुलसीका बीज पीसकर तिलक करे तो देखनेवाले सब मोहित होयँ ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

हरितालं चाश्वगंधां पेषयेत्कदलीरसैः ।
गोरोचनेन संयुक्तं तिलकं लोकमोहनम् ॥३॥

पूर्वोक्त रविवारको हरताल, अश्वगंध, गोरोचन इन तीनको केलाके रसमें पीसकर तिलक करे तो सब लोक मोहित होयँ ॥ ३ ॥

शृंगीचंदनकुष्ठेन वचाधूपेन धूपयेत् ।
वस्त्राणि च मुखं चैव सर्वजंतून्विमोहयेत्॥४॥

काकडासिंगी मलयागिरिचंदन कूठ वच इन्होंकी धूपकारि वस्त्र और अपना मुख धूपित करे तो सर्व जीव मोहित होयँ ॥ ४ ॥

मनःशिला च कर्पूरं पेषयेत्कदलीरसैः ।
तिलकं मोहनं नृणां नान्यथाभम भाषितम्५॥

मैनशिल कपूर इनको केलेके रसमें पीसकर तिलक करे तो देखनेवाले सब मोहित होयँ ये सत्य है ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

सिंदूरं कुंकुमं चैव गोरोचनसमन्वितम् ।
धात्रीरसेन संपिष्टं तिलकं लोकमोहनम् ॥६॥

सिंदूर, केशर, गोरोचन इन्होंको आँवलेके रसमें पीसकर तिलक करे तो लोक मोहित होयँ ॥ ६ ॥

औदुंबरस्य पुष्पेण वर्त्तिं कृत्वा प्रदीपयेत् ।
नवनीतेन संयुक्तं कज्जलं लोकमोहनम् ॥७॥

गूलरके पुष्प पीसकर गायके माखनमें मिलाकर बत्ती करके जलाना और काजल पाडकर अंजन करे तो लोक मोहित होयँ ॥ ७ ॥

श्वेतार्कमूलमादाय श्वेतचंदनसंयुतम् ।
अनेन तिलकं भाले मोहनं जगतो भवेत् ॥८॥

श्वेतआककी जड और श्वेतचंदन इनको पीसकर तिलक करै तो जगत् मोहित होयँ ॥ ८ ॥

विजयावचमादाय श्वेतसर्षपसंयुतम् ।
उद्धर्तनेन देहस्य जगतो मोहनं भवेत् ॥ ९ ॥

भारंगी वच श्वेतसर्षप इन सबको पीसकर देहको उबटन करै तो सब मोहित होयँ ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

ॐरक्तचांमुडेसर्वजनान्मोहय२ममवश्यं कुरु२ स्वाहा ॥ सपादलक्षजपात्सिद्धिर्भवति ॥

इस मंत्रका सवालक्ष जप करनेसे सिद्ध होगा ॥

इति श्रीमद्भवानीशंकरोपासकश्रीलक्ष्मीनारायणानुवादिते माहेश्वरीयतंत्रे मोहनप्रयोगो नाम तृतीयोऽङ्कः ॥ ३ ॥

ईश्वर उवाच ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं स्तंभनाभिधम् ।
यस्य साधनमात्रेण सिद्धिः करतले भवेत् ॥ १ ॥

ईश्वर बोले—इसके आगे स्तंभनप्रयोग कहता हूं जिसके साधनमात्रसे सिद्धि हाथमें प्राप्त होती है ॥ १ ॥

कुमारीरसयुक्तेन तैलेनाभ्यंगमाचरेत् ।
अग्निना न दहेदंगमग्निस्तंभः प्रजायते ॥ २ ॥

घीगुवारके रस और तैलसे शरीरको अभ्यंग करदेनेसे (लगानेसे) अग्निस्तंभन होता है अर्थात् अग्निसे अंग नहीं जलेगा ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

कदलीरसमादाय कुमारीरसं लेपयेत् ।
अर्कदुग्धं तथा युक्तमग्निस्तंभः प्रजायते ॥३॥

कदलीके रसमें घीगुवारका रस और आकका दूध इन तीनोंको हाथमें लगावे तो अग्नि हाथमें लेनेसे हाथ नहीं जलेगा ॥ ३ ॥

कुमारीरसलेपेन किंचिद्वस्तु न दह्यते ।
अग्निस्तंभनयोगोऽयं नान्यथा मम भाषितम् ॥ ४ ॥

घीगुवारके रससे लेप करीहुई कागज़ वस्त्रादिक कोई भी वस्तु अंगारसे न जलेगी यह अग्निस्तंभका प्रयोग सत्य है ॥ ४ ॥

ॐनमोअग्निरूपायममशरीरेस्तंभनंकुरुरस्वाहा ॥

इसमंत्रका एक लंक्षजप करना फिर सिद्ध होजायगा ॥

नृकपाले मृदं क्षिप्त्वा श्वेतगुंजां च निर्वपेत् ।
गोदुग्धेन तु संसिच्य कुर्याद्धुञ्जलताशुभा ॥५॥

अथासनस्तंभन—मनुष्यकी खोपरीमें मृत्तिका भरकर सपेद गुंजाके बीज बोना और गायके दूधसे सींचना, तब बेल पैदा होगी ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

यस्यांगे तल्लता क्षिप्ता स्थानस्तंभः प्रजायते ।
यस्य नाम्ना च लवणं श्मशानाग्नौ जुहेत्तथा६॥

जब उस बेलीके पत्ते या बेल जिसके शरीरपर डाल देवे तो आसनस्तंभन होजाय तथा जिसके नामसे श्मशानाग्निमें मंत्र पढके लवणका होम करे तो आसनस्तंभ होजाय ॥ ६ ॥

ॐनमो दिगंबराय अमुकस्यासनं स्तंभय२फट् स्वाहा ॥ अस्य मंत्रस्य लक्षजपात्सिद्धिर्भवति॥

इस मंत्रका एकलक्ष जप करनेसे सिद्धि होयगी ॥

भृंगराजमपामार्गं सिद्धार्थं सहदेविका ।
कोलं वचा च श्वेतार्कः सत्त्वमेषां समाहरेत्॥७॥

अब बुद्धिस्तंभन भृंगराज अपामार्ग सर्षप सहदेवीका कंकोल वच श्वेतार्ककी जड इन्होंका सत्त्व निकालना॥७॥

लोहपात्रे विनिक्षिप्य त्रिदिनं मर्दयेत्सुधीः ।
ललाटे तिलकं कुर्यादृष्टबुद्धिः प्रणश्यति ॥ ८ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

और लोहेके पात्रमें डाल तीन दिनतक मंत्र पढ२ कर मर्दन करना फिर चौथे रोज जिस शत्रुके नामसे तिलक करे और शत्रुके सामने जाय तो देखतेही शत्रुके बुद्धिका नाश होजाय ॥ ८ ॥

उलूकस्य कपेर्वापि तांबूले यस्य दापयेत् ।
विष्ठां प्रयत्नतस्तस्य बुद्धिस्तंभः प्रजायते ॥९॥

उलूक व बंदरकी विष्ठा जिसको तांबूलमें खिलावे तो बुद्धिका स्तंभन होय ॥ ९ ॥

ॐनमो भगवते नृसिंहाय अमुकस्य बुद्धिस्तंभनंकुरु२ फट् स्वाहा॥सपादलक्षजपात्सिद्धिर्भवति॥

इस मंत्रका सवालक्ष जप करनेसे सिद्धि होगी ॥

पुष्यार्केऽह्नि समादाय अपामार्गस्य मूलकम् ।
घृष्ट्वा लिंपेच्छरीरे स्वे शस्त्रस्तंभःप्रजायते॥१०॥

अथ शस्त्रस्तंभन । पुष्यनक्षत्र रविवारको अपामार्गका मूल लाना और घिसकर अंगमें लेप करे तो शस्त्रस्तंभन होय ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

चितांगारेण विलिखेन्मंत्रं पात्रे च मृन्मये ।
रिपुनामयुतं तच्च जलकुंडे विनिक्षिपेत्॥११॥

अथ सेनास्तंभन । चिताके कोयलेसे मृत्तिकाके पात्रमें शत्रुका नाम मंत्रसहित लिखना और जलके कुंडमें डुबोना ॥ ११ ॥

शिलया स्तंभयेद्वारं सेनास्तंभः प्रजायते ।
उष्ट्रास्थिनिखनेद्दिक्षु पशुस्तंभःप्रजायते॥१२॥

ऊपरसे कुंडका द्वार शिलासे बंद करना तो सेना स्तंभन होय तथा ऊंटके हाड जिस पशुके स्थानके चारों तरफ गाड देवे तो पशुस्तंभन होय ॥ १२ ॥

ऋतुमत्या योनिवस्त्रे लिखेद्गोरोचनैर्नरम् ।
तन्नाम्ना प्रक्षिपेत्कुंभे नरस्तंभःप्रजायते॥१३॥

अथ मनुष्यस्तंभन । रजस्वला स्त्रीकी योनिके वस्त्रपर गोरोचनसे जिस मनुष्यका चित्र लिखे और उसके नामसे घडामें डाल बंद करदेवे तो मनुष्यका स्तंभन होजाय १३

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

इष्टकासंपुटं कृत्वा तस्मिन्मेघं समालिखेत् ।
श्मशानभस्मना स्थाप्य भूमौ स्तंभःप्रजायते १४

अथ मेघस्तंभन । दो ईटोंका संपुट बनाकर उसमें चिताकी भस्मसे मेघ लिख मंत्र पढ २ कर जमीनमें गाडदेवे तो मेघका स्तंभन होय अर्थात् वर्षना बंद होजाय ॥ १४ ॥

मधुना बृहतीमूलैरंजयेल्लोचनद्वयम् ।
निद्रास्तंभो भवेत्तस्य नान्यथाममभाषितम् १५

अथ निद्रास्तंभन । कंटकारीकी जड शहतमें घिसकर दोनों नेत्रोंमें अंजन करनेसे निद्रास्तंभन होय यह मेरा कहा सत्य है ॥ १५ ॥

भरण्यां क्षीरकाष्ठस्य कीलं पंचांगुलं खनेत् ।
नौकामध्ये तदा नौकास्तंभनं जायते ध्रुवम् १६॥

अथ नौकास्तंभन । भरणीनक्षत्रमें गूलरकी पांच अंगुलकी लकडीकी कील कर नौकाकी पेंदीमें गाड देवे त निश्चय नौकास्तंभन होय ॥ १६ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

पुष्यार्केण तु गृह्णीयात्कृष्णधत्तूरमूलकम् ।
कट्यां बद्ध्वा गर्भिणीनां गर्भस्तंभः प्रजायते १७

अथ गर्भस्तंभन । पुष्यार्कको काले धतूरेकी जड लाके काले धागेमें गर्भिणी स्त्रीके कमरमें बांधे तो गर्भस्तंभन होय ॥ १७ ॥

बिंबाकाष्ठस्य धूपेन योनिं धूपयते यदा ।
मुक्तगर्भा तदा नारी जायते नात्र संशयः॥ १८॥

बिंबाकाष्ठकी जड लेकर गर्भिणीकी योनिको धूप देनेसे स्तंभितगर्भ मुक्त होय इसमें संदेह नहीं है॥ १८॥

ॐनमो भगवते महानृसिंहाय सर्वस्तंभन-
कर्त्रे सर्वस्तंभनं कुरु२स्वाहा ॥ सपादल-
क्षजपात्सिद्धिर्भवति ॥

इस मंत्रका सवालक्ष जप करनेसे सिद्धि होगी ॥

इति श्रीमद्भवानीशंकरोपासकश्रीलक्ष्मीनारायणा-
नुवादिते माहेश्वरीयतंत्रे मोहनप्रयोगो
नाम चतुर्थोऽङ्कः ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

ईश्वर उवाच ।

अथातः शृणु योगींद्र प्रयोगं द्वेषणाभिधम् ।
अस्मिन्कृते महासिद्धिर्जायते द्वेषणात्मिका १

इश्वर बोले । इसके आगे हे योगींद्र ! द्वेषणनामक प्रयोग श्रवणकर; इस प्रयोगके करनेसे वैर करनेवाली महासिद्धि प्राप्त होती है ॥ १ ॥

मार्जारकमूषकयोर्विष्ठामादाय यत्नतः ।
विद्विषः पादतलतो मृदमादाय मिश्रयेत्॥२॥

बिलाव मूषककी विष्ठा लेकर इसमें जिसका वैर करना है उसके पांवकी धूलि लेकर मिलाना ॥ २ ॥

जपेन्मंत्रशतं कुर्यान्नरपुत्तलिकां शुभाम् ।
नीलवस्त्रेण संवेष्ट्य तद्गृहे निखनेद्यदि ॥ ३ ॥

सौवार मंत्रका जप करके उस मट्टीका पुतला बनाना और नीले वस्त्रसे लपेटकर उसके घरमें गाडना ॥ ३ ॥

विद्वेषो जायते शीघ्रं पितापुत्रावपि ध्रुवम् ।
चिताभस्मयुतं बभ्रुसर्पयोर्दंतचूर्णकम् ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

पिता पुत्र होंय तोभी निश्चय करके शीघ्र वैरभावको प्राप्त होंय अथवा चिताकी भस्मसहित नकुल सर्पके दाँतोंका चूर्ण करके मिलाना ॥ ४ ॥

पृथक्पुत्तलिकां कृत्वा तत्तन्नाम्नाभिमंत्रताम् ।
उद्याने निखनेद्भूमौ विद्वेषो जायते ध्रुवम्॥५॥

जिन्होंसे वैर करानेका है उनकी दो पुतली बनाना और अलग२नाममंत्रसे मंत्रितकर वनमें जाके पृथ्वीमें अलग २ गाड देवे तो निश्चय करिके वैरभावको प्राप्त होयँ ॥५॥

गजकेसरिणोर्दंतान्नवनीतेन पेषयेत् ।
यन्नाम्नाहूयते चाग्नौ तयोर्विद्वेषणं भवेत् ॥६॥

हाथी और सिंहके दांतोंका चूर्ण गायके मक्खनमें मिलाकर जिसके नामसे मंत्र पढकर अग्निमें होम करे तो उसके आपसमें वैर प्राप्त होजाय ॥ ६ ॥

ॐनमो नारदाय अनयोर्विद्वेषं कुरु२ऐं ह्रीं क्लीं फट् स्वाहा ॥ चतुर्लक्षजपात्सिद्धिर्भवति ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Ja

इस मंत्रका चारलक्ष जप करनेसे सिद्धिकी प्राप्ति होगी॥

इति श्रीमद्भवानीशंकरोपासकश्रीलक्ष्मीनारायणा-
नुवादिते माहेश्वरीयतंत्रे विद्वेषणप्रयोगो
नाम पञ्चमोऽङ्कः ॥ ५ ॥

ईश्वर उवाच ।

शृणु योगींद्र वक्ष्यामि उच्चाटनविधिं परम् ।
यस्य साधनमात्रेण भवेदुच्चाटनं नृणाम् ॥ १ ॥

ईश्वर बोले । हे योगींद्र ! श्रेष्ठ उच्चाटनविधि कहता हूं श्रवणकर जिसके साधन करनेसे मनुष्योंको उच्चाटन-सिद्धि होती है ॥ १ ॥

ब्रह्मदंडीचिताभस्मसिद्धार्थैः संप्रलेपयेत् ।
शिवलिंगं मंदवारे तद्गृहीत्वा गृहे क्षिपेत् ॥ २ ॥

ब्रह्मदंडी चिताकी भस्म सरसों ये तीनों मिलायके शनिवारको शिवजीके लिंगपर लेपन करे और मंत्र जपे फिर वो लेप निकालकर जिसके घरमे डाले ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

यस्य तस्योच्चाटनं स्यात्पशुपुत्रादिभिःसह ।
काकोलूकस्य पक्षाणि यस्यचुल्ल्यां खनेद्रवौ३
उसका पशु पुत्रादिकों सहित उच्चाटन होय और काक उलूकके पंख लेकर रविवारको जिसके चूल्हेमें गाड देवे तो

उच्चाटनं भवेत्तस्य नान्यथा मम भाषितम् ।
आर्द्रोदुंबरकाष्ठस्य कीलकं चतुरंगुलम् ॥४॥
उसका उच्चाटन होय सत्य है और गीली गूलरकी लकडीकी कील चार अंगुलकी रविवारके दिन ॥ ४ ॥

शयने यस्य निखनेत्तस्योच्चाटनकं ध्रुवम् ।
उलूकविष्ठामपि वा निखनेच्छयने तथा ॥५॥
जिसके पलंगपर गाड देवे तो उसका निश्चय उच्चाटन होय । अथवा उलूककी विष्ठा जिस पुरुषके सोनेके जगहमें गाड देवे तो उच्चाटन होय ॥ ५ ॥

नरास्थिकीलकं द्वारि निखनेच्चतुरंगुलम् ।
तत्र मूत्रं तु यः कुर्यात्तस्योच्चाटनकं भवेत्॥६॥
मनुष्यकी हड्डीकी चार अंगुलकी कील मूतने-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Ja

की जगहपर गाड देवे और उसपर जो कोई मूत्रकरे तो उसका उच्चाटन होय ॥ ६ ॥

ॐनमो भगवते महारुद्राय रौद्ररूपाय अमुकस्य सपरिवारस्योच्चाटनं कुरु २ फट् स्वाहा ॥

इस मंत्रका सवा लक्ष जप करनेसे सिद्धिकी प्राप्तिहोगी॥

इति श्रीमद्भवानीशंकरोपासकश्रीलक्ष्मीनारायणानुवादिते माहेश्वरीयतंत्रे उच्चाटनप्रयोगो नाम षष्ठोऽङ्कः ॥ ६ ॥

ईश्वर उवाच ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि वशीकरणमद्भुतम्
यत्प्रयोगाद्वशं यान्ति नरानार्यश्च सर्वशः ॥१॥

इसके आगे अद्भुत वशीकरण कहता हूं जिस प्रयोगसे सब पुरुष स्त्री वश्यताको प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

ब्रह्मदंडीवचाकुष्ठचूर्णं सूर्यस्य वासरे ।
तांबूलेन तु यं दद्यात्स वश्यो वर्तते सदा॥२॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

ब्रह्मदंडी वच कूठ इनका चूर्ण रविवारको तांबूलमें जिसको देवे वह सदा वशीभूत रहे ॥ २ ॥

सहदेवीं गृह्य पुष्यार्के छायाशुष्कांविधाय च ।
दद्याच्चूर्णं तु तांबूले सर्वलोकं वशं नयेत्॥३॥

पुष्यार्कमें सहदेवीको लाय छायामें सुखावे फिर उसका चूर्ण पानमें जिस २ को देवे वो सर्वलोक वश्यताको प्राप्त होयँ ॥ ३ ॥

देवदाल्या च सिद्धार्थैर्गुटिकां कारयेद्बुधः ।
मुखे निक्षिप्य भाषेत सर्वलोकान्वशं नयेत्॥४॥

देवदाली और सर्षप उनकी गोली बनावे वो गोली मुखमें रखकर जिससे संभाषण करे वह पुरुष वश्य होय ४॥

कुंकुमं तगरं कुष्ठं हारितालं मनः शिला ।
अनामिकाया रक्तेन तिलकं वश्यकारकम्५॥

केशर, तगर, कूठ, हरताल, मैनाशिल इन सबको अनामिका अंगुलीके रक्तसे मिलाके तिलक करे तो वो तिलक वश्यकारक होता है ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

ॐह्रीं नमो मोहिन्यै सर्वलोकान्मे वशं कुरुर हुँ फट्स्वाहा ॥ सपादलक्षजपात्सिद्धिर्भवति ॥
इस मंत्रका सवालक्ष जप करनेसे सिद्धि होगी ॥

अथ स्त्रीवश्यम् ।

करपादनखानां च भस्म तांबूलपत्रके ।
दातव्यं रविवारे च वशीकरणमद्भुतम् ॥ ६ ॥

अथ स्त्रीवश्यं । हाथ पाँवोंके नखोंकी भस्म रविवारको तांबूलपत्रमें खानेके वास्ते देवे तो स्त्री वश्य होय ६

भौमवारे लवंगंच लिंगाच्छिद्रे च निक्षिपेत्।बुधे निष्कास्य तांबूले दद्यात्सा वशगा भवेत् ॥७

मंगलवारको लिंगके छिद्रमें एक लवंग गाड रक्खे और बुधवारको निकालकर ताबूलमें जिस स्त्रीको खवावे वह वश्य होय ॥ ७ ॥

वामपादतलात्पांसुर्वनितायाः शनौ हरेत् ।
तस्यपुत्तलिकांकुर्यात्तस्याःकेशान्नियोजयेत् ८

स्त्रीके वामपादके नीचेके धूलि (मट्टी) लेकर शनिवारको पतली बनावे और उसकेही केश पुतलीके लगावे॥८॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

नीलवस्त्रैर्वेष्टयित्वा स्ववीर्यं तु भगे क्षिपेत् ।
सिंदूरेण समायुक्तां निखनेद्द्वारदेशके ॥ ९ ॥

फिर काले कपडेसे लपेटकर उसकी भगमें अपने वीर्यका निक्षेप करे और फिर सिन्दूर लगाकर उसके दरवाजेमें गाड देवे ॥ ९ ॥

उल्लंघनाद्वशं याति प्राणैरपि धनैरपि ।
कृतज्ञः स्ववशं कुर्यान्मोदते च चिरं भुवि १०

उसके उल्लंघन करनेसे प्राण धन सहित वह स्त्री वश्य होय । कृतज्ञ पुरुष इस भाँति वश करके बहुतकाल पृथ्वीपर आनंद भोग करे ॥ १० ॥

तालीसकुष्ठतगरैर्लिप्तां क्षौमीं सुवार्तिकाम् ।
सिद्धार्थतैले निक्षिप्य कज्जलं नरमस्तके ११॥

तालीस, कूठ, तगर इन्होंसे लेपी हुई रेशमी कपडेकी बत्ती बनाकर सरसोंके तेलसे आदमीकी खोपरीमें काजल ॥ ११ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Ja

पातयेदंजनात्तस्य सर्वदा भुवनत्रये ॥
दृष्टिगोचरमायातः सर्वो भवति दासवत्॥१२

पारे और उस काजलके अंजन करनेसे जो कोई दृष्टिके सामने आवे तो सब दासकी तुल्य वश्यताको प्राप्त हो ॥ १२ ॥

विप्राय वेदविदुषे दत्त्वा कर्षसुवर्णकम् ।
एतन्मंत्रंजपेद्यत्नाद्वश्यंसिद्धयतिनान्यथा ॥१३॥

वेदपठित शिवभक्त ब्राह्मणको सोला मासे सुवर्णका दान करे फिर इस मंत्रको यत्नसे जपे तो वशीकरण प्रयोग सिद्ध होगा अगर इस विधिसे नहीं करेगा तो वश्यसिद्धि नहीं होगी यह विधि सब प्रयोगोंमें जानना१६॥

ॐनमः कमाक्ष्यै देव्यै अमुकीं मे वशं कुरु२ फट् स्वाहा ॥ सपादलक्षजपात्सिद्धिर्भवति ॥

इस मंत्रका सवालक्ष जप करनेसे सिद्धि होगी ॥

अथ राजवश्यम् ।

विष्णुक्रांताबीजतैलं दीपे प्रज्वाल्य यत्नतः ।
दर्शे कार्तिकमासस्य सोमवारेऽर्द्धरात्रके १४॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

अथ राजवश्यम् । कार्तिक कृष्ण अमावास्याको सोमवार होय तब अर्द्धरात्रिके समय विष्णुक्रांताके बीजोंके तेलसे दीपक जलावे ॥ १४ ॥

कज्जलं पातयेद्धीमाञ्छुभ्रे हेमशरावके ।
तदंजनाच्चक्रवर्ती राजा वशमवाप्नुयात्॥ १५ ॥

सुन्दर सुवर्णके शरावमें काजल पाडे वह काजल अंजन करे तो चक्रवर्तीभी राजा वश्यताको प्राप्त होय ॥ १५ ॥ पुनः ॥

भौमवारे दर्शदिने कृत्वा नित्यक्रियाःशुचिः ।
वने गत्वा ह्यपामार्गवृक्षं पश्येदुदङ्मुखः १६

भौमवारको अमावास्या होय जब प्रातःकाल अपना नित्यकर्मकर पवित्र होके वनमें जाकर उत्तरमुख हुआ अपामार्गका वृक्ष देखे ॥ १६ ॥

तत्र विप्रं समाहूय कृत्वा पूजां यथाविधि ।
पलमेकं सुवर्णस्य दद्यात्तस्मै द्विजन्मने १७॥

वहांपर ब्राह्मणको बुलाकर यथाविधि पूजा करके

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

उस ब्राह्मणको ६४ चौसठ मासा सुवर्णका दान देवे १७॥

तस्य हस्तेन गृह्णीयादपामार्गस्य बीजकान् ।
मौनेन स्वगृहं गच्छेत्कृत्वाबीजांस्तुनिस्तुषान् १८

और उस ब्राह्मणकेही हाथसे अपामार्गका बीज निकलवाले और बीज लेकर मौन धारके अपने घरको आवे और बीजोंकी भूसी निकालकर सफा करे ॥ १८ ॥

गौरीशं हृदये ध्यात्वा राजानं खादयेच्च तान्।
येन केनाप्युपायेन यावज्जीवं भवेद्वशे ॥१९॥

फिर गौरीशंकरका हृदयमें ध्यान करके किसीभी उपायसे वो बीज राजाको खिलावे तो वो राजा जबतक जीवे उसके वश रहै ॥ १९ ॥

चक्रवर्ती वशं याति नान्यथा मम भाषितम्।
न नीचाय प्रदातव्यं प्रयोगमनुभूतिदम्॥२०॥

इससे चक्रवर्ती राजाभी वश होता है यह सत्य है इसलिये अनुभव कियाहुआ प्रयोग किसी नीचके वास्ते नहीं देना ॥ २० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

ॐ नमो भास्कराय जगदात्मने राजानं वशमानय कार्य्यं कुरु२ फट्स्वाहा॥सपादलक्षजपात्सिद्धिः॥

इस मंत्रकी सवा लक्ष जप करनेसे सिद्धि होगी ॥

इति श्रीमद्भवानीशंकरोपासकश्रीलक्ष्मीनारायणानुवादिते माहेश्वरीयतंत्रे वशीकरणप्रयोगो नाम सप्तमोऽङ्कः ॥ ७ ॥

ईश्वर उवाच ।

अथाकृष्टिं प्रवक्ष्यामि शृणुष्वैकमना मुने ।
यस्य प्रयोगात्कृष्यंते अपि दूरास्थिता नराः १॥

ईश्वर बोले। इसके आगे हे महामुने! एकमनसे श्रवणकर, आकर्षणप्रयोग कहता हूँ जिसके करनेसे बहुत दूरका भी मनुष्य आकर्षित होता है ॥ १ ॥

कृष्णधत्तूरपत्राणां रसैर्गोरोचनायुतैः ।
करवीरस्यलेखिन्या यंत्रं पंचदशं लिखेत्॥२॥

काले धतूरेके पत्रोंके रसमें गोरोचन मिलाकर कनेरकी लेखनीसे पंद्रहवां यंत्र लिखना ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

भूर्जपत्रेषु तन्नाम्ना तापयेत्खादिराग्निना ।
शतयोजनगो वापि शीघ्रमायाति नान्यथा ॥३॥

भोजपत्रमें फिर आकर्षण करना होय तब उसके नामसे खदिरकी लकडीको अग्निसे तपावे तो शतयोजनपरका मनुष्य भी आकर्षण होकर शीघ्र आवे ॥ ३ ॥

नृकपाले लिखेद्यंत्रं गोरोचनसकुंकुमैः । १८
खदिरांगारकैस्ताप्यं त्रिसंध्यं यस्य नामतः ॥४॥

मनुष्यकी खोपरीमें केशर गोरोचन मिलाकर पंद्रहवाँ यंत्र लिखना और उसके नामसे तीनोंकाल खैरकी अग्निसे तपावे ॥ ४ ॥

मंत्रं जपेत्सुसंसिद्धं कर्षयेदुर्वशीमपि ।
ब्रह्मदंडीं समादाय पुष्यार्केन तु चूर्णयेत् ॥५॥

और मंत्रका जप करे तो उर्वशीको भी आकर्षण करलेवे तथा ब्रह्मदंडी पुष्यार्कको लाकर चूर्ण करे ॥ ५ ॥

कामार्तां कामिनीं दृष्ट्वा उत्तमांगे विनिक्षिपेत् ।
पृष्ठतः सा समायाति नान्यथा मम भाषितम् ६॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

जिस स्त्रीमें कामना होरही हो उसके मस्तकपर चूर्ण डाले तो वो स्त्री पीछे२फिरने लगे मेरा प्रयोग सत्यहै ३।

ॐनमो वीरवेतालाय मंदराचलवासिने अ-
मुकम् आकर्षय २ ह्रीं क्लीं फट् स्वाहा ॥
लक्षत्रयजपात्सिद्धिर्भवति ॥

इस मंत्रका तीन लक्ष जप करनेसे
सिद्धिकी प्राप्ति होती है ॥

इति श्रीमद्भवानीशंकरोपासकश्रीलक्ष्मीनारायणा-
नुवादिते माहेश्वरीयतंत्रे आकर्षणप्रयोगो
नाम अष्टमोऽङ्कः ॥ ८ ॥

ईश्वर उवाच ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि यक्षिणीनां सुसाधनम् ।
यस्य सिद्धौ मनुष्याणां सर्वे सिद्ध्यंतिहृच्छयाः १

ईश्वर बोले—इसके उपरांत सुंदर प्रकारका यक्षि-णीका साधन कहता हूं जिसके सिद्ध होनेसे मनुष्योंकी सकल कामना सिद्ध होती हैं ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

आषाढपूर्णिमायां तु कृत्वा क्षौरादिकाः क्रियाः ।
सितेज्ययोरमौढ्ये तु साधयेद्यक्षिणीं नरः ॥ २ ॥

आषाढशुक्लपूर्णिमाके दिन क्षौरादिक करके गुरुशुक्रके उदयमें मनुष्य यक्षिणीका साधन करे ॥ २ ॥

प्रतिपद्दिनमारभ्य श्रावणेंदुबलान्विते ।
मासमात्रप्रयोगोऽयं निर्विघ्नेन विधिं चरेत् ॥ ३ ॥

श्रावण कृष्णपक्ष प्रतिपदासे चंद्रबल देखकर एक मासका ये प्रयोग है सो निर्विघ्नतासे साधन करना ॥ ३ ॥

निर्जने बिल्ववृक्षस्य मूले कुर्याच्छिवार्चनम् ।
षोडशैरुपचारैस्तु रुद्रपाठसमन्वितम् ॥ ४ ॥

निर्जन वनमें जाकर बिल्ववृक्षके नीचे षोडशोपचार रुद्रपाठयुक्त शिवजीकी पूजा करे ॥ ४ ॥

त्र्यंबकेत्यस्य मंत्रस्य जपं पंचसहस्रकम् ।
दिवसेदिवसे कृत्वा कुबेरस्य च पूजनम् ॥ ५ ॥

(ॐ त्र्यंबकं यजा०) इस मंत्रका पांचहजार जप प्रतिदिन करना और प्रतिदिन कुबेरकी पूजा भी करना ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

मंत्र–यक्षराज नमस्तुभ्यं शंकरप्रियबांधव ।
एकां मे वशगां नित्यं यक्षिणीं कुरु ते नमः६॥

यह मंत्र कुबेरका है इसका प्रतिदिन अष्टोत्तरशत जप करना ॥ ६ ॥

इति मंत्रं कुबेरस्य जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥
ब्रह्मचर्येण मौनेन हविष्याशी भवेद्दिवा॥७॥

ऊपर कहेहुए कुबेरके मंत्रका प्रतिदिन अष्टोत्तरशत जप करना दिनको मौन धारण करना हविष्यान्न भो-जन करना और ब्रह्मचर्यसे रहना ॥ ७ ॥

रात्रेस्तु मध्यमौ यामौ विनिद्रो मितभोजनः।
बिल्ववृक्षं समारुह्य जपेन्मंत्रमिमं सदा ॥ ८॥

रात्रिके मध्यके दो प्रहरमें निद्रारहित थोडा भोजन करके बिल्ववृक्षके ऊपर बैठके इस मंत्रका निरंतर जप करना ॥ ८ ॥

मंत्र–ॐक्लींह्रींऐं ॐ श्रीमहायक्षिण्यै सर्वैश्वर्य-प्रदात्र्यै नमः श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ स्वाहा ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

इति मंत्रस्य च जपं सहस्रत्रयसंमितम् ।
कुर्याद्बिल्वसमारूढो मासमात्रमतंद्रितः ॥९॥

ऊपर कहे हुए मंत्रका जप तीन हजार बिल्ववृक्षके ऊंपर चढके आलस्यरहित मासपर्यंत करे ॥ ९ ॥

मध्वामिषबलिं तत्र कल्पयेत्संस्कृतं पुरः ।
नानारूपधरा यक्षी क्वचित्तत्रागमिष्यति १०॥

मद्य मांस बलिदानके वास्ते नित्यही पास रखलेवे कारण कि, अनेक रूप धारण करके यक्षिणी कौनसे कालमें कौन दिन आजायगी ॥ १० ॥

तां दृष्ट्वा न भयं कुर्याज्जपे संसक्तमानसः ।
यस्मिन्दिने बलिं भुक्त्वा वरं दातुंसमर्थयेत् ११

कैसा भी रूप धारणकर यक्षिणीः आवे तो उसको देखकर भय नहीं करना केवल जपमें चित्त लगाये रखना जिस दिनके विषे बलिको यक्षिणी ग्रहण करके वरदान देनेको समर्थ हो ॥ ११ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

तदा वरान्वै वृणुयात्तांस्तान्वै मनसेप्सितान् ।
धनमानयितुं ब्रूयादथवा कर्णवार्तिकीम्॥ १२॥

उस समय मनमें इच्छा होय सो वरदान माँगलेवे धनके लानेके वास्ते माँगलेवे अथवा त्रिलोकीकी का-नमें वार्ता कहनेकेवास्ते माँगलेवे ॥ १२ ॥

भोगार्थमथवा ब्रूयान्नृत्यं कर्तुमथापि वा ।
भूतानानयितुं वापि स्त्रियमानयितुं तथा॥ १३

अथवा भोग भोगनेके वास्ते माँगलेवे अथवा नृत्य देखनेके वास्ते माँग ले तथा कोई प्राणी तथा स्त्रीके लानेके वास्ते माँगलेवे ॥ १३ ॥

राजानं वा वशीकर्तुमायुर्विद्यायशोबलम् ।
एतदन्यद्यदीप्सेत साधकस्तत्तु याचयेत् १४॥

राजाको वश करनेको मांगे अथवा आयु, विद्या, यश, बलकेवास्ते माँगलेवे ऊपर कहेहुए अथवा और जो कुछ इच्छा होय सो साधन करनेवाला माँगलेवे ॥ १४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

चेत्प्रसन्ना यक्षिणी स्यात्सर्वं दत्ते न संशयः ।
अशक्तस्तु द्विजैः कुर्यात्प्रयोगं सुरपूजितम् ॥१५॥

जो यक्षिणी प्रसन्न होगई होय तो माँगेहुए वर देगी इसमें संदेह नहीं है। आप करनेको अशक्त होवे तो ब्राह्मणोंसे करालेवे यह प्रयोग सुरपूजित है ॥ १५ ॥

सहायानथवागृह्य ब्रह्मणान्साधयेद्व्रतम् ।
नित्यं कुमारिका भोज्याः परमान्नेन वै त्रयः॥१६॥

अथवा ब्राह्मणोंको संग लेकर व्रतको साधन करे परमान्नकरके नित्यप्रति तीन कन्याओंको भोजन करावे १६

सिद्धे धनादिकेनैव सदा सत्कर्म चाचरेत्। कुकर्मणि व्ययं चेत्स्यात्सिद्धिर्गच्छति नान्यथा॥१७॥

यक्षिणीप्रसादसे सिद्धहुये धनादिकों करके सदा सत्कर्म करै कदाचित् कुकर्म किया तो सिद्धि जाती रहेगी यह सत्य है॥ १७ ॥

गुप्तेन विधिना कार्य्यं प्रकाशं नैव कारयेत् ।
प्रकाशे बहुविघ्नानि जायंते नात्र संशयः१८॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

ये प्रयोग गुप्तविधिसे करना, प्रकाश करके कदाचित्भी नहीं करना, प्रकाश करनेसे बहुत विघ्न उत्पन्न होते हैं इसमें संशय नहीं है ॥ १८ ॥

प्रयोगश्चानुभूतोयं तस्माद्यत्नवदाचरेत् ।
निर्विघ्नेन विधानेन भवेत्सिद्धिरनुत्तमा॥१९॥

यह प्रयोग अनुभव कियाहै इसलिये यत्नवान् होकर करे, निर्विघ्न विधान करनेसे उत्तम सिद्धि प्राप्त होगी १९॥

गोप्यं चेदं महत्तंत्रं यस्मै कस्मै न दापयेत् ।
दुर्जनस्पर्शनाद्विद्या भवत्यल्पफला यतः२०॥

ये महान् तंत्र गुप्त रखना जिसी किसीको नहीं देना कारण कि, दुष्टके स्पर्श करनेसे विद्या अल्पफलदायक होजातीहै ॥ २० ॥

इति श्रीमद्भवानीशंकरोपासकश्रीलक्ष्मीनारायणानुवादिते माहेश्वरीयतंत्रे यक्षिणीप्रयोगो नाम नवमोऽङ्कः॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

ईश्वर उवाच ।

अथ ते कथयिष्यामि रसायनविधिं परम् ।
कुबेरतुल्यो भवति यस्य सिद्धौ नरो भुवि १॥

ईश्वर बोले—इसके आगे हे योगीन्द्र ! तेरेवास्ते श्रेष्ठ रसायन विधि कहता हूं जिसके सिद्धि होनेसे मनुष्य पृथ्वी-पर कुबेरकी तुल्य होता है ॥ १ ॥

गोमूत्रं हरितालं च गंधकं च मनःशिला ।
समं समं गृहीत्वा तु यावच्छुष्कं तु पेषयेत् २॥

गोमूत्र हरताल गंधक मनशिल इन सबको बाराबर लेकर जबतक न सूखे तबतक खरल करना ॥ २ ॥

गोमूत्रं रक्तवर्णाया गंधकं रक्तवर्णकम् ।
एकादशदिनं यावद्रक्ष्यं यत्नेन वै शुचि ॥ ३ ॥

लालवर्णकी गायका गोमूत्र और गंधक भी लालवर्णका ग्यारह दिन पर्यंत यत्नसे सुरक्षित पवित्रतासे खरल करना ॥ ३ ॥

गोलं कृत्वा द्वादशेह्नि रक्तवस्त्रेण वेष्टयेत् ।
चतुरंगुलमानेन मृदं लिप्त्वा विशोषयेत् ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

फिर बारहवें दिन गोला बनाय लालवस्त्रसे लपेटकर चार अंगुल मोटी चारोंतरफ धूली (मट्टी) लगाकर गोलेको सुखा लेना ॥ ४ ॥

पंचहस्तप्रमाणेन भूमौ गर्तं तु कारयेत् ।
पलाशकाष्ठलोष्टैस्तु पूरयेद्द्रव्यमध्यगम् ॥ ५ ॥

पांचहाथ प्रमाणका चौरस गड्डा कर पलाशके कोयलेमें गोला मध्यमें रखकर भरदेवे ॥ ५ ॥

अग्निं दद्यात्प्रयत्नेन स्वांगशीतं समुद्धरेत् ।
ताम्रपत्रेषु संतप्ते तद्भस्म तु प्रदापयेत् ॥ ६ ॥

फिर यत्नसे अग्नि लगावे जब वह जलकर आप ठंढा (शीतल) होजाय तब गोलेको बाहर निकाललेवे फिर तांबेका पत्र अच्छा तपाकर वो गोलेकी निकली हुई भस्म पत्रपर डाले ॥ ६ ॥

गुंजैकं तत्क्षणात्स्वर्णं जायते ताम्रपत्रकम् ।
अरण्ये निर्जने देशे शिवालयसमीपतः ॥ ७ ॥

एकगुंजाप्रमाण तो उसी क्षणमात्रमें ताम्रका पत्र

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

सुवर्ण हो जाय । यह कहां करना सो कहते हैं निर्जन वनमें शिवालयके समीप ॥ ७ ॥

शुक्लपक्षे सुचंद्रेऽह्नि प्रयोगं साधयेत्सुधीः ।
त्र्यंबकेति च मंत्रस्य जपं दशसहस्रकम् ॥८॥

शुक्लपक्षमें चंद्रबलयुक्त दिनमें बुद्धिमान् पुरुष प्रयोगको साधन करै (ॐ त्र्यंबकं यजामहे०) इस मंत्रका दशहजार जप ॥ ८ ॥

प्रत्यहं कारयेद्विप्रान्भोजयेद्रुद्रसंमितान् ।
यावत्सिद्धिर्न जायेत तावदेतत्समाचरेत् ॥९॥

प्रतिदिन करावे और ग्यारह ब्राह्मण नित्य भोजन करावे और जबतक सिद्धि न होय तबतक इसी रीति करता जावे ॥ ९ ॥

अथ द्रव्यमर्दनमंत्रः ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वर्णादीनामीशाय ।
रसायनस्य सिद्धिं कुरु कुरु फट् स्वाहा ॥
प्रत्यहं मर्दने अयुतं जपेत् ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

पूर्वमें कहेहुये मंत्रको हरतालादिक वस्तुओंको खरल करे तिस समय प्रतिदिन दशहजार जप करे ॥

इत्येवं शंभुना प्रोक्तास्तंत्राः प्रत्यक्षसिद्धिदाः।
स्वप्ने शिवाख्यगिरये अनुभूतास्तु तेन वै॥ १०

ये पूर्वोक्त तंत्र प्रत्यक्ष सिद्धिदायक स्वप्नमें शिवगिरिकेवास्ते श्रीमहेश्वरने कहे इन तंत्रोंका शिवगिरि योगीने साक्षात् अनुभव किया ॥ १० ॥

तदाज्ञया मया बद्धाः शुभैः पद्यैर्यथामति ।
अनेन विधिनामर्त्या ये करिष्यंत्यसंशयाः ११

उस शिवयोगीकी आज्ञासे मैंने शुभ श्लोकोंसे यथामती बद्ध किया इस विधिसे जो मनुष्य करेंगे निस्संशय होकर ॥ ११ ॥

सिद्धिं ह्यलौकिकीं लब्ध्वा भविष्यंति सुपूजिताः।
संदेहोत्र न कर्तव्यः साक्षाच्छंकरभाषिते ॥१२॥

वे पुरुष अलौकिक सिद्धिको प्राप्त होकर लोक-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

पूजित होवेंगे इस साक्षात् शंकरकथित ग्रंथमें संदेह करना योग्य नहीं है ॥ १२ ॥

श्रीमद्गौडद्विजाग्रणीर्मतिमतां श्रेष्ठो भवान्याभिधो ह्यासीद्रामकुमार इत्यभिहितो विद्वानभूत्तत्सुतः ॥ यः शास्त्रार्थविवेकनिश्चयतया ह्याराध्य सम्यक्छिवं लेभे जन्मलयादिदुःखरहितामानंदभूतां गतिम् ॥ १३ ॥

ग्रंथकर्ताकी वंशपरंपरा वर्णन करते हैं । श्रीमान् गौडब्राह्मणोंके विषे अग्रगणनीय बुद्धिमानोंके विषे श्रेष्ठ भवानीप्रसाद नामक पंडित होते भये । उनके पुत्र पंडित रामकुमार इस नाम करके विख्यात विद्वान् होते भये, जो रामकुमार विद्वान् सब शास्त्रोंके अर्थको निश्चय विचार करिके सम्यक्प्रकार करके शिवजीकी आराधना करिके जन्ममरणादिक दुःखोंसे रहित आनंदभूतगतिको अर्थात् साक्षाद्ब्रह्मतादात्म्यको प्राप्त होते भये ॥ १३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

तत्सूनुः कमलाऽदिशब्दसहितो नारायणोऽहं द्विजस्तद्योगींद्रनिदेशतो रचितवास्तंत्रं महेशाभिधम् ॥ यस्मिन्संशयवर्जिता बहुविधा सिद्धिः प्रकाशीकृता तच्छंभोः कृपया सुसाधकजनानन्दाय भूयात्सदा ॥ १४ ॥

उन रामकुमारजीका पुत्र मैं लक्ष्मीनारायणने ब्राह्मण सत् योगीन्द्र अर्थात् शिवगिरि की आज्ञासे महेशाभिध (अर्थात् माहेश्वरीय) तंत्रकी रचना किया जिस तंत्रमें संशयरहित बहुत प्रकारकी सिद्धिका प्रकाश किया है सोई तंत्र शंभु कृपासे सुंदर साधक जनोंको आनंदकेवास्ते सर्वदा होय ॥ १४ ॥

श्रीमज्जैपुरपत्तनेस्ति सुभगे श्रीमाधवाख्यो नृपस्तस्मात्क्रोशचतुर्दशाच्छाशीदिशि ग्रामोऽस्ति घोलाभिधः ॥ यत्रास्ते विमलोदका इषुनदी श्रीफाल्गुनेनोद्धृता तस्मिन्मेवसतिः सुपूजिततमे देशे च मत्स्याभिधे॥१५॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

ग्रंथकर्ताकी जन्मभूमि वर्णन करते हैं। श्रीमान् विख्यात सवाई जयपुर अतिशोभायमान शहरमें श्रीमाधवसिंहजी राजा वर्तमान हैं उस जयपुरसे उत्तर दिशामें चौदह कोशपर धौलानामक ग्राम है जिस ग्राममें स्वच्छजल बाणगंगा श्रीअर्जुनकरके उद्धार करी हुई है ऐसे सुपूजित मत्स्यनामक देशमें मेरा निवास है॥ १५

इति श्रीमद्भवानीशंकरोपासकपंडितश्रीलक्ष्मीनाराय-
णानुवादिते माहेश्वरीयतंत्रे रसायनप्रयोगो-
नाम दशमोऽङ्कः ॥ १० ॥

॥ इति माहेश्वरीयतंत्रं समाप्तम् ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बंबई.

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयकी परमोपयोगी स्वच्छ शुद्ध और सस्ती पुस्तकें ।

यह विषय आज ३०।४० वर्षसे अधिक हुआ भारतवर्षमें प्रसिद्धहै कि, इस यन्त्रालयकी छपी हुई पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दर प्रतीत तथा प्रमाणित हुई हैं सो इस यन्त्रालय में प्रत्येक विषय की पुस्तकें जैसे-वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, छन्द, ज्योतिष, काव्य, अलंकार, चम्पू, नाटक, कोष, वैद्यक, साम्प्रदायिक तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दी भाषाके प्रत्येक अवसरपर विक्रीके अर्थ तैयार रहते हैं। शुद्धता स्वच्छता तथा कागज़की उत्तमता और जिल्दकी बँधाई देशभरमें विख्यात है। इतनी उत्तमता होनेपर भी दाम बहुत ही सस्ते रक्खे गये हैं और कमीशनभी पृथक् काट दियाजाताहै। ऐसी सरलता पाठकों को मिलना असंभवहै संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अवश्य अपनी २ आवश्यकतानुसार पुस्तकों के मँगानेमें त्रुटि न करना चाहिये, ऐसा उत्तम, सस्ता और शुद्ध माल दूसरी जगह मिलना असम्भव है 'सूचीपत्र' मँगा देखो ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, खेतवाड़ी-बंबई.

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

॥ श्रीः ॥

भूतभावन भगवान् महादेव प्रणीत-

गुप्तसाधनतन्त्र।

मुरादाबादस्थ स्वर्गीय सुखानन्द मिश्रात्मज
पं० बलदेव प्रसाद मिश्रकृत-

भाषाटीकासमेत.

जिसको
तान्त्रिकजनोंके हितार्थ,
खेमराज श्रीकृष्णदासने
बंबई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् मुद्रणालयमें
मुद्रितकर प्रसिद्ध किया।

संवत् १९६६, शके १८३१.

सरकारी कानूनके मुताबिक इस पुस्तकका रजिस्टरी हक़
"श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षने स्वाधीन रक्खा है.

CC-0. In Public Domain. Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, J

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

॥ श्रीः ॥

भूतभावन भगवान् महादेव प्रणीत–

गुप्तसाधनतन्त्र।

मुरादाबादस्थ स्वर्गीय सुखानन्द मिश्रात्मज
पं० बलदेव प्रसाद मिश्रकृत–
भाषाटीकासमेत.

जिसको
तान्त्रिकजनोंके हितार्थ,
खेमराज श्रीकृष्णदासने
बंबई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् मुद्रणालयमें
मुद्रितकर प्रसिद्ध किया।

संवत् १९६६, शक १८३१.

सरकारी कानूनके मुताबिक इस पुस्तकका रजिस्टरी हक़
"श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षने स्वाधीन रक्खा है.

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

भूमिका ।

तंत्रशब्दसे श्रीशिवजीका कहाहुआ शास्त्र लियाजाता है. स्वभावहीसे दयावती श्रीपार्वतीजीने लोगोंके उपकारके लिये नाना प्रकारसे प्रश्न कियेहैं उन्हींके उत्तर श्रीशङ्करजीने दियेहैं । यह श्रीशिवाशिवसंवादही तन्त्रोंके नामसे व्यवहृत होता है—यह "गुप्तसाधन तंत्र" भी उनमेंसे एक है । किसी बड़े प्रयोजनीय विषयको गुप्त रखनेको भी तंत्र कहतेहैं । राजनीतिमें तो ऐसा तंत्र (गुप्तविचार) सदा हुआही करता है । पहले जब भारतवर्षमें इसी विचारकी सावधानीसे रक्षा कीजाती थी तो कभी राष्ट्रीय कार्यमें निष्फलता नहीं होती थी ।

तंत्रमार्गमें भी बडी उन्नति उस बीचमें हुई यहांतक कि लोग इसी शास्त्रसे सबकुछ सिद्ध करलेते थे । यह ठीकभी है कोई भी काम हो जब वह साङ्गोपाङ्ग सिद्ध कियाजाता है तो अवश्यही फलदायक होता है ।

इस तंत्रमें गुरुशिष्यभाव तंत्रशास्त्रकी आवश्यकता और उसके गुप्त रखनेका प्रयोजन, मंत्रसिद्ध करनेवालेके आचार विचार और नियम मंत्र जपनेकी संख्या इत्यादि उपयोगी कई बातें लिखी हुई

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

हैं । केवल इसी ग्रंथके अनुसार मनुष्य यत्न करै तो सब कार्य सिद्ध होसकतेहैं । इस समयमें वैसे विज्ञ गुरुके अभावसे चाहे कार्य न हो पर जैसे लक्षण इसमें गुरु तथा शिष्योंके लिखेहैं ऐसा यत्न किया जाय और वैसे योग्य गुरु शिष्य होजायँ तो कार्यसिद्धिमें कुछ भी आपत्ति न आवे। तंत्रशास्त्रके प्रेमी इसको देखकर इससे लाभ उठावें इस आशयसे हम इसका आविष्कार करते हैं ।

इति ।

आपका कृपाभिलाषी–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष–बंबई.

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

॥ श्रीः ॥

ॐ गुरवे नमः ॥

गुप्तसाधन-तन्त्रम् ।

भाषाटीकासमेतम् ।

प्रथमः पटलः १.

कैलासशिखरेरम्येनानारत्नोपशोभिते ।
तंकदाचित्सुखासीनंभगवन्तंत्रिलोचनम् ॥
पप्रच्छपरयाभक्त्यादेवीलोकहितेरता ॥ १ ॥

एक समय भगवान् महादेवजी, अनेक प्रकारके रत्नोंसे शोभायमान मनोहर कैलासपर्वतके शिखरपर सुखसे विराजमान थे, इसही समयमें देवी पार्वती जी लोकहितसाधनकी कामनासे परमभक्तिके साथ महादेवजीसे पूंछती हुई ॥ १ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

देवदेवमहादेवलोकानुग्रहकारक ।
कुलाचारस्यमाहात्म्यंपुरैवसूचितंत्वया ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

पार्वती जी बोलीं, हे देवदेव ! तुम देवताओंमें श्रेष्ठ हो, सदा लोकोंपर अत्यन्त अनुग्रह प्रगट किया करते हो । हे नाथ ! पहिले तुमने कुलाचारके माहात्म्यको प्रगट किया है ॥ २ ॥

तत्कथंगोपितंदेवममप्राणेश्वरप्रभो ।
कथयस्वमहाभागयद्यहंतववल्लभा ॥ ३ ॥

हे प्राणेश्वर ! इस समय उस कुलाचारके माहात्म्यको किस कारणसे छिपाया ? सो मुझसे कहो । हे महाराज ! जो तुम मुझको प्राणप्यारी समझते हो, तो इस समय मुझसे उस गुप्तकुलाचार माहात्म्यको प्रकाश करो ॥ ३ ॥

श्रीशिव उवाच ।

शृणुदेविप्रवक्ष्यामिसारात्सारंपरात्परम् ।
तवस्नेहान्महादेविदासोऽस्मितवसुन्दरि ॥
तत्कथांकथयिष्यामिसावधानावधारय ॥ ४ ॥

शिवजी बोले, हे देवी ! मैं तुमसे सारतर परम तत्त्वभूत छिपानेके योग्य वार्त्ता कहता हूं, सुनो । हे महादेवी ! मैं सदासे तुम्हारा दासहूं, हे सुन्दरि ! तुम्हारे प्रति मेरी अचल श्रद्धाहै, मैं उसही श्रद्धा के वशमें हो कुलाचारका गुप्त माहात्म्य वर्णन करूंगा । इस कुलाचारकी वार्त्ता को गुप्त रखना उचितहै । अतएव इस वार्ता को अतिसावधानतासे श्रवण करो ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

tized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

कुलाचारंमहाज्ञानंगोप्तव्यंपशुशङ्कटे ।
प्रगोप्तव्यंमहादेविस्वयोनीरिवपार्वति ॥ ५ ॥

हे पार्वती ! यह कुलाचार महाज्ञानका साधनहै, जो इस कुलाचारके अनुसार साधन करता है, वह तत्त्वज्ञानको प्राप्त करलेता है। इस महाज्ञानके देनेवाले कुलाचारको सदा पश्वाचारीके निकट अपनी योनिकी समान गुप्त रक्खे ॥ ५ ॥

वेदागमपुराणानिवेदशास्त्राणिपार्वति ।
एतन्मध्येसारभूतंकुलाचारंसुदुर्लभम् ॥ ६ ॥

हे पार्वती ! वेद, आगम, पुराण, और वेदान्तादि यह समस्त सारभूत शास्त्र हैं, और इनके मध्यमें भी कुलाचार सारतमहै, अतएव यह परमदुर्लभहै ॥ ६ ॥

वक्त्रकोटिसहस्रैस्तुजिह्वाकोटिशतैरपि ।
कुलाचारस्यमाहात्म्यंवर्णितुंनैवशक्यते ॥ ७ ॥

सहस्र कोटि मुख और सौकरोड जिह्वा द्वारा भी कोई इस कुलाचारके माहात्म्य को वर्णन नहीं करसकता ॥ ७ ॥

किञ्चिन्मयातुचापल्यात्कथ्यतेतच्छृणुष्वमे ।
शक्तिमूलंजगत्सर्वंशक्तिमूलंपरन्तपः ॥ ८ ॥

हे देवि ! तुमसे उस कुलाचार का वर्णन करना केवल मेरी चपलता है, तोभी तुमसे किंचिन्मात्र अपनी शक्तिके अनुसार

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

वर्णन करताहूं, श्रवण करो । शक्तिही अनन्त जगत्की आदिकारण है और शक्ति ही समस्त तपस्या की मूल है ॥ ८ ॥

शक्तिमाश्रित्यनिवसेद्यत्रकुत्राश्रमेवसन् ।
साधकस्यार्चिताशक्तिंसाधकज्ञानकारिणीम्॥९॥

साधकगण शक्तिका आश्रय करके चाहें जिस आश्रममें वास करें, उसमेंही वह सिद्धि प्राप्त करसकते हैं । शक्तिकी अर्चना करतेही वह साधकोंको ज्ञान देती है ॥ ९ ॥

इहलोकेसुखंभुक्त्वादेवीदेहेप्रलीयते ।
साधकेन्द्रोमहासिद्धिंलब्ध्वायातिहरेःपदम् ॥१०॥

शक्तिकी आराधना करनेवाला साधक, इस लोकमें विविध सुखभोग करके देवीकी देहमें लीन होजाता है और वह साधकों में इन्द्र महासिद्धको प्राप्त करके अन्तमें नारायणके पदको प्राप्त हो जाता है ॥ १० ॥

पञ्चाचारेणदेवेशिकुलशक्तिम्प्रपूजयेत् ।
नटीकापालिकीवेश्यारजकीनापिताङ्गना ॥ ११॥
ब्राह्मणीशूद्रकन्याचतथागोपालकन्यका ।
मालाकारस्यकन्याचनवकन्याःप्रकीर्तिताः॥१२॥

हे देवेशि ! पंचोपचारके क्रमानुसार कुलशक्तिकी अर्चना करे । नटी, कापालिककी कन्या, वेश्या, धोवन, नायन, ब्राह्मणी, शूद्र-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

tized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

कन्या, गोपकन्या, और मालाकार कन्या यही नव कन्या कह-
लाती हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥

विशेषवैदग्ध्ययुताःसर्वाएवकुलाङ्गनाः ।
रूपयौवनसम्पन्नाःशीलसौभाग्यशालिनीः ॥१३॥

विशेषकरके विशेष गुणशालिनी हो, इसप्रकारकी सर्वजातीय-
रूप यौवनवाली, सुशीला और सौभाग्यवती कन्या भी कुलाङ्गना-
की भांति ग्रहण की जासकती हैं ॥ १३ ॥

पूजनीयाःप्रयत्नेनततःसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ।
सत्यंसत्यंमहादेविसत्यंसत्यंनसंशयः ॥ १४ ॥

इति गुप्तसाधनतन्त्रेपार्वतीशिवसंवादे
प्रथमः पटलः समाप्तः ॥ १ ॥

इन समस्त कुलाङ्गनाओंकी यत्नसहित पूजा करे । इस प्रका-
रकी अर्चना करनेसे साधकको निश्चयही सिद्धि प्राप्त हुआ करती
है । हे महादेवि ! हमारे इस वाक्यको सत्य २ जानो, इस में कुछ-
भी संशय नहीं करना चाहिये ॥ १४ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे भाषाटीकायां
प्रथमः पटलः समाप्तः ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

द्वितीयः पटलः २.

श्रीपार्वत्युवाच ।

बाधेतमांकृपानाथमुहुःप्रष्टुंयदुत्सहे ।
स्त्रियःस्वभावचपलानशङ्केऽहम्पुनःपुनः ॥ १ ॥

पार्वतीजी बोलीं! हे कृपामय ! तुमसे जो बारम्बार प्रश्न करने का मेरा अभिलाष होता है, तिससे लाज आती है, तथापि स्त्री जातिका स्वभाव अत्यन्त चपल होनेके कारणही मैं बारम्बार बूझतीहूं और उसमें शंका नहीं होती ॥ १ ॥

यदुक्तंकृपयानाथरहस्यम्परमाद्भुतम् ।
गुरुर्ब्रह्मागुरुर्विष्णुगुरुर्देवोगुरुर्गतिः ॥ २ ॥
गुरुस्तीर्थंगुरुर्यज्ञोगुरुर्दानंगुरुस्तपः ।
गुरुरग्निर्गुरुःसूर्यःसर्वंगुरुमयञ्जगत् ॥ ३ ॥

हे नाथ ! आपने मेरे ऊपर पहिलेही कृपा करके परम आश्चर्य अद्भुत रहस्य को प्रकाशित किया है । तिसमें उपदेश किया कि, ब्रह्मा, विष्णु, सर्व देवता, सबका आश्रय, तीर्थ, यज्ञ, दान,तपस्या, अग्नि, सूर्य और सर्व जगत स्वरूप जो है सो गुरूहीहै ॥ २ ॥ ३ ॥

किमनेनाकिन्तपसाकिमन्यत्तीर्थसेवया ।
श्रीगुरोरर्चितौयेनपादौतेनार्चितंजगत् ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

tized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

यदि गुरुही सर्वमय हुआ तो इस तपस्या व अन्यान्य तीर्थसेवा द्वारा कौनसे अधिक फलकी आशा की जासकतीहै ? आपके उपदेशसे जाना जाताहै कि जो गुरुदेव के दोनोंचरण कमलकी अर्चना करताहै, उसने मानो समस्त जगत की अर्चना करने का फल पालिया ॥ ४ ॥

ब्रह्माण्डभाण्डमध्येतुयानितीर्थानिसान्तिवै ।
गुरोःपादोदकेतानिनिवसन्तिहिसन्ततम् ॥ ५ ॥

और अनन्त ब्रह्माण्ड में जितने तीर्थ विद्यमानहैं, गुरुजीके चरणामृत में भी वे समस्त तीर्थ वास किया करतेहैं ॥ ५ ॥

गुरोःपादोदकंयेनाशिरसापुण्यभाग्भवेत् ।
सर्वतीर्थजलम्पुण्यंलभतेनात्रसंशयः ॥ ६ ॥

जो गुरुजी के चरणामृतको मस्तकपर धारण किया करतेहैं, वह सर्वप्रकार पुण्य भाजन हुआ करतेहैं, और इसमें संशय नहीं कि सब तीर्थों में स्नान करने का फल प्राप्तकर सकतेहैं ॥ ६ ॥

इतितस्यगुरोर्ध्यानंतत्त्वतःश्रोतुमुत्सहे ।
लब्धत्वदर्द्धदेहांमांकथंवञ्चयसिप्रभो ॥
मयिस्नेहानुबन्धोऽस्तियदितन्मेप्रकाशय ॥ ७ ॥

हे प्रभो ! आपने इसप्रकारके गुरु माहात्म्य को मुझसे कीर्त्तन कियाहै, इस समय उन गुरुदेवका ध्यान श्रवण करनेके लिये मुझ को अत्यन्त कौतूहल उत्पन्न हुआहै । हे नाथ ! मैंने आपकी देह के

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

अर्द्धभाग को प्राप्त कियाहै, मुझको क्यों बंचना करते हो ? हे प्रभो! यदि मेरे प्रति आपका स्नेह और अनुराग हो तो गुरुके स्वरूपको मुझसे प्रकाश कीजिये ॥ ७ ॥

श्रीशङ्कर उवाच ।

नवञ्चयामिदेवित्वांप्राणेभ्योऽपिगरीयसीम् ।
स्त्रीणांस्वभावचापल्याद्गोपितंनप्रकाशितम् ॥८॥

महादेव जी बोले ! हे देवि ! तुम हमारे प्राणों से भी अधिक हो, तुमको भुलावा नहीं देता, केवल स्त्रियों का स्वभाव चंचल होने के कारणही अबतक प्रकाशित नहीं किया ॥ ८ ॥

कथयामितवस्नेहाच्छ्रीगुरोर्ध्यानमुत्तमम् ।
प्रकाश्यञ्चकुलीनेषुनप्रकाश्यंपशौक्वचित् ॥ ९ ॥

हे देवि ! तुम्हारे स्नेह से वशीभूत हो श्रीगुरुजी के ध्यानको कहता हूं । जो लोग कुलाचार में तत्परहैं, उनसेही इस ध्यानका प्रकाशित करना उचितहै, कदापि पश्वाचारी से इस ध्यान को न कहै ॥ ९ ॥

कुलः शक्तिःसमाख्याताअकुलःशिवउच्यते ।
तस्यांलीनोभवेद्यस्तुसकुलीनःप्रकीर्त्तितः ॥ १० ॥

शक्तिकोही कुल कहाहै और शिवको अकुल कहते हैं । जो उस शक्तिमें लीनहैं, उनको ही कुलीन नाम से पुकारागयाहै ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

tized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

कुलवृक्षान्नमस्कृत्यगुरुंध्यायेत्पराम्बुजे ।
शरच्चन्द्रसमाभासंशरत्पङ्कजलोचनम् ॥ ११ ॥
ईषद्धास्यंशारदीयपूर्णेन्दुसदृशाननम् ।
दिव्यस्रगम्बरधरंदिव्यगन्धानुलेपनम् ॥ १२ ॥
सुरक्तशक्तिसंयुक्तवामभागमनोहरम् ।
वराभयकराम्भोजंसर्वलक्षणलक्षितम् ॥
सहस्रारेमहापद्मेगुरुंशिरसिचिन्तयेत् ॥ १३ ॥
एतत्तेकथितंदेविश्रीगुरोर्ध्यानमुत्तमम् ।
गोपनीयंप्रयत्नेननप्रकाश्यङ्कदाचन ॥ १४ ॥
इतितेकथितंसर्वंतवस्नेहेनसुन्दरि ।
किमन्यत्संप्रवक्ष्यामिकथयस्वशुचिस्मिते ॥ १५॥

समस्त कुल वृक्षों को नमस्कार करके सहस्रदलवाले कमल में गुरुजी का ध्यान कर, गुरुजी के देहकी कान्ति शरदकालके पूर्ण चन्द्रमा की समान उज्ज्वलहै । इनके दोनों नेत्र शरद ऋतुके कमल की नांई बड़े २ हैं । गुरुजी का वदन शरदऋतुके पूर्ण चन्द्रमा की समान विराजमान रहताहै । गुरुदेव दिव्य वसनधारी है । इनके समस्त अंगोंमें सुगन्धपूर्ण दिव्य अनुलेपन लगा हुआहै । गुरुजी-के वांयें भाग में लालवर्ण की शक्ति विराजमान हैं, दोनों करकम-लोंमें वर व अभय मुद्राहै, यह सर्वप्रकार के शोभित लक्षणोंसे

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

लक्षित हैं । शिरमें स्थित सहस्रदलवाले कमलमें इस प्रकारके लक्षणवाले गुरुजीका ध्यान करे ॥ ११ ॥ १२ ॥१३॥ हे देवि ! इसप्रकारसे श्रीगुरुजीका उत्तम ध्यान तुमसे कहा,तुम सदा इसको यत्न सहित गुप्त रक्खो, कदापि प्रगट मत करो ॥१४॥ हे सुंदरि! तुम्हारे स्नेह के वशसे इस प्रकार श्रीगुरुजी का स्वरूप प्रकाश किया, और क्या कहूं ? सो कहो ॥ १५ ॥

श्रीपार्वत्युवाच ।

गुरोर्ध्यानंश्रुतन्नाथसर्वतन्त्रेषुगोपितम् ।
स्त्रियादीक्षाशुभाप्रोक्तासर्वकामफलप्रदा ॥ १६ ॥

पार्वतीजीने कहा हे नाथ ! समस्त तन्त्रों में छिपाया हुआ श्रीगुरुजी का ध्यान श्रवण किया, अब स्त्रियोंमें ली हुई दीक्षा के श्रवण करने का अभिलाष मुझको हुआ है । तंत्र में कहाहै कि स्त्री-गुरुसे दीक्षित होवें तो वह दीक्षा शुभदायी होती है, और सर्वप्रकार काम्य फलकी देनेवाली होती है ॥ १६ ॥

बहुजन्मार्ज्जितात्पुण्याद्बहुभाग्यवशाद्यदि ।
श्रीगुरुर्लभ्यतेनाथतस्यध्यानंतुकीदृशम् ॥ १७ ॥

अनेक जन्मों के किये हुए पुण्य बलसे और बडे भाग्यसेही स्त्री गुरु मिलती है, तो फिर किसप्रकार से उसका ध्यान करना चाहिये ॥ १७ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

tized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

कुलीनस्त्रीगुरोर्ध्यानंश्रोतुमिच्छामिसाम्प्रतम् ।
कथयस्वमहाभागयद्यहंतववल्लभा ॥ १८ ॥

हे महाभाग ! इस समय मैं कुलीन स्त्री गुरुका ध्यान श्रवण करने की इच्छा करती हूं, यदि मुझपर आपका अनुग्रह हो तो उस ध्यानको वर्णन कीजिये ॥ १८ ॥

श्रीशङ्कर उवाच ।

शृणुपार्वतिवक्ष्यामितवस्नेहपरिप्लुतः ।
रहस्यंस्त्रीगुरोर्ध्यानंयत्रध्येयाचसागुरुः ॥ १९ ॥

महादेवजीने कहा हे पार्वति मैं तुम्हारे स्नेह के वशीभूत हो अति गुप्त रखने योग्य स्त्री गुरुका ध्यान कहताहूं, इस ध्यानके अनुसारही साधक लोगोंको स्त्री गुरूके स्वरूपका ध्यान करना चाहिये ॥ १९ ॥

सहस्रारेमहापद्मेकिञ्जल्कगणशोभिते ।
प्रफुल्लपद्मपत्राक्षींघनपीनपयोधराम् ॥ २० ॥

केशर समूह में शोभित सहस्रदलवाले कमलमें स्थित शक्ति रूपिणी स्त्री गुरुका ध्यान करना चाहिये। इसके दोनों नेत्र खिलेहुए कमलदलकी समान बडे हों, दोनों स्थूल पयोधर परस्पर सटे रहकर शोभा पा रहे हैं ॥ २० ॥

सहस्रदवनांनित्यांक्षीणमध्यांशिवांगुरुम् ।
पद्मरागसमाभासांरक्तवस्त्रसुशोभनाम् ॥ २१ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

रत्नकङ्कणपाणिञ्चरत्ननूपुरशोभिताम् ।
शरदिन्दुप्रतीकाशवक्त्रोद्भासितकुण्डलाम् ॥
स्वनाथवामभागस्थांवराभयकराम्बुजाम् ॥ २२ ॥

यह सहस्रवदना और नित्या हैं अर्थात् न इनकी उत्पत्ति है न प्रलय है, शिव शक्ति रुपी स्त्री गुरुकी कमर अति पतली है, इनके देहकी कान्ति पद्मराग मणिकी समान है, यह लाल रंग के वस्त्र पहरकर शोभायमान हो रही हैं, दोनों हाथों में रत्न जडे कंकण और दोनों पांवमें रत्नजडी पायजेब विद्यमान हैं, शरत्काल के पूर्ण चन्द्रमा के विशद कान्तिपूर्ण वदन में कुंडल युगल शोभा को प्राप्त होरहे हैं । यह अपने स्वामी की बांई ओर बैठी हैं, दोनों हाथोंमें वर और अभय मुद्रा है ॥ २१ ॥ २२ ॥

इतितेकाथितंदेविस्त्रीगुरोर्ध्यानमुत्तमम् ।
गोपनीयम्प्रयत्नेननप्रकाश्यंकदाचन ॥ २३ ॥

इति गुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे
द्वितीयः पटलः समाप्तः ॥ २ ॥

हे देवि ! यह स्त्री गुरुका उत्तम ध्यान तुमसे प्रकाशित किया, तुम यत्न सहित इस ध्यानको गुप्त रखना, कदापि प्रकाशित मत कीजिये ॥ २३ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां
द्वितीयः पटलः समाप्तः ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

tized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

तृतीयः पटलः ३.

श्रीपार्वत्युवाच ।

देवदेवमहादेवभक्तानांमुक्तिदायक ।
तवप्रसादात्प्राणेशश्रुतंसाधनमुत्तमम् ॥ १ ॥
पञ्चांगोपासनांदेवरहस्यादिपुरस्क्रियाम् ।
तत्सर्वंब्रूहिमेदेवयदिस्नेहोस्तिमांप्रति ॥ २ ॥

पार्वतीजी कहने लगीं, हे देवदेव ! आप भक्तजनों को मुक्ति के देनेवाले हैं, हे प्राणेश्वर ! आपके प्रसादसे उत्तम साधन को सुना ॥ १ ॥ हे नाथ ! इस समय रहस्य को प्रकाश करके पंचांगोपासना कहिये हे देव ! यदि मेरे पर आपका स्नेह हो तो पंचांगोपासना का समस्त विवरण प्रकाश कीजिये ॥ २ ॥

ईश्वर उवाच ।

दिवारात्रिप्रभेदेनजपेन्मन्त्रमनन्यधीः ।
न्यूनाधिकंजपैन्नैवदूषणंनास्तिपार्वति ॥ ३ ॥

महादेवजी कहते हुए, साधक एकान्त चित्त हो दिवारात्रि के भेद से जप करे । प्रति दिन एक नियम से जप करना चाहिये । किसी दिन कम या किसी दिन अधिक जप न करे । हे पार्वति ! इस नियम का साधन करने से किसी प्रकार का दोष नहीं हो सकता ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

पञ्चाचारेणदेवेशिसर्वंकार्यंजपादिकम् ।
स्वेच्छाचारोऽत्रगदितोमहान्त्रस्यसाधने ॥ ४ ॥

हे देवेशि ! जपादि समस्त कार्यही पंचाचार के क्रमसे करने में इस प्रकार का स्वेच्छाचार कहा गया । सबही अपनी इच्छा के अनुसार जपसंख्या का नियम कर सकतेहैं ॥ ४ ॥

प्रत्यहंपरमेशानिएकैकंविप्रभोजनम् ।
प्रातःकालंसमारभ्यजपेन्मध्यदिनावधि ॥ ५ ॥

हे परमेश्वरि ! ऊपर कहे हुए साधन में प्रातःकाल से आरम्भ करके दुपहर तक एक नियम से जप करे और प्रति दिन एक २ ब्राह्मण को भोजन करावै ॥ ५ ॥

पूजांकृत्वासाधकेन्द्रःपुनर्जपनमाचरेत् ।
सायंसन्ध्यांततःकृत्वाभोजनंस्वेच्छयानयेत् ॥६॥

साधक को चाहिये कि मध्याह्न के समय में जप को रोककर अभीष्ट देवता की अर्चना करे और अर्चना के अन्त में फिर जप का आरम्भ करे । अनन्तर सन्ध्या समय के आने पर सायंकाल के संध्या वन्दनादि कार्य समाप्त करके अपनी इच्छानुसार भोजन करे ॥ ६ ॥

भक्षंस्तांबूलमत्स्यांश्चभक्षद्रव्याण्यथारुचि ।
भुञ्जानोवाहविष्यान्नंशाकंयावकमेववा ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

tized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

साधकको चाहिये कि इस प्रकार से इस साधन में रुचि के अनुसार ताम्बूल, मत्स्यादि भक्ष्य पदार्थ भोजन करे अथवा, खीर, शाक, वा यावक भोजन करके जप करे ॥ ७ ॥

एवंकृत्वासाधकेन्द्रोरात्रौजपनमाचरेत् ।
गतेतुप्रथमेयामेतृतीयप्रहरावधि ॥ ८ ॥
स्ववामेशक्तिंसंस्थाप्यजपेन्मंत्रमनन्यधीः ।
शक्तियुक्तोभवेन्मर्त्यः सिद्धोभवतिनान्यथा ॥ ९॥

इस प्रकार से भोजन कार्य को समाप्त करके रात्रि के समय का जप आरंभ करे, रात्रि का प्रथम पहर बीतने पर अपने बांयें भाग में शक्ति को स्थापन करके एकाग्र चित्त से तीसरे पहर तक जप करे ॥ साधक मनुष्य शक्ति युक्त साधन करने से निश्चय ही सिद्धिको प्राप्त कर सकताहै, इस में अन्यथा नहीं हो सकता॥८॥९॥

कुलशक्तिंविनादेवियोजपेत्सतुपामरः ।
सिद्धिर्नजायतेतस्यकल्पकोटिशतैरपि॥ १० ॥

हे देवि ! कुलशक्ति रहित होकर जप करनेवाला साधक पामर होता है, सौ करोड कल्पतक जप करने से भी उसको सिद्धि नहीं होसकती ॥ १० ॥

अयनेविषुवेचैवपूजयेद्विभवावधि ।
कुमारींपूजयित्वातुभोजयेद्विधिपूर्वकम् ॥ ११ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

उत्तरायण, दक्षिणायन और विषुव संक्रमण के दिन अपने विभव के अनुसार देवीजी की पूजा करै, अनंतर अपनी शक्ति के अनुसार कुमारी पूजा करके उनको विधिपूर्वक भोजन करावै॥११॥

शतमष्टोत्तरञ्चैवब्राह्मणान्भोजयेत्ततः ।
शक्तिपूजांततःकृत्वाभोजयेच्चयथाविधि ॥ १२ ॥

अनन्तर एक सौ आठ ब्राह्मणों को भोजन कराय विधि सहित शक्ति की पूजा करनी चाहिये और भोजनादि द्वारा उन शक्तियों को सन्तुष्ट करना उचितहै ॥ १२ ॥

गुरवेदक्षिणांदद्यात्स्वर्णवस्त्रसमन्वितम् ।
यद्यदिष्टतमंलोकेगुरवेतन्निवेदयेत् ॥ १३ ॥

इसके उपरांत गुरुको सुवर्ण और वस्त्र युक्त दक्षिणा देवै, इस लोक में जो जो पदार्थ साधक को अभीष्ट हों, वह समस्त ही गुरुजीको निवेदन करने चाहिये ॥ १३ ॥

गुरुसन्तोषमात्रेणकिन्नसिध्यतिभूतले ।
गुरुरेवपरंब्रह्मनास्तितत्त्वंगुरोःपरम् ॥ १४ ॥

गुरु के संतुष्ट होनेपर इस पृथ्वी में क्या सिद्ध नहीं हो सकता है ? कारण कि गुरुही परब्रह्म स्वरूपहै, और गुरुसे अधिक और परम तत्त्व कुछ भी नहीं है ॥ १४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

tized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

एवंकृतेमन्त्रसिद्धिर्भवत्येवनसंशयः ।
सर्वसिद्धीश्वरोभूत्वाविचरेद्भैरवोयथा ।
सधन्यःसचविज्ञानीशिवतुल्योनसंशयः ॥ १९ ॥

इति गुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे
तृतीयः पटलः समाप्तः ॥ ३ ॥

इस प्रकार साधन करने पर निस्सन्देह मंत्र सिद्ध होजाताहै और वह साधक सर्व प्रकार की सिद्धियों का स्वामी होकर भैरव की समान विचरण करताहै । इसमें सन्देह नहीं कि जो मनुष्य इस प्रकार से साधन करताहै वही धन्यहै वही ज्ञानीहै और वही साक्षात् शिव स्वरूप होसकताहै ॥ १९ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां तृतीयः
पटलः समाप्तः ॥ ३ ॥

चतुर्थः पटलः ४.

श्रीपार्वत्युवाच ।

देवदेवमहादेव संसारार्णवतारक ।
अतिशीघ्रं फलंदेव केनोपायेनलभ्यते ॥ १ ॥

श्रीपार्वती जी बोलीं कि हे देवदेव महादेव ! तुम मनुष्यों को संसाररूपी सागर से उद्धार करते हो हे देव ! इस समय कौन

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

से उपाय के करने से मनुष्य शीघ्र सिद्धिको प्राप्त कर सकताहै वह आप कहिये ॥ १ ॥

श्रीशिव उवाच ।

शृणुपार्वतिवक्ष्यामि अतिगुप्ततरंमहत् ।
प्रकाशात्सिद्धिहानिःस्यात्तस्माद्यत्नेनगोपयेत् २

शिवजी बोले कि हे पार्वति ! मैं तुमसे अत्यन्त ही गुप्त साधन का उपाय कहता हूं सुनो इस साधन को प्रगट करने से सिद्ध कार्य में विघ्न उत्पन्न होंगे इस कारण इसको वडे यत्न के साथ छिपाकर रखना चाहिये ॥ २ ॥

स्वशक्तिंपरशक्तिंवा दीक्षितांयौवनान्विताम् ।
विदग्धांशोभनांशय्यां घृणालज्जाविवर्जिताम्॥३॥
तामानीयसाधकेन्द्रो दद्यात्पाद्यादिकंशुभम् ।
पश्चाचारेणतांशक्तिं पूजयित्वायथाविधि ॥ ४ ॥
शतंशीर्षेशतंभाले शतंसिन्दूरमण्डले ।
शतंमुखेशतंकण्ठे शतंहृदयमण्डले ॥ ५ ॥
शतयुग्मंस्तनद्वन्द्वे शतंनाभौजपेत्सुधीः ।
योनिपीठेशतंजप्त्वा साधकःस्थिरमानसः ॥ ६ ॥

अपनी शक्तिहो अथवा पराई शक्तिहो, दीक्षा लीहुई नवीन यौवन वाली अनेक गुणों से युक्त अत्यन्त ही सुन्दर, घृणा और

CC-0. In Public Domain. Sri Aurobindo Library, Pondicherry

tized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

लज्जा को छोडे हुए ऐसी शक्ति को अपनी शय्या के ऊपर बैठाल कर विविध प्रकारसे पाद्य उपहारादि देकर उसकी पूजा करै। इस प्रकार पंचाचार के क्रमसे उस शक्ति को यथाविधि पूजन कर मस्तक में सौबार, कपाल, में सौबार, मांग में सौबार मुख में सौबार कंठमें सौबार हृदय में सौबार, दोनों स्तनोंमें सौबार नाभिमें सौबार इष्ट मंत्रका जपकरना चाहिये इसके उपरान्त साधक एकाग्र चित्त होकर उस शक्तिकी योनिपीठ में सौबार इष्ट मंत्रका जप करै ॥ ३–६ ॥

एवंसहस्रं संजप्य देवींतत्रविचिन्तयेत् ।
स्वयंशिवस्वरूपश्च चिन्तयेत्साधकोत्तमः ॥ ७॥

साधक इस प्रकार से उस शक्ति की देह में सहस्र वार जप करके उसको अनेक इष्ट देवका स्वरूप जानें और फिर अपने को भी साक्षात् शिव माने ॥ ७ ॥

शिवमंत्रेणदेवेशि स्वलिङ्गंपूजयेदथ ।
ताम्बूलंतन्मुखेदत्त्वा साधकोहृष्टमानसः ॥ ८ ॥
तदनुज्ञांसमादाय योनौलिङ्गंविनिक्षिपेत् ।
धर्म्माधर्म्महविर्दीप्ते आत्माग्नौमनसास्रुचा ।
सुषुम्णावर्त्मनानित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम् ॥ ९ ॥

इसके पीछे अपने मुखमें और उस शक्ति के मुखमें ताम्बूलदे, फिर शक्ति की आज्ञा को लेकर मूल ग्रन्थ में लिखी हुई विधिका आश्रय ले साधन करे ॥ ८ ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

स्वाहेत्यनेनमन्त्रेण हुनेत्सर्वसमृद्धये ।
ततोजपेत्सहस्रं वै शक्तियुक्तोभवेन्नरः ॥ १० ॥
शतंवापिप्रजप्तव्यं ततोन्यूनंनकारयेत् ।
पूर्णाहुतिंततोदद्यान्मन्त्रेणानेनसाधकः ॥ ११ ॥
प्रकाशाकाशमन्त्राभ्यामवलम्ब्योन्मनीश्रुचा ।
धर्म्माधर्म्मकलास्नेहपूर्णमग्नौजुहोम्यहम् ॥ १२ ॥
स्वाहेत्यनेनमन्त्रेण पूर्णाहुतिं समाचरेत् ।
शुक्रोत्साधनकालेच देव्यैशुक्रंसमर्पयेत् ॥ १३ ॥

पीछे "धर्माधर्म हरिर्दीप्ते" इत्यादि मंत्र के अंत में स्वाहा शब्द का प्रयोग कर होम करना चाहिये इस प्रकार होम करने से साधक सब प्रकार की सिद्धि को प्राप्त कर सकता है फिर शक्ति युक्त होकर सहस्र अथवा सौबार इष्ट मंत्र का जप करै जिसमें सौ से कम नहो ऐसा करै । इसके उपरान्त मूलमें लिखे हुए "प्रकाशाकाश मंत्राभ्यां" इत्यादि मंत्र के अंत में स्वाहा शब्द लगाकर पूर्णाहुति दे और ** के समय महादेवी को वह ** प्रदान करे ॥ १०–१३ ॥

एवंकृतेमन्त्रसिद्धिर्नात्रकार्याविचारणा ।
यंयंप्रार्थयतेकामं तन्तंप्राप्नोतिनिश्चितम् ॥ १४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

tized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

जो साधक इस प्रकार से साधन करते हैं उनको निश्चयही मंत्र सिद्धि होजाती है इसके विपरीत न करना प्रथम कहे हुए साधन के करने से साधक जिस २ मनोरथ की इच्छा करैगा वह निश्चय ही उन्हीं २ द्रव्यों को पा सकैगा ॥ १३ ॥ १४ ॥

रोगीरोगात्प्रमुच्येत धनेनचधनाधिपः ।
वायुतुल्यबलोलोके दुर्जयःशत्रुमर्द्दनः ॥ १५ ॥

रोगी को रोग का नाश करने की इच्छा से जो प्रथम कहे हुएके अनुसार जो इच्छा करे साधन करै वह उसी समय उससे मुक्त होजायगा, धनकी इच्छा करनेवाला पुरुष कुवेर की समान धनवान होजायगा और बलकी इच्छा करनेवाला इसके साधन करनें से पवन की समान बलवान होगा, उसको कोई भी परास्त नहीं कर सकेगा और वह पुरुष शत्रुओंका विनाश करनेवाला होगा ॥ १५ ॥

कामतुल्यश्चनारीणां रिपूणांशमनोपमः ।
एतत्कल्पेनदेवेशि किंनासिध्यतिभूतले ।
अष्टैश्वर्य्यमवाप्नोति सएवश्रीसदाशिवः ॥ १६ ॥

इति गुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसम्बादे चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

स्त्रियोंमें अनुराग होने की इच्छा से प्रथम कहेहुए के अनुसार जो साधन करैगा तो उसको स्त्रियें कामदेव की समान देखैंगी शत्रु के मारने की इच्छा से जो इस का साधन करैगा शत्रुगण उसको यमराज की समान देखैंगे, हे देवेशि ! प्रथम कही हुई विधिके अनुसार साधन करै तब इस पृथ्वी में साधक को कुछ भी असिद्ध नहीं रहेगा अर्थात् सभीको सिद्ध कर सकैगा अणिमादि आठों सिद्धियें साधक को स्वयं प्राप्त होजांयगी और वह साधक साक्षात् सदा शिवकी समान होजायगा ॥ १६ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे भाषाटीकायां
चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

पंचमः पटलः ५.

श्रीपार्वत्युवाच ।

हे ईश्वरजगत्तात ममप्राणेश्वरप्रभो ।
इदानींश्रोतुमिच्छामि मासाधिकपुरस्क्रियाम्॥१॥

पार्वती जी बोलीं हे ईश्वर ! तुम समस्त संसार के पिता प्राणेश्वर और सबके प्रभु हो, मैं इस समय मासाधिक की पुरश्क्रिया के सुनने की इच्छा करतीहूं अर्थात् वर्ष के प्रथम महीने के प्रारंभ से लेकर दूसरे महीने तक किस प्रकार से जपकी संख्या बढाकर साल भर तक करनी होतीहै वही आप मुझसे कहिये ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

tized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

॥ श्रीशिव उवाच ॥

एकमासेतुषड्लक्षं द्विमासेरविलक्षकम् ।
मासत्रयेतुदेवेशि रन्ध्रयुग्मकलक्षकम् ॥ २ ॥
चतुर्मासेमहेशानि चतुर्विंशतिलक्षकम् ।
पञ्चमासेमहेशानि त्रिंशल्लक्षंसदाजपेत् ॥ ३ ॥
षण्मासेप्रजपेन्मन्त्रं षट्त्रिंशल्लक्षकंसदा ।
सप्तमासेमहेशानि द्विचतुर्लक्षकंसुधीः ॥ ४ ॥
अष्टमासेसुरेशानि गजवेदञ्चलक्षकम् ।
मासेतुनवमेदेवि वेदबाणञ्चलक्षकम् ॥ ५ ॥
दशमासेतुसम्प्राप्ते षष्टिलक्षञ्चसञ्जपेत् ।
मासेचैकादशेप्राप्ते लक्षंकालरसञ्जपेत् ॥ ६ ॥

शिवजी बोले कि हे पार्वति ! वर्षके पहले महीने में छे लाखबार इष्ट मंत्र का जप करना होताहै, और दूसरे महीने में बारह लाख तीसरे महीनें में अठारह लाख चौथे महीने में चौबीस लाख पांचवें महीनेंमें तीस लाख छठे महीने में छत्तीस लाख सातवें महीने में बयालीस लाख आठवें में अडतालीस लाख, नवें महीने में साठ लाख दसवें महीने में छासठ लाख ग्यारवें में नब्बे लाख बारवें महीने में सौ लाख जप करना चाहिये ॥ २–६ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

वर्षैपूर्णेमहेशानि शतलक्षंजपेत्सुधीः ।
अनेनैवविधानेन योजपेद्भुविमानवः ।
केवलंजपमात्रेण मन्त्राःसिद्धाभवन्तिहि ॥ ७ ॥

इस प्रकार नियम के अनुसार पृथ्वी में जो मनुष्य वर्षभर तक जप करताहै उसको केवल जपही से मंत्र सिद्ध होजाताहै ॥ ७ ॥

पञ्चाचारेणदेवेशि सर्वकार्यंजपादिकम् ।
पूर्ववच्छक्तिपूजाञ्च कुमारींचैवपूजयेत् ॥ ८ ॥

हे देवेशि ! पंचोपचार के क्रमसे प्रथम कहेहुए अनुसार जपादि करै और प्रथम के अनुसार शक्ति की पूजा और कुमारी की पूजा करनी होतीहै ॥ ८ ॥

यथाशक्तिब्राह्मणञ्च भोजयेद्विधिपूर्वकम् ।
तथातेनप्रकारेण शक्तिभोजनमाचरेत् ॥ ९ ॥

इसके उपरांत साधक विधिपूर्वक अपनी शक्ति के अनुसार ब्राह्मण भोजन और अपनी शक्ति को भोजन करावे ॥ ९ ॥

शक्तिंविनामहेशानिसदाहंशिवरूपकः ।
शक्तियुक्तोयदादेविशिवोऽहंसर्वकामदः ॥ १० ॥

हे महेशानि ! विनाशक्ति के मैंभी तो शव की समान हूं और जिस समय में शक्ति युक्त होजाता हूं तभी साधक को संपूर्ण मनोरथ के फल का देनेवाला सदाशिव कहलाता हूं ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

tized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

शक्तियुक्तंजपेन्मन्त्रंनमन्त्रंकेवलञ्जपेत् ।
सावित्रीसहितोब्रह्मासिद्धिश्चनगनन्दिनि ॥ ११ ॥

इस कारण शक्ति युक्त होकर मंत्रका जपकरना चाहिये साधक को विना शक्ति के जप करने से उसका कोई कार्य भी सिद्ध नहीं होता । हे पर्वतनंदिनि ! ब्रह्माजीने भी सावित्री की सहायता से सिद्धि लाभ कीहै ॥ ११ ॥

द्वारावत्यांकृष्णदेवः सिद्धोऽभूत्सत्ययासह ।
यथागोपवधूसङ्गान्ममसिद्धिर्वरानने ॥ १२ ॥
सशिवोऽहंमहादेविकेवलंशक्तियोगतः ।
तदैवपरमेशानिममवाक्यंवृथाभवेत् ॥ १३ ॥

श्रीकृष्णने द्वारकाजी में सत्यभामा की सहायता से सिद्धि को प्राप्त किया था हे सुन्दरी श्रीकृष्णने जिसप्रकार गोपिकाओंके साथमें सिद्धि प्राप्त करी है हमारी सिद्धिको भी उसी प्रकार शक्तिके संयोगसे जानो । हे महेश्वरि शक्ति के संयोगसे ही मैं सदाशिव कहलाताहूं हे देवेशि ! यदि शक्तिके संयोगसे भी साधकको सिद्धि प्राप्त नहो तो मेरे वचनोंको वृथा जानो ॥ १२ ॥ १३ ॥

गङ्गाकाशीप्रयागादिः पुष्करन्नैमिषन्तथा ।
बदरीचतथारेवाउत्कलङ्कण्डकीतथा ॥ १४ ॥
सिन्धुःसरस्वतीचैवपीठानिविविधानिच ।
सर्वंत्यक्त्वामहेशानिस्त्रीसङ्गंयत्नतश्चरेत् ॥ १५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

हेमहेश्वरि गंगा काशी प्रयागादि पुष्कर नैमिषारण्य बदरिका-श्रम रेवा उत्कल गंडकी सिंधु सरस्वती इत्यादि बहुत सारे पीठस्थान विद्यमानहैं, सिद्धिकी इच्छा करनेवाले साधक इन सब पीठस्थानों को छोडकर बडे यत्न के साथ स्त्रीका संग करैं ॥ १४ ॥ १५ ॥

स्त्रीसङ्गेसिद्धिमाप्नोतिममवाक्यंनचान्यथा ।
यद्दत्तञ्जलगण्डूषंशक्तिवक्त्रेसुरेश्वरि ॥ १६ ॥
सिन्धुरूपम्परेशानितज्जलंनात्रसंशयः ।
अन्नन्तुशैलतनयेस्थलाचलसमम्भवेत् ॥ १७ ॥

हे सुरेश्वरि स्त्रीके साथही में साधकको सिद्धि प्राप्त होसकतीहै, मेरा यह वचन कदापि व्यर्थ न हो जाता, शक्तिके मुख में यदि एक गंडूष की बराबर जल दिया जाय तौ वहभी समुद्र की समान होजाता है इसमें कुछभी संदेह नहीं अर्थात् शक्ति को एक गंडूष की समान जल देनेमें समुद्र के जलदान करने की समान फल होता है, और शक्ति को अन्नदान करने से अन्नके पर्वत की समान फल प्राप्त होता है ॥ १६ ॥ १७ ॥

एवंसंख्यातुसर्वत्रज्ञातव्याकुलसाधकैः ।
सदेष्टदेवीभावेतुभोजयेत्ताञ्चयत्नतः ॥ १८ ॥

इस प्रकार शक्ति को जो जो वस्तुदीजाती हैं उससे उसको ऊपर कहे हुए के अनुसार अनंत फल प्राप्त होताहै, इस कारण कुलवान्

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

tized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

साधक सर्वदा शक्ति को अभीष्ट देवता जानकर उसको यत्न से भोजन करावै ॥ १८ ॥

क्रोधान्मोहाच्छलाद्वापियदिपूजांनकारयेत् ।
कल्पकोटिशतेनापितस्यसिद्धिर्नजायते ॥ १९ ॥

यदि क्रोध के वश होकर मोह से अथवा छलयुक्त कोई साधक शक्तिकी पूजा न करे तो सौकरोड कल्प जप करने से भी उसको सिद्धि प्राप्त नहीं होसकती ॥ १९ ॥

एतत्सिद्धितमंदेवितवस्नेहात्प्रकाशितम् ॥
नवक्तव्यंपशोरग्रेशपथोमेत्वयिप्रिये ॥ २० ॥

इतिगुप्तसाधनतन्त्रेपार्वतीशिवसंवादे
पञ्चमः पटलः समाप्तः ॥ ५ ॥

हे देवि ! तुम्हारे स्नेह से यह सिद्धि होनेका विधान प्रकाश किया है इसको कभी भी पशु के समान आचार करनेवाले दुष्ट मनुष्योंके निकट प्रगट न करना हे प्रिये ! कभी भी तुम इस सिद्धिको जो पशुकी समान आचार करनेवाले कपटी पुरुष हैं उनके समीप कहोगी तौ तुमको मेरी शपथ लगैगी ॥ २० ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतंत्रेपार्वतीशिवसंवादे भाषाटीकायां
पंचमः पटलः समाप्तः ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

षष्ठः पटलः ६.

श्रीदेव्युवाच ।

शिवशङ्करईशानब्रूहिमेपरमेश्वर ।
दक्षिणायाःप्रकारन्तुसूचितन्नप्रकाशितम् ॥ १ ॥

देवी बोली–कि, हे शिव ! हे शङ्कर ! हे ईशान ! हे परमेश्वर ! इस समय दक्षिण कालिका के आराधनाकी विधि मेरे प्रति कहिये इससे पहले आपने उक्त पूजा की सूचना दी है, इस समय वही दक्षिण कालिका की पूजा विधि आप प्रकाश करिये ॥ १ ॥

इदानींश्रोतुमिच्छामियदितेऽस्तिकृपामयि ।
दक्षिणासिद्धिदासिद्धात्रैलोक्येषुसुदुर्ल्लभा ॥ २ ॥

हे नाथ ! यदि जो मेरे ऊपर आपका स्नेह और अनुराग हुआ है तो किस प्रकार दक्षिण कालिका में सिद्ध प्राप्त कर सकते हैं, वह आप मेरे निकट प्रकाशित करिये। इस आराधना के सुनने की मेरी बडी इच्छा है, यह त्रिलोकी में भी दुर्लभहै ॥ २ ॥

यामाराध्यमहादेवसृष्टिकर्त्ताप्रजापतिः ।
यामाराध्यमहाविष्णुःपालयत्यखिलञ्जगत् ॥ ३ ॥
संहारकालेचहरोरुद्रमूर्त्तिधरःपरः ।
तांविद्यांवदईशानयद्यहन्तववल्लभा ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

tized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

हे महादेव ! इस दक्षिण कालिका की पूजा करनेसे ही प्रजापति ब्रह्माजी सृष्टि के कर्त्ता हुएहैं, जिसकी आराधना के बल महाविष्णु जी अनन्त ब्रह्मांड का पालन करते हैं, और जिसके जप करने से रुद्र मूर्तिधारी हर, संहार के समय समस्त प्रजा का विध्वंस करते हैं, हे ईशान ! यदि मेरे ऊपर आपका प्रेम है तो वह महाविद्या आप मेरे निकट कहिये ॥ ३ ॥ ४ ॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

दक्षिणायाःप्रकारन्तुकालीतन्त्रादियामले।
अतःपरम्महेशानिविरताभवसुन्दरि ॥ ५ ॥

शिवजी बोले कि हे देवि ! काली तंत्र और यामल तन्त्र में ऊपर कहीहुई वह महाविद्या प्रकाशित है इस कारण से मैं उसके फिर प्रकाशित करने की इच्छा नहीं करताहूं, हे सुंदरि ! अब तुम अपनी अभिलाषा को छोड दो ॥ ५ ॥

॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥

एतत्प्रकारन्देवेशयदिमेनप्रकाशितम् ।
प्राणत्यागङ्करिष्यामिपुरतस्तेनसंशयः ॥ ६ ॥

फिर पार्वतीजी बोलीं कि हे नाथ ! जो आप मेरे निकट उस महाविद्या को नहीं कहेंगे तो मैं निश्चयही तुम्हारे सामने अपने प्राणों को त्याग दूंगी ॥ ६ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

॥ श्रीशिव उवाच ॥

शृणुदेविप्रवक्ष्यामिदक्षिणाकल्पमुत्तमम् ।
यस्याःप्रसङ्गमात्रेणभवाब्धौननिमज्जति ॥ ७ ॥

शिव जी बोले कि हे देवि! मैं तुमसे दक्षिण कालिका का कल्प कहताहूं, तुम सावधान होकर सुनो, इस दक्षिण देवी के प्रसङ्ग मात्र से ही मनुष्य को भवसागरमें डूबना नहीं होताहै ॥ ७ ॥

स्वरान्तंवह्निसंयुक्तंवामनेत्रविभूषितम् ।
बिन्दुनादकलायुक्तं मन्त्रन्त्रैलोक्यमोहनम् ॥ ८ ॥

ककार, रेफ, ईकार और नाद विंदु अर्थात् क, र, ई, एवं चन्द्रबिन्दु इन समस्त वर्णों के संयोगसे "क्रीं" यह वीज बनता है, फिर यही दक्षिण कालिका का मन्त्रहै इसी मन्त्रके प्रयोगसे मनुष्य त्रिलोकी को मोहित करसकताहै ॥ ८ ॥

भैरवोऽस्यऋषिःप्रोक्त उष्णिक्छन्दउदाहृतम् ।
दक्षिणाकालिकाप्रोक्तादेवतासर्वसिद्धिदा ॥ ९ ॥
मायाबीजंबीजमस्याःकूर्चबीजन्तुशक्तिकम् ।
निजबीजम्महेशानिकीलकंसर्वमोहनम् ॥ १० ॥
धर्म्मार्थकाममोक्षेषुविनियोगःप्रकीर्त्तितः ।
कालीतन्त्रादितन्त्रेषुपूजायागादिपार्वति ॥
लिखितञ्चमयापूर्वंकिमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥ ११ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

इसी मन्त्रसे ऋषि भैरव, छन्द उष्णिक और दक्षिण कालिका यह सब प्रकार की सिद्धि को देहै "ह्रीं" यह बीजही इस मन्त्र का बीज है "हुं" यह बीज इसकी शक्ति है "क्रीं" यह इस विद्या का कीलकहै ऊपर कहीहुई विद्या सभी को मोहित करतीहै अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, इसकी प्राप्ति के विषय में इसका विनियोग होताहै अर्थात् इस ऊपर कही हुई विद्या की आराधना से साधक धर्म, अर्थ, काम मोक्ष इन चारों पदार्थों को प्राप्त करसकता है, हे पार्वति ! मैंने काली तन्त्र में इस विद्या की पूजा की रीति और जप होम की विधि पहलेही कहीहै, हे देवि ! अब और तुम्हारे सुननेकी क्या इच्छाहै सो कहिये ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

ध्यानानुरूपिणीमूर्त्तिर्यदिपूजादिकंचरेत् ॥
अचारकीदृशस्तत्र कोवातत्रप्रपूजयेत् ॥ १२ ॥

फिर देवी जी बोलीं, कि यदि ध्यान के अनुसार मूर्त्ति की कल्पना कर पूजा करनी हो; तो किस प्रकार आचार से पूजा की जाय और कौनसा मनुष्य उस पूजा के करने का अधिकारीहै ॥ १२ ॥

भूतशुद्धौमहादेवयदिदेहन्तुनाशयेत् ।
कुत्रस्थलेभवेद्दृष्टिरमृतंकुत्रसञ्चरेत् ॥ १३ ॥

हे महादेव ! यदि भूत शुद्धि करने से देह का नाश होजाय तो कौनसा स्थान दृष्टि होगा, और कौन से स्थान में अमृत का संचरण करै ॥ १३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

आलीढङ्कीदृशन्नाथप्रत्यालीढन्तुकीदृशम् ।
कथंवाकालिकादेवीश्मशानालयवासिनी ॥ १४ ॥
निशावाकीदृशीनाथकीदृशीवामहानिशा ।
भावभेदेमहादेवतद्वदस्वदयानिधे ॥ १५ ॥

हे नाथ! तुमने पहले आलीढ और प्रत्यालीढ चरणों का उल्लेख कियाहै, सो आप मुझसे यह भली प्रकारसे कहिये कि किस प्रकारसे आलीढ हुआ और कैसे उसको प्रत्यालीढ कहागया, फिर किस कारण से वह कालिका देवी श्मशान वासिनी हुई हैं निशा और महानिशा किसको कहते हैं हे महादेव तुम मेरे ऊपर दया करके जो प्रश्न मैंने आपसे पूछेहैं उनका उत्तर यथावत दो १४।१५

॥ श्रीशिव उवाच ॥

शृणुदेविप्रवक्ष्यामियन्मांत्वंपरिपृच्छसि ।
तत्तत्सर्वंप्रवक्ष्यामिसावधानावधारय ॥ १६ ॥

शिवजी बोले कि हे देवि! तुमने मुझसे जो कुछ पूछाहै मैं उन सभी प्रश्नों का उत्तर तुमको भली प्रकार से दूंगा, तुम सावधान होकर सुनो ॥ १६ ॥

पूजायाःपूर्वदिवसेआदौक्षौरादिकञ्चरेत् ।
हविष्यान्नम्भोजनञ्चअथवापिनिरामिषम् ॥ १७ ॥

जिस दिन देवी की पूजा करनी हो उसके पहलेदिन साधक हजामत इत्यादि कर्मों से निश्चिन्त हो खीर और विना मांस का

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

भोजन करै अर्थात् उस दिन मांस को न खाय और जितेन्द्रिय होकर रहै, ॥ १७ ॥

ततःपरस्मिन्दिवसेप्रातःस्नात्वातुसाधकः ।
नित्यपूजांसमाप्यादौदेववच्छुद्धमानसः ॥ १८ ॥

इसके उपरान्त दूसरेदिन साधक प्रातःस्नानादि नित्य क्रियाओं से निश्चिन्त होकर नित्य की पूजा को समाप्त करके देवताओं की समान शुद्ध और निर्मल चित्त वाला होजाय ॥ १८ ॥

गुरुर्वागुरुपुत्रोवागुरुपत्नीचसुव्रते ।
आगमोक्तविधानेनअधिकारीगुरुःस्वयम् ॥१९॥

हे अच्छे चरित्रोंवाली ! पूजा के काम में गुरु, गुरु का पुत्र अथवा गुरु की स्त्री यही श्रेष्ठ हैं अधिकतर ऊपर कहेहुए विधानसे स्वयं गुरुही अधिकता से उस कार्य के विधान में गुरुको अधिकारी जानै ॥ १९ ॥

गुरोरभावेदेवेशिस्वयंपूजादिकञ्चरेत् ।
एभिर्विनामहेशानितान्त्रिकैर्देशिकैर्यदि ॥ २० ॥
तस्यपूजाफलंसर्वंभुज्यतेयक्षराक्षसैः ।
अतएवमहेशानिगुरुःकर्त्ताविधीयते ॥ २१ ॥

हे देवेशि ! गुरु के न होने से साधक अपने आपही पूजादि कार्य को करे, जिनको हम ऊपर पूजा का अधिकारी कह आयेहैं यदि उनमें से तो कोई मनुष्य कर्त्ता हो परन्तु और किसी तन्तु

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

के जानने वाले मनुष्य से पूजा का कार्य कराया जाय तो उस पूजा का फल यक्ष और राक्षस भक्षण करतेहैं । हे महेशानि ! इस कारण गुरुहीको पूजादि कार्य का कर्त्ता जानें ॥ २० ॥ २१ ॥

ब्रह्मरूपोगुरुःसाक्षाद्यदिपूजादिकंचरेत् ।
तत्तत्सर्वंमहेशानिशतकोटिगुणम्भवेत् ॥ २२ ॥

हे महेश्वरि ! गुरुही स्वयं ब्रह्मस्वरूप हैं यदि वह पूजा इत्यादि कार्यों को करैं, तो वह पूजा सौ करोड गुणा फल की देनेवाली होतीहै ॥ २२ ॥

अथवापरमेशानिस्वयम्पूजादिकञ्चरेत् ।
स्वयम्पूजादिकंकृत्वापूजाद्रव्यादिकञ्चयत् ॥ २३॥
तत्सर्वंपरमेशानि गुरोरग्रेनिवेदयेत् ।
गुरौदत्तेमहेशानिसर्वङ्कोटिगुणम्भवेत् ॥ २४ ॥

हे परमेश्वरि ! जब गुरु पूजा के समय न होंय, तो साधक अपने आपही पूजा कार्य करै, परन्तु अपने आप पूजा इत्यादि कार्य कर भी ले तो भी जितने पूजा के पदार्थ हों उन सभी को गुरुदेव के निकट रक्खै, गुरु को वह पूजा के द्रव्य अर्पण करै तब वह पूजा सौ करोड गुणा फल की देनेवाली होती है ॥ २३ ॥ २४ ॥

गुरुपत्नीमहेशानियदिपूजादिकञ्चरेत् ।
बलिदानादिकंसर्वंतत्रहोमंविवर्जयेत् ॥ २५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

होमीयद्रव्यमानीयदेव्यग्रेस्थापयेद्बुधः ।
मूलमन्त्रंसमुच्चार्यमहादेव्यैनिवेदयेत् ॥
तेनहोमफलञ्ज्ञातन्नचाग्नौहोमयेद्बुधः ॥ २६ ॥

फिर जिस समय गुरु की स्त्री पूजा का कार्य करै उस पूजा में बलिदानादि सम्पूर्णही कार्य करै, केवल होम न करै होम के सम्पूर्ण पदार्थ महादेवी के आगे अर्पण करै ऐसा करनेही से होम के फल की प्राप्ति होगी, अग्नि में आहुति देने की कुछ आवश्यकता नहींहै ॥ २५ ॥ २६ ॥

गुरुंविलंघ्यशास्त्रेऽस्मिन्नाधिकारीसुरोपिच ।
गुरुणायत्कृतन्देवितत्सर्वमक्षयम्भवेत् ॥ २७ ॥

ऊपर कहे हुए साधन के कार्य में गुरु को उल्लङ्घन करके देवताओं को भी पूजा का अधिकारी नहीं माने, हे देवि ! गुरु जो ही कार्य करैगा वह अक्षय फल का देनेवाला होगा अथवा उसका फल अक्षय होगा ॥ २७ ॥

ऋत्विक्पुत्रादयोदेविस्मृत्युक्ताबहवःप्रिये ।
तन्त्रोक्तंपरमेशानिनान्यद्वक्त्रंविलोकयेत् ॥२८॥

स्मृति इत्यादि शास्त्र में पुरोहित का पुत्र इत्यादि अनेक पूजा के अधिकारियों को लिखाहै, परन्तु हे प्रिये ! तन्त्र के ऊपर कहेहुए कार्य में और किसी दूसरे मनुष्यका मुख तक भी न देखै ॥ २८ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

इष्टपूजादिकंसर्वंयःकुर्याज्जनसान्निधौ ।
तस्यसर्वार्थहानिःस्यात्क्रुद्धाभवतिचण्डिका २९॥
वरम्पूजानकर्त्तव्यानकुर्य्याज्जनसान्निधौ ।
अन्यसन्निहितेदेवियदिपूजापरोभवेत् ॥ ३० ॥
विष्णुतन्त्रोक्तपूजादितत्तन्मुद्रांप्रदर्शयेत् ।
तेनपूजादिकञ्ज्ञातन्नचव्यक्तङ्कदाचन ॥ ३१ ॥
वामकुक्षौस्थितपापम्पुरुषङ्कज्जलप्रभम् ।
तस्यसंहारणार्थायमहतीप्रकृतीकृता ॥ ३२ ॥

जो साधक और किसी दूसरे मनुष्यों के सामने तन्त्र में कही-हुई पूजा को करता है तब उस कार्यमें संपूर्ण हानि होजाती है, और भगवती चण्डिका देवी क्रोधित होतीहैं, वरन तन्त्र में कहीहुई पूजा के कार्य को न करना चाहिये, तथापि मनुष्योंके सामने पूजा करना कर्त्तव्य नहीं, हे देवि ! यदि कभी भी किसी और मनुष्य के सामने कीजाय तो ऐसा करने से विष्णु तन्त्र में कहीहुई मुद्रा इत्यादिकों का दिखाना होताहै, ऐसा करनेसे पूजा के व्यक्ति होने की संभावना नहीं होगी, । अर्थात् तंत्र के समस्त कार्यों को छिपा कर रक्खै, जिस्में वह प्रगट न होसकैं, वही करना चाहिए ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

लिङ्गदेहोमहेशानितस्यदेहोनसंशयः ।
पापदेहम्भवेद्दग्धंस्वदेहन्नैवनाशयेत् ॥ ३३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

उदर के बांये भाग में काजर की समान जो पाप पुरुष की देह विद्यमानहै इस देह को जलाने की जो रीतिहै यह लिंग देह अर्थात् स्थूल शरीरही उस पाप पुरुष की देहहै, इसी को पाप देह कहतेहैं इसेही जलावैं, यथार्थ देह का नाश न करै पहली देह का नाश न करै, भूत शुद्धि के समय उस पापमय स्थूल शरीर को ही दग्ध किया जाताहै ॥ ३३ ॥

आलीढम्वामपादन्तुप्रत्यालीढन्तुदक्षिणम् ।
संहाररूपिणीकालीजगन्मोहनकारिणी ॥ ३४ ॥

बांये चरण को आलीढ और दांये चरण को प्रत्यालीढ कहा है, यह संसाररूपिणी कालीही इस अनन्त संसार को मोहित करतीहै ॥ ३४ ॥

वह्निरूपामहामायासत्यंसत्यन्नसंशयः ।
अतएवमहेशानिश्मशानालयवासिनि ॥ ३५ ॥

इन महामाया का अग्निस्वरूपहै, हे देवि ! तुम मेरे वचन को सत्यहीसत्य जानो, इसमें किसी प्रकारका भी संशय न करना, हे महेशानि ! वह महामाया अग्निस्वरूप कही जाकर श्मशानमें वास करतीहै ॥ ३५ ॥

आलीढपादासादेवीप्रत्यालीढाक्षणेक्षणे ।
अनन्तरूपिणींश्यामांकोवक्तुंशक्यतेप्रिये ॥ ३६ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

अनन्तरूपिणीश्यामाचतुर्वर्गफलप्रदा ।
गुरुणायस्ययत्प्रोक्तन्तत्तस्यब्रह्मसंहितम् ॥ ३७॥

दक्षिण कालिकादेवी सर्वदाही आलीढ चरणवाली हैं और यह क्षण २ में प्रत्यालीढ चरणकी हैं, अर्थात् सर्वकाल बांए चरणहीसे घूमा करतीहैं, इनके अनन्त रूपहैं । हे प्रिये ! यह किस समय कौनसा स्वरूप धारण करतीहैं यह निश्चय नहीं होसकता इसी कारण से इनके स्वरूप का निर्णय नहीं होसकताहै । श्यामा अनन्त रूपवालीहैं, इनके स्वरूप का भी निर्णय नहीं होसकताहै, यह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पदार्थोंको देतीहैं । इनश्यामा के विषय में गुरुजी जो कुछ भी कहैं उसके बीच में गुरु का वह उपदेशही ब्रह्म संहिता की समानहै इस कारण साधक गुरुके उपदेश के अनुसार श्यामा की आराधना करने से निश्चयही सिद्धि को प्राप्त करसकैगा ॥ ३६॥३७॥

निशातुपरमेशानिसूर्येचास्तमुपागते ।
प्रहरेचगतेरात्रौघटिकेद्वेपरेचये ॥ ३८ ॥
महानिशामहाख्याताततश्चातिमहानिशा ।
अर्द्धरात्रेगतेदेविपशुभावेनपूजयेत् ॥ ३९ ॥

हे परमेश्वरि ! सूर्यदेव के अस्त होतेही निशा कही जातीहै, रात्रि के एक पहर बीत जानेपर फिर दो घड़ी रात रहनेपर महानिशा कही जातीहै और इसके पीछे भी महानिशा होतीहै, रात्रिका पहला पहर बीतनेपर पशुभावसे देवीकी पूजा करनी चाहिये३८।३९

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

दशदण्डेतुयापूजातत्सर्वमक्षयम्भवेत् ।
षष्ठक्रोशेमहेशानितत्सर्वममृतोपमम् ॥ ४० ॥

दस घड़ीके समयमें यह पूजा कीजातीहै उस साधकको अक्षय फलकी प्राप्ति होतीहै छैः क्रोश अर्थात् बारह घड़ीके समयमें पूजा करके जो कुछ भी देवताके अर्पण किया जाताहै वही अमृतकी समान होजाताहै। देवताको अमृत देनेसे जिस प्रकारका फल होताहै उसी प्रकारसे इस पूजाका फल होताहै ॥ ४० ॥

सप्तमक्रोशकेदेविसर्वक्षीरोपमम्भवेत् ।
अष्टमक्रोशकेदेविद्रव्यतुल्यन्नसंशयः ॥ ४१ ॥

सातवें क्रोश अर्थात् चौदह घड़ी रात्रिमें पूजा करके जिन संपूर्ण पदार्थोंको अर्पण कियाजाता है तो जिस प्रकार से क्षीरसागरको दूधके अर्पण करनेसे देवताओं की तृप्ति होतीहै उसी प्रकार उस पूजा से भी तृप्ति होतीहै अष्टम क्रोशमें अर्थात् सोलह घड़ी रात्रि के समय में देवीकी पूजा करके जो कुछ अर्पण किया जाताहै उसको साधारण द्रव्योंकी समान जानें, साधारण प्रदान करने से जिस प्रकार फल होताहै सोलह घडी रात्रिके बीतनेपर देवीकी पूजा करनेसे भी वही फलहोताहै इसमें संदेह नहीं ॥ ४१ ॥

अतःपरम्महेशानिविषतुल्यन्नसंशयः ।
एतत्सर्वंमहेशानिपशुभावेमयोदितम् ॥ ४२ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

रात्रिको सोलह घडीं बीतजानेपर देवीकी पूजाके लिये जो कुछ द्रव्य दियाजाताहै वह विष की समानहै, देवीको विषके अर्पण करने से जिसप्रकारका फल हो, सोलह घडी बीतजाने पर पूजाके द्रव्य देने से भी वही फल होताहै, हे देवि ! मैंने यह समस्त विधि गुप्त भाव से कहीहै। जो मनुष्य पशुकी समान आचार करने वालेहैं वह लोग इसप्रकारकी बिधिका अवलम्बन करके देवीकी पूजा करैं ४२॥

दीव्यवीरमतेदेवितत्त्वज्ञानेप्रपूजयेत् ।
पञ्चतत्त्वंसमानीय यदिपूजापरोभवेत् ॥ ४३ ॥
कालाकालंमहेशानिविचारन्तत्रवर्जयेत् ।
अर्द्धरात्रेगतेदेविकुलपूजाप्रकीर्त्तिता ॥ ४४ ॥
अतिस्नेहेनदेवेशितवस्थानेप्रकाशितम् ।
पशोरग्रेप्रकाशंवैकदाचिन्नैवकारयेत् ॥ ४५ ॥

इतिगुप्तसाधनतन्त्रेपार्वतीशिवसंवादे
षष्ठः पटलः समाप्तः ॥ ६ ॥

हे देवि ! जोमनुष्य दिव्य वीरहैं वे तत्त्व ज्ञान से पूजा करैं, यदि साधक पंचतत्त्व को लाकर पूजा करने में तत्पर हों तो हे महेश्वरि ! वह पूजाके समय में कालाकालके विचारको छोडदें। और कौलिकाचारके मतसे आधीरातके बीत जानेपर जो पूजा की जातीहै उसीको कुलपूजा कहतेहैं ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ हे देवि ! तुम्हारे ऊपर मेरा अधिक

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

स्नेह है, इसीकारण मैंने तुमसे यह तन्त्र कहाहै तुमकभीभी इसको पशुकी समान आचार करनेवाले मनुष्योंके निकट न कहना, इसको सर्वदाही गुप्तभाव से-रखना ॥ ४५ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतंत्रेपार्वतीशिवसंवादे भाषाटीकायां षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

सप्तमः पटलः ७.

श्रीदेव्युवाच ।

भूतनाथजगद्वन्द्यजगन्निस्तारकारक ।
त्वांविनासंशयच्छेत्तानहित्राताचकुत्रचित् ॥ १ ॥

फिर श्रीपार्वती जी बोलीं कि, हे भूतनाथ ! तुम जगत्के पूज्य और जगत्को उद्धार करनेवाले हो, तुम मनुष्योंके मनके संशयको दूर करते हो तुम्हारे विना संसारसे उद्धार करनेवाला ऐसा और कोई नहीं है ॥ १ ॥

ब्रूहिमेजगतांनाथतत्त्वंपरमदुर्लभम् ।
येनज्ञानप्रसादेननिर्वाणपदमीयते ॥ २ ॥

हे जगन्नाथ ! तुम मेरे निकट इस अत्यन्त दुर्लभ परम तत्त्वको कहो, जिस तत्त्वज्ञानके बलसे साधक निर्वाण पदको पा सके उसको मैं जाननेकी इच्छा करती हूं ॥ २ ॥

कथ्यतांपरमेशानयदिस्नेहोऽस्तिमांप्रति ।
तवस्नेहान्महादेवपण्डिताहन्नचान्यथा ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

हे परमेश्वर ! यदि मेरे ऊपर आपका अधिक प्रेम है तो आप इस परमतत्त्वको मुझसे कहकर मेरी अभिलाषाको पूर्णकरो मैं तुम्हारी कृपा और स्नेहके वशसेही विद्या जाननेमें चतुर हुई हूं, सो इस समय आप मुझसे उस तत्त्वज्ञानको कहिये, इसके विपरीत न करना ॥ ३ ॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

त्रैलोक्येवातुलःख्यातोवातुलोहंसुरेश्वरि ।
वातुलस्यवचःश्रुत्वाप्रतीतात्वंकथंप्रिये ॥ ४ ॥

देवीके इस वचनको सुनकर शिवजी बोले. हे सुरेश्वरि ! मैं त्रिलोकी में बहुत बोलनेवाला विख्यात हूं, इस कारण यह तो सत्यही है कि मैं बहुत बोलता हूं, हे प्रिये ! वाचालके वचनोंको सुनकर तुम्हें संतोष नहीं होगा ॥ ४ ॥

त्वमेवपरमन्तत्त्वंकिमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ।
अतःपरंमहेशानिविरताभवसुन्दरि ॥ ५ ॥

हे देवि ! तुम वाचालके निकटसे किस परम तत्त्वके सुननेकी इच्छा करती हो ? इस कारण इस चेष्टाको छोड़दो ॥ ५ ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

यदितत्त्वंमहादेवनमेकथयसिप्रभो ।
प्राणत्यागङ्करिष्यामिपुरतस्तेनसंशयः ॥ ६ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

फिर जब महादेवजी कहचुके तब फिर देवीजी बोलीं कि, हे महादेव, जो तुम मुझसे उस परम तत्त्वको न कहोगे तो मैं निश्चयही तुम्हारे सामने अपने प्राणोंको त्याग दूंगी ॥ ६ ॥

श्रीशिव उवाच ।

सर्वतन्त्रेषुदेवेशिकथितञ्चमयापुरा ।
व्यक्तरूपेणदेवेशिकथम्पृच्छपुनःपुनः ॥ ७ ॥

तत्त्वज्ञानके विषयमें महादेवजीने पार्वतीजीका जब अत्यन्तही आग्रह देखा तो बोले हे देवेशि ! मैंने प्रथम सभी तन्त्रोंमें उस तत्त्वज्ञानको कहा है, फिर तुम किस कारणसे वार २ प्रगट रूपसे पूछती हो ॥ ७ ॥

तवस्नेहान्महादेविकिंमयानप्रकाशितम् ।
इमांकथांमहादेविव्यक्तरूपेचमावद ॥ ८ ॥

हे महादेवि ! मैंने तुम्हारे स्नेहके वश होकर क्या नहीं कहाहै, हे महादेवि ! यह कथा कभी भी किसीके निकट प्रकाश करके मत कहियो ॥ ८ ॥ .

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

तवैवपुरतःस्थित्वायदुक्तञ्चमयापुरा ।
तद्वाक्यम्परमेशानिकथंमिथ्याभविष्यति ॥ ९ ॥

फिर देवीजी बोलीं हे परमेश्वर ! मैंने प्रथम जो तुम्हारे सामने कहादिया फिर वह अब किस प्रकारसे मिथ्या होसकता है, मैंने

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

तुम्हारे सामने प्रतिज्ञा की है जो रहस्य छिपाकर रखनेका है उसको कभी भी किसीके सामने नहीं कहा जायगा ॥ ९ ॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

शृणुदेविप्रवक्ष्यामितत्त्वम्परमदुर्ल्लभम् ।
मन्त्रोद्धारक्रमेणैवतत्सर्वंकथयामिते ॥ १० ॥

इसके उपरांत शिवजी बोले ! हे देवि ! मैं उस अत्यंत दुर्लभ तत्त्वज्ञानको कहता हूं श्रवण करो । मन्त्रोद्धारके क्रमसे तुम्हें समस्त तत्त्वज्ञानका उपदेश करूंगा ॥ १० ॥

भान्तमकारसंयुक्तन्थान्तंवायुयुतंकुरु ।
बिन्दुयुक्तम्पुनर्भान्तमाकारंबिन्दुसंयुतम् ॥ ११॥
चन्द्रबीजंसमुच्चार्यअङ्कारंन्तदनन्तरम् ।
पुनर्भान्तन्तकारञ्चचन्द्रवायुयुतंशिरः ॥ १२ ॥
पुनर्भान्तम्महेशानिपञ्चमस्वरसंयुतम् ।
थान्तंवह्निसमारूढमाकारसंयुतंकुरु ॥ १३ ॥
पुनर्भान्तम्महेशानिसूर्य्यस्वरविभूषितम् ।
तान्तमुकारसंयुक्तन्धान्तमाकारसंयुतम् ॥ १४ ॥

भान्त, अर्थात् मकारमें अकार मिलाकर थांत, अर्थात् दकारमें यकार और बिंदुको मिलानेसे "मद्य" यह शब्द होता है । फिर दुबारा "भांत" अर्थात् मकारमें आकार और बिंदुको मिलानेसे

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

बिंदु संयुक्त अर्थात् चंद्रबीज अर्थात् सकारका उच्चारण करै तब "मांस" यह शब्द होगा, इसके बाद अकारमें मिला हुआ सकार और अस्वर तकारका उच्चारण करनेसे चन्द्रबीज अर्थात् सकार और वायु बीज, अर्थात् यकार इन दोनों वर्णोंको मिलाकर उनमें बिन्दुको मिलावे तब "मत्स्य" यह शब्द होता है, पीछे मकारमें पंचम स्वर, अर्थात् उकारके मिलानेसे "थांत" अर्थात् दकार और वह्नि अर्थात् र मिलाकर फिर इन दोनों वर्णोंमें अकारको लगावे ऐसा करनेसे "मुद्रा" यह शब्द होगा। फिर मकारमें सूर्य स्वर अर्थात् ऐ कारको मिलाकर "तान्त" अर्थात् थकार और उकारको मिलावै, पीछे धान्त, अर्थात् न इस वर्णमें शिर या अं इन वर्णोंको मिलानेसे इससे "मैथुनं" यह शब्द होता है ॥११॥१२॥१३॥१४॥

पञ्चतत्त्वमिदन्देविसर्वतन्त्रेषुगोपितम् ।
यदिविप्रोभवेद्देविपञ्चतत्त्वपरायणः ॥ १५ ॥

हे देवी ! मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन इनकोही पंच-तत्त्व अथवा पंचाचार कहतेहैं। यह पंचतत्त्व सब तन्त्रोंसे छिपा है, हे देवि ! भाग्यहीके वशसे कोई ब्राह्मण इस तत्त्वका जाननेवाला होसकता है, और साधारण ब्राह्मण इस तत्त्वको नहीं जान सकता १५

सत्यंसत्यंमहेशानिपरतत्त्वेप्रलीयते ।
यथाजलन्तोयमध्येलीयतेपरमेश्वरि ॥
तथैवतत्त्वसेवायांलीयतेपरमात्मनि ॥ १६ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

पंचतत्त्वका जाननेवाला साधक ही इस परम तत्त्वमें लीन होसकता है, हे महेशानि ! मेरे इस वचनको तुम सत्यही सत्य जानो, हे परमेश्वरि! जिस प्रकारसे जलमें जल लय होजाता है, उसी प्रकार पंचतत्त्वके जाननेसे साधक परमात्मामें लय होजाता है ॥ १६ ॥

क्षत्रियः परमेशानिसहयोगेवसेद्‌ध्रुवम् ।
वैश्यस्तुलभतेदेविस्वरूपंनात्रसंशयः ॥ १७ ॥

पंचतत्वका जाननेवाला क्षत्री देवीके साथ निवास करताहै, और जो वैश्य पंचतत्त्वका ज्ञाता हो तो वह देवीके स्वरूपमें मिलजाता है इसमें कुछभी संदेह नहीं है ॥ १७ ॥

शूद्रस्तुपरमेशानिसहलोकेसदावसेत् ।
एतदन्योमहेशानियदितत्त्वपरायणः ॥ १८ ॥
सत्यंसत्यम्महेशानिमुक्तिःफलमखण्डितम् ।
सेनानीपरमेशानिदेवीदेहेप्रलीयते ॥ १९ ॥

हे परमेश्वरि ! यदि शूद्र जाति का मनुष्य भी पंचतत्त्व का जानने वाला होजाय तो वह शूद्र देवी के साथ देवीलोक में निवास करता है, हे महेशानि ! यदि इनके अतिरिक्त कोई अन्य मनुष्य पंचतत्त्व का जाननेवाला हो तो उसकी मुक्ति होजाती है मेरे इनवचनों को सत्यही सत्य जानो यह वचन कभी अन्यथा नहीं होंगे, हे देवि ! यदि कोई सेना का पुरुष पंचतत्व का ज्ञाता हो जाय तो वह देवी की देह में लीन होजाता है ॥ १८॥१९ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

शोधनञ्चमयाप्रोक्तन्नीलतन्त्रादियामले ।
नकस्मैचित्प्रवक्तव्यम्प्रकाशाच्छिवहाभवेत् २०॥

इतिगुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे
सप्तमः पटलः समाप्तः ॥ ७ ॥

हे देवि ! मैंने नील • तन्त्र व यामल तन्त्र इत्यादि में पांचों तत्त्वों की शुद्धि कही है, इस समय तुम्हारे निकट भी मैंने उसी पंचतत्त्व को कहा है, तुम इसको कभी किसीके प्रति मत कहना, इस-पंचतत्त्वके प्रगट करने से शिव के संहार करने का पाप लगेगा ॥ २० ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां
सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥

अष्टमः पटलः ८.

श्रीशिव उवाच ।

अतःपरम्प्रवक्ष्यामिसिद्धारिचक्रमुत्तमम् ।
अस्यविज्ञानमात्रेणमन्त्रसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥
यद्विनापरमेशानिमन्त्रसिद्धिर्भवेन्नहि ॥ १ ॥

शिवजी बोले कि, इसके पीछे सब तन्त्रों में कहा हुआ अब सिद्धारि चक्र कहता हूं. इस चक्र के विना जाने मनुष्य को मन्त्र सिद्धि नहीं होती ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

चतुरस्रंलिखेत्कोष्ठंयावत्षोडशकोष्ठकम् ।
तावदङ्कान्प्रयत्नेनरचयेत्साधकोत्तमः ॥ २ ॥

पहले पहले चार कोन का चक्र बनावे, फिर उस में साधक यत्न के साथ सोलह खाने बनावे ऐसा करनेसे एक चक्र बन जायगा ॥ २ ॥

तत्रवर्णान्लिखेन्मन्त्रीप्रकारंशृणुसादरम् ।
इन्द्वग्निरुद्रनवनेत्रयुगार्कदिक्षु ऋत्वष्टषोडशच-
तुर्दशभौतिकेषु । पातालपञ्चदशवह्निहिमांशुकोष्ठे
वर्णान्लिखेल्लिपिभवान्क्रमशस्तुधीमान् ॥ ३ ॥
सिद्धःसिद्ध्यतिकालेनसाध्यस्तुजपहोमतः ।
सुसिद्धोग्रहणाद्देविरिपुर्मूलन्निकृन्तति ॥ ४ ॥

फिर इन खानों में जिसप्रकार से अक्षरोंका रखना होगा सो कहताहूं आदर पूर्वक सुनो, पहले खाने में अ, तीसरे खाने में बडा आ, ग्यारहवें खाने में इ, नौमें खाने में बड़ी ई, दूसरे खाने में उ, चौथे खाने में बडा ऊ, बारहवें खाने में ऋ, दशवें खाने में बडी ॠ, छठे खानेमें ऌ, आठवें खाने में ॡ सोलह वें खाने में ए, चौदहवें खाने में ऐ, पांचवें खाने में ओ, सातवें खाने में औ, पंद्रहवें खाने में अं, और तेरहवें खाने में अः, इस प्रकार से सोलह खानों में सोलह स्वरों को लिखै फिर इसी नियमसे सोलह कोठों में क से लेकर ह तक सब व्यंजनों को भी लिखै ॥ ३ ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

इत्यादिकंफलन्देविपूर्वाम्नायेमयोदितम् ।
नामानुरूपमेतेषांशुभाशुभफलंलभेत् ॥ ५ ॥
शृणुदेविप्रवक्ष्यामिगणनाक्रममुत्तमम् ।
नामाद्यक्षरतोदेवियावन्मन्त्रादिमाक्षरम् ॥ ६ ॥

इस प्रकार से चक्र को अङ्कितकर, सिद्ध साध्य सुसिद्ध अरि इस प्रकार से गिनती करै सिद्ध मन्त्र को ग्रहण करतेही वह कालांतर में सिद्ध होताहै, साध्य मन्त्र को ग्रहण कर जप और होम करै तब यह मन्त्र सिद्ध होता है, और सुसिद्ध मन्त्र तो ग्रहण करतेही सिद्ध होजाताहै, रिपु मन्त्र के ग्रहण करनेसे साधक का सर्वनाश होजाता है, हे देवि ! इसीप्रकार से सिद्धारि चक्रका फल पहले मैंने भलीप्रकार से आम्नाय तन्त्र में कहाहै, विशेष करके, साध्य सिद्ध सुसिद्ध अरि इनके नामानुसार शुभाशुभ फल जानना चाहिये ॥ ५ ॥ ६ ॥

कादिडांतंखादिढान्तङ्गादिणान्तंघतान्विते ।
ङादिथान्तश्चादिदान्तंछादिधान्तञ्जनान्तिके॥७॥

हे देवि ! इस समय ऊपर कहेहुए चक्र से जिस प्रकारसे गिनती होती है वह कहताहूं. तुम सुनो साधक मन्त्रके ग्रहण करनेवालेके नामका पहला अक्षर और मन्त्र के पहले अक्षर तक साध्य, सिद्ध, सुसिद्ध, अरि, इसप्रकार से गिनै ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

झादिपान्तंञादिफान्तंटादिवान्तंठभान्तिके ।
डादिमांतण्ढादियान्तंणादिरान्तंतलांतिके ॥ ८ ॥

(क) से लेकर (ड) तक (ख) से लेकर (ढ) तक (ग) से लेकर (ण) तक, (घ) से लेकर (त), (ङ) से लेकर (थ) तक, (च) से लेकर (द) तक, (छ) से लेकर (ध) तक, (ज) से लेकर (न) (झ) से लेकर (प) तक, (ञ) से लेकर (फ) तक, (ट) सेलेकर (ब) तक, (ठ) से लेकर (भ) तक, (ड) से लेकर (म) तक, (ड़) से लेकर (य) तक, (ण) से लेकर (र) तक, और (त) से लेकर (ल) तक, सिद्धादिकी गिनती करै ॥ ८ ॥

वर्णत्रयम्महेशानिकोष्ठेपञ्चदशेप्रिये ।
आदिकोष्टेचतुर्वर्णान्विलिखेत्साधकोत्तमः ॥ ९॥

पहले कहे हुयेके अनुसार वर्णोंको रखकर फिर एक २ खानेमें तीन २ अक्षरोंको लिखे, केवल पहले खानेमें चार अक्षर होंगे ॥ ९ ॥

वर्णाष्टकंगृहीत्वातु कथितन्तवसुव्रते ।
कोष्ठस्थितान्समादायगणनामाचरेत्सुधीः ॥
नामाद्यक्षरसंयुक्तंसिद्धिकोष्ठम्प्रकीर्त्तितम् ॥ १०॥

हे प्रिये ! साधक इसप्रकारसे चक्रको निर्माणकर उसमें अक्षरोंको रक्खै, बुद्धिमान साधक समस्त कोठोंके वर्णोंको ग्रहणकर गिनती करै, फिर जिस खानेमें नामका पहला अक्षर दृष्टि आवे उसीको सिद्ध कोठा जानै ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

अथातःसम्प्रवक्ष्यामिपूजाकारन्तुसिद्धिदम् ।
यंविनापरमेशानिनाहिसिद्धिःप्रजायते ॥ ११ ॥

हे सुरेश्वरि ! इसके पीछे पूजाकी रीति कहता, हूं तुम सुनो, यह पूजा ही साधकको सिद्धिकी देनेवाली है, पूजाके विना किसीप्रकार सेभी सिद्धि नहीं होसकती ॥ ११ ॥

शालग्रामेमणौयन्त्रेप्रतिमायांसुरेश्वरि ।
पुस्तिकायाञ्चगङ्गायांसामान्येचजलेतथा ॥ १२ ॥
अथवापुष्पयन्त्रेचपूजयेच्छिवलिङ्गके ।
यन्त्रभेदेनदेवेशिफलंसम्यक्प्रजायते ॥ १३ ॥

शालग्राममें, शिलामें, मणिमें, यन्त्रमें, प्रतिमामें, पुस्तकमें, गङ्गामें, सामान्य जलमें, पुष्प यन्त्रमें, अथवा शिव लिंगमें साधक देवीकी पूजा करै, हे देवेशि ! मैं विशेष करके यन्त्र भेदसे पूजा करनेसे उसका फल न्यूनाधिक होता है ॥ १२ ॥ १३ ॥

शालग्रामेशतगुणम्मणौतद्वत्फलंलभेत् ।
यन्त्रेलक्षगुणम्प्रोक्तम्प्रतिमायांतथैवच ॥ १४ ॥

शालग्राम और शिलामें देवीकी पूजा करनेसे उस पूजा का सहस्र गुणा फल होता है, मणिमें पूजा करनेसे उक्तरूप से फल होता है यंत्र और प्रतिमा में पूजाकरनेसे लाखगुणा फल कहा है ॥ १४ ॥

पुस्तिकायाञ्चगंगायांसमानफलमीरितम् ।
समान्येचजलेदेविपूजादिदोषशान्तये ॥ १५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

पुस्तक और गङ्गामें देवीकी पूजा करनेसे समान फल होता है, सामान्य रूपसे जलमें पूजा करनेसे केवल पूजाके दोषोंकी शान्ति ही होती है अर्थात् दीक्षित मनुष्य जो इष्ट देवताकी पूजा न करै उससे जो दोष होता है इस पूजासे उसही दोषकी शान्ति होती है। और कोई विशेष फल नहीं होता ॥ १५ ॥

पुष्पयन्त्रेमहेशानिपूजनात्सर्वसिद्धिभाक् ।
शिवलिंगेमहेशानिअनन्तफलमीरितम् ॥ १६ ॥

हे महेशानि ! पुष्प यंत्रमें पूजा करनेसे साधककों को सब सिद्धि प्राप्त होसकती है. और शिव लिंगमें पूजा करनेसे अनन्त फल होता है ॥ १६ ॥

नकुर्यात्पार्थिवेलिङ्गेदेवीपूजादिकाःक्रियाः ।
पार्थिवेपूजनाद्देविसिद्धिहानिःप्रजायते ॥ १७ ॥

हे प्रिये ! पार्थिव लिंगमें तो कभी भी देवीकी पूजा न करै, हे देवि ! पार्थिव लिंगमें पूजा करनेसे सिद्धिकी हानि होतीहै ॥ १७ ॥

यदिदैवान्महेशानिमृत्तिकास्खलनम्भवेत् ।
तावद्वर्षसहस्त्राणिनरकेपूर्णशोणिते ॥ १८ ॥

हे महेशानि ! पार्थिव लिंगमें पूजा करनेके समय यदि दैवात् उस लिंगमें से जरासी मट्टी भी खसक जाय तौ जितने उस मट्टीके कण गिरेंहैं उतनेही वर्षोंतक पूजा करनेवाला नरकमें बास करता है ॥ १७ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

कुम्भीपाकेमहाघोरेपच्यतेपितृभिःसह ।
अतएवमहेशानिपार्थिवेनहिपूजयेत् ॥ १९ ॥

इस कारणसे पार्थिव लिंगकी पूजाके समयमें यदि उसमेंसे मट्टी खसक जाय तौ वह अपने पितरोंके सहित महाघोर कुम्भीपाक नरकमें वास करताहै, हे महेशानि ! इस कारण पार्थिव लिंगमें कदापि पूजा न करै ॥ १९ ॥

स्फाटिकादीन्समानीयलिङ्गन्निर्माययत्नतः ।
तल्लिंगेपूजनाद्देविसर्वसिद्धियुतोभवेत् ॥ २० ॥

इति गुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे
अष्टमःपटलःसमाप्तः ॥ ८ ॥

साधक स्फटिकादि मणिओं को लाकर यत्न के साथ लिंगको निर्माणकर उस लिंगकी पूजा करै, ऐसा करनें से वह साधक सर्व सिद्धिवान होसकता है ॥ २० ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे उमामहेश्वरसंवादे भाषाटीकायां
अष्टमः पटलः समाप्तः ॥ ८ ॥

नवमः पटलः ९.

शिव उवाच ।

अथातःसम्प्रवक्ष्यामिधनदांसर्वसिद्धिदाम् ।
यामाराध्यमहादेविकुबेरोधननायकः ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

शिवजी बोले कि, इसके उपरान्त अब मैं धनदा देवी का मन्त्र और उसके पूजाकी विधिको कहताहूं यह धनदा देवी साधक को सबप्रकार की सिद्धियें प्रदान करती हैं इन्हीं धनदा देवीकी पूजा करने से यक्षराज कुबेर धनाध्यक्ष हुयेहैं ॥ १ ॥

यत्प्रसादान्महेशानिरमेच्चत्रिदशेश्वरः ।
तांविद्यांपरमेशानिशृणुष्ववरवर्णिनि ॥ २ ॥

जिनकी कृपा और प्रसाद को प्राप्तकर राजा इन्द्रनें अतुल सम्पत्ति प्राप्त की है, हे सुन्दरि ! उसी विद्याको मैं तुमसे कहता हूं सुनो ॥ २ ॥

दान्तम्बिन्दुसमारूढम्महामायांहरिप्रियाम् ।
रतिप्रियेततःपश्चाद्वह्निजायांततःप्रिये ॥
नवाक्षरोमहामन्त्रोद्भुतंसिद्धिप्रदायकः ॥ ३ ॥

प्रिये ! धं, ह्रीं, श्रीं, रति प्रिये स्वाहा" यह नौ अक्षर का मन्त्र है इस मन्त्र से साधक को शीघ्रही सिद्धि प्राप्त होती है ॥३॥

अनयासदृशीविद्याअनेनसदृशोजपः ।
अनयासदृशीसिद्धिर्ममज्ञानेनवर्त्तते ॥ ४ ॥

हे देवि ! इस विद्या की समान विद्या, इस मंत्रके जपकी समान जप, और इस मन्त्र सिद्धि की समान सिद्धि और मैं नहीं जानता ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

शतवक्त्रोयदिभवेद्भावंवक्तुंनशक्यते ।
पञ्चवक्त्रेणदेवेशिकथ्यतेकिम्मयाऽधुना ॥ ५ ॥

यदि कोई सौमुखों सेभी इस विद्याके माहात्म्य वर्णन करने को कटिबद्ध हो तौभी इसके सम्पूर्ण माहात्म्य का वर्णन नहीं कर सकेगा, हे देवेशि ! भला फिर मैं अपने पांच मुखों से उसका वर्णन कैसे कर सकताहूं ? ॥ ५ ॥

कुबेरोऽस्यऋषिःप्रोक्तःपंक्तिश्छन्दउदाहृतम् ।
देवताधनदादेवीसर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥ ६ ॥

इस मन्त्रके ऋषि कुवेरहैं, और छन्द पंक्तिहै, देवता धनदा देवी कहीहैं, यह धनदा देवी साधक को सबप्रकार की सिद्धि देती हैं ॥ ६ ॥

धर्मार्थकाममोक्षाख्यचतुर्वर्गफलप्रदा ।
षड्दीर्घमायया चैवषडङ्गन्यासमाचरेत् ॥ ७ ॥

धनदा देवी साधक को धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों पदार्थों को देतीहैं हां हृदयाय नमः, हीं शिरसे स्वाहा, हूं शिखायै वषट् हैं कवचाय हुं, हौं नेत्रत्रयाय वौषट्, हः अस्त्राय फट् इसप्रकार से देवी का षडङ्गन्यास करना चाहिये ॥ ७ ॥

ध्यानमस्याःप्रवक्ष्यामियेनसिद्धोभवेन्नरः ।
देवींकाञ्चनकान्तिमिंदुविमलांरक्तांशुकाच्छादितां
हेमाम्भोजयुगाभयांकुशकरांरत्नोल्लसत्कुण्डलाम् ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

सर्वाभीष्टफलप्रदांत्रिनयनांनागेन्द्रहारोज्ज्वलां
वन्देसर्वभयापहांत्रिजगतांपापापहारींपराम् ॥८॥

इसके उपरान्त धनदा देवी का ध्यान कहताहूँ श्रवण करो, इस-प्रकार ध्यानके अनुसार देवी के स्वरूप को विचार कर चिन्ता करने से साधक सर्वप्रकार की सिद्धिको पासकता है, धनदा देवी के शरीर की कांति निर्मलहै शुद्ध और काञ्चनकी समान इनका सफेद वर्णहै, यह लाल वस्त्रों को धारण करती हैं, इनके चारों हाथों मेंसे दो में सोनें के दो पद्म और दो में अभय मुद्रा और अंकुश विद्यमान है, यह रत्न जटित कुंडलों को धारण करे शोभा पारही हैं, और सर्वदाही साधक को सवप्रकार के इच्छानुसार फल देती हैं, धनदा देवी के तीन नेत्रहैं, इनके गले में सर्पों की माला पडीहैं धनदा देवी सबका भय और त्रिलोकी के पाप का हरण करतीहैं, ऐसी उन परदेवीको नमस्कार करता हूं ॥ ८ ॥

स्वकीयात्मस्वरूपान्तांभावयेच्चित्स्वरूपिणीम् ।
एवन्ध्यात्वामहेशानिमानसैःपूजनञ्चरेत् ॥ ९ ॥

इन चित्त स्वरूपिणी देवता को अपने स्वरूपमें भावना करै, हे महेशानि ! साधक इसप्रकार से देवीका ध्यान कर मानसोपचारसे पूजा करै ॥ ९ ॥

अर्घ्यपात्रंस्थापयित्वाधेनुयोनिम्प्रदर्शयेत् ।
पीठपूजांततःकृत्वाततःपीठमनुञ्जपेत् ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

इसकेउपरान्त अर्घको स्थापनकर धेनु और योनि मुद्राको दिखाना चाहिये इसके पीछे पीठ देवताकी पूजा करके पीठ मन्त्रका जप करै ॥ १० ॥

आधारशक्तिमारभ्ययजेत्पद्मासनंप्रिये ।
प्रणवादिनमोऽन्तेनपूजयेत्साधकाग्रणीः ॥ ११ ॥

हे प्रिये ! आधार शक्तिसे पद्मासन तक पीठ देवताओंके नामकी आदिमें प्रणव (ओम्) और अन्तमें नमः शब्दका योगकर पूजा करनी चाहिये ॥ ११ ॥

पुंनर्ध्यात्वामहेशानिमूलेनावाहनञ्चरेत् ।
षडंगेनचसम्पूज्यजीवन्यासंसमाचरेत् ॥ १२॥

इसके पीछे फिर ध्यानकर मूल मन्त्रसे आवाहन पूर्वक ह्रां हृदयाय, नमः इत्यादि के क्रमसे षड़ङ्ग पूजा को समाप्त कर जीवन्यास करै ॥ १२ ॥

मूलमंत्रंसमुच्चार्यततोद्रव्यंसमुच्चरेत् ।
देवतायैततः पश्चाद्योगात्मकमनुंस्मरेत् ॥ १३ ॥

आगे मूल मन्त्रका उच्चारणकर पूजाके समस्त द्रव्योंके नामोंको लेकर फिर उसमेंसे चतुर्थ्यन्त देवाताओं के नामका उच्चारणकर पूजाके समस्त द्रव्योंको देवीके आगे समर्पण करै ॥ १३ ॥

पाद्याद्यैःपूजयेद्देवींयथाविभवविस्तरैः ।
यन्त्रमस्याःप्रवक्ष्यामितज्ज्ञात्वामृतमश्नुते॥ १४॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

इस प्रकार से अपनी शक्तिके अनुसार पाद्यादि उपहारोंसे देवीकी पूजा करै। इसके पीछे अब मैं धनदा देवीकी पूजाका यन्त्र कहताहूं, इस यन्त्रके जाननेसे साधक सबप्रकारसे मुक्तिको प्राप्तकर सकता है ॥ १४ ॥

नवयोन्यात्मकंचक्रंविलिखेत्कर्णिकोपरि ।
दिग्दलम्पद्ममालिख्यचतुरस्रन्ततोबहिः ॥ १५ ॥
कोणेषुवज्रंसंलिख्यमध्येबीजंसमुल्लिखेत् ।
इदंयन्त्रंमहेशानिसाक्षाद्देवीस्वरूपकम् ॥ १६ ॥
लक्ष्मींपद्मांपद्मालयांश्रियञ्चवाहरिप्रियाम् ।
शवाञ्चकमलाञ्चैवअब्जांचचञ्चलान्तथा १७॥
लोलाञ्चप्रणवाद्यैतान्नमोऽन्तेनप्रपूजयेत् ।
पुनर्मध्येततोदेवींपूजयेत्साधकोत्तमः ॥ १८ ॥

कर्णिका के बीचमें नवयोनिमय चक्र लिखै, उसके पीछे दशदल पद्म अङ्कितकर उसके बाहर चार कोने खैंचै, इन चार कोनोंके बीचमें वज्रको लिखकर कर्णिकाके बीचमें "धं" यह बीज लिखै, हे महेशानि ! यह मंत्र साक्षात् देवीका स्वरूप है ॥ १५ ॥ १६ ॥ इसके उपरान्त लक्ष्मी, पद्मालया, श्री, हरिप्रिया, शवा, कमला, आजा, चञ्चला. लोला यह सब देवताओंके चतुर्थ्यन्त नामकी आदिमें प्रणव और अन्तमें नमः शब्दको लगाकर पूजा करै ॥ १७ ॥ १८॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

प्राणायामंततःकृत्वायथाशक्तिजपञ्चरेत् ।
गुह्यादिकञ्जपफलन्देव्याहस्तेसमर्पयेत् ॥ १९ ॥

इसके पीछे प्राणायामकर अपनी शक्तिके अनुसार मूल मन्त्रका जप करै और "गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वमित्यादि" इस मन्त्रसे देवीके हाथमें जप समर्पण करै ॥ १९ ॥

प्राणायामन्ततः कृत्वाप्रणामाष्टाङ्गमाचरेत् ।
अथोत्थायमहेशानिविशेषार्घ्यंनिवेदयेत् ॥ २० ॥

अनन्तर पुनर्वार प्राणायामकर अष्टांग प्रणाम करै, फिर उठकर विशेष अर्घ्यको निवेदन करै ॥ २० ॥

आत्मसमर्पणंकृत्वाविहरेच्चयथेच्छया ।
किञ्चिन्नैवेद्यंस्वीकृत्यनिर्माल्यंधारयेत्ततः ॥ २१ ॥

इसके पीछे साधक देवीको अपनेको समर्पण करके इच्छानुसार विहार करै ॥ २१ ॥

लक्षमेकञ्जपेन्मत्रन्दशांशंहोममाचरेत् ।
तद्दशांशन्तर्पणञ्चअभिषेकंदशांशकम् ॥ २२ ॥
अतःकुर्यान्महेशानिदशांशविप्रभोजनम् ।
एवंकृत्वामहेशानिसाक्षात्सुरगुरुःप्रभुः ॥ २३ ॥

इस देवताके पहले कहे हुये मन्त्रको एकलाख जपै, इस जपसे दशांश होम, होमसे दशांश तर्पण करना चाहिये और तर्पणसे दशांश

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

ब्राह्मणोंका भोजन कराना योग्य है । हे महेश्वरि ! साधक इसप्रकारसे धनदा देवीकी आराधना करनेसे साक्षात् देवताओंके गुरुकी समान होसकता है ॥ २२ ॥ २३ ॥

तस्यहस्तेमहेशानिसर्वसिद्धिर्नसंशयः ।
नित्यन्नित्यम्महेशानिईश्वरोयच्छतेधनम् ॥ २४ ॥
लक्ष्मीःसरस्वतीचैवनिवसेन्मंदिरेसुखे ।
इहलोकेमहेशानिमहेन्द्रोजायतेक्षितौ ॥ २५ ॥

हे महेशानि ! जो साधक इस रीतिको ग्रहणकर धनदा देवीकी पूजा करता है उसके हाथमें सबप्रकारकी सिद्धियें विद्यमान हैं, इसमें सन्देह नहीं हे सुन्दरि ! इसप्रकारकी पूजा करनेसे प्रतिदिन ईश्वर उसको धन देता है और सर्वदा उसके घरमें लक्ष्मी और सरस्वती बास करतीहैं । और इसप्रकारसे साधक पृथ्वीमें जन्म लेकर इन्द्रकी समान होता है ॥ २४ ॥ २५ ॥

मोक्षाकांक्षीमहेशानिमहामोक्षमवाप्नुयात् ।
भोगार्थीलभतेभोगान्यथेच्छंवर्त्ततेऽचिरात् ॥२६॥
इहलोकेसुखम्भुक्त्वामृतोगच्छेद्धरेःपदम् ।
मृतोराजकुलेभूयोजन्मचाप्नोतिसाधकः ॥ २७ ॥
अथातःसम्प्रवक्ष्यामिधनदास्तोत्रमुत्तमम् ।
यद्गुप्तंसर्वतन्त्रेषुइदानींतत्प्रकाशितम् ॥ २८ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

हे महेशानि ! मोक्षकी इच्छा करनेवाला पूजा करनेसे मोक्ष प्राप्त-कर सकता है, और भोगकी इच्छा करनेवाला पुरुष चिरकाल तक इच्छानुसार भोग करता है, विशेष कर साधक इस आराधनासे सुख भोगकर अंतमें ईश्वरके पदको पाय और पुनर्वार राजकुलमें जन्म ग्रहण करता है ॥ २६ ॥ २७ ॥ अब मैं धनदा देवीका स्तोत्र कहता हूँ, यह स्तोत्र सभी तंत्रोंमें छिपा हुआहै, इस समय उसीको कहताहूं ॥ २८ ॥

नमःसर्वस्वरूपेचनमःकल्याणदायिके ।
महासम्पत्प्रदेदेविधनदायैनमोस्तुते ॥ २९ ॥

हे देवि ! तुम जगन्मयी हो, साधकको सर्वप्रकारका मंगल और महासंपत्ति देती हो, हे देवि धनदे ! मैं तुमको नमस्कार करताहूं ॥ २९ ॥

महाभोगप्रदेदेविमहाकामप्रपूरिते ।
सुखमोक्षप्रदेदेविधनदायैनमोस्तुते ॥ ३० ॥

हे देवि ! तुम साधकको महाभोगकी देनेवाली और उसके सभी मनोरथोंको पूर्ण करती हो फिर सुख और मोक्षकी भी देनेवाली हो हे देवि ! धन दे मैं तुमको नमस्कार करताहूं ॥ ३० ॥

ब्रह्मरूपेसदानन्देसदानन्दस्वरूपिणि ।
द्रुतसिद्धिप्रदेदेविधनदायैनमोऽस्तुते ॥ ३१ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

उद्यत्सूर्यप्रकाशाभेउद्यदादित्यमण्डले ।
शिवतत्त्वप्रदेदेविधनदायैनमोऽस्तुते ॥ ३२ ॥

हे देवि ! तुम ब्रह्म स्वरूपा हो, आनंदमयी हो, नित्यानंदस्वरूपिणी हो, और साधकको शीघ्रही सिद्धिकी देनेवाली हो, हे देवि धनदे ! तुमको नमस्कार है, हे देवि ! उदयशील सूर्यकी समान तुम्हारे देहकी कांति प्रकाशित होरही है, तुम आदित्य मण्डलमें निवास करती हो, और फिर तुमने शिवजीको भी तत्त्वज्ञानप्रदान किया है, हे देवि धनदे ! तुम्हें नमस्कारहै ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

विष्णुरूपेविश्वमतेविश्वपालनकारिणि ।
महासत्त्वगुणाक्रान्तेधनदायैनमोऽस्तुते ॥ ३३ ॥

हे देवि ! तुम विष्णुस्वरूपा हो, इस अनन्त ब्रह्माण्डकी अभीष्ट देवता हो, तुम्हीं इस अनंत सृष्टिका पालन करती हो, और सत्त्वगुण तुम्हारे आधीनहै, हे देवि ! धनदे तुमको नमस्कारहै ॥ ३३ ॥

शिवरूपेशिवानन्देकारणानन्दविग्रहे ।
विश्वसंहाररूपेचधनदायैनमोस्तुते ॥ ३४ ॥

तुम शिवस्वरूप होकर शिवको आनंदकी देनेवाली हो तुम्हारा शरीर कारणके वश होकर आनंद पाताहै, तुम्ही इस अनंत जगत्का संहार करती हो, हे देवि धनदे ! मैं तुमको नमस्कार करताहूं॥३४॥

पञ्चतत्त्वस्वरूपेचपञ्चाचारसदारते ।
साधकाभीष्टदेदेविधनदायैनमोऽस्तुते ॥ ३५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

हे देवि ! तुम पंचतत्त्वस्वरूप होकर सर्वदा पंचाचारमें निरत रहती हो, और तुम्हीं साधकगणोंको अभीष्ट फलकी देनेवाली हो, हे देवि धनदे ! मैं तुमको नमस्कार करता हूं ॥ ३५ ॥

इदंस्तोत्रंमयाप्रोक्तंसाधकाभीष्टदायकम् ।
यःपठेत्पाठयेद्वापिसलभेत्सकलंफलम् ॥ ३६ ॥
त्रिसन्ध्यंयःपठेन्नित्यंस्तोत्रमेतत्समाहितः ।
ससिद्धिंलभतेशीघ्रन्नात्रकार्य्याविचारणा ॥ ३७ ॥

हे देवि ! साधकको अभीष्ट फलका देनेवाला यह स्तोत्र मैंने तुमसे कहा, जो इसको प्रतिदिन त्रिकालिक संध्यामें पाठ करता है उसके सम्पूर्ण कार्य सिद्ध होजातेहैं, इसके अन्यथा नहीं होता है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

इदंरहस्यम्परमंस्तोत्रंपरमदुर्ल्लभम् ।
गोपनीयम्प्रयत्नेनस्वयोनिरिवपार्वति ॥ ३८ ॥
अप्रकाश्यमिदन्देविगोपनीयम्परात्परम् ।
प्रपठन्नत्रासन्देहोधनवाञ्जायतेऽचिरात् ॥ ३९ ॥

इतिधनदास्तोत्रम् ।

इस स्तोत्रका रहस्य अत्यंत दुर्लभहै, हे पार्वती! यह स्तोत्र अपनी योनिकी समान छिपाकर सर्वदा यत्नपूर्वक रखना चाहिये, इसको कभी भी किसीके सामने प्रकाश न करना, हे देवि ! इस अत्यन्त

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

गुप्त परात्पर ब्रह्मस्वरूप स्तोत्रके पाठ करनेसे साधक चिरकाल तक को धनवान् होजाताहै इसमें संशय नहीं है ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

धनदायामहाविद्याकथितानप्रकाशिता ।
इदानींश्रोतुमिच्छामिकवचम्पूर्वसूचितम् ॥ ४० ॥

देवी फिर बोली, हे नाथ ! यह जो महाविद्या धनदा देवी कहीगई है यह पहले कभी प्रकाशित नहीं हुई थीं, इस समय मैं उन धनदा देवीके मन्त्रमय कवचके सुननेकी इच्छा करतीहूं ॥ ४० ॥

श्रीशिव उवाच ।

शृणुदेविप्रवक्ष्यामिकवचम्मन्त्रविग्रहम् ।
सारात्सारतरन्देविकवचम्मन्मुखोदितम् ॥ ४१ ॥

शिवजी बोले हे देवि ! मैं मन्त्रमय कवच कहताहूं तुम सुनो, हे देवि ! यह कवच सबके सारकाभी सार है, पहले यह कवच हमारे मुखसे प्रकाशित हुआ है ॥ ४१ ॥

धनदाकवचस्यास्यकुबेरऋषिरीरितः ।
पंक्तिश्छन्दोदेवताचधनदासिद्धिदासदा ॥
धर्म्मार्थकाममोक्षेषुविनियोगःप्रकीर्त्तितः ॥ ४२ ॥

इस धनदा कवचके ऋषि कुबेर जी कहे हैं, पंक्ति इसका छन्द है और देवता धनदाहै, यह सर्वदाही साधकको सिद्धि देता है,

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

धर्मार्थ काम मोक्ष में इसका विनियोगहै अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इन चारों वर्गोंका साधनही इस कवचके पाठका फल है ॥ ४२ ॥

धंबीजम्मेशिरःपातुह्रींबीजम्मेललाटकम् ।
श्रींबीजम्मेमुखम्पातुरकारंहृदिमेऽवतु ॥ ४३ ॥
तिकारम्पातुजठरम्प्रिकारम्पृष्ठतोऽवतु ।
येकारञ्जंघयोर्युग्मेस्वाकारम्पादमूलके ॥ ४४ ॥

धं, यह बीज हमारे मस्तक की रक्षा करै, ह्रीं, यह बीज हमारे ललाट की, श्रीं, यह बीज हमारे मुख की, र, यह वर्ण हमारे हृदय की, ति, यह वर्ण हमारे उदर की, प्रि, यह वर्ण हमारे पीठकी, ये, यह वर्ण हमारे जंघाओंकी, स्वा, यह वर्ण हमारे चरण मूल की ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

शीर्षादिपादपर्यन्तंहकारंसर्वतोऽवतु ।
इत्येतत्कथितंकान्तेकवचंसर्वसिद्धिदम् ॥ ४५ ॥

और ह यह वर्ण हमारी शिखा से लेकर चरण तक हमारे सब शरीर की रक्षा करै, हे प्रिये ! तुम्हारे निकट यह कवच मैंने कहा, यह सब सिद्धिका देनेवालाहै, कवच अर्थात् वख्तर के पहरने से जिसप्रकार शरीरमें अस्त्रादि नहीं बिध सकते उसीप्रकार इस कवच के पाठ करने से समस्त शरीर रक्षित होताहै, इस कारण इस स्तोत्र के कवच को कहागया है ॥ ४५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

गुरुमभ्यर्च्यविधिवत्कवचम्प्रपठेद्यदि ।
शतवर्षसहस्राणांपूजायाःफलमाप्नुयात् ॥ ४६ ॥

हे देवि ! यदि कोई साधक विधिपूर्वक गुरुका पूजनकर इस कवच का पाठ करता है, तो वह सहस्र वर्ष की पूजा के फल को पाता है और उस्से भी अधिक फल प्राप्त होता है ॥ ४६ ॥

गुरुपूजांविनादेविनाहिसिद्धिःप्रजायते ।
गुरुपूजापरोभूत्वाकवचम्प्रपठेत्ततः ॥ ४७ ॥

हे देवि ! विना गुरुकी पूजा के कदापि सिद्ध नहीं होता. अतएव पहले गुरु की पूजाकर पीछे कवच का पाठ करना चाहिये ॥ ४७ ॥

सर्वसिद्धियुतोभूत्वाविचरेद्भैरवोयथा ।
प्रातःकालेपठेद्यस्तुमन्त्रजापपुरःसरम् ॥ ४८ ॥
सोऽभीष्टफलमाप्नोतिसत्यंसत्यन्नसंशयः ।
पूजाकालेपठेद्यस्तुदेवींध्यात्वाहृदम्बुजे ॥ ४९ ॥
षण्मासाभ्यन्तरेसिद्धिर्नात्रकार्य्याविचारणा ।
सायङ्कालेपठेद्यस्तुसाशिवोनात्रसंशयः ॥ ५० ॥

उस कवच के पाठ करनेसे साधक सब प्रकारकी सिद्धि वाला होकर भैरव की समान सब जगह विचरण करता है जो साधक प्रातःकाल मंत्र जपकर इस कवच का पाठ करता है, वह अपने अभीष्ट फल को पाता है, हे देवि ! मेरे इस वचन को तुम सत्यहीसत्य

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

जानो, इस में किसी प्रकार का संदेह न करो, हे प्रिये ! जो मनुष्य पूजा के समय धनदा देवी का अपने हृदय कमल में ध्यान करके इस कवच का पाठ करता है, सो मनुष्य छैःमास के बीचमेंही सिद्धि को पासकता है, जो सन्ध्या के समय इस कवच का पाठ करै, वह स्वयं शिवस्वरूप होजाता है इसमें संदेह नहीं ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

भूर्ज्जेविलिख्यगुलिकांस्वर्णस्थांधारयेद्यदि ।
पुरुषोदक्षिणेबाहौयोषिद्वामभुजेतथा ॥
सर्वसिद्धियुतोभूत्वाधनवान्पुत्रवान्भवेत् ॥ ५१ ॥

हे देवि ! यदि भोजपत्रपर यह कवच लिखकर सुवर्ण के तवीज में मढाकर पुरुष दहिनी भुजा में और स्त्री बांई भुजा में धारण करती है वह सब सिद्धिसम्पन्न होकर धनवान् और पुत्रवान् होजाते हैं ॥ ५१ ॥

इदंकवचमज्ञात्वायोभजेद्धनदांशुभे ।
सशस्त्रघातमाप्नोतिसोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ५२॥

हे सुन्दरि ! इस कवच को न जानकर जो मनुष्य धनदा देवी की आराधना करता है वह मनुष्य शस्त्राघात से पतित होकर मृत्यु के मुख में जाता है ॥ ५२ ॥

कवचेनावृतोनित्यंयत्रयत्रैवगच्छति ।
अतएवमहादेविसपूज्योनात्रसंशयः ।
समाप्तंकवचन्देविकिमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥ ५३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

हे देवि ! इस कवच के साधक चाहे जिस जगह जाने की इच्छा करै उसी स्थान में सब का पूज्य होकर वास करसकता है इसमें संदेह नहीं, हे देवि ! यह धनदादेवी का कवच समाप्त हुआ अब क्या तुम्हारे सुननेकी इच्छा है सो कहो ॥ ९३ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

अहोपूज्यमहादेवसंसारार्णवतारक ।
सर्वयोगमयस्त्वंहिशरणागतवत्सलः ॥ ९४ ॥

देवीजी बोलीं हे महादेव ! तुम संसार के पूज्य हो, तुम्हीं संसार सागर के उद्धार करने हारे हो, तुम्हीं सर्व योगमय हो, मैं तुम्हारी शरणागतहूं शरणागतपर तुम विशेष स्नेह करते हो ॥ ९४ ॥

केनोपायेनदेवेशशीघ्रंसिद्धाभवन्तिहि ।
तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिकथ्यतांपरमेश्वर ॥ ९५ ॥

हे परमेश्वर ! किस उपाय के करने से साधक शीघ्र सिद्धि को पासकता है, उसके श्रवण करने की इच्छा करतीहूं, वह विस्तार सहित वर्णन करो ॥ ९५ ॥

श्रीशिव उवाच ॥

प्रेतभूमौतुसप्ताहम्प्रत्यहम्परमेश्वरि ।
दिक्सहस्रञ्जपेद्विद्यांतदासिद्धिर्नसंशयः ॥ ९६ ॥

शिवजी बोले कि, हे परमेश्वरि ! स्मशान भूमि में स्थिति होकर एक सप्ताह तक प्रतिदिन दशसहस्र इष्टदेवता के मूल मन्त्रका

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

जपकरे इसके होने से शीघ्रही सिद्धि होसकती है इस में संशय नहीं ॥ ५६ ॥

अथवापरमेशानिशवमानीययत्नतः ।
वितस्तिमात्रखातेतुपातनंहट्टमन्दिरे ॥ ५७ ॥

हे परमेश्वरि ! यत्नपूर्वक एक मुरदे को लाकर उसको १२ अंगुल मट्टी के तले दावै उसके ऊपर उपवेशन करै ॥ ५७ ॥

अमावस्यांसमारभ्ययावच्छुक्लाष्टमीभवेत् ।
प्रत्यहम्प्रजपेद्विद्यांगजान्तकसहस्रकम् ॥
तदासिद्धोभवेद्देविनान्यथाममभाषितम् ॥ ५८ ॥

अनन्तर अमावस्या से शुक्लाष्टमी तक प्रतिदिन एक हजार आठ इष्ट मन्त्र का जपकरै, हे देवि ! इसप्रकार की पूजा करने से वह साधक निश्चयही सब प्रकार की सिद्धि को पासकता है, हे प्रिये तुम मेरे इस वचनको कदापि अन्यथा मत जानिये ॥ ५८ ॥

यदेतत्कथितंसर्वंतत्त्वज्ञानेसुरेश्वरि ।
तत्त्वज्ञानंविनादेविनहिसिद्धिःप्रजायते ॥ ५९ ॥

हे सुरेश्वरि ! मैंने यह सिद्धिकी रीति कही, इस तत्त्व ज्ञानिक होने से सिद्धि की प्राप्ति होती है, हे देवि ! कदाचित् भी तत्व ज्ञान के विना जाने साधकको सिद्धि नहीं होती ॥ ५९ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

अथवापरयत्नेनकेवलंशक्तियोगतः ।
पूर्वंचतुष्टयन्देविसमानीयप्रयत्नतः ॥६०॥

या पहलीकही हुई चारों शक्तियोंको लायकर परम यत्नके साथ केवल उस शक्तियोंसेही देवीकी पूजा करै ॥ ६० ॥

तस्मैदत्त्वास्वयम्पीत्वाप्रजपेद्यदिसाधकः ।
तदासिद्धिंलभेद्देविसत्यंसत्यन्नसंशयः॥ ६१ ॥

अनन्तर साधक उन शक्तियोंको पान कराकर उससे जो बचे स्वयं पान करै और फिर उन शक्तियोंके साथ जप करना चाहिये। इस प्रकार आराधना करनेसे साधकको शीघ्रही सिद्धि प्राप्ति होसकती है हे देवि ! मेरे इस वचनको तुम सत्यहीसत्य जानो, इसमें किसी प्रकारका भी सन्देह न करो ॥ ६१ ॥

यत्रयत्रविनिर्द्दिष्टञ्जपकार्येसुरेश्वरि ।
तत्रतत्रमहेशानिगजान्तकसहस्रकम् ॥ ६२ ॥

इतिगुप्तसाधनतन्त्रेपार्वतीशिवसंवादे
नवमः पटलः समाप्तः ॥ ९ ॥

हे सुरेश्वरि ! जिस २ स्थानमें जप करनेकी संख्या नहीं कही है वहां अष्टोत्तर (१००८) सहस्र जप करना होगा ॥ ६२ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां
नवमः पटलः ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

दशमः पटलः १०.

श्रीदेव्युवाच ।

मातङ्गीपरमेशानीत्रैलोक्येषुचदुर्ल्लभा ।
मन्त्ररूपेणदेवेशकथयस्वमयिप्रभो ॥ १ ॥

फिर पार्वतीजी बोलीं हे देवेश्वर ! इस त्रिलोकीके बीचमें परमेश्वरी मातङ्गी देवीजी अत्यन्त दुर्लभ हैं, हे प्रभो ! अब कृपाकर उन्हीं मातंगी देवीके मन्त्रको आप मेरे निकट कहिये ॥ १ ॥

श्रीशिव उवाच ।

शृणुचार्वङ्गिसुभगेमातङ्गीमन्त्रमुत्तमम् ।
प्रणवञ्चसमुद्धृत्यमहामायांसमुद्धरेत् ॥ २ ॥
कामबीजंसमुद्धृत्यकूर्चबीजंसमुद्धरेत् ॥
मातंगींङेयुतांपश्चादस्त्रमन्त्रंसमुद्धरेत् ॥
वह्निजायान्वितोमन्त्रःसर्वतन्त्रेषुपूजितः ।
सार्द्धदशाक्षरीविद्याब्रह्मादिपरिपूजिता ॥ ३ ॥
अस्यविज्ञानमात्रेणपुनर्जन्मनविद्यते ।
कामतुल्यश्चनारीणांरिपूणांशमनोपमः ॥
कुबेरइववित्ताढ्योधरणीसहशक्षमः ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

शिवजी बोले, हे सुन्दरि ! मैं मातंगी देवीके मन्त्रको तुम्हारे निकट कहता हूं. हे सुभगे ! सावधान होकर श्रवण करो, ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा, यह मातंगीका मन्त्र सब तन्त्रोंमें पूजित है, ब्रह्मादि देवता इस साढेदस अक्षरकी विद्याकी पूजा करते हैं ॥ २–३ ॥ जिसने इस विद्याको भलीप्रकारसे जान लिया है, उस का फिर पृथ्वीमें जन्म नहीं होता और वह मनुष्य स्त्रियोंके समीप कामदेवकी समान दृष्टि आता है शत्रुओंके सामने यमराजकी समान, कुबेरकी समान धनवान् होकर पृथ्वीकी समान क्षमाशील होजाता है ॥ ४ ॥

विराट्छन्दोमहेशानिमातंगीदेवतास्मृता ।
धर्म्मार्थकाममोक्षेषुविनियोगःप्रकीर्त्तितः ॥ ५ ॥

हे महेशानि ! इस मन्त्रका छन्द विराट् है और देवता मातंगी हैं, अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष यह इसका विनियोग है, अर्थात् धर्म, अर्थ काम, मोक्ष यह चारों पदार्थ प्राप्त होजातेहैं ॥ ५ ॥

ध्यानपूजादिकंसर्वंयामलेचपुरोदितम् ।
तस्याःस्तोत्रंमहापुण्यंसावधानावधारय ॥ ६ ॥

हे देवि ! इस विद्याका ध्यान और पूजा सभी मैंने यामल तन्त्रमें कहा है, इस समय इनका महापुण्य देनेवाला स्तोत्र कहताहूं सावधान होकर सुनो ॥ ६ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

उद्यदादित्यसङ्काशांनयनत्रयशोभिताम् ।
भक्तानाम्वरदान्देवींमातंगींतान्नसंशयः ॥ ७ ॥

जिनके शरीरकी कान्ति उदय होते हुए सूर्यकी समान उज्ज्वल है, जो भक्तोंको वर देती है, वह अपने तीन नेत्रोंसे शोभा पा रहीहैं, उन मातंगी देवीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ७ ॥

श्यामवर्णांमहादेवींसर्वालंकारभूषिताम् ।
द्रुतसिद्धिप्रदांदिव्यांमातंगींतांनमाम्यहम् ॥ ८ ॥

जो श्याम वर्णकी हैं और सब वस्त्राभूषणोंसे भूषित हैं, जो भक्तों को शीघ्र ही सिद्धि देती है, उन दिव्यरूपिणी महादेवी मातंगी देवीको मेरा नमस्कार है ॥ ८ ॥

मुक्ताहारलतावल्यांनानामणिविराजिताम् ।
कोटिविद्युत्प्रतीकाशांमातंगींतान्नमाम्यहम् ॥ ९ ॥

जिनके गलेमें मोतियोंका हार शोभायमान है, जो नानाप्रकारकी मणियोंसे सुसज्जित हैं, जो करोड़ों विजलियोंकी समान प्रकाश पा रही है, उन मातंगी देवीको मेरा नमस्कार है ॥ ९ ॥

वरदांवरदानाढ्यांवरमालासुधारिणीम् ।
दैत्यदानवसंहर्त्रींमातंगींतान्नमाम्यहम् ॥ ॥ १० ॥

जो साधकको वरदेती है, जिन्होंने वर मुद्रा और मालाको धारण किया है, जो दैत्य और दानवोंको संहार करती है, उन्हीं मातंगी देवीको मैं नमस्कार करता हूं ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

किङ्किणीनरहस्ताढ्यांकटिदेशसुशोभनाम् ।
पट्टवस्त्रपरीधानांमातङ्गींतांनमाम्यहम् ॥ ११ ॥

जिन्होंने अपनी कमरमें मनुष्योंके हाथोंकी तगड़ी पहरकर शोभा पाई है, जो पीताम्बर पहरे हुए हैं, उन्हीं मातङ्गी देवीको मेरा नमस्कार है ॥ ११ ॥

सौदामिनीसमाभासांनानालंकारसंयुताम् ।
इन्द्रादिदेवतासेव्यांमातङ्गींतांनमाम्यहम् ॥ १२ ॥

जो बिजलीकी समान प्रभावाली हैं, जो विविध प्रकारके अलंकारोंसे विभूषित हैं, इन्द्रादि देवता जिनकी सदा सेवा करते हैं, उन्हीं मातङ्गी देवीको मैं नमस्कार करता हूं ॥ १२ ॥

शुद्धकांचनसंयुक्ताञ्चरणांगुलिराजिताम् ।
माणिक्यरत्नसंयुक्तांमातंगींतांनमाम्यहम् ॥१३॥

पवित्र तपे हुए सुवर्णसे जिनके चरणोंकी अंगुली शोभा पा रही हैं जो माणिक्य आदि रत्नोंसे विभूषित होरही हैं, ऐसी उन मातङ्गी देवीको मेरा नमस्कार है ॥ १३ ॥

दिङ्मुखेदशचन्द्राढ्यांसुधावर्षणकारिणीम् ।
देववृन्दसमायुक्तांमातंगींतांनमाम्यहम् ॥ १४ ॥

दशों दिशायें जिनके दश वदनकी समानहैं,जो अपने चन्द्र समान दशों मुखोंसे संसारमें अमृत वर्षाती हैं, जो देवताओंसे पूजितहैं, उन्हीं मातङ्गी देवीको मेरा नमस्कार है ॥ १४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

इदंस्तोत्रम्मयाप्रोक्तंसाधकाभीष्टदायकम् ।
त्रिसन्ध्ययंयःपठेन्नित्यन्तस्यसिद्धिरदूरतः ॥ १५ ॥

हे देवि ! मैने यह मातंगीस्तोत्र कहा यह स्तोत्र साधकको अभीष्ट फलका देनेवाला है, जो साधक इस स्तोत्रको प्रतिदिन त्रिकालिक संध्याके समय पाठ करता है, उनको शीघ्र ही सिद्धि हो जाती है ॥ १५ ॥

पूजाकालेसकृद्वापियःपठेत्स्तोत्रमुत्तमम् ।
तंसाधकम्विलोक्यैवकुबेरोऽपितिरस्कृतः ॥ १६ ॥

जो मनुष्य पूजाके समय एकबार भी पाठ करता है, उस साधकके दर्शन करनेसे कुबेर भी लज्जित हो जाता है अर्थात् वह मनुष्य कुबेरसे भी अधिक धनवान् होजाता है ॥ १६ ॥

यस्मैकस्मैनदातव्यन्नप्रकाश्यंकदाचन ।
प्रकाशात्सिद्धिहानिःस्यात्तस्माद्यत्नेनगोपयेत् ॥

हे देवि ! इस स्तोत्रको साधारण मनुष्योंको न देना, न सब जगह प्रकाशित करना, कारण यह है ऐसा करनेसे सिद्धिमें हानि होगी, इस कारण यत्नपूर्वक छिपाकर रखना योग्य है ॥ १७ ॥

स्तोत्रंसमाप्तन्देवेशिकिमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ।
कथयस्वमहाभागेयत्तेमनसिवर्त्तते ॥ १८ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

हे देवेशि ! यहां मातंगी देवीका स्तोत्र समाप्त हुआ, हे प्राणवल्लभे ! अब जो तुम्हारे सुननेकी इच्छा है वह प्रकाश करके कहो॥१८॥

श्रीदेव्युवाच ।

देवदेवजगन्नाथजगन्निस्तारकारक ।
मातंगीकवचन्नाथश्रोतुमिच्छामिसाम्प्रतम् ॥ १९॥

देवी बोलीं, हे देवदेव ! तुम्हीं संसारके अधीश्वर और तुम्हीं जगत् के उद्धार करते हो. हे नाथ ! अब मातंगी देवीके कवच सुननेका मेरा अभिलाष हुआ है ॥ १९ ॥

यांसमाराध्यदेवेशधनेशोऽभूद्धनाधिपः ।
यामाराध्यमहादेववासवस्त्रिदशेश्वरः ॥ २० ॥
ब्रह्मविष्णुमहारुद्राःसमाराध्यसुरेश्वरीम् ।
सृष्टिस्थितिलयान्देविकर्त्तारोजगदीश्वराः ॥
तस्यास्तुकवचन्दिव्यंकथयस्वानुकम्पया ॥२१॥

हे देवेश्वर ! जिनकी पूजा करनेसे कुबेर धनपति हुए हैं. एवं जिनकी पूजासे इन्द्र त्रिदशेश्वर हुए हैं, ब्रह्मा विष्णु महारुद्रने भी जिनकी पूजा करके सृष्टिकी, स्थिति करनेहारे और प्रलय कारक संसारके अधीश्वर हुए हैं, उन्हीं मातंगी देवीके कवचको मेरे प्रति दयाकरके कहिये ॥ २० ॥ २१ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

श्रीशिव उवाच ।

शृणुदेविप्रवक्ष्यामिमातंगीकवचंशुभम् ।
तवस्नेहान्महादेविकवचम्ब्रह्मरूपकम् ॥ २२ ॥

शिवजी बोले हे देवि ! मैं मातंगी देवीके कवचको कहता हूं तुम श्रवण करो, यह कवच सर्व.साधारणको शुभका देनेवाला है, हे देवि ! मैं तुम्हारे स्नेहके वशीभूत होकर परब्रह्म स्वरूप इस कवचको कहता हूं ॥ २२ ॥

त्रैलोक्यरक्षणस्यास्यदक्षिणामूर्त्तिसंज्ञकः ।
ऋषिश्छन्दोविराड्देविमातंगीदेवतास्मृता ॥
धर्मार्थकाममोक्षेषुविनियोगःप्रकीर्त्तितः ॥ २३ ॥

यह कवच त्रिलोकीकी रक्षा करता है. इस त्रिलोकीकी रक्षा करनेवाले कवचके ऋषि दक्षिणामूर्ति नामवाले भैरवजी कहेहैं, छन्द विराट् है, मातंगीदेवी देवता है, और धर्म अर्थ काम मोक्ष इसमें इसका विनियोग होता है अर्थात् इस कवचके पाठ करनेसे धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन चारोंवर्गोंकी प्राप्ति होतीहै ॥ २३ ॥

ओंबीजम्मेशिरःपातुह्रींबीजम्मेललाटकम् ।
क्लींबीजंचक्षुषोःपातुनासायाम्परिरक्षतु ॥ २४ ॥
माकारंवदनम्पातुतकारंकण्ठकेऽवतु ।
ङ्ग्यैकारंस्कन्धदेशंचफकारम्बाहुयुग्मकम् ॥२५॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

टकारंहृदयम्पातुस्वकारंस्तनयुग्मकम् ।
पृष्ठदेशन्तथानाभिञ्जठरंलिंगदेशकम् ॥ २६ ॥
पादद्वन्द्वंचसर्वांगंहाकारम्परिरक्षतु ।
सार्द्धदशाक्षरीविद्यासर्वाङ्गंपरिरक्षतु ॥ २७ ॥

"ॐ" यह बीज हमारे शिरकी रक्षा करै ईसीप्रकार "ह्रीं" यह बीज हमारे मस्तककी, "क्लीं" यह बीज हमारे दोनों नेत्रोंकी और नासिका-की, "मा" यह वर्ण हमारे वदनकी "त" यह वर्ण हमारे कंठ देशकी, "ङ्ग्यै" यह वर्ण हमारे दोनों कन्धोंकी "फ" यह वर्ण हमारे दोनों वाहोंकी "ट" यह वर्ण हमारे हृदयकी "स्वा" यह वर्ण हमारे दोनों स्तनोंकी, एवं "हा" यह हमारे पीठकी, नाभि, उदर, लिंगदेश, दोनों चरण इत्यादि समस्त अंगोंकी रक्षा करैं, यह साढे दश अक्षरकी विद्या मेरे समस्त शरीरकी रक्षा करै ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

इन्द्रोमाम्पातुपूर्वेचवह्निकोणेऽनलोवतु ।
यमोमांदक्षिणेपातुनैर्ऋत्यांनिर्ऋतिश्चमाम् ॥ २८ ॥
पश्चिमेवरुणःपातुवायव्यांपवनोऽवतु ॥ २९ ॥
कुबेरोदिशिकौवेर्यामीशईशानकोणके ।
ऊर्ध्वंब्रह्मासदापातुअधश्चानन्तएवच ॥ ३० ॥

इन्द्र देवता हमारी पूर्व दिशामें, अग्निं देवता हमारे आग्नि कोणमें, यम मेरे दाक्षिण कोनेमें, निर्ऋति मेरे नैर्ऋत कोणमें, वरुण देव मेरी

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

पश्चिम दिशामें, पवन देव मेरी वायु कोण में, कुबेर मेरी उत्तर में, महादेव ईशान कोण में, ब्रह्मा मेरी ऊपरकी दिशामें और अनन्त देवता मेरी अधो देशकी रक्षा करें ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

रक्षाहीनन्तुयत्स्थानंवर्जितंकवचेनतु ।
तत्सर्वंरक्षमेदेविमातंगिसर्वसिद्धिदे ॥ ३१ ॥

जो जो स्थान रक्षा हीन और कवचसे रहित है उसी २ स्थानमें सर्व सिद्धिकी देनेवाली मातङ्गी देवी जी रक्षा करें ॥ ३१ ॥

इतितेकथितन्देविकवचम्परमाद्भुतम् ।
त्रिसन्ध्यंयःपठेन्नित्यंससाक्षाच्छंकरःस्वयम्॥३२॥

हे देवि! तुमसे यह मैंने परम अद्भुत कवच को कहा, इस कवच का प्रतिदिन प्रातःकाल मध्याह्न समय और सायङ्कालको जो कोई पाठ करता है, वह साक्षात् शिव स्वरूप होजाता है ॥ ३२ ॥

पुष्पांजलाष्टकन्दत्त्वामूलेनैवपठेत्सकृत् ।
शतवर्षसहस्राणांपूजायाःफलमाप्नुयात् ॥ ३३ ॥

मूल मन्त्रसे देवीको आठ पुष्पाञ्जलि देकर एकवारही इस कवच का पाठ करनेसे सहस्रवर्षकी पूजाका फल होताहै ॥ ३३ ॥

भूर्ज्जेविलिख्यगुलिकांस्वर्णस्थांधारयेद्यदि ।
सर्वसिद्धियुतःसोऽपिसर्वसिद्धितपोयुतः ॥ ३४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

इस कवचको भोजपत्र पर लिखकर यदि कोई सुवर्णमें मढाकर पहरता है, वही साधक सब प्रकारकी सिद्धि के अनुकूल तपस्यायुक्त होकर सर्व सिद्धिवान होजाता है ॥ ३४ ॥

ब्रह्मास्त्रादीनिशस्त्राणितद्गात्रंप्राप्यपार्वति ।
माल्यानिकुसुमान्येवभवन्त्येवनसंशयः ॥ ३५ ॥

हे पार्वति ! जो मनुष्य इस सर्वरक्षा करनेवाला कवच का पाठ करता है उसके शरीर में जो यदि किसी प्रकार से ब्रह्मा का अस्त्र लगभी जाय तौ वह अस्त्र कुसुममयी माला होकर उसके शरीर में शोभित होता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ३५ ॥

नदेयम्परशिष्येभ्योनाभक्तेभ्योविशेषतः ।
देयंशिष्यायशान्तायचान्यथापतनंलभेत् ॥ ३६॥

हे देवि ! यह कवच भक्तिहीन मनुष्यको और पर शिष्यको कदापि न दे। जो शान्त और अपना शिष्य हो उसीको यह कवच देना चाहिये इसके विपरीत होनेसे इसका पतन (अवनति) होजाता है ॥ ३६ ॥

प्रातःकालेपठेद्यस्तुगुरुपूजापुरःसरम् ।
तस्यसर्वार्थसिद्धिःस्यात्साशिवोनात्रसंशयः ॥३७॥

हे देवि , जो साधक प्रातःकालमें गुरुकी पूजाकर इस कवच का पाठ करता है उसको सर्व सिद्धि मिलती है, और वह मनुष्य साक्षात शिवकी समान होजाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ३७ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

मध्याह्नेप्रपठेद्यस्तुगुरुचिन्तापुरःसरम् ।
कुबेरइववित्ताढ्योजायतेमदनोपमः ॥ ३८ ॥

हे देवि ! जो साधक मध्याह्न समय अपने सहस्र कमलके पत्तोंपर गुरुदेव की चिन्ता करते २ इस कवच का पाठ करता है वह कुबेर की समान धनवान और कामदेव की समान रूपवान होजाता है ॥ ३८ ॥

सायंकालेपठेद्यस्तुध्यात्वादेवींहृदम्बुजे ।
सर्वसिद्धियुतोभूत्वाविचरेद्भैरवोयथा ॥ ३९ ॥

जो मनुष्य सन्ध्या के समय हृदयकमल में इष्ट देवता का ध्यान करके इस कवच का पाठ करै वह सबप्रकार की सिद्धिवाला होकर भैरव की समान सब जगह विचरण करसकता है ॥ ३९ ॥

गुरुपूजायुतोभूत्वाकवचम्प्रपठेद्यदि ।
लक्ष्मीःसरस्वतीतस्यनिवसेन्मन्दिरेसुखम् ॥४०॥

यदि कोई साधक गुरुकी पूजा में रत होकर इस कवच का पाठ करता है उसके गृहमें लक्ष्मी और सरस्वती सुखसे निवास करती हैं ॥ ४० ॥

इदंकवचमज्ञात्वामातंगींयदिवाजपेत् ।
इहलोकेदरिद्रःस्यान्मृतेशूकरतांव्रजेत् ॥ ४१ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

हे देवि ! इस कवच को न जानकर यदि कोई मातंगी देवी की पूजा करै या मंत्रका जप करै तो वह इस लोकमें दरिद्र होकर मरने के समय पर लोक गमनकर फिर शूकरकी योनिको प्राप्त होता है ॥ ४१ ॥

समाप्तंकवचंदेविशृणुमत्प्राणवल्लभे ।
षट्सहस्रञ्जपेन्मंत्रंदशांशंहोमयेत्सुधीः ॥ ४२ ॥

हे देवि ! यहां पर्यन्त मातंगी देवी का कवच समाप्त हुआ, हे प्राण वल्लभे ! इसके पीछे अब जो कहता हूं श्रवण करो, षट् सहस्र मातंगी के मंत्र को जप कर बुद्धिवान साधक जप के दशांश अर्थात् षट् जत (दिन) होम करै ॥ ४२ ॥

ब्रह्मवृक्षोद्भवैःकाष्ठैर्होमात्सर्वसमृद्धिदः ।
तर्पणंचाभिषेकंचदशांशमाचरेत्सुधीः ॥ ४३ ॥
तद्दशांशंमहेशानिकुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ।
ततःसिद्धोभवेन्मंत्रीनान्यथाममभाषितम् ॥ ४४॥

हे देवि ! ढाककी लकडियों से होम करना चाहिये इस प्रकार जप और होम करके साधक सर्वसिद्धि सम्पन्न होसकता है, इसके पीछे होम का दशांश तर्पण और तर्पण का दशांश अभिषेक करना चाहिये, हे देवि ! साधक इस कार्य को करके अभिषेक के दशांश ब्राह्मण भोजन करावै जो मनुष्य इस प्रकार से मातंगी देवीकी पूजा

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

करता है वह साधक सब प्रकारसे सिद्धि प्राप्त कर सकता है, हमारे इस बचनका कदापि अन्यथा मत जानो ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

सकृत्कृतेपरेशानियदिसिद्धिर्नजायते ।
पुनस्तेनैवकर्त्तव्यंततःसिद्धोभवेद्ध्रुवम् ॥४५॥

इति गुप्तसाधनतंत्रे पार्वतीशिवसंवादे
दशमः पटलः समाप्तः ॥ ११ ॥

हे देवि ! यदि एक बार इस प्रकार साधन करनेसे सिद्धि न हो तो पुनर्वार इसी प्रकारसे पूजाकरै तो निश्चयही सिद्धि प्राप्त होगी४५

इति श्रीगुप्तसाधनतंत्रेशिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां
दशमः पटलः ॥ १० ॥

एकादशः पटलः ११.

श्रीदेव्युवाच ।

विश्वकर्त्ताविश्वहर्ताविश्वसंसारपालकः ।
त्वांविनासंशयच्छेत्तानहित्राताचकुत्रचित् ॥ १ ॥

फिर पार्वती जी बोलीं हे देव देव ! तुम संसार की सृष्टि करने हारे और संहार करने हारे और तुम्हीं इस सृष्टि का पालन करते हो. हे नाथ ! तुम्हारे विना कोई संदेहको निवारण करने वाला ऐसा मैं किसीको नहीं देखती और तुम्हारे अतिरिक्त उद्धार करने वाला भी कोई नहीं है ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

वैष्णवेषुचशैवेषुशाक्तेशौरगणेपिच ।
सर्वत्रविहितांमालांवदमेपरमेश्वर ॥ २ ॥

विष्णु में, शिवमंत्रादिके जपमें, शक्ति देवताकी आराधना में, सूर्यमंत्रके जप में, गणेश मंत्रके साधन में, जिस २ माला से जप करना होता है सो मुझसे कहिये ॥ २ ॥

ईश्वर उवाच ।

अक्षमालामहेशानिपंचाशद्वर्णरूपिणी ।
अकारादिर्महेशानिक्षकारान्तोयतःप्रिये ॥ ३ ॥
अक्षमालासमाख्यातासर्वतन्त्रप्रपूजिता ।
अस्याजपनमात्रेणमहामोक्षमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥

ईश्वर बोले हे महेशानि ! पचास वर्णोंहीको अक्षमाला कहा है, हे प्रिये ! इस कारणसे "अ" से लेकर "क्ष" तक पचास अक्षर ही मालाके अन्तर्गत हैं, इस कारण इसको अक्षमाला शब्दसे निर्णय किया गया है, यह माला सर्वतंत्रोंमें पूजितहै, इस माला के जपमात्र-सेही साधकको महामोक्षकी प्राप्ति होतीहै ॥ ३ ॥ ४ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

योगमालाजपादेवसर्वयोगेश्वरप्रभो ।
देहमध्यस्थितांमालांपंचाशद्वर्णरूपिणीम् ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

तांविहायमहादेवअस्थिमालांजपेत्कथम् ।
दीक्षितस्यचयच्चास्थितद्धर्ज्यंवाकथंविभो ॥ ६ ॥
यस्यच्छायादिसंस्पर्शादशुचिर्जायतेपुमान् ।
तस्यास्थिचसमानीयसर्वाङ्गेभूषणंकथम् ॥ ७ ॥

देवी जी बोलीं हे प्रभो ! योगमालाके जप करनेसे तत्क्षणात् वह साधक योगों में ईश्वर होजाताहै, इस समय मुझे यही पूछनाहै कि, शरीरके भीतर यह पचास वर्णस्वरूप मालाही है, हे महादेव ! उसको छोड कर साधक गण किस कारण से अस्थिकी मालाका जप करते हैं, और फिर जपके कार्यमें अस्थिकी माला कही जाकर भी किस कारण से दीक्षित मनुष्य की अस्थि को साधक नहीं लेते और जिनकी परछांही मात्रसेभी मनुष्य अशुद्ध होजाताहै, हे नाथ ! किस कारणसे अशुद्ध मनुष्यकी अस्थिको लाकर साधकगण अपने अंग का भूषण करते हैं, हे प्राणेश्वर ! मेरे इन समस्त संदेहों को आप दूर कीजिये ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥

श्रीशिव उवाच ।

शक्तिंचमंत्रपूतंचब्राह्मणादीन्सुरेश्वरि ।
वर्जयित्वाप्रयत्नेनशृणुमत्प्राणवल्लभे ॥
कुर्याच्छवंतथामालांमुण्डंश्मशानमेवच ॥ ८ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

शिव जी कहने लगे हे सुरेश्वरि ! हे प्राणाधिके ! यत्नपूर्वक श्रवण करो, स्त्री का शरीर मंत्रपूत अर्थात् दीक्षादि संस्कारोंसे शुद्ध पवित्र मनुष्यका शरीर, और ब्राह्मणका शरीर भी छोडकर, शवमाला, मुंडको श्मशानसे लाना चाहिये, कदाचित् किसी स्त्रीके शरीरसे शव साधन नहीं करै, इनके आस्थियोंकी माला कदापि न करै, एवं उनके मुंडोंको ग्रहण कर देवताके साधनमें प्रवृत न हो, अथवा स्त्री दीक्षित मनुष्य और ब्राह्मणके शवसे मंत्र सिद्धि न करै ॥ ८ ॥

प्रणवंनिष्कलंसाक्षाद्ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ।
प्रणवंप्रजपेद्यस्तुससाक्षाद्विष्णुरूपधृक् ॥ ९ ॥

हे देवि ! एक मात्र प्रणव अर्थात् ॐ यह वर्ण साक्षात् ब्रह्म विष्णु शिवात्मक है जो प्रणव मंत्रोंका जप करता है उसीको विष्णु कहा जाता है ॥ ९ ॥

ॐकारात्सर्ववर्णानिजायन्तेनात्रसंशयः ।
ॐकारंत्रिगुणंदेविगुणातीतन्तुनिष्कलम् ॥ १० ॥

हे देवि ! ॐकारसे सब वर्णोंकी उत्पत्ति हुई है, इसमें संदेह नहीं यह ॐकार सत्त्व, रज, तम यह तीनों गुणोंसे विशिष्ट और गुणातीत निष्कल ब्रह्मस्वरूप है ॥ १० ॥

गुरुवक्त्रान्महामंत्रंप्राप्नोतिचैवमानवः ।
सर्ववर्णामहेशानिलीयन्तेप्रणवेप्रिये ॥ ११ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

अतएवमहेशानिप्रणवोब्रह्मरूपकः ।
स्त्रीशूद्रयोःपरेशानिप्रणवेनाधिकारिता ॥ १२ ॥

साधक गुरुदेवके मुख से इस महामंत्र प्रणव को प्राप्त करै, हे प्रिये ! एक प्रणवही समस्त वर्णों में लीन है । हे देवि महेशानि ! इस कारण प्रणवही साक्षात् ब्रह्मरूप है, स्त्री और शूद्रकूं इस प्रणव का अधिकार नहीं तौ भीं स्त्री शक्ति स्वरूप है, हे देवि ! विचार करके देखो ब्राह्मण और दीक्षित मनुष्य प्रणव मंत्रका जप करतेहैं इस कारण· उनका शरीर शव साधनादि कार्यमें उपयोगी नहीं है ॥ ११ ॥ १२ ॥

तज्जातश्चैवचाण्डालःसर्वमंत्रविवर्जितः ।
मंत्रहीनेतुअस्थ्यादिसर्ववर्णविभूषितम् ॥ १३ ॥

स्त्री और शूद्र इन दोनोंहीसे चाण्डालकी उत्पत्ति है इसी कारण वे सब मंत्रोंसे हीन हैं और जो लोग मन्त्र रहितहैं उनकी अस्थियोंमें सब वर्ण शोभितहैं ॥ १३ ॥

अकारादिक्षकारान्ताअस्थिमध्येस्थिताःसदा ।
तिलार्द्धेचास्थिमध्येचपंचाशद्वर्णरूपिणी ॥ १४ ॥
अतएवबहिःकण्ठेग्रीवायांचतथाकरे ।
सर्वत्राहंपरेशानिमहाशंखविभूषितः ॥ १५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

हे देवि ! अकारसे लेकर "क्ष" तक यह सब वर्ण अस्थियोंके बीचमें विद्यमानहैं, एवं एक तिलकी बराबर भी पचास वर्ण रूप वाली माला रही है, हे महेशानि ! इस कारणही मैंने गलेमें और हाथ इत्यादि सब शरीरमें महाशंखकी मालासे शोभित रहता हूं ॥ १४ ॥ १५ ॥

महाशंखाख्यमालायांयोजपेत्साधकोत्तमः ।
अणिमादिविभूतीनामीश्वरोनात्रसंशयः ॥ १६ ॥

हे देवि ! जो साधक इस उत्तम महाशंखकी मालासे जप करतेहैं उनको अणिमादि आठों सिद्धि प्राप्त होजातीहैं और इसमें सन्देह नहीं ॥ १६ ॥

सर्ववर्णमयीमालासर्वदेवेषुयोजिता ।
वर्णहीनंनास्तिमंत्रङ्कदाचिदपिपार्वति ॥ १७ ॥
महाशंखंमहेशानिसर्ववर्णविभूषितम् ।
अतएवमहाशंखंसर्वतंत्रेषुयोजितम् ॥ १८ ॥

यह महाशंखकी माला सर्ववर्णमयी है और यह माला सब देवताओंमें भी योजित होतीहै हे पार्वति ! इस कारण कदाचित् वर्ण हीन मन्त्र नहीं होसक्ता, किन्तु महाशंखकी माला सब वर्णोंसे विभूषित है इस कारण महाशंखही सब प्रकारसे मन्त्र जपनेमें श्रेष्ठ है ॥ १७ ॥ १८ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

यदिभाग्यवशाद्देविमहाशंखंचलभ्यते ।
ससिद्धःसगणःसोऽपिसचविष्णुर्नसंशयः ॥ १९ ॥

हे देवि ! यदि भाग्यके वशसे कोई महाशंखकी मालाको पा सकै तो वह मनुष्य अपने कुटुम्बके सहित सिद्धिलाभ कर सकता है और स्वयं विष्णुकी समान हो जाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ १९ ॥

तदैवसहसासिद्धिर्नात्रकार्याविचारणा ।
गोपुच्छसदृशींकुर्यादथवासर्परूपिणीम् ॥ २० ॥

इस प्रकार देवीकी आराधना करनेसे शीघ्रही सिद्धि प्राप्त होती है इस विषयमें किसी प्रकारका विचार नहीं करना चाहिये, इस महाशंखकी मालाको गौकी पूंछकी समान अथवा सर्पके आकारकी समान बनानी चाहिये अर्थात् मालाकी जड़तो मोटी बनावे, और फिर क्रमसे पतली बनावे ॥ २० ॥

स्थूलासूक्ष्माचपर्यन्तंक्रमेणग्रथनंचरेत् ।
मूलेनग्रथनंकार्यंप्रणवेनाथवाप्रिये ॥ २१ ॥

पहले मोटी तरफसे सब मालाको बनाकर फिर क्रमानुसार छोटे से छोटी बनाता जाय. हे प्रिये ! साधक अपने इष्ट देवका मन्त्र अथवा प्रणव मन्त्रसे मालामें गांठ लगावै ॥ २१ ॥

ब्रह्मग्रन्थिंप्रयत्नेनदद्यात्साधकसत्तमः ।
सूत्रद्वयंपरेशानिमिलितंकारयेत्ततः ॥ २२ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

बुद्धिमान साधक यत्नके साथ ब्रह्मगांठसे उस मालाको बनावै. हे सुरेश्वरि ! जब सब माला बनजाय तब दोनों ओरके डोरोंको मिलावै ॥ २२ ॥

मेरोश्चग्रहणंकार्यंतदूर्द्ध्वेग्रन्थिसंयुतम् ।
समीपेगुरुदेवस्यसंस्कारमाचरेत्सुधीः ॥ २३ ॥

फिर उनमें गिरै लगाकर उसके ऊपर एक लम्बादाना पिरोवै फिर उसके ऊपर ब्रह्मगांठ लगावै अनन्तर बुद्धिमान साधक अपने गुरुसे इस मालाका संस्कार करावै ॥ २३ ॥

स्थूलावधिजपेन्मंत्रंसूक्ष्मभागेसमापयेत् ।
पुच्छावधिजपाद्देविसिद्धिहानिःप्रजायते ॥ २४ ॥

माला जिधरसे स्थूल हो उसी ओरसे जप करना प्रारम्भ करै और जिधर पतली हो उस तरफ समाप्त करै, इसप्रकार बार बार मोटी ओरसेही जप करना चाहिये । हे देवि ! मालाके पतली ओरसे जप करनेसे सिद्धि कार्यमें हानि होगी ॥ २४ ॥

शिवेध्यात्वाजपेन्मालांगुरोर्ध्यानपुरःसरम् ।
तदैवलभतेसिद्धिंसाधकःशान्तमानसः ॥ २५ ॥

हे शिवे ! गुरुदेवका ध्यान कर मालाका जंप करै, ऐसा करनेसे साधक सिद्धिको प्राप्तकर शान्तचित्त होजाता है ॥ २५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

संभाव्यमालांभुजगेनतुल्यां कथाप्रसंगेनइवप्रज-
ल्पात्।जपेन्मदङ्गंलभतेतवाङ्गं प्रदीप्यकात्यायनि
कामनादम् ॥ २६ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे
एकादशः पटलः समाप्तः ॥ ११ ॥

इस मालाको भुजंगम (सर्प) की समान जानकर कथाके प्रसंगकी समान अर्थात् न तो बहुत जलदी और न बहुत विलम्बमें जप हो ऐसा करै, हे देवि ! हे कात्यायनि ! इस प्रकार साधक हमारे अंगस्वरूप मन्त्र जप करके कामनादिको दग्धकर तुम्हारे अंगको प्राप्त हो सकैगा ॥ २६ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां
एकादशः पटलः ॥ ११ ॥

द्वादशः पटलः १२.

श्रीपार्वत्युवाच ।

देवदेवमहादेवसंसारार्णवतारक ।
वेदमातेतिविख्यातागायत्रीचकथंभवेत् ॥ १ ॥

श्री पार्वतीजी बोली हे देवदेवमहादेव ! तुम भक्तोंको संसार रूपी सागरसे उद्धार करते हो इस समय वेदमाता गायत्रीको मेरे निकट कहो ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

श्रीशिव उवाच॥

श्रृणुदेविप्रवक्ष्यामिगायत्रींपरमाक्षरीम् ।
वेदमातेतिविख्यातासर्वतंत्रप्रपूजिता ॥ २ ॥

शिवजी बोले हे देवि ! मैं परमाक्षरी गायत्रीको तुम्हारे निकट कहता हूं श्रवण करो, यह गायत्री वेदमाता कहकर विख्यात हुई है और सब तंत्रों में इसकी पूजा कहीहै ॥ २ ॥

हालाहलंसमुद्धृत्यनाभ्यक्षरंसमुद्धरेत् ।
वामकर्णयुतंकृत्वापुनर्नाभिंसमुद्धरेत् ॥ ३ ॥
कर्णयुक्तंमूर्द्ध्नि रेफंततश्चसुरवन्दिते ।
वारणंरसनायुक्तंचन्द्रबीजंततःपरम् ॥ ४ ॥
लान्तयुक्तंसर्गयुक्तंचैवंव्याहृतिमुद्धरेत् ।
तत्पदंचसमुद्धृत्यसवितुस्तदनन्तरम् ॥ ५ ॥
वरेण्यमितिचोच्चार्यभर्गोदेवस्यधीमहि ॥
धियोयोनःप्रचोदयात्प्रणवंतदनन्तरम् ॥ ६ ॥

पहले ॐ यह वर्ण उच्चारण करके नाभ्यक्षर अर्थात् "भ" इस वर्ण को उद्धार करै, फिर भकार में दीर्घ ऊकार को लगाकर फिर भकार में ह्रस्व उकार और उसके ऊपर रेफ को मिलावै। अनन्तर "व" इस अक्षर को लेकर उसमें विसर्ग लगावे विसर्ग के पीछे दन्त्य

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

सकार को लगाना चाहिये फिर इस सकार में वकार लगाकर विसर्ग युक्त करै, हे सुर पूजित ! इस प्रकार "भूर्भुवःस्वः" इस व्याहृति मंत्र को बनाकर उसके पीछे "तत्" इस को और उसके पीछे "सवितुः" यह पद लगावै । इस के पीछे "वरेण्यं" यह पद उच्चारण करै "भर्गो देवस्य धीमहि" फिर इस वाक्य को बनावै। इसके पीछे "धियो यो नः प्रचोदयात्" इस पदको लगावै फिर "ॐ" इस वर्णका योग करै हे देवि ! इस प्रकार क्रमशः वर्णके लगानेसे गायत्री मंत्र बनैगा ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

इतिजप्त्वामहेशानिसाक्षान्नारायणोभवेत् ।
धियोयोर्मध्यभागेचयकारद्वयमेवच ॥ ७ ॥
अतएवमहादेविअनन्तश्रुतिरेवच ।
इतिजप्त्वामहेशानिमुक्तोभवतितत्क्षणात् ॥ ८ ॥

हे महेशानि ! इस प्रकारसे गायत्रीका जप कर साधक साक्षात् नारायण होजाता है, हे महादेवि ! "धियोयोनः" इस शब्दके बीचमें जो दो यकार हैं वह अनन्त श्रुतिके स्वरूप हैं, इस कारण इस प्रकार गायत्री के जप करने से साधक तत्क्षणात् मुक्त होजाता है ॥७॥ ८॥

अन्त्ययकारयोःस्थानेजोकारइतियःपठेत्[1] ।
सचाण्डालइतिख्यातोब्रह्महत्यादिनेदिने ॥ ९ ॥

---

१ प्रक्षिप्तमिदं वैदिकरीतिविरोधात् ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

इस प्रकार जो दोनों यकारोंको कोई जकार कह कर उच्चारण करते हैं, यह चांडाल कह कर विख्यात होते हैं, और उनको दिन २ ब्रह्महत्या के पाप लगतेहैं ॥ ९ ॥

अतएवमहेशानितवस्नेहात्प्रकाशितम् ।
दशभिर्जन्मजनितंशतेनचपुराकृतम् ॥ १० ॥
त्रियुगन्तुसहस्रेणगायत्रीहन्तिपातकम् ।
लक्षंजप्त्वातुतांदेवींगायत्रींपरमाक्षरीम् ॥
सर्वसिद्धीश्वरोभूत्वादेववद्विहरेत्क्षितौ ॥ ११ ॥

हे महेश्वरि! इस कारण मैंने तुम्हारे स्नेहके वशीभूत होकर तुम्हारे निकट इस गायत्री को प्रकाशित किया इस गायत्री को दशबार जपनेसे भी मनुष्यके इस जन्म के किये हुए पाप दूर होजाते हैं। सौबार जप करनेसे पूर्व जन्म के किये हुए पाप और हजार बार जप करनेसे ३ युगों से इकठे हुए पाप सभी नष्ट होजाते हैं एक लाख बार इस पराक्षरी गायत्री का जप करनेसे साधक सब सिद्धियोंका अधीश्वर होकर पृथ्वीमें देवताओंकी समान विचरण करता है ॥ १० ॥ ११ ॥

यद्गृहेविद्यतेदेविएतत्तन्त्रंसुधामयम् ।
तद्गृहंपरमेशानिकैलाससदृशंसदा ॥ १२ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

हे महेश्वरि ! जिसके घरमें यह अमृतकी समान तंत्र विद्यमान है उसका घर कैलासकी समान जानो ॥ १२ ॥

नित्यंचपूजयेत्तंत्रंससिद्धोनात्रसंशयः ।
नित्यंनित्यंमहेशानियःस्पृशेत्तन्त्रमुत्तमम् ॥ १३ ॥
सपूतःसर्वपापेभ्यश्चान्तेशिवमयोभवेत् ।
योवैलिखेदिमंतंत्रंशिववाक्यंसुधामृतम् ॥ १४ ॥
गङ्गास्नानसमंपुण्यमन्तोशिवमवाप्नुयात् ।
योयत्रपठतेनित्यंतंत्रराजमिदंशुभम् ।
ससर्वदुष्कृतिंतीर्त्वाअन्तदेवीपदंव्रजेत् ॥ १५ ॥

इति गुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे द्वादशः पटलः समाप्तः ॥ १२ ॥

जो मनुष्य सर्वदा इस तंत्रको पूजा करता है वह निश्चय ही सिद्धि को पाताहै । हे महेशानि ! जो प्रतिष्ठित उत्तम तंत्रका स्पर्श करता है उसके सब पापोंसे पवित्र होकर अंत में शिवमय होजाता है । जो इस अमृतकी समान शिवजीके वाक्य स्वरूप तंत्रको लिखकर ब्राह्मणको देता है वह गंगास्नानके समान पुण्यको प्राप्त करता है और अंतमें शिवजीके लोकको जाता है । जो मनुष्य किसी स्थान

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

में स्थित होकर प्रतिदिन इस तंत्रराजका पाठ करता है उसके सब पाप नष्ट होजाते हैं और अंतमें देवीके पदको प्राप्त होजाता है ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

इति श्रीगुप्तसाधनतन्त्रे पार्वतीशिवसंवादे पं० बलदेवप्रसाद-
मिश्रकृतभाषाटीकायां द्वादशः पटलः ॥ १२ ॥

इति भाषाटीकासमेत गुप्तसाधनतन्त्र
समाप्त.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज, श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बंबई.

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयकी परमोपयोगी स्वच्छ शुद्ध और सस्ती पुस्तकें ।

यह विषय आज २५ । ३० वर्षसे अधिक हुआ भारतवर्षमें प्रसिद्ध है कि, इस छापाखानेकी छपी हुई पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दर प्रतीत तथा प्रमाणित हुई हैं. सो इस यन्त्रालय में प्रत्येक विषय की पुस्तकें जैसे-वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, छन्द, ज्योतिष, काव्य, अलंकार, चम्पू नाटक, कोष, वैद्यक, साम्प्रदायिक तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दी भाषाके प्रत्येक अवसर पर विक्रीके अर्थ तैयार रहतेहैं । शुद्धता स्वच्छता तथा कागजकी उत्तमता और जिल्द की बँधाई देशभरमें विख्यात है । इतनी उत्तमता होनेपर भी दाम बहुत ही सस्ते रक्खे गये हैं और कमीशनभी पृथक् काट दियाजाताहै । ऐसी सरलता पाठकों को मिलना असंभवहै संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अवश्य अपनी २ आवश्यकतानुसार पुस्तकों के मँगानेमें त्रुटि न करना चाहिये. ऐसा उत्तम, सस्ता और शुद्ध पाठ दूसरी जगह मिलना असम्भव है 'सूचीपत्र' मँगा देखो ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना—खेतवाड़ी—बंबई.

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

॥ श्रीः ॥

इन्द्रजिद्विरचितः—

क्रियोड्डीशः ।

भाषाटीकासमेतः ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस—बंबई.

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

॥ श्रीः ॥

इन्द्रजिद्विरचितः

क्रियोड्डीशः

पं० लालमनशर्मकृतभाषाटीकासमेतः

तथा

पं० बलदेवप्रसादमिश्रसंशोधितः ।

स चायं

खेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालये

मुद्रयित्वा प्रकाशितः ।

फाल्गुने, शाके १८२७, संवत् १९६२.

पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार 'श्रीवेङ्कटेश्वर'

यन्त्राध्यक्षने स्वाधीन रक्खाहै ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

ed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

ॐ नमो गणेशाय ।

क्रियोड्डीशः ।

आनन्दशिखरारूढं पार्वत्या सह शंकरम् ।
पप्रच्छ गिरिजा कान्ता पुनर्नत्वा वृषध्वजम् १॥

आनन्दशिखरके ऊपर विराजमान श्रीपार्वतीजीसे शोभित श्रीशंकरजी महाराजको नमस्कार कर श्रीमहारानी पार्वतीजी पूछने लगीं ॥ १ ॥

पार्वत्युवाच—भगवन्सर्वदेवेश सर्वज्ञानमय प्रभो।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि क्रियोड्डीशं विभो वद२॥

श्रीपार्वतीजी कहनेलगीं हे भगवन्! हे सर्वदेवेश! हे सर्वज्ञानमय! हे प्रभो! इस समय क्रियोड्डीश सुननेकी मेरी अति इच्छा है कृपाकर वर्णन कीजिये ॥ २ ॥

ईश्वर उवाच—शृणु देवि प्रवक्ष्यामि उड्डीशं तन्त्रमुत्तमम्।गोपितव्यं प्रयत्नेन मम स्वप्राणवल्लभे ॥ ३ ॥

श्री शिवजी कहनेलगे, हे देवि ! श्रवणकरो तंत्रोंमें उत्तम उड्डीश तंत्र को कहता हूं, हे प्राणवल्लभे ! यह तन्त्रोत्तम उड्डीश तन्त्र सर्वथा गोपनीय है ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

ed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

शांत्यादिषट् कर्माणि तेषां लक्षणञ्च ।

स्वदेवतादिक्कालादि ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् । शीतांशुसलिलक्षोणीव्योमवायुहविर्भुजः ॥४॥ एतेषां बीजयोगेन ग्रथनादिक्रमेण कर्म्म साधयेत् । ठं वं लं हं यं वं ।

शांति आदि षट् कर्म और उनका लक्षण कहाजाता है । निजदेवता, दिक्, कालादिक को जानकर कर्म साधनकरे । चन्द्र, जल, पृथ्वी, व्योम, वायु, अग्नि ॥ ४ ॥ इन छःके बीजयोगसे ग्रथनादिक्रमपूर्वक कर्म साधन करे । ठं, वं, लं, हं, यं, वं, यह छः इन छहों देवताओंके बीज हैं ।

तत्तद्देवता-रतिर्वाणी रमा ज्येष्ठा मातङ्गी कुलकामिनी । दुर्गा चैव भद्रकाली कर्मादौ ताः प्रपूजयेत्॥ ५ ॥ वसन्ताद्यृतुकालनियमः ।

रति, वाणी, रमा, ज्येष्ठा, मातंगी, कुलकामिनी, दुर्गा, भद्रकाली इन ८ देवताओंका कर्मके आदिमें पूजन करे ॥ ५ ॥ वसन्त आदि ऋतु कालनियममें ग्रहण कियाहै ।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वर-
संवादे प्रथमः पटलः ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

अथ सर्वरोगमुक्तिकवचम् ।

श्रीदेव्युवाच–देवदेव महादेव सुरासुरनमस्कृत ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि रोगमुक्तः कथम्प्रभो॥१॥

श्रीपार्वती जी कहनेलगीं । हे देवदेव ! हे महादेव ! हे सुरासुरनमस्कृत, हे प्रभो ! इस समय मेरी यह इच्छा है कि, रोग मुक्तिका उपाय आपके मुखारविंद से सुनूं अर्थात् साधक लोग किस प्रकार रोगमुक्त होते हैं ॥ १ ॥

नास्ति त्राता च जगतां त्वां विना परमेश्वर ।
ज्वरादिवारणं शीघ्रं कृपया परया वद ॥ २ ॥

हे परमेश्वर ! आपके विना त्रिलोकरक्षक अन्य नहीं है अतः हे प्रभो ! कृपापूर्वक ज्वरादि रोगोंकी निवृत्तिका उपाय वर्णन कीजिये ॥ २ ॥

ईश्वर उवाच–कथयामि तव स्नेहात्कवचं वारणं महत् ॥

श्रीशिवजी कहने लगे हे प्रिये ! तुह्मारे स्नेहसे मैं ज्वरादि रोगनाशक कवचको कहता हूँ ।

ॐ नमो भगवति वज्रशृंखले हनतु भक्षतु खादतु अहो रक्तं पिबपिब नरवक्षास्थिरक्तपटे भस्माङ्गि भस्मलिप्तशरीरे वज्रायुधे वज्रप्राकारनिचिते पूर्वान्दिशम्मुञ्चतु दक्षिणां

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

ed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

दिशं मुञ्चतु पश्चिमां दिशं मुञ्चतु उत्तरान्दिशं मुञ्चतु नागार्थं धनग्रहपातिं बन्धतु नागपाटिं बन्धतु यक्षराक्षसपिशाचान् बन्धतु प्रेतभूतगन्धर्वादयो ये केचिद् उपद्रवास्तेभ्यो रक्षतु ऊर्द्ध्वं रक्षतु अधो रक्षतु श्येनिकां मुञ्चतु ज्वल महाबले एह्येहि तु मोटि मोटि सटावलि वज्राग्निवज्रप्राकारे ऐं फट् ह्रीं ह्रीं श्रीं फट् ह्रं हं फुं फें फः सर्वग्रहेभ्यः सर्वव्याधिभ्यः सर्वदुष्टोपद्रवेभ्यः ह्रीं अशेषेभ्यो मा रक्षतु ॥

इतीदं कवचं देवि सुरासुरसुदुर्लभम् ।
ग्रहज्वरादिभूतेषु सर्वकर्मसु योजयेत् ॥ १ ॥

हे देवि ! देवताओंकोभी बड़ी कठिनतासे प्राप्त होनेलायक इस कवचके पाठ करने से सर्व प्रकारके ज्वरादिक सहसा दूर होजाते हैं अतः सर्वकर्मोंमें इस कवचका प्रयोग करे ॥ १ ॥

न देयं यस्य कस्यापि कवचं मन्मुखाच्च्युतम् । तद्दत्ते सिद्धिहानिः स्याद्योगिनीनां भवेत्पशुः ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

मेरे मुखारविन्दसे निर्गलित यह कवचराज हरएक को न देना चाहिये क्योंकि हरएक को देदेनेसे सिद्धिहानि होतीहै और दाताको योगिनियों का पशु होना पड़ताहै ॥ २ ॥

दद्याच्छान्ताय वीराय सत्कुलीनाय योगिने । सदाचाररता ये च निर्जिताशेष एव हि ॥ ३ ॥

यह कवचराज शांतप्रकृति, वीर, सत्कुलीन, योगी, सदाचाररत, जितेंद्रियको ही प्रदान करना चाहिये अन्यको नहीं ॥ ३ ॥

ऐकाहिको द्व्याहिकश्च त्र्याहिकश्चातुराहिकः । सर्वे ज्वरा विनश्यन्ति कवचं धारयेद्यदि ॥ ४ ॥

इस कवचराजके धारण करने से प्रतिदिन आनेवाला ज्वर, दूसरे दिन आनेवाला ज्वर, तिजारी ज्वर, चौथे दिन आनेवाला एवं सर्व प्रकारके ज्वर सहसा दूर होजाते हैं ॥ ४ ॥

स्त्रिया वामकरे धार्यं पुंसा च दक्षिणे करे । अवश्यमेव सिद्धिः स्यात्सत्यं सत्यं वरानने ॥ ५ ॥

यह कवचराज स्त्रियोंको बायें और पुरुषोंको दक्षिण हस्तमें धारण करना चाहिये, हे वरानने ! अवश्य इस कवचके धारण करनेसे साधकवर्गको सिद्धिलाभ होगा ॥ ५ ॥

इति क्रियोड्डीशमहातन्त्रराजे देवीश्वरसंवादे द्वितीय पटलः ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

ed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

अथ सर्वरोगविनाशाय पार्थिवशिवलिंग पूजनप्रकरणम् ।

अतः परं महेशानि पूजनं पार्थिवं शिवम् ।
विशेषतः सर्वरोगे त्र्यम्बकस्य प्रपूजनम् ॥१॥

अब सर्वरोगोंकी शान्तिके लिये पार्थिव शिवलिङ्गके पूजनका प्रकरण कहाजाता है । हे महेशानि ! पार्थिव [मृत्तिकाके बनाये हुये] शिवपूजनका प्रकार कहाजाताहै । विशेषता से समस्त रोगोंके उत्पन्न होतेही त्र्यम्बक शिवजी महाराजका पूजन करना योग्य है ॥ १ ॥

यत्कृत्वा सर्वतः शान्तिर्भवेद्देवि न संशयः ।
ततः प्रयोगं सर्वेषां वश्यादीनाञ्च कारयेत् ॥२॥

हे देवि ! जिस पार्थिव विधान करनेमें सर्व प्रकारके रोगोंकी शान्ति होतीहै, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं, तत्पश्चात समस्त वश्यादिकोंका प्रयोग करावे ॥ २ ॥

विधानं तत्र वक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने ।

हे कमलानने ! मैं पार्थिवपूजनके विधानका वर्णन करताहूं श्रवण करो ।

शिवपूजाविधानम् ।

मृदा लिङ्गं विनिर्माय शततोलकमानया।त-
त्रानीय मृतं मुण्डं स्थापयित्वा समार्चनम् ॥१॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

पूर्वमग्निं च संस्थाप्य यज्ञस्थानं चतुर्विधम् ।
उत्तरे दक्षिणे वापि पूर्वे च पश्चिमे तथा ॥२॥
सर्वकामेषु होतव्यमन्यथा निष्फलम्भवेत् ।
घटं संस्थाप्य मम पूजां यथाशक्ति कुर्यात्
ततो वह्निस्थापनम्। मुण्डस्थापनम् । नरमहिषमार्जारमुण्डत्रयम् । अथवा नृमुण्डत्रयम् । एकमुण्डं वा तदुपरि मां संपूज्य गन्धोदकैः स्नापयित्वा वितास्तिमितधरातले पोथयित्वा तस्योपरि वेदीं कल्पयेत् । तत्रैव भूतनाथादीन् चतुर्दिक्षु समर्चयेत् । पूर्वे ॐ भूतनाथाय नमः इति पाद्यादिभिः पूजयित्वा बलिं दद्यात् एवं दक्षिणे श्मशानाधिपाय । पश्चिमे कालभैरवाय । उत्तरे च ईशानाय । वेदीमध्ये हौं प्रेतबीजं विलिख्य तत्रैव भारतीं पूजयेत् ।

१०० (सौ) तोले मृत्तिकाके शिवलिङ्गको बनाकर और मृतक पुरुष के कपालमें स्थापन कर अगाड़ी कहेहुए विधानके अनुसार पूजन करे ॥ १ ॥ पूर्व अग्निको स्थापनकर चारों दिशाओंमें हवन करे क्योंकि यह चारों दिशा यज्ञ स्थान कहातीहैं । सर्व

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

ed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

प्रकारकी कामनाओं में पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, अवश्य इन चारों दिशाओं में हवन करे इन दिशाओं में हवन के न करने से समस्त कियाहुआ कर्म निष्फल होजाता है, प्रथम घट स्थापन कर यथाशक्ति मेरा पूजन करना चाहिये। तत्पश्चात् अग्नि स्थापन करे। पुनः मुण्ड स्थापन करे। नर, महिष, मार्जार इन तीनोंके मुण्ड-को स्थापन करे। अथवा तीनों नरमुण्डही स्थापन करने चाहिये यदि किसी कारणसे ३ नर मुण्ड प्राप्त न होसकें तो एक नरमुण्ड अवश्यही स्थापन करे और उस मुण्डके ऊपर श्रीपार्थिव शिवजी महाराजका पूजन कर गन्धोदक आदिसे स्नान करावे (पुनः) १विलस्तमात्र पृथिवीको खोदकर उक्त पार्थिवप्रतिमाको उक्तस्थानमें गाडकर वहीं वेदी निर्माण करे और भूतनाथादिकोंका चारोंदिशा-ओंमें यथावत पूजन करे। ॐ भूतनाथाय नमः इस नाममन्त्रसे पाद्यादि प्रदान कर पूर्वदिशामें पूजन कर बलिदानकरे ॐ नमः श्मशानाधिपाय इस नाममन्त्रसे उक्तविधानपूर्वक दक्षिणदिशामें पूजनकर बलिप्रदान करे कालभैरवाय नमः''इसनाममन्त्रसे पश्चिममें वलिप्रदान करे ईशानाय इस नाममन्त्रसे उत्तर दिशामें बलिप्रदान करे। वेदीके मध्यमें हौं इस प्रेतबीजको लिखकर वहींपर सरस्वतीका पूजन करे।

पुष्पाञ्जलिः।

रे वीर शव देवेश मुण्डरूप जगत्पते। दयां कुरु महाभाग सिद्धिदो भव मज्जपे॥ इति पुष्पाञ्जलित्रयं दत्त्वा आग्नेय्यां ह्रीं ❀❀ ❀नमः। नैर्ऋत्यां ह्रीं चण्डिकायै नमः।

CC-0. In Public Domain. Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

वायव्यां ह्रीं भद्रकाल्यै नमः।ईशाने ह्रीं दयामय्यै नमः।श्मशानवासिनो ये ये देवादेवाश्च भैरवाः। दयां कुर्वन्तु ते सर्वे सिद्धिदाश्च भवन्तु मे। अनेन प्रणवाद्येन पुष्पाञ्जलित्रयं क्षिपेत्। ततः स्थानं तु संस्पृश्य वश्यो भव वदेदिति ।

रें वीर शव ! रे देवेश ! मुण्डरूप ! जगत्पते! महाभाग!दया कर और मेरे इस जपविधानमें सिद्धि दे, इसप्रकार तीन पुष्पाञ्जलि प्रदानकर इन बीजमन्त्रों का उच्चारण करै। आग्नेय्यां ह्रीं नमः। नैर्ऋत्यां ह्रीं चण्डिकायै नमः। वायव्यां ह्रीं भद्रकाल्यै नमः। ईशाने ह्रीं दयामय्यै नमः। जो २ श्मशानवासी देव अथवा अदेव भैरव हैं वह समस्त मेरे ऊपर कृपाकर सिद्धि प्रदान करैं। इस प्रणवादिसे तीन पुष्पाञ्जलिको छोडै तत्पश्चात् स्थानको स्पर्शकर कहै "वश्यो भव" अर्थात् मेरे वशमें हो।

तदनन्तरं स्नानं तत्र लिङ्गं संस्थाप्य परमेश्वरि। स्नानन्तु पञ्चगव्येन दधिदुग्धादिकन्तथा॥ अथ वा परमेशानि शर्करामधुना युतम्। पंचामृतैस्ततः स्नानं कारयेत्परमेश्वरि॥ ईशानाय प्रथमं स्नानं वामदेवाय

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

ed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

द्वितीयकम् । तृतीये सद्योजाताय चतुर्थे च पिनाकधृक् । पंचमं देवदेवेशं पूजयेत्पार्थिवं शिवम् ॥ अधुना मूलमन्त्रेण शर्करया गायत्रिकं परम् । ततो जीवन्यासं कृत्वा न्यासादिकं ततः परम् ॥

हे परमेश्वरि ! तत्पश्चात् लिङ्गको स्थापन कर स्नान करावै, दधि दुग्ध आदि पंचगव्यसे स्नान करावे । हे परमेशानि ! अथवा मधुमिश्रित शर्कराही से स्नान करावै, हे परमेश्वरि ! तत्पश्चात् पञ्चामृतसे स्नान करावै 'ईशानाय' इसमन्त्रसे प्रथम स्नान करावै, 'वामदेवाय' इसमन्त्रसे दूसरा स्नान करावै, 'सद्यो जाताय' इसमन्त्रसे तीसरा स्नान करावै, 'पिनाकधृक्' इसमन्त्रसे चौथा स्नान करावै, 'देवदेवेश' इस मन्त्रसे पांचवां स्नान करावै, पार्थिव श्रीशिवजीका पूजन करे । अब मूलमंत्र अथवा गायत्री मंत्रको उच्चारण कर शर्करासे स्नान करावै, तत्पश्चात् जीवन्यास कर न्यासादिक करै ।

ध्यानं शृणु महादेवि स्नेहेन कथितं मया । हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम् । अंके न्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलाशकान्तं शिवं स्वच्छाम्भोजगतं नवेंदु-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

मुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे ॥ पुनर्ध्यात्वा तु सं पूज्य अङ्गन्यासं ततः परम् ।

हे देवि! तुम्हारे स्नेहसे बद्ध मैं अब ध्यान कहता हूं, श्रवण करो । दोनों हाथों से दो अमृतके कलशोंमेंसे अमृतरसको अपने शिरपर छिडकते हुये, और दोनों हाथोंमें अमृत कलशको धारण करते हुए, दोनों हस्तकमल के मणिबंधमें मृगाक्षवलयको धारण करतेहुए अंक (गोदी) में रक्खाहै अमृत कलश जिनके नवीन चन्द्र हैं मुकुट में जिनके ऐसे कैलाशकान्त श्रीशिवजी महाराजको भजते हैं । फिर ध्यान और पूजनकर अंगन्यास करे ।

अंगन्यासः—ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं हृदयाय नमः । त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं शिरसे स्वाहा। भर्गोदेवस्य धीमहि शिखायै वषट् । उर्वारुकमिव बन्धनात् कवचाय हुं । धियो यो नः प्रचोदयात् नेत्रत्रयाय वौषट् । मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् अस्त्रायफट् । एवं करन्यासाः ।

इसी प्रकार करन्यास भी करे ।

ततः षोडशोपचारैः पूजा । जवापराजिता-कृष्णबिल्वपत्रं च पिप्पलम् । अपामार्ग

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

ed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

करवीरं प्रत्येकं जुहुयाञ्छिवे । अष्टाधिकश-
तेनैव पूजयेत् ।

हे शिवे ! जवा, अपराजिता, कृष्ण, बिल्वपत्र, पीपल, अपामार्ग (चिरचिटा) कनेर प्रत्येकसे १०८ हवन करै ।

अतः परं महेशानि मधु देयं विशेषतः। गुडा-
र्द्रकरसेनैव सुरास्तु ब्राह्मणस्य तु। नारिकेलो-
दकश्चैव कांस्ये तु क्षत्रियस्य च। कांस्यस्थं मा-
क्षिकं* वैश्यस्य। शूद्रस्य ताम्रपात्रे तु मधु-
युक्तं निवेदयेत् । अथ वा सार्षपं तैलमाज्येन
होमयेद्द्विजः । जुहुयात्सर्वकर्माणि कथि-
तानि महेश्वरि ।

हे महेशानि ! इसके पश्चात मधु देना चाहिये । गुड और अदरख के रस में मिश्रित सुरा ब्राह्मण को दे । नारियल का जल कांस्यपात्र में क्षत्री को दे । कांशी के पात्र में सहत वैश्य को दे, शूद्रको तांबेके पात्रमें मधु देवे, अथवा ब्राह्मण सर्सों का तेल और घृतसे समस्त कर्मों में हवन करै हे महेश्वरि ! यह अति गोपनीय विषय तुम्हारी प्रीति के वश होकर मैंने तुम से कहा है।

मंत्र—मंत्रं शृणु महादेवि कथितं तव श्रद्धया ।

हे महादेवि ! मंत्रको सुनो मैं तुम्हारी श्रद्धासे कहता हूं ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

gitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

ॐतत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्द्धनं भर्गोदेवस्य धीमहि उर्वारुकामिव बंधनाद् धियोयो नः प्रचोदयात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।

पुरश्चरणके साथ इस मंत्रको १००००८ जपै उपरोक्त विधान सब कर्मोंमें है ।

स्थानभेदकम्—शून्यागारे नदीतीरे पर्वते वा चतुष्पथे । बिल्वमूले श्मशाने वा निर्जने च प्रपूजयेत् । अणिमाद्यष्टशक्ति च॥वन्ध्या वा मृतवत्सावा बद्धो वा राजशत्रुके । सर्वशान्तिकरं देवि पूजनं त्र्यम्बके शिवे ॥ अत एव कथितं मे च सत्यं सत्यं वरानने ।

शून्यस्थान,नदीके किनारे,पर्वत, चौराहे, बेलके वृक्षकी जड़में, श्मशान या एकांतमें अणिमादि आठ शक्तिकोंकी पूजाकरे। वन्ध्या, मृतवत्सा का इस पूजनके करनेसे दोष निवारण होता है, राजभय शत्रुभय दूर होताहै । हे शिवे ! हे देवि ! शिवका यह पूजन सब भांतिकी शांतिको करनेवाला है। हे वरानने! मैंने यह सत्य ही सत्य कहा है ।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे देवीश्वरसंवादे-

तृतीयः पटलः ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

ed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

अथ सर्वव्याधिमोचनम् ।

शृणु वक्ष्यामि चार्वंगि सर्वव्याधिविमोचनम् ॥ एकादश पूजयेद्रुद्रान्दशांशं गुग्गुलैर्घृतैः। चत्वारः कुम्भाः संस्थाप्याः पंचवल्लवसंयुताः ॥ उक्तमंत्रेण रौप्याष्टदलपद्ममध्ये लिंगं पूजयेत् । प्रतिवासरं सप्तलिंगं पूजयेत् लक्षं जप्त्वा ॥ पलाशसमिधा होमं उक्तमंत्रेण तत्क्रमात् ॥ अत्र पीठे यजमानमभिषेकयेत् । दक्षिणां दद्याद्गोभूहेमातिलांजलीन् ब्राह्मणेभ्यः किञ्चिद्दया आचार्याय दद्यात् ॥

हे श्रेष्ठअंगवाली ! अब सब व्याधियोंसे छूटने का उपाय कहता हूँ दशांश गूगल और घी से ११ रुद्रों की पूजा करनी चाहिये । पंचपल्लवयुक्त पांच घट स्थापन करे । उपरोक्त मंत्रसे चांदी के अष्टदलवाले पद्म में लिंग को पूजै । एक लक्ष जपकरके पलाश की समिधाद्वारा उक्त मंत्र से क्रमानुसार होम करे । फिर यजमानका अभिषेक करे । गो, पृथ्वी, हेम,(सुवर्ण) तिलांजलि दक्षिणामें दे।कुछ ब्राह्मणको देकर बाकी आचार्यको देदे।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे देवीश्वरसंवादे
चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

अथ क्रियोपदेशः ।

वशीकरणादिकर्माणि वारतिथिनक्षत्रमण्डलविशेषे कर्तव्यानि ॥ स्फाटिकी माला सर्वसिद्धिदा । मणिसंख्या । पञ्चविंशतिभिर्मोक्षं पुष्टौ तु सप्तविंशतिः । त्रिंशद्भिर्धनसिद्धिस्तु पंचाशन्मन्त्रसिद्धये ॥ अष्टोत्तरशतैः सर्वसिद्धिः ।

अब क्रियोपदेश कहाजाता है । वशीकरण आदि कर्म वार, तिथि, नक्षत्र और मण्डलविशेषमें करना चाहिये, स्फटिक की मालासे जपकरने पर सर्वसिद्धि प्राप्तहोती है । दानोंकी गिनती २५ दानेकी मालासे जपकरने पर मोक्षसुख प्राप्तहोताहै पौष्टिककर्म में २७ दानोंकी माला होनी चाहिये । धनसिद्धिमें तीस दानोंकी माला होनीचाहिये । मन्त्रसिद्धिमें ५० दानोंकी माला लेनी चाहिये । १०८ दानोंकी माला सर्वसिद्धिमें लेनीचाहिये ।

शिवमन्त्रसमायुक्तमौषधं सफलम्भवेत्
मूलिकोत्पाटनच्छेदनादिविधिः पूर्वतन्त्रे कथितः । वन्ध्यादिदोषनिवारणम् । स्त्रीणां बाधकमोचनम् । रक्तमाद्यादिचतुर्विधबाधकदोषनिवारणम् । तत्र यन्त्रम् । त्रिकोणमथ षट्कोणं नवकोणं मण्डलाकृति । यन्त्राण्ये-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

तानि संलिख्य वाहयेन्मन्त्रपूर्वकम् । तंत्र-पूजनात् औषधादिभक्षणाद्दोषशान्तिः ।

शिवमन्त्रके जपपूर्वक यदि औषधि उत्पाटन कीजाय तो सफलहो । मूलिका (जड़) के उखाड़नेकी विधि पूर्वतन्त्रमें कहचुकेहैं । वन्ध्यादि दोष निवारणके अर्थ और स्त्रियोंकी बाधा मोचनके अर्थ इस मूलिकाका प्रयोग करे माद्रि आदि चार प्रकार के दोषोंका यथार्थ निवारण होता है । अब यन्त्र कहाजाता है मण्डलाकृति, त्रिकोण, षट्कोण अथवा नवकोण मन्त्रसहित यन्त्र लिखकर पूजन करे और औषधी भक्षण करे तो सर्व प्रकार के रोग शान्त होंय ।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वरसम्वादे पंचमः पटलः॥५॥

अथ मृतवत्सादिशान्तिकवचम् ।

मृतवत्सामृतगर्भापुत्रहीनानां शान्तिः कवचधारणात् । कवचं प्रथमम् । ॐ नमो नरसिंहाय नमो महाविपन्नाशाय दिव्यरूपाय नरसिंहाय नमः। स्थौं सौं क्षौं रामाय नमः। रां रामाय नमः । ॐ ह्रीं श्रीं फणं हुं हां फेत्काररशब्देन सर्वबालकस्य सर्वभयोपद्रव-नाशाय इमां विद्यां पठति धारयति यदि तदा नरसिंहो रक्षति सदा हु फट् स्वाहा ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

अब मृतवत्सादि शान्तिकवच कहाजाता है । जिन स्त्रियोंके गर्भमें ही पुत्रादिक मरजाते हैं उन्हें मृतवत्सा कहते हैं उन्हीं का शान्तिविधान कहाजाताहै । उनको ही इस कवचके धारण करने से शान्तिलाभ होसकताहै ।

प्रकारान्तरेण द्वितीयकवचम् ।

अब प्रकारान्तर से दूसरा कवच कहाजाता है ।

ॐ नमो नरसिंहाय हिरण्यकशिपोर्वक्षःस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाचडाकिनीकुलनाशाय स्तम्भोद्भवाय समस्तदोषान् हरहर विषविष पचपच मथमथ हनहन फट् हुँ फट् ठःठः एहि रुद्रो ज्ञापयति स्वाहा ।

ॐ क्षौं नमो भगवते नरसिंहाय ज्वालामालिने दीप्तदंष्ट्राय अग्निनेत्राय सर्वरक्षोघ्नाय सर्वभूतविनाशाय सर्वज्वरविनाशाय दहदह पचपच रक्षरक्ष हुँ फट् स्वाहा ।

गोरोचनया भूर्जे विलिख्य स्वर्णस्था गुटिका स्त्रिया वामकरे पुरुषेण दक्षिणे करे धार्या कदापि न दोषः ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

इस कवचराजको भोजपत्र के ऊपर लिखकर सोने के ताबीज में बन्दकर स्त्रियां बायें और पुरुष दक्षिणभुजदण्डमें धारण करें किसी अवस्थामेंभी यह अपवित्र न होगा ।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वरसंवादे
षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

श्रीदेव्युवाच–श्रुतं कवचचरितमपूर्वं देववांछितम् । इदानीं श्रोतुमिच्छामि यन्त्रं कथय मे प्रभो ।

श्रीदेवीजी कहने लगीं । हे देव ! मनोवाञ्छित दायक अपूर्व कवचचरित सुना हे प्रभो ! अब मेरी यंत्र सुनने की इच्छा है कृपा कर कहिये ।

(यन्त्रम्) ईश्वर उवाच–मात्राहीनं रकारन्तु पार्श्वे शीर्षे तथा पुनः । मायात्मकं तेन भवेत् षट्कोणं यन्त्रमुत्तमम् । माया बीजं ह्रीं गर्भम् ।

षट्कोण यंत्र लिखकर ह्रीं बीजको मध्यमें लिखे, शेष सुगम है।

स्त्रिया वामहस्ते धारणाद्वन्ध्या पुत्रवती भवेत्। बालाया बालकस्यापि कण्ठे सन्धार्य सुखी भवेत् । भूर्जे गोरोचनया विलिख्य स्वर्णस्थं धारयेत्।षोडशीचक्रस्य गोरोचनया

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

भूर्जे विलिख्य धारणात् स्त्रीणां सौभाग्यवृद्धिः। चतुष्कोणचक्रं संलिख्य ह्रीं गर्भं बाहौ धारणात् नारी जीवत्पुत्रिका अथवा चतुष्कोणे प्रणवादि क्षं पुनः। मीनचक्रं संलिख्य धारणात् वन्ध्या जीवत्पुत्रिका भवति।

इस यंत्रराजको भोजपत्र के ऊपर लिखकर यदि स्त्री अपने बायें हाथमें बांधे तो वन्ध्याके भी पुत्र पैदाहो गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर लिखकर सोनेके तावीजमें बन्दकर बाला अथवा बालकके कण्ठमें यदि यह यंत्रराज पहनाया जाय तो सुख प्राप्त हो। षोडशीचक्रको गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर लिखकर धारण करनेसे स्त्रियोंको सौभाग्य प्राप्ति होती है। चतुष्कोण चक्रके मध्यमें ह्रीं बीज लिखकर बाहु में धारण करनेसे स्त्री जीवत्पुत्रिका होतीहै मीन चक्रके चारों कोनेमें प्रणवादि क्षं बीज लिखकर धारणकरे तो वन्ध्या स्त्रीभी सन्तानसुख को प्राप्त हो।

अतः परं अष्टदलकर्णिकामध्ये माया। ततः परं दलमध्ये द्वे द्वे माया बीजे पुनः पुनः। इतः परं नवदलं मायाबीजं विलिख्य बाहौ धारणात् मृतवत्सा जीववत्सा ॥ गोरोचना कुंकुमेन संलिख्य रक्तसूत्रेण संवेष्टय गुटिकां पञ्चामृतैः पंचगव्यैः स्नापयित्वा। प्रण-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

वेन तु संमन्त्र्य स्नापयेद्गन्धद्रव्यकैः। प्राणान् प्रतिष्ठाप्य देवतारूपां गुटिकां सम्पूज्य धारयेत् ।

तत्पश्चात् अष्टदल कर्णिकामध्यमें मायाबीज लिखे और दलमध्यमें दो दो मायाबीज लिखे । एवं नवदलमें मायाबीज लिखकर और रक्तसूत्रसे लपेटकर गुटिकाको पञ्चामृत तथा पञ्चगव्यसे स्नान कराकर प्रणवसे अभिमंत्रित कर पुनः गन्धद्रव्योंसे स्नान करावे। प्राणप्रतिष्ठा करके देवतारूप गुटिकाका पूजन कर धारण करे।

शिवस्नानम्—घृतेन मधुना वापि स्नापयेद्वश्यकर्मणि। दुग्धादिना तथा देवि शान्तौ मृत्युञ्जयेऽपि च ॥ आकर्षणे तु मधुना भस्मना क्रूरकर्मणि ।

अब शिवस्नान कहाजाता है । वश्यकर्ममें घृत और मधुसे स्नान करावे, शांति तथा मृत्युञ्जयजप कर्म में दुग्धादिक से स्नान करावे, आकर्षण कर्ममें मधुसे स्नान करावे क्रूर कर्ममें भस्मसे स्नान करावे ।

अस्य परिमाणम्—शततोलकमानेन द्रव्यमेतत्प्रकीर्तितम् । तन्मानं सम्विदाचूर्णं नैवेद्यं च सुरेश्वरि ॥ बिल्वपत्रं तथा पुष्पं दद्यादष्टोत्तरं शतम् । शांतिकादौ द्रोणपुष्पं

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

बर्बरा चाभिचारके। स्तम्भने मोहने चैव धत्तूरं कनकाह्वयम् । विद्वेषोच्चाटने देवि विजयाप्यपराजिता । चतुर्दश्यां समारभ्य यावदन्या चतुर्दशी ॥ एकैकं क्रमशो लिंगं पूजयेद्भक्तिभावतः । अष्टाधिकसहस्रन्तु जपं कुर्याद्दिनेदिने ॥ सप्ताहे सप्त लिङ्गानि पंचाहे चाथ पञ्चकम् । चण्डोग्रेण विधानेन जपपूजादिकं स्मृतम् ॥ वटुकेन तु मंत्रेण मञ्जुघोषेण वा प्रिये । त्रैयम्बकेण देवेशि शान्तिके जपपूजनम् ॥ तत्तत्कल्पविधानेन जपं पूजां समाचरेत् । जातिध्वंसे कुलोच्छेदे ज्वरादौ रोगसंकटे ॥ महाभये समुत्पन्ने सर्वाभिचारसम्भवे । यत्नेन पूजयेद्देवि लिङ्गमष्टोत्तरं शतम्। अतिरुद्रप्रयोगादौ रुद्राध्यायेन वा पुनः ॥ नीलकण्ठेन वा देवि स्तवेन तोषयेच्छिवम् ।

हे देवेशि ! अब स्नान द्रव्यके तोलेका परिमाण कहाजात है, सौ तोले परिमाण स्नानद्रव्य होना चाहिये । तत्परिमाणही नैवेद्य होनायोग्य है । बिल्वपत्र और पुष्प १०८ होने चाहिये । शान्ति आदिमें द्रोणपुष्प, अभिचार प्रयोग में बर्बरा पुष्प, स्तम्भन और मोहन कर्ममें धतूरे के पुष्प, विद्वेष और उच्चाटन कर्म में विजया तथा अपराजिता के पुष्प होने योग्य हैं । एक पक्षकी

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

चतुर्दशीमें प्रयोग आरम्भ करै और दूसरे पक्षकी चतुर्दशीमें प्रयोग समाप्त करै। क्रमानुसार भक्तिपूर्वक एक २ लिङ्गका पूजन करे प्रतिदिन अष्टोत्तर शत जपकरै । सप्ताहमें सात और पञ्चाह में पांच लिङ्गका पूजन करे । चण्डोग्र विधानपूर्वक जप पूजन करना चाहिये । हे प्रिये ! शुद्ध और साफ २ उच्चारण कियेहुए वटुक मन्त्र अथवा त्र्यम्बक मंत्रसे शांति कर्ममें जप और पूजन करै। तत्तत् कल्पानुसार पूजा जप करना योग्य है । जातिध्वंस कुलोच्छेद, महाज्वर, सङ्कट, महाभयकी प्राप्ति, सर्व प्रकारके अभिचार आदि प्रयोगों में यत्नपूर्वक अष्टोत्तर शत १०८ लिङ्ग का पूजन करै । हे देवि ! रुद्राध्याय, अथवा नीलकण्ठस्तव से स्तुति कर श्रीशिवजी महाराजको प्रसन्न करै ।

स्तवः—सर्वज्ञज्ञानविज्ञानप्रदानैकमहात्मने नमस्ते देवदेवेश सर्वभूतहिते रत । अनन्तकांतिसम्पन्न अनन्तासनसंस्थित ।अनन्तकान्तिसम्भोग परमेश नमोस्तु ते । परापरतरातीत उत्पत्तिस्थितिकारक । सर्वार्थसाधनोपाय विश्वेश्वर नमोऽस्तु ते । सर्वार्थनिर्मलाभोग सर्वव्याधिविनाशन । योगियोगी महायोगी योगीश्वर नमोऽस्तु ते । कृत्वा लिंगप्रतिष्ठाञ्च ध्यात्वा देवं सदाशिवम्।पूजयित्वा विधानेन स्तवपाठमुदीरयेत ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Jal

लिंगस्तवं महापुण्यं यः शृणोति सदा नरः। नोत्पद्यते च संसारे स्थानं प्राप्नोति शाश्वतम् । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन शृणुयाच्च सुसंस्तवम् ।पापकर्ता कलेर्मुक्तः प्राप्नोति परमं पदम् ।

अब स्तव कहाजाताहै । हे सर्वज्ञ ! हे सर्वदेवेश ! हे सर्वभूत हितेरत ! ज्ञान विज्ञान देनेवाले आपको नमस्कार है । अनन्तकान्तिसम्पन्न ! हे अनन्तासनसंस्थित ! अनन्तकांतिसम्भोग ! परमेश्वर ! आपको नमस्कारहै । हे परापर ! परातीत ! हे उत्पत्तिस्थितिकारक ! ह सर्वार्थ साधनके उपाय ! विश्वेश्वर आप को नमस्कार है । हे सर्वार्थनिर्मलाभोग ! हे सर्वव्याधिविनाशन ! योगियोंके योगी, महायोगी ! योगीश्वर आपको नमस्कार है । लिंगकी प्रतिष्ठा और सदाशिवका ध्यानकर विधानपूर्वक पूजन कर इस स्तवका पाठ करे । यह लिङ्गस्तव महापुण्यदायक है जो नर एकाग्र चित्तहो इस स्तवका पाठ करते हैं फिर उन को इस संसार के दुःख नहीं भोगने पड़ते, किन्तु शाश्वत शिवलोकको प्राप्त होते हैं । इस कारण प्रयत्नपूर्वक इस मनोहर स्तवराज का पाठ करना और श्रवण करना अत्यावश्यक है क्योंकि महापापी मनुष्यभी इस संसार के दुःखों को तृणवत् त्यागकर परम पदको प्राप्त होजाताहै ।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे देवीश्वरसंवादे सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

अथ रुद्रकवचम् ।

भैरव उवाच–वक्ष्यामि देवि कवचं मंगलं प्राणरक्षकम् । अहोरात्रं महादेवरक्षार्थं देवमण्डितम् । अस्य श्रीमहादेवकवचस्य वाम देवऋषिः पंक्तिश्छन्दः सौः बीजं रुद्रो देवता सर्वार्थसाधने विनियोगः ।

भैरवजी कहनेलगे कि हे देवि ! मंगलरूप प्राणरक्षक रुद्रकवच को कहता हूं । यह कवच रात्रि दिन रक्षा करनेमें समर्थ है। यह श्रीमहादेवजीकी रक्षाके लिये देववृंद से मण्डित हैं । इस कवच का वामदेव ऋषि, पंक्ति छंद, सौः बीज, रुद्र देवता है ।

रुद्रो मामग्रतः पातु पृष्ठतः पातु शङ्करः ॥
कपर्दी दक्षिणे पातु वामपार्श्वे तथा हरः॥१॥
शिवः शिरसि मां पातु ललाटे नीललोहितः॥
नेत्रे मे त्र्यम्बकः पातु बाहुयुग्मं महेश्वरः२॥
हृदये च महादेव ईश्वरश्च तथोदरे ॥ नाभौ
कुक्षौ कटिस्थाने पादौ पातु महेश्वरः ॥३॥
सर्वं रक्षतु भूतेशः सर्वगात्राणि मे हरः॥पाशं
शूलञ्च दिव्यास्त्रं खड्गं वज्रं तथैव च ॥ ४ ॥
नमस्करोमि भूतेश रक्ष मां जगदीश्वर ॥ पा

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Jal

पेभ्यो नरकेभ्यश्च त्राहि मां भक्तवत्सल ॥
॥ ५ ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिकामक्रोधाद-
पि प्रभो ॥ लोभमोहान्महादेव रक्ष मां त्रिद-
शेश्वर॥६॥त्वं गतिस्त्वं मतिश्चैव त्वं भूमि-
स्त्वं परायणः ॥कायेन मनसा वाचा त्वयि
भक्तिर्दृढास्तु मे ॥ ७ ॥

मेरे अग्रभागमें रुद्रदेव मेरी रक्षाकरें, मेरे पृष्ठभागमें शंकर देव मेरी रक्षाकरें, कपर्दी देव मेरे दक्षिण भागमें मेरी रक्षाकरें, मेरे वामभागमें हर देव मेरी रक्षा करें,शिवजी महाराज मेरे शिरकी रक्षाकरें, नीललोहित मेरे ललाटकी रक्षाकरें, त्र्यम्बक नेत्रकी रक्षा करें, महेश्वर दोनों बाहुकी रक्षाकरें, मेरे हृदयकी महादेव रक्षाकरें, ईश्वर उदरकी रक्षाकरें, नाभि, कुक्षि, कटि (कमर) हाथ पैरकी महेश्वर रक्षाकरें, सर्वथा भूतेश मेरी रक्षाकरें, हरदेव समस्त गात्रकी रक्षाकरें, हे भूतेश ! पाश, शूल, दिव्यास्त्र खड्ग, वज्र, आदिकी रक्षाकरो, मैं आपको नमस्कार करताहूं, हे भक्तवत्सल ! पाप और नरकसे सदा मेरी रक्षा करो, हे प्रभो!जन्म, मृत्यु, जरा,व्याधि, काम,क्रोधसे भी मेरी रक्षा करो,हे त्रिदशेश्वर ! लोभ मोहसे भी रक्षाकरो,हे भगवन्!आपही गति हैं आपही मति हैं,आपही भूमि हैं और आपही हमारे मुख्य आश्रय हैं। हे प्रभो ! मन, वचन, कायकरके मेरी भक्ति आपमें दृढ हो ॥ १–७ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

फलश्रुतिः-इत्येतद्रुद्रकवचं पाठनात्पापनाशनम् । महादेवप्रसादेन भैरवेन च कीर्तितम् ॥ न तस्य पापं देहेषु न भयं तस्य विद्यते । प्राप्नोति सुखमारोग्यं पुत्रमायुःप्रवर्द्धनम् ॥ पुत्रार्थी लभते पुत्रान्धनार्थी धनमाप्नुयात् ।विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी मोक्षमेव च । व्याधितो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् । ब्रह्महत्यादिपापं च पठनादेव नश्यति ।

अब कवचपाठका फल कहाजाता है । इस रुद्रकवचके पाठ करनेसे पाप नष्ट होते हैं । श्रीमहादेवजीकी प्रसन्नता के लिये यह कवच श्रीभैरवजीने कहाहै । इसके पाठ करनेवालोंका शरीर पापों से स्वच्छ होजाता है जैसे कि मैलके कट जानेसे सुवर्ण स्वच्छ हो जाता है, इसके पाठ करनेवालेको कहीं किसी प्रकारका भय नहीं होता सुख और आरोग्यताको प्राप्त होता है, पुत्रार्थी पुत्रको प्राप्त होताहै, धनार्थी धनको प्राप्त होता है, विद्यार्थी विद्याको प्राप्त होताहै, मोक्षार्थी मोक्षको प्राप्त होता है, रोगी रोगसे छूट जाता है, बन्धनग्रसित बन्धनसे छूटजाता है, विशेष क्या इस कवचके पाठ करनेसे ब्रह्महत्यादिक पापभी नष्ट होजाते हैं ।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे देवीश्वरसंवादे अष्टमः पटलः ॥ ८ ॥

CC-0. In Public Domain. Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

अथासनम् ।

एकं सिद्धासनं प्रोक्तं द्वितीयं कमलासनम् । व्याघ्राजिने सर्वसिद्धिर्ज्ञानसिद्धिर्मृगाजिने ॥ वस्त्रासनं रोगहरं वेत्रजं प्रीतिवर्द्धनम् । कौशेयं पुष्टिदं प्रोक्तं कम्बलं सर्वसिद्धिदम् ॥ शुक्लं वा यदि वा कृष्णं विशेषाद्रक्तकम्बलम् । मेषासनन्तु वश्यार्थमाकृष्टौ व्याघ्रचर्म च।शांतौ मृगाजिनं शस्तं मोक्षार्थं व्याघ्रचर्म च । गोचर्म स्तम्भने देवि वाजं चोच्चाटने तथा । (विद्वेषे श्वानचर्म च) मारणे माहिषं चर्म कर्मोद्दिष्टं समाचरेत् । सर्वकामार्थदं देवि पट्टवस्त्रासनन्तथा । कुशासनं कम्बलं वा सर्वकर्मसु पूजितम् ॥ दुःखदारिद्र्यनाशन्तु काष्ठपाषाणजासनम् ।

अब आसनविधान कहाजाता है । पूजनकर्म में एक सिद्धासन अथवा दूसरा कमलासन प्रशंसनीय है । व्याघ्रचर्मके आसन पर जप करनेसे सर्वसिद्धि प्राप्त होती है । मृगचर्म पर पूजन करनेसें ज्ञानप्राप्ति होती है । वस्त्रासनपर पूजन करनेसे रोग दूर होता है । वेत्रके आसन पर जप करनेसे प्रीति की वृद्धि होती है

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

कुशाके आसनपर जप करनेसे पुष्टि प्राप्त होती है। कम्बलके आसनपर जप करनेसे सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। शुक्ल अथवा कृष्ण इन दोनों प्रकारके कम्बलोंसे रक्त कम्बल श्रेष्ठ है। वश्य-कर्ममें मेष आसन, आकर्षण कर्ममें व्याघ्रचर्मका आसन, स्तम्भनमें गोचर्मका आसन, उच्चाटनमें अश्वचर्मका आसन, विद्वे-षणमें श्वानचर्मका आसन। मारणकर्ममें महिषीके चर्मका आसन ग्रहण करे। हे देवि ! रेशमीन वस्त्रका आसन सर्व कामना-ओंका देनेवाला है। कुशासन अथवा कम्बलासन सर्व कर्मोंमें पूजनीय है। काठ तथा पाषाणका आसन दुःख और दारिद्र्य नाशक है।

अथ होमघटादिस्थापनम्।

नित्यं नैमित्तिकं कार्यं स्थण्डिले वा समाचरेत्। हस्तमात्रेण तत्कुर्याद्वालुकाभिः सुशोभनम्॥ तोयपूर्णान्घटान्पञ्च स्थापयेत्परमेश्वरि। एकेन मन्त्रयुग्मेन स्थापिताः स्युः सपल्लवैः। अशक्तौ च महादेवि एकैकेन च वाससा। कदाचिदपि चैकेन सर्वान्नाच्छादयेच्छिवे। अनाच्छादिततोयानि स्थापयित्वा व्रजत्यधः।

अब होमघटादिकका स्थापन कहाजाताहै। हे परमेश्वरि ! नित्य तथा नैमित्तिक कर्म समाप्तकर पुनः हस्तमात्र वालुकासे सुशोभित

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

स्थंडिल निर्माण कर उसके ऊपर जलसे भरे पांच घट स्थापित करे, एक अथवा दो मंत्रोंसे अभिमंत्रित कर उक्त पांच कलशों के मध्य में पंचपल्लव प्रवेश करे, हे महादेवि ! यदि पृथक् २ कलश के आच्छादनार्थ वस्त्रकी शक्ति न हो तो एकही वस्त्रसे पांचों कलशोंको लपेटदे क्योंकि स्थापित जलको आच्छादन न करनेसे स्थापनकर्ता अधोगति को प्राप्तहोताहै ।

ततः स्थां स्थीं इति श्रीमिति मन्त्रेण घटं स्थिरीकृत्य । क्लीं इति घटप्रोक्षणम् । क्रामिति घटाभिमन्त्रणम् । ह्रीं इत्यारोपणम् । ह्रीं जलेन पूरणम् । ततः कृताञ्जलिः पठेत् ।

तदनन्तर स्थां स्थीं इन बीजमन्त्रों से और श्रीं इस मन्त्रसे घटको स्थिरकर क्लीं इस बीज मन्त्रसे घटको प्रोक्षणकरै । क्रां इस बीजमंत्रसे घटको अभिमंत्रित कर ह्रीं इस बीज मंत्रसे घटको स्थापन करे । पुनः ह्रीं मंत्रसे जलसे पूर्णकरे फिर अंजलि बांधकर प्रार्थनामंत्र पढ़े ।

गंगाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च।
सर्वे समुद्राः सरितः सरांसि जलदा नदाः॥
ह्रदाः प्रस्रवणाः पुण्याः स्वर्गपातालभूगताः।
सर्वतीर्थानि पुण्यानि घटे कुर्वन्तु सन्निधिम्।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

ततः श्रीमिति पल्लवम्, हुमिति फलम्, रमिति सिन्दूरम्, वमिति पुष्पम्, मूलेन दूर्वाम्, ओं ओं ओं इत्यभ्युक्षणम् ॐ फट् स्वाहा इति कुशेन ताडनम् । शान्त्यर्थं स्नापयेत्कुम्भम् ।

पुण्याहं वाचयित्वा कर्म कुर्यात् दिग्बन्धनादि गणेशग्रहदिक्पालादीन्प्रतिकुण्डे पूजयेत् ।स्थण्डिले पूजयेल्लिङ्गं सर्वापद्विनाशनम्। कुम्भे चापि पूजयेत् । ततः अग्निमानीय संस्कृत्य होमं कुर्यात् ।

हे घट ! गंगा आदिनदियां, चारों समुद्र, तालाव, शेष समुद्र क्षिरसागर आदि, सरितायें, छोटी छोटी नदी, नाले, पक्के तालाव झरनें, स्वर्ग, पाताल और मर्त्यलोकके समस्त बाउड़ीआदिजलस्थान, समस्त काशी आदि पुण्यक्षेत्र तुमारेमें आकर वास करै ।

पुनः श्रीं बीजसे पञ्चपल्लव स्थापन करे। हूं इस बीजमंत्रसे घट के भीतर फलस्थापन करे । रं इस बीजमंत्रसे घटके ऊपर सिन्दूर चढावे । वं बीजमंत्र उच्चारणकर पुष्प चढावे । मूलमन्त्रसे दूर्वा चढावे । ओं ओं ओं इन तीन प्रणवोंको उच्चारण कर अभ्युक्षण करे ॐ फट् इस बीजमंत्रको पढकर कुशासे घटको ताडन करे ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

शान्तिके लिये कुम्भको स्नान करावे । पुण्याहवाचन कर दिग्बन्धनादि कर्म करे । गणेश, ग्रह, दिक्पालादिकोंकी प्रीति के अर्थ कुण्ड में पूजन करे । स्थण्डिल में लिंगका पूजन करने से सर्व प्रकार की आपत्तियां दूर रहती हैं । कुम्भमें भी पूजन करना चाहिये फिर अग्निको ताम्रपात्रद्वारा लाकर संस्कार कर हवन करे ।

महाविपत्तौ जुहुयात् जवां कृष्णपराजिताम् ।
द्रोणं वा करवीरं वा मनोऽभीष्टफलं लभेत् ॥
करवीरैः श्वेतरक्तैः रक्तचन्दनमिश्रितैः ।
द्रोणैश्च केतकीपुष्पैः होमो रोगं विमोचयेत्॥
चम्पकैः श्वेतपद्मैश्च कोकनदञ्च बन्धुकम् ।
बिल्वपत्रं कुरुबकं मुनिपुष्पञ्च केसरम् ॥
हुत्वा यदि महादेवि अवश्यं पुत्रवान्भवेत् ।
रक्तोत्पलं बिल्वपत्रं काञ्चनं रक्तवर्णकम् ॥
शान्तिमंत्रात्रिकञ्चापि शतसंख्याक्रमेण तु ।
जुहुयात्तु महेशानि सर्वसिद्धिर्भवेत्तदा ।

महाविपत्तिमें जवाकुसुम, तथा विष्णुक्रान्ताके पुष्प से हवन करे । मनवाञ्छितकी प्राप्ति के लिये द्रोणपुष्प, तथा कनेर के पुष्पों से हवन करे । वा श्वेत, अथवा रक्तचन्दनमिश्र कनेरके पुष्पों से हवन करे, रोगशान्तिके अर्थ द्रोणपुष्प अथवा केतकी

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

कें पुष्पों से हवन करे । पुत्र प्राप्तिके अर्थ चम्पाके पुष्प, श्वेत पद्म कोकनद, कन्दूरीके पुष्प, बिल्वपत्र, कुरुबक, अगस्तवृक्षके पुष्प केशरसे हवन करै । सर्व सिद्धिके अर्थ रक्तकमल, बिल्वपत्र धतूरेके पुष्पोंसे हवन करे । परन्तु एकही शांतिमन्त्रसे अष्टोत्तर शत १०८ वार हवन करना चाहिये ।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे देवीश्वरसंम्वादे नवमः पटलः ॥ ९ ॥

अथ शाक्ताभिषेकः ।

शाक्ताभिषेको वन्ध्यामृतवत्सारोगिणीनां शान्तिकरः । धनकीर्त्यायुर्वृद्धिसौभाग्यजननः सर्वाशापूर्णो मन्त्रदोषनिवारणोऽभिचारहरो ग्रहदोषनाशनः सर्वसिद्धिप्रदोऽभिषेकः॥

अब शाक्ताभिषेक कहाजाताहै । यह शाक्ताभिषेक वन्ध्या, मृतवत्सा, रोगिणी स्त्रियोंको शांतिप्रदान करनेवाला है धन, कीर्ति, आयुवृद्धि करनेवाला है । सम्पूर्ण आशा पूर्ण करनेवाला है । मन्त्रदोष निवारक है । अभिचार और ग्रहदोष दूर कर सर्व सिद्धि प्रदान करता है ।

अथ नयनरञ्जनम् ।

दीपं कृत्वा ताम्रपात्रे कज्जलं पातयेदथ ।
गवां घृतेन चालोड्य चक्षुषी अथ रञ्जयेत् ।
पूर्वं च यादृशं दृष्टं तादृशञ्च प्रपश्यति ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

दीपक जलाकर ताम्रके पात्रमें कज्जल पाडे, फिर उसी कज्ज लको घृतमें मथकर नेत्रोंको आंजे जैसा कि पूर्वमें देखा था वैसा ही देखसकता है ।

प्रकारान्तरे—रक्तचन्दनसंयोगान्मधुना सह रौद्रके । कियद्दृष्टमञ्जनञ्च तिमिरं हन्ति सुन्दरि ।

अंजनका द्वितीय प्रकार । रक्तचन्दन और शहतको मिलाकर धूपमें सुखाले पुनः नेत्रोंमें आंजे तो रतोंधा दूर हो ।

अथान्यः—पुनर्नवाघृतं सद्यश्चक्षुस्तेजःकरं भवेत् ।

पुनर्नवामें सिद्धकिया हुआ घृत शीघ्र नेत्रकान्ति बढ़ानेवालाहै ।

अथ ज्वरहरणम् । अपामार्गस्य मूलञ्च कन्यकासूत्रबन्धने । स्वात्यां तथा वैष्णवे च ज्वरं हन्ति सुदारुणम् ।

ज्वरहरण चिकित्सा कहीजाती है । अपामार्गकी जड़को कुमारी कन्याके हाथसे कतेसूत्रमें बांधकर स्वाति अथवा विष्णु नक्षत्रमें यदि शिरोभागमें धारण करे तो सहसा ज्वर दूर हो ।

अथ सर्वज्वरनिवारणम् । रक्तवाट्या मूलमर्कवारे कदलीसूत्रैः शय्यायां दापयेत् सर्वज्वरं तापज्वरं हरेत् ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

अब सर्वज्वर शान्ति प्रकार कहाजाता है । लाल झाडीकी जड़ को मंगलवारके दिन केळेके सूत्रमें लपेटकर यदि शय्याके एकदेश (पाये में) बांधै तौ ताप ज्वर आदि सर्व प्रकारके ज्वर शांतहों ।

अथोदररोगप्रशमनम्—नागेश्वरमूलं मधुना सह पानादुदररोगशान्तिः ।

उदररोग शान्ति कहीजाती है । नागेश्वरकी जडको सहत में मिळाकर पान करने से उदररोग शान्ति होती है ।

अथ तृष्णानाशः—रक्तचन्दनं घर्षयित्वा तोलकं जलसंमिश्रं वामहस्ते गृहीत्वा मनु-मष्टोत्तरशतं संजप्य पिबेत् । सप्ताहात्तस्य तृष्णानाशो भविष्यति ।

अब तृष्णानाशप्रकार कहाजाताहै । रक्तचन्दनको पानीमें घिसकर और एक तोला मात्र पानी मिळाकर वांये हाथमें लेकर १०८ वार अगाडी कहे मंत्रका जप कर अभिमांत्रित कर पानकरे एक सप्ताहके बीचं तृष्णाशान्ति होगी ।

मन्त्रस्तु—शब्दबीजद्वयं भद्रे नाशयाद्वितयं वदेत् । तृष्णेति पदमुच्चार्य ततः स्वाहा मनुर्मतः। अनेन मनुना देवि तृष्णानाशो भविष्यति ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gram-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

हे भद्रे अब मंत्रोद्धार कहाजाता है। दो शब्दबीज, दोबार नाशयपद, तृष्णापद, स्वाहापद इनको जोड देनेसे मंत्रोद्धार होता है, हे देवि! इसमन्त्रसे पानकरनेसे तृष्णानाश होताहै।

अथ सर्वापच्छान्तिकरं महास्वस्त्ययनम्।

अथ वक्ष्ये महेशानि महास्वस्त्ययनं शृणु।
सर्वसिद्धिकरं पुण्यं सर्वपापविनाशनम्॥
सर्वोपद्रवशमनं सर्वारिष्टविनाशनम्। महा-
व्याधिप्रशमनमपस्मारविनाशनम्॥ योगि-
नीभूतवेतालाः प्रेतकूष्माण्डपन्नगाः। तत्र
स्थाने न तिष्ठन्ति डाकिन्याद्या विशेषतः।

हे महेशानि! अब सम्पूर्ण आपत्ति दूरकर शान्ति प्रदान करनेवाला स्वस्त्ययन कहा जाताहै। हे देवि! शान्तिप्रद महास्वस्त्ययन श्रवणकरो (सुनो) इस स्वस्त्ययनके पाठ करनेही मात्रसे सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। यह परम पवित्र और सम्पूर्ण पापनाश करनेवाला है। यह सम्पूर्ण उपद्रव और सम्पूर्ण अरिष्ट विनाशक है इसके उच्चारण करनेसे महाव्याधि और अपस्मार (मृगी) दूर रहते हैं। योगिनी, भूत, वेताल, प्रेत, कूष्माण्ड, पन्नगादि कदापि उस स्थानमें नहीं वासकरते जिस स्थानमें निरन्तर इस महास्वस्त्ययनका पाठ होता रहता है।

कृत्यामभ्यर्च्चयेद्देवि यथाविधिपुरःसरम्।
षोडशारं लिखेत् पद्मं योनियुग्मं सबिन्दु-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

क्रम् ॥ तन्मध्येऽष्टदलं लिख्य यकारादीन्न्य-
सेत्क्रमात्। तन्मध्येचैवषट्कोणं लिखेन्मूल-
मनुस्मरन् ॥ चन्द्रबिम्बं लिखेन्मध्ये अ-
साध्ये पार्थिवं शिवम् ॥ तस्य मध्ये न्यसेत्
कुम्भं गले स्रग्दामभूषितम् ॥ तस्य मध्ये
न्यसेत् कृत्यां सर्वलक्षणसंयुताम् । पूजये-
च्च यथान्यासं पायसन्तु निवेदयेत् ॥ परि-
तोष्य घटे न्यस्य असितांगादिभैरवान् ।
गन्धपुष्पादिनाभ्यर्च्य तद्वाह्ये क्षेत्रपालकान्॥
लोकपालं यजेद्देवि तदग्रे होममाचरेत् ।
जुहुयादाज्यापामार्गेण रक्षतां भिदमर्षणौ ॥
दूर्वाग्रखदिराश्वत्थं प्रत्येकन्तु शतादिकम् ।
कुण्डे वा स्थण्डिले वापि होमकर्म समाच-
रेत् । तस्य दक्षिणपार्श्वे तु लक्ष्मीं ध्यायेद्य-
थाविधि । कुण्डमध्ये न्यसेद्देवीं दक्षिणे च
श्रियं स्मरेत् ॥ वामपार्श्वे स्मरेद्देवीं हृल्लेखां
परमेश्वरीम् । तस्यैव वामपार्श्वे तु पूजयेद्दश-
नायकम् ॥ अयुतं मूलमंत्रञ्च जपेन्मृत्युवि-
नाशनम् । अयुतं भ्रूणहत्यायां जपेत् परि-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

माणं विदुः ॥ महाव्याधिप्रशमनं तावज्जप्त्वाभिषेकतः । एवं यः कुरुते मर्त्यः पुण्यां गतिमावाप्नुयात् ॥ तस्यावश्यं न विद्येत व्याधिभ्योऽपि भयन्नहि ।

हे देवि ! यथाविधान कृत्या देवीका पूजनकरै । षोडश दल कमल लिख सबिन्दु योनियुग्म लिखै । उस योनियुग्मके मध्यमें अष्टदल कमल लिख क्रमानुसार यकारादिक लिख उसके मध्यमें षट्कोण यन्त्र लिख मन्त्रका ध्यान करै । मध्यमें चन्द्रबिम्ब लेखे अशक्तिमें पार्थिव शिव लिंगही स्थापन करदे । उसके मध्यमें कुम्भ स्थापन कर कण्ठदेशमें पुष्पमालासे विभूषित करे। कलशके ऊपर कृत्या देवीको स्थापन करे जो कि सर्वलक्षण युक्त हैं ! यथान्यास पूजनकर पायस प्रदानकरे । घटके ऊपर न्यासकर असितांग (उज्वल वर्ण) भैरवका ध्यानकरे । गन्धपुष्पादि प्रदानकर बाह्य प्रदेशमें क्षेत्रपालका पूजनकरे। अग्रभागमें लोकपालोंका पूजनकर हवनकरे । उसके दक्षिणभागमें यथाविधान लक्ष्मीजीका ध्यान करे । कुण्डके मध्यमें देवीजीको स्थापनकर दक्षिणभागेंमें श्रीका ध्यान करे । हृदयमें स्थित देवीजीका वामभागमें ध्यान करे । उसीके वामभागमें दशनायकोंका पूजनकरे मृत्यु विनाशक मूल १०००० जप करे । भ्रूणहत्या दोषकी निवृत्तिके अर्थभी १०००० ही जपकरे । महाव्याधिकी शांतिके अर्थ १०००० जपकर अभिषेककरे । इसप्रकार करनेसे उत्तम गति प्राप्त होतीहै। जप करनेवालेको व्याधियोंसे भय नहीं होता ।

इति श्रीक्रियोड्डीशे महातंत्रराजे देवीश्वरसंवादे दशमः पटलः ॥१०॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

अथ कुमार्यावेशनम् ।

श्रीईश्वर उवाच—अथ वक्ष्यामि संक्षेपात् कुमार्यावेशनं शृणु । सुगुप्ते विजने देशे गोमयेनोपलेपिते । आचार्यः प्रयतो भूत्वा सुस्नातो विजितेन्द्रियः। नवकुम्भान् समादाय शुद्धकुम्भेन पूरयेत् । नवं शरावमानीय कपिलाघृतपूरितम् । कुम्भोपरि समारोप्य दीपं प्रज्वालयेत्ततः ॥ शताष्टमन्त्रजापेन कुमारा वा कुमारिकाः । अतीतानागतञ्चैव वर्तमानञ्च यद्भवेत् ॥ शुभाशुभानि सर्वाणि पश्यन्ति नात्र संशयः । सम्यग्ध्यात्वा गणेशानं गते यामे जपेन्निशि ॥ शुभाशुभानि कर्माणि कथयन्ति न संशयः । कन्यकार्थी शुचिर्भूत्वा मन्त्रराजं गणेशितुः ॥ जप्त्वा दशसहस्राणि भानुरक्ताश्वमारजैः । पुष्पैर्दशांशहवनात् तां कन्यां लभते ध्रुवम् ।

श्रीशिवजी कहने लगे । हे देवि ! अब संक्षेपसे कुमारी आवेशन कहाजाता है सुनो । सुगुप्त (अच्छे प्रकार रक्षा कियाहुआ) एकांत स्थानको गोबरसे लीपकर आचार्य उक्त नियमानुसार स्नान

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

करे और जितेंद्रिय रहै । पुनः नवीन कम्भको शुद्ध जलसे पूर्णकर स्थापन करे और उसी घटके ऊपर नई सराईमें कपिला गौकें घृतसे दीपकको प्रज्वलित कर स्थापन कर १०८वार मंत्रका जप करे। यदि जपके समय कुमार अथवा कुमारी दोनोंमेंसे एक अथवा दोनोंही स्वयं पूजा स्थानमें आकर उपस्थितहों तो यथाविधान उनका पूजन करे पूजनक करनेसे और उनके प्रसादसे बीतेहुये, अथवा आनेवाले और वर्तमान शुभाशुभ समस्तही स्वयं दृष्टि पड़ेंगे इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं हैं । तत्पश्चात् भले प्रकार गणेशजी का ध्यान कर एक प्रहर रात्रि बीते जप कर्ममें रतहो, इस विधानके करनेसे देवता प्रसन्नहो स्वयं सन्मुख आकर समस्त शुभ अशुभ जैसा होना है कहेगा परन्तु देवताके रूपको देखकर डरना मत देवता मारता नहीं है । कन्यार्थी पुरुषको योग्य है कि पवित्र हो गणेश मन्त्र जपै, मन्त्र जपनेके पश्चात् सूर्य मुखीके पुष्पोंसे दशांस हवन करे तो अवश्य उस कन्याको प्राप्त होय ।

अथ काम्यकर्माणि ।

वक्ष्यामि काम्य कर्माणि साधकानां हिताय वै । शास्त्रोक्तेनैव मन्त्रेण संक्षेपान्न त विस्तरात ।

अब साधक लोगोंके हितार्थ काम्य कर्म कहेजाते हैं, शास्त्रोक्त मंत्रहीसे संक्षेपपूर्वक कर्मकरे विस्तारपूर्वक नहीं ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

अथ दिव्यज्ञानादिलाभः ।

स्वहृत्पद्मे गणेशानं कुन्देन्दुधवलप्रभम्। शुक्लालंकारसम्पन्नं भावयेद्यो निरन्तरम् ॥ भारती तस्य वक्त्राब्जे शास्त्रज्ञा बहुसुन्दरी । नित्यं प्रकाशते सत्यं दिव्यज्ञानप्रदायिनी ।

अब दिव्य ज्ञानादि लाभ प्रकार कहाजाता है जो मनुष्य निरंतर निज हृदय कमलमें कुन्देन्दु धवल कांतिवाले और श्वेत आभूषणोंसे सुशोभित श्रीगणेशजी महाराजका ध्यान करते हैं उन मनुष्योंकी रसना (जीभ) के ऊपर मनोहर रूप धारण करनेवाली और अनेक शास्त्रोंके ज्ञानसे प्रकाशवाली सरस्वतीजी वास करती हैं ।

अथ वशीकरणम्—न विनश्येद् गणेशानं सिन्दूरसदृशप्रभम् । पाशांकुशधरं ध्यात्वा योजपेन्मन्त्रिसत्तमः ॥ अनंगवशसम्पन्ना तमभ्येति वरांगना ।

अथ वशीकरणम् । सिन्दूरके समान है कांति जिनकी ऐसे पाश और अंकुशधारण करनेवाले गणेशजी महाराजका जो साधकलोग ध्यानकर पूजन करते हैं और मंत्रका जप करतेहैं ऐसे साधकोंके समीप अवश्य काममोहित सुंदरी अंगना स्वयं सेवार्थ आती हैं ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

प्रकारान्तरं—पाशांकुशवराभीतिं हिमकुन्देन्दुमल्लिभम्। दिग्वस्त्रं चन्द्रवर्णाभं स्फुरन्माणिक्यमण्डलम्॥यः स्मरेत्तस्य वशगा ह्यवश्यापि वरांगना।

प्रकारांतर कहाजाता है। पाश, अंकुश, वर, अभय धारण करनेवाले, कुन्दके फूलके सदृश कांतिवाले, चन्द्रके तुल्य कांतिवाले, स्फुरन् मणियोंके मण्डलसे सुशोभित ऐसे दिगम्बर सदाशिवका ध्यान करनेसे जो नहीं प्राप्त हो सकती है अवश्य ऐसी मनोहारिणी प्रिया स्वयं आ अपनेको प्रदान करे। अर्थात् वशम होय।

अथ मुखस्तम्भनम्—विवादेषु गणेशानं ज्वलदग्निसमप्रभम्। प्रतिवादिमुखे ध्यायन्प्रजपेन्मनसा मनुम्। तन्मुखं स्तम्भयेदाशु वादी दीनोऽपि नान्यथा।

अथ मुखस्तम्भन कहाजाता है जलती हुई अग्निक तुल्य कांतिवाले गणेशजीका ध्यान कर यदि विवाद विषयमें वादीके सम्मुख मंत्रराजका जपकरे तो अवश्य वादीके मुखका स्तम्भन हो और वादी दीनवत व्यवहार करे।

अथ सर्वरोगहरणम्। अंगुष्ठमानं हृत्पद्मे शुद्धस्फटिकसन्निभम्। चिन्तयित्वा गणे-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

शानं चिदम्बरसुधारसम् । अभिषिच्य सुर-श्रेष्ठं सततं धरणीतले । सर्वरोगविनिर्मुक्तश्चि-रकालं स जीवति ।

अब सर्वरोग हरण प्रकार कहाजाता है । शुद्धस्फटिक के तुल्य उज्ज्वल, चेना स्वरूप अमृत रसपूर्ण, अंगुष्ठमात्र देहधारी श्री-गणेशजीका जो मनुष्य निज हृदयकमलमें ध्यानकर निरन्तर पृथिवीतलमें अभिषेक करतेहैं वह लोग सर्व प्रकारके रोगोंसे मुक्ति-लाभ करते हैं । और चिरकालतक जीवनसुख भोगतेहैं ।

अथ विषहरणम् ।शुक्लवर्णं गणेशानं दशबा-हुं मदोत्कटम् । शुक्लाम्बरधरं सौम्यं चिच्छ-शांकामृतप्लुतम् ॥ भावयेद्धृदयाम्भोजे नित्यं निर्मलमानसः । मंत्री गरुडवत् सद्यास्त्रिविधं हरते विषम् ।

अब त्रिविध विषहरण प्रकार कहाजाता है । शुक्लवर्ण, दशभुज, मदोत्कट, शुक्लवस्त्र धारण करनेवाले, सौम्य, चन्द्र अमृतसे प्लुत, ऐसे गणेशजीको जो मंत्रीलोग शुद्धचित्तसे निज हृदयकमलमें ध्यानकरते हैं वह मंत्री लोग तीन प्रकारका विषहरण करनेमें गरुडवत् समर्थ होते हैं ।

अथ नानाविधकार्याणि–धनार्थी मधुना नित्यं वशार्थी पायसैर्हुनेत् । घृतेन लक्ष्मी-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

संप्राप्त्यै हुनेत् शर्करया तथा ॥ आयुषे चार्थसम्पत्तौ दध्ना च जुहुयात्तथा । अन्नेन चान्नसंपत्त्यै द्रव्याप्त्यै तिलतण्डुलैः ॥ लवणैरप्यनावृष्ट्यै वृष्टिकामस्तु बिल्वकैः । सौभाग्यार्थी तथा लाजैः कुसुमैश्चापि सौदनैः ।

अब नानाविध कार्य विधान कहाजाता है । धनार्थी सहतसे हवनकरे, वश्यार्थी पायस (खीर) से हवन करें, लक्ष्मीप्राप्तिके अर्थ घृत शर्कारासे हवन करे, आयु अथवा अर्थसम्पत्तिके लिये दधिसे हवन करे, अन्न प्राप्तिके लिये अन्नसे: हवन करे, द्रव्य प्राप्तिके लिये तिल और तण्डुलसे हवन करे, अनावृष्टिके अर्थ लवणसे हवन करे, वृष्टिकामनाके अर्थ बेलसे हवन करे, सौभाग्यवृद्धिके लिये लाजा होम करे अथवा ओदन (भात) मिश्रित फूलोंसे हवन करे ।

अथ विविधवशीकरणानि—वशिने जुहुयात् पद्मै राजानं वशमानयेत् । अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षन्यग्रोधनसमिताद्भुत् ॥ विप्रक्षत्रियविट्शूद्राः सद्यो वश्या भवन्ति वै ।

अब विविधवशीकरण प्रकार कहाजाताहै । वश्य कर्ममें कमल दलसे हवन करे इस प्रकार हवन करनेसे राजाभी वश्य

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

होसक्ताहै। अश्वत्थ, उदुम्बर, पिलखन, न्यग्रोधकी समिधाओंके हवन करनेसे ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, सबही वश होसक्ते हैं।

अथ स्त्रीवशीकरणम्–स्त्रीणां प्रतिकृतिं कृत्वा पिष्टेन प्रतिवासरम् । साज्याहुतित्रयन्तस्य वशमायान्ति नान्यथा ।

अब स्त्री वशीकरण प्रयोग कहाजाता है । प्रतिदिन पिष्ट (पिठ्ठी) से स्त्रीके आकारकी प्रतिमा बनावे । और तीन आज्य (घृत) की आहुति प्रदान करे तो अवश्य वशमें होय ।

प्रकारान्तरम् । मन्त्रराजं जपित्वा तु यथाविधि महोदरम्। दशांशे जुहुयान्मंत्री राजिकालवणेन च॥तद्भस्म वामहस्तेन गृहीत्वा ताडयेत् स्त्रियम् । समागच्छति सा नारी मदनानलविह्वला ।

अब प्रकारांतर कहाजाता है मन्त्री यथा विधान श्री महाराज गणेशजीके महामंत्रराजका जप कर राई और निमकसे दशांश हवनकरे । तत्पश्चात् हवनकी भस्मको वाम हस्तमें लेकर साध्य स्त्री के ऊपर प्रक्षेप करे, इस प्रयोग के करने से अवश्य साध्य स्त्री कामदेवसे विह्वल होकर साधकके समीप आयेगी ।

अथ रिपुस्तम्भनम्–तद्वच्च प्रजपेदेनं पीतपुष्पैश्च मन्त्रवित्।स्तम्भयेद्रिपुसैन्यञ्च सामा-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Jal

न्यबलवाहनम् ॥ प्रतिवादी भवेन्मूको मन्त्रस्यास्य प्रभावतः। स्तम्भयेत् पञ्चद्रव्याणि नात्रकार्या विचारणा।

अब रिपुस्तम्भन प्रयोग कहाजाता है। पूर्व प्रकारानुसार राजका जप कर पीत पुष्पों से हवनकरे। इस प्रयोग के करने से मंत्री सहित शत्रुके बल (फौज) का स्तम्भन होता है इस मंत्र राजके प्रतापसे वादीका मुख बन्द होजाता है अर्थात् जिह्वासे कहनेको समर्थ नहीं होसकता। इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं कि इस प्रयोग के करनेसे पञ्चद्रव्योंका स्तम्भन होजाता है।

अथ शत्रूच्चाटनम्—बिभीतिकसमिद्भिस्तु नियतं जुहुयात्तथा। सम्यगुच्चाटयेच्छत्रून् स्वस्थानात्तु विशेषतः॥ मेरुमण्डलतुल्यो वा स देवोद्विग्नमानसः। ग्रामयुद्धे पुरे वापि इमं स्तुत्वा तु होमयेत्। उच्चाटयति वेगेन मानुषेषु च का कथा।

अब शत्रूच्चाटन प्रयोग कहाजाता है। शत्रु उच्चाटन प्रयोगमें बहेडेकी समिधाओंसे हवनकरे तो अवश्य शत्रुका उच्चाटन हो, विशेष क्या एकवारको मेरु पर्वतके तुल्य स्थिर चित पुरुषकाभी उच्चाटन होसकता है, ग्रामयुद्ध अथवा पुरयुद्धमें मन्त्रराजका जप कर दशांश हवनकरे। इस प्रयोगके करने से जड पदार्थका भी उच्चाटन होसकता है मनुष्योंका तो कहनाही क्या है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

अथ मारणम्—मानुषास्थि समानीय सम्य-गष्टांगुलीमितम् । मृतकेशैस्तु संवेष्ट्य सहस्राष्टाभिमन्त्रितम् ॥ कुलिकोदयवेलायां शत्रुद्वारे खनेद्भुवि । सप्ताहान्मरणं तस्य भविष्यति न संशयः ।

अब मारण प्रयोग कहाजाता है । आठ अँगुल प्रमाण मनुष्यकी अस्थिके कीलेको मृतक पुरुषके शिरके बालोंसे लपेटकर एक हजार आठवार (१००८) मन्त्रसे अभिमन्त्रितकर कुलिक योग के उदयमें शत्रुके द्वारपर पृथिवी खोदकर दाबदे तो अवश्य शत्रु व्यक्तिका एक सप्ताह के मध्यमें मरण होय ।

अथ गणेशयन्त्रम्—अतः परं यन्त्रराजं शृणु देवि गणेशितुः । सुसमे भूतले शुद्धे गजाद्यैः सुपरिष्कृते ॥ कामक्रोधविनिर्मुक्तः पूर्ववन्न्याससंयुतः । संपूज्य देवदेवेशं गणेशं शंकरात्मजम् ॥ भूर्जे क्षौमे तस्योपरि यन्त्रराजं समुद्धरेत् । कस्तूरीरोचनायन्त्रकाश्मीरं चन्दनं रसम् ॥ गोशकृद्रससंयुक्तैर्मातंगमदमिश्रितैः । सर्वैश्च सुसमैरेभिः प्राणमापूर्य संलिखेत् ॥ लेखन्या हेमशूच्या

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

वा जातिकाष्ठेन दूर्वया । षट्त्रिंशत्कोणमष्टारं द्वादशारं ततःपरम् ॥ कवर्गादीनि गायत्र्या वर्णान्यपि लिखेद्वहिः । महाभूमण्डलं कुर्याद्गजाष्टकविभूषितम् ॥ तद्वाह्ये वारुणं कूर्ममण्डलञ्च नतं शुभम् । कर्णिकायां लिखेन्मन्त्री हस्रौं प्रणववेष्टितौ ॥ अंगानि चाष्टकोणेषु लक्ष्मीमनुदलं लिखेत्। द्वादशारे लिखेच्छक्तिं विना नपुंसकस्वरम् ॥ स्वरपत्रं कलापत्रे ततश्चाष्टदलाम्बुजे । कादिमन्ताक्षरञ्चापि सर्वं पूर्वादितो लिखेत् ॥पुनः पार्श्वककोणेषु वादिसान्तं समालिखेत् । एतन्मंत्रं समाख्यातं न देयं यस्य कस्यचित् ॥ अणिमाद्यष्टमन्त्रेण चाष्ट बाहुं प्रपूजयेत् ।

अब गणेश यन्त्र कहाजाता है । हे देवि ! अब श्रीगणेशजी महाराजके यन्त्रको सुनो । गजादिकोंसे अच्छी तरह परिष्कृत, शुद्ध, समान भाग पृथिवी तलमें, काम क्रोधको छोड़कर पूर्ववत् न्यासकरके देवदेवेश गणेशजीका पूजन करकै, कैसे गणेशजीका शिवजीके पुत्र ऐसे, भूर्जपत्र अथवा रेशमीन वस्त्रके ऊपर कस्तू-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

री, गोरोचन, केशर, रक्तचन्दन, मातङ्ग (हांथीका) मद इत्यादि सुगन्धित द्रव्योंको एकत्रकर गणेशजीका यन्त्र खैंचे, लेखनी स्वर्ण, चांदी अथवा जातिकाष्ठ वा दूर्वा हो, यन्त्रराज ३६ कोण, अष्ट अरा निर्मित तथा द्वादश अरा निर्मित हो, उसके बहिर्भागमें गायत्रीके कवर्गादिकों को बहिर्भागमें लिखै, फिर गजाष्टकसे सुशोभित महा भूमण्डलको सुशोभित कर भूषितं करै महा भूमण्डलके बहिर्भागमें नत वरुण देवके कूर्ममण्डलको लिखै। साधकको योग्यहै कि कमल दलको कर्णिकाओंमें हकार क्षकार इन दो वर्णोंको लिखै, अष्टकोणमें अङ्ग और लक्ष्मी मन्त्र दलोंमें लिखै, द्वादशार कमलमें शक्तिबीज लिखै नपुंसक स्वरके विना, कलापत्रमें स्वरपत्र लिखै। "पुनः" अष्टदल मध्यमें ककार आदि क्षकारान्त वर्णोंको क्रमानुसार लिखै फिर पार्श्वके कोणोंमें वकार आदि सकारान्त वर्णोंको लिखै। यह इसप्रकार वर्णन कियाहुआ यन्त्रराज साधकके विना अन्यको देना उचित नहीं है। अणिमादि आठ मन्त्रोंसे अष्टबाहुका पूजनकरे।

अं अणिमायै नमः स्वाहा। लंलक्ष्म्यै नमः। व्यं व्याप्त्यै। प्रं प्राकाम्यायै। मं महिमायै। ईं ईशित्वायै। वं वाशित्वायै। कं कामावशायित्वायै नमः स्वाहा।

यह अणिमादि अष्ट मन्त्र हैं।

एवं संपूज्य विधिवन्मन्त्री मुनिगणान्यजेत्।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

भोजयित्वा विधानेन नानामिष्टफलादिभिः ॥ दिव्यगन्धयुतैर्पुष्पैर्दिव्यगन्धप्रलेपनैः । मूषिकं पूजयामास नानामिष्टफलादिभिः ॥ ॐ समूषिकाय गणाधिपवाहनाय धर्म्मराजाय स्वाहा । इत्यनेनैव मन्त्रेण मूषिकं पूजयेत्ततः एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात ।

मन्त्री इसप्रकार पूजनकर मुनियोंका पूजनकरे और नानाप्रकारके मिष्टान्न तथा फलादि द्वारा ब्राह्मणोंको भोजन करावै । पुनः दिव्य गन्ध, पुष्प और दिव्य प्रकारके प्रलेपनादिकोंसे गणेशजीके वाहन मूषकराजका पूजनकर मिष्टान्न और फलादिकोंसे तृप्त करै। यह मन्त्र है । " ॐ समूषिकाय गणाधिपवाहनाय धर्म्मराजाय स्वाहा " इसही मन्त्रसे मूषिकराजका पूजन करे । यह मूषिक गायत्री मन्त्र है । एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डायधीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात ।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे शिवगौरीसम्वादे
एकादशः पटलः ॥ ११ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

अथ वशीकरणम्–पलार्द्धस्वर्णेन रजतेन वा साध्यस्य प्रतिमां कृत्वा सार्धहस्तं गर्तं कृत्वा हरितालहरिद्राचूर्णकं पलार्द्धं तत्र निःक्षिप्य रक्तासने ततोपविश्य चतुर्दिक्षु पताका निवेश्य तिलपूर्णघटमधः कृत्वा संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा पूर्वास्यः प्रवाल मालया दशसाहस्रजपेन प्रयोगार्हो भवेत् ।

अब वशीकरण प्रयोग कहा जाताहै प्रथम पलार्द्ध (आधा-पल) स्वर्ण अथवा चांदीकी साध्य (जिसके ऊपर प्रयोग किया जाय) उसकी प्रतिमा बनावे । पुनः १ हाथ गहरा पृथिवीमें गड्ढा खोदे उसमें महीन पिसाहुआ हलदी और हरताल का चूर्ण बिछावे । साधक रक्त आसनके ऊपर बैठकर चारों दिशाओंमें ध्वजा (झंडी) स्थापन कर तिलपूर्ण घटकी प्राणप्रतिष्ठाकर स्थापन करे और प्रवाल (मूंगा) मालासे सुशोभित करे । पुनः साधक पूर्वाभिमुख दशहजार जप करें तब प्रयोगके योग्य हो ।

अथमन्त्रम्–प्रणवं पूर्वमुच्चार्य मायाबीजं द्वितीयकम् कात्वं त्वल्लाकिनी युक्तं वामकर्णेन्दुभूषितम् । ततो मत्तुपदं ब्रूयाच्चामुण्डे तदनन्तरम् । साध्यनाम ततो न्यस्य वशमानय तत्परम् । वह्निजायावधिर्मन्त्रं जपेद्दशसह

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

स्नकम् । अथान्यत् । चामुण्डे मोहय मोहय अमुकं वशमानय स्वाहा । प्रातः स्नात्वा हविष्याशी जितेन्द्रियः शुचिर्भूत्वा प्रातःकालमारभ्य मध्यन्दिनावधिजपसमाप्तेर्दशांशादि क्रमेण होमादींश्च कारयेत् । जाती पुष्पैर्होमेन वशयेन्नात्र संशयः । कामतुल्यश्च नारीणां रिपूणां शमनोपमः । यावज्जीवनपर्यन्तं स्मरणञ्च प्रजायते ।

प्रथम प्रणव का उच्चारण करे । द्वितीय वार मायाबीजका । तीसरीवार 'कात्वं त्वल्लाकिनी' युक्त वाम कर्ण और इन्दु भूषित मत्तपदका उच्चारण करे । तत्पश्चात चामुण्डे इस पदको मिश्रित कर साध्यव्यक्ति के नामकी भी योजनाकर और वशमानय स्वाहा यह अन्तमें मिलादें । इस प्रकार दशहजार मन्त्रजपे । दूसरा प्रकार । चामुण्डे मोहय मोहय अमुकं वशमानय स्वाहा । अथवा इसमन्त्रका जापकरे । प्रातः काल स्नानकर, हविष्यान्नका भोजन करनेवाली जितेन्द्रिय साधक व्यक्ति शुद्धता और पवित्रतापूर्वक प्रातः कालसे लेकर मध्याह्न तक जापकर जापक्रमानुसार दशांश हवनादिकरे । जाति पुष्पोंसे हवन करनेसे अवश्य साध्य व्यक्ति वश्य हो जायगी । और कामदेवके तुल्य मनोहर स्त्रियोंको प्यारी, यमके समान असह्य शत्रुवर्ग को जीवन पर्यन्त साधक व्यक्ति प्रतीत होगी ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

अन्यच्च । श्वेतापराजिता मूलं पेषयेद्रोचनायुतम् । शतेन मन्त्रितं कृत्वा तिलकं कारयेत्ततः वशयेन्नात्र संदेहः ।

सफेद अपराजिता की जड़ को पीसकर और गोरोचन मिलाकर सौ वार मन्त्रसे अभिमंत्रितकर निजमस्तकके ऊपर तिलक करे तिलक की ओर देखने मात्रही से साध्यव्यक्ति अवश्य वश्य होगी

अथ राजवशीकरणम् । रक्तपुष्पेण चामुण्डा पूजा । ध्यानम् । दंष्ट्राकोटिविशंकटा सुवदना सान्द्रा कृकारे स्थिता खट्वांगासिनिगूढदक्षिणकरा वामेन पाशांकुशा ॥ श्यामा पिंगलमूर्द्धजा भयकरी शार्दूलचर्मावृता चामुण्डाशववाहिनी जपविधौ ध्येया सदा- साधकैः । जप्त्वा किंशुककुसुमैर्हुत्वा फल- प्राप्तिः । आद्यन्ते महती पूजा । पञ्चदिनप्रयोगेण राजानं वशमानयेत् ।

अब राजवशीकरण प्रयोग कहाजाताहै । रक्तपुष्पोंसे चामुण्डा का पूजन करे । यह ध्यान है दंष्ट्राकोटिसे विशंकट, मनोहर मुखसे सुशोभित दक्षिण हस्तमें तरवार धारण करनेवाली, वामहस्त में पाश और अंकुशसे, श्यामवर्ण वाली पिंगल वर्णवाले केशोंसे

CC-0. In Public Domain. Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

विभूषित शिरोभाग जिसका शत्रु वर्गको भय देनेवाली शार्दूल चर्मसे आच्छादित शरीरवाली, शववाहिनी चामुण्डा का ध्यान करते हैं और इसीप्रकार जप कर्म में सदा साधकों को चामुण्डा का ध्यान करना चाहिये टेसूके फूलोंसे कियाहुआ आवाहन फल प्रदान करने में समर्थ होता है। आदि अन्तमें बृहत् पूजा करनी चाहिये। पांच दिन के प्रयोगसे राजा वश्य होताहै।

प्रकारान्तरेण वशीकरणम्—मृगशीर्षे तु संग्राह्यं सुरक्तकरवीरकम्। नवांगुलं कीलकं तत् सप्तवाराभिमन्त्रितम्। यस्य नाम्ना खने द्भूमौ स वश्यो भवति ध्रुवम्। मन्त्रम्। ॐ हुँ हुँ स्वाहा। तत्तत् स्थाने यथासंख्यमनुक्ते त्वयुतं जपेत्।

अब प्रकारान्तर से वशीकरण प्रयोग कहाजाता है। मृगशिर नक्षत्र में रक्त करवीरके काष्ठ को लेकर उसमें से नौ अंगुल प्रमाण एक कील बनाकर सातवार मंत्र से अभिमंत्रित कर साध्य व्यक्ति का नाम उच्चारण कर पृथिवीमें खोदकर दाब दे अवश्य साध्य व्यक्ति वश्य होगा। यह मन्त्र है। ओं हुं हुं स्वाहा। जिस प्रयोग में जितना जप कहागया है उतनाही होना चाहिये। जहां कुछभी नहीं कहा है वहां दश हजार जाप करे।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे गौरीश्वरसम्वादे द्वादशपटलः॥१२॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

अथ विद्वेषणम्-गृहीत्वा शल्लकीकण्टं निखने द्भूविदारतः । कलहो जायते नित्यं शत्रोर्गेहे न संशयः ।

मन्त्रः । ॐ नमोनारायणाय अमुकामुकेन सह विद्वेषं कुरुकुरु स्वाहा ।

अब विद्वेषण प्रयोग कहाजाता है । साहीके कांटेको अगाड़ी कहेहुये मन्त्रसे अभिमन्त्रित कर भूमिमें गाडदे अवश्य द्वेष भाव प्रगटहोकर शत्रुओंमें कलह हो । यह मन्त्र है । ॐ नमो नारायणाय अमुकामुकेन सह विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा ।

अथान्यत्-परस्परं रिपोर्वैरं मित्रेण सह निश्चितम् । माहिषाश्वपुरीषाभ्यां गोमंत्रेण समालिखेत् । ययोर्नाम तयोः शीघ्रं विद्वेषश्च परस्परम् ॥

विद्वेषका दूसरा प्रकार कहाजाताहै । महिष, अश्व, इन दोनों के पुरीषको गोमूत्रसे मिश्रित कर जिनका परस्परमें भारी मेलवाले मित्रोंका नाम लिखे तो बहुत शीघ्र उन बहुत दिनोंके मिलनेवालोंका अवश्य आपसमें विद्वेष भाव हो जावै ।

अन्यच्च-रक्तेन माहिषाश्वेन श्मशानवस्त्रके लिखेत् । ययोर्नाम तयोः शीघ्रं विद्वेषश्च परस्परम् ।षट्कोणचक्रमध्ये तु रिपोर्ना-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

मसमन्वितम् । मन्त्रं ततः प्रवक्ष्यामि महाभैरवसंज्ञकम् ।

अन्य प्रकारसे विद्वेषण कहाजाता है लालरंगके महिष (भैंसा) और अश्व (घोड़ा) के पुरीषको (लीद गोबरको) गोमूत्रसे मिश्रित कर श्मशानके वस्त्रके ऊपर षट्कोण चक्र खींचे और उसी चक्रके भीतर दोनों मित्रोंका नाम लिखे कि जिनका परस्पर विद्वेषण कराना इष्ट है अवश्य इस प्रयोगके करनेसे विद्वेष भाव उत्पन्नं होगा । अब महाभैरव श्रीभगवतीका मन्त्र कहाजाता है ।

अथ महाभैरवमन्त्रः—ॐ नमो भगवतिश्मशानकालिके अमुकं विद्वेषयविद्वेषय हनहन पचपच मथमथ हुँ फट्स्वाहा । अनेन मंत्रराजेन होमयेद्यत्नतः सुधीः । वह्निकुण्डे श्मशानाग्निं दीपयेत्खादिरैधसा । कटुतैलान्वितैःपत्रैर्निम्बस्य परिशोधितैः ॥ होमयेद्युतं धीमान्साकं तिलयवाक्षतैः ।

ॐ नमो भगवति श्मशानकालिके अमुकं विद्वेषय विद्वेषय हन हन पचपच मथमथ हुं फट् स्वाहा इस मन्त्रसे हवन करै । अग्नि कुण्डमें श्मशानकी अग्निको खैरके काष्ठकी समिधाओंसे प्रज्वलित कर शुद्धकिये हुए नीमके पत्ते, कडुआ तेल, तिल, जौ, चावल इनको मिश्रित कर दशहजार हवन करे ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

भावयन् कालिकां देवीं मन्त्रशीलसमप्रभा-म् । व्योमनीलां महाचण्डां सुरासुरविमर्दि-नीम् ॥ त्रिलोचनां महारावां सर्वाभरणभू-षिताम् । कपालकर्तृकाहस्तां चन्द्रसूर्योपरि स्थिताम् ॥ शरजालधराञ्चञ्चत्प्रेतभैरववे ष्टिताम् । वसन्तीं पितृगहने सर्वसिद्धिप्रदा-यिनीम् ॥ होमयेद्विविधैः पुष्पैर्बलिच्छागो-पहारकैः । पूजयित्वा महेशानीं भक्तियुक्तेन चेतसा ॥ एतद्भस्मसमादाय धारयेदभिमं-त्रितम् । भस्मना तेन मनुना विद्वेषो जायते नृणाम् ।

आकाशके तुल्य नीलवर्णवाली, महाचण्डा, सुर और असु-रोंको विमर्दन करनेवाली, तीन नेत्रवाली, महाशब्द करनेवाली, सर्व आभूषणोंसे भूषित, कपाल और कर्तृका हाथमें लिये चन्द्र सूर्यके ऊपर स्थित शर समूह धारण करनेवाली प्रेत तथा भैरवसे वेष्टित, पितृ काननमें वास करनेवाली, समस्त सिद्धियां देनेवाली, ऐसी कालिका देवीकी तृप्तिके अर्थ विविध पुष्प, छागबलि इत्यादि से हवन करे और भक्तियुक्त चित्तसे महेशानीका पूजन करे । पुनः हवनकी भस्मको मन्त्रसे अभिमं-त्रित कर ललाटमें धारण करे अवश्य शत्रुका विद्वेष भाव उत्पन्नहो ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

मन्त्र–ओं ह्रीं विद्वेषिणि अमुकामुकयोः परस्परयोर्विद्वेषणं कुरुकुरु स्वाहा ।

यही विद्वेषण मन्त्र है ।

अथोच्चाटनम्।सौरारयोर्दिने ग्राह्यं नरास्थि चतुरंगुलम् । निशावसाने संलिख्य प्रधान भवने क्षिपेत् ॥ सप्ताहाऽभ्यन्तरे शत्रोराशु चोच्चाटनम्भवेत् ॥ द्रूं अमुकस्योच्चाटनं कुरुकुरु स्वाहा द्रूं अमुकं हन हन स्वाहा ।

शनि वा मंगलवारको चार अंगुल प्रमाण मनुष्यके अस्थिके ऊपर मन्त्र लिखकर रात्रिके अन्तमें शत्रुके स्थानके मध्यमें फेंक दे तो अवश्य एक सप्ताहके बीच शत्रुका उच्चाटन हो । द्रूं अमुकस्योच्चाटनं कुरुकुरु स्वाहा । द्रूं अमुकं हनहन स्वाहा । यह मंत्र है ।

अथ स्तम्भनम्–अमुकस्य मनः स्तम्भय-स्तम्भय ह्रुं फट् ।

यह स्तम्भन मन्त्र है ।

अथ शांतिः–शांतिः सर्वाभिचारस्य पञ्चगव्येन जायते । काम्यप्रयोगे सर्वत्र नियमोऽयुतसंख्यकः ॥ होमसंख्या ॥ १०००० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

अब अभिचार प्रयोगोंकी शान्ति कही जाती है । समस्त अभिचार प्रयोगों की शान्ति पञ्चगव्य से होती है । समस्त काम्य प्रयोगों में दश हजार जपकरे ऐसा नियम है ।

अथ मारणम्-महाकृत्याप्रयोगः-अतःपरं महेशानि मारणं शृणु पार्वति।येन विज्ञातमात्रेण सुसाध्यं भुवनत्रये ॥ रुद्रजाया महायोगिन्यतोगौरीपदं वदेत् । भुवनभयंकरीति पदं वर्मास्त्रमुच्चरेन्मनुम् ॥ अथवाप्रथमं न्यासमथातो ब्रह्मणःपदम् । यद्दीर्घयुक्तबीजेन चांगमन्त्रेण योजना ॥ हृदयञ्च ततोऽङ्गेन धर्मास्त्रेण शिरः क्रमात् । शिखाकवचनेत्रास्त्रमेवंन्यासक्रमः स्मृतः ॥ अंगिराश्च ऋषिर्देवि गायत्रीच्छन्द ईरितम् । सिंहवक्त्रा च भूतानां भयंकरि ततः परम् ॥ महाकृत्या देवता च इत्युक्त्वा न्यासमाचरेत् ।

अब मारण प्रयोग कहाजाता है । यह महाकृत्याका प्रयोगहै। हे पार्वति ! अब मारण प्रयोग कहाजाता है सुनो । इस प्रयोगके यथार्थ करने से सिद्धि प्राप्त होती है । इसके अगाडी न्यास क्रम है बुद्धिमान् जन स्वयं जानलेंगे । सिंहवक्त्रा, भूतानां भयंकरि,

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

महाकृत्या, देवता इन नामों को उच्चारणकर न्यासकरे । इसका ऋषि, अंगिरा और छन्द गायत्री है ।

अथ ध्यानम्--सिंहाननां कृष्णमुखीं लम्बगात्रपयोधराम् । दंष्ट्राकरालवदनां त्रिनेत्रां सर्वप्रोज्ज्वलाम् ॥कृष्णकांचीसमायुक्तां विधूमाग्निसमप्रभाम् । त्रिशूलचक्रमुशलखट्वांगकरपंकजाम् ॥ लेलिहानमहाज्जिह्वां विद्युत्पुञ्जसुभीषणाम् । ध्यात्वा कृत्यां विधानेन पूजयेन्मन्त्रवित्तमः ॥ ध्यात्वा कृत्यामर्च्चयेद्वै रक्तैः पुष्पैश्च वश्यके ॥ कृष्णैर्मारणकृत्येषु मांसरक्तासवैः स्तुताम् ।

अब ध्यान कहाजाताहै । सिंहके मुखके तुल्य मुखवाली, कृष्ण मुखी, स्थूल कुचवाली, बृहत् दंष्ट्राओंसे भयङ्कर मुखवाली, त्रिनेत्रा अर्थात् तीन नेत्रवाली, उज्ज्वल वर्णवाली, कृष्णकाञ्ची (तागडी) से सुशोभित, प्रज्वलित अग्निके तुल्य कान्तिवाली, त्रिशूल, चक्र, मुशल पद्मको चारों हस्तमें धारण करनेवाली, जिह्वासे ओठोंको चाटती हुई विद्युत्, (विजली) पुञ्जके तुल्य भयंकर शब्दवाली ऐसी कृत्यादेवीका यथा विधान ध्यानकर पूजन करे परन्तु वश्य कर्ममें रक्त पुष्पोंसे पूजन करना योग्यहै मारण प्रयोगमें कृष्णपुष्प, मांस, तथा रक्तासवसे स्तुतिकर पूजन करे ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

कृत्यांश्च मदनां कुमार्यश्वच्छादिनीं तथा । भीषणां श्रीमतींचैव प्रतिष्ठाञ्च ततः परम् ॥ विद्यामभ्यर्चयेदष्टपत्रेषुहि (क्रमशः) सुलोचनाम् । पूर्वे तु शांकरीं नाम शुक्लवर्णां वरान्विताम् ॥ द्विभुजां सौम्यवदनां पाशांकुशधरां शिवाम् । दक्षिणे भीषिकानाम लम्बजिह्वां सुधामुखीम् ॥ कृष्णवर्णां रक्तमुखीं रक्तमालानुलेपनाम् । चतुर्भुजां सिंहनादां महाघोषां कपालिनीम् ॥ खड्गहस्तां शिरोमालां सर्वाभरणभूषिताम् ॥ पश्चिमे वारुणीं नाम स्वर्णवर्णां हसन्मुखीम्।सुरुद्रमालिकां शुभ्रां दंष्ट्रामभयदां सदा । उत्तरे भीमिकां नाम चतुर्हस्तां भयंकरीम् ।

मदना, कुमार्यश्वच्छादिनी, भीषणा, श्रीमती, ऐसी कृत्या देवीकी प्रतिष्ठाकर अष्टदल कमलमें सुलोचना विद्यारूप श्रीकृत्या देवीका पूजन करे । पूर्वदिशामें शांकरी, शुक्लवर्णा, वरान्विता द्विभुजा, सौम्यवदना, पाशाङ्कुशधरा, शिवा इन नामोंसे पूजनकरे दक्षिणभागमें भीषिका, लम्बजिह्वा सुधामुखी, कृष्णवर्णा, रक्तमुखी रक्तमालानुलेपना, चतुर्भुजा, सिंहनादा, महाघोषा, कपालिनी, ख-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

ङ्गहस्ता, शिरोमाला, सर्वाभरणभूषिता इन नामोंसे पूजनकर पश्चिम भागमें वारुणी, स्वर्णवर्णा, हसन्मुखी, सुरुद्र मालिका, शुभ्र दंष्ट्रा, अभयदा इन नामोंसे पूजन करे। उत्तर भागमें भीमिका, चतुर्भुजा, भयङ्करी इन नामोंसे पूजनकरे।

पूजयित्वा जपेन्मन्त्रं नित्यमष्टोत्तरं शतम्। अवाप्य विनियोगस्तु कर्तव्यो मंत्रिणा सदा कालं विदित्वा प्रतिमां मधूच्छिष्टेन कारयेत् द्वादशांगुलकं शत्रोर्नखलोमसमन्वितम् ॥ हृदये नामधेयश्च फट्कारश्च समर्मके। अस्य प्राणान् प्रतिष्ठाप्य मरिचैर्लेपयेत्ततः ॥ मृत ब्राह्मण चाण्डालकेशाभ्यां पादयोः पृथक्। बद्ध्वा करे करमये तोरणे चाप्यधोमुखम्॥ तस्याधो मेखलायुक्तं त्रिकोणं तत्र कुण्डकम्। तत्र शारं विधायाग्निं परिस्तीर्य शरैस्तृणैः ॥ बिभीतकं परीधाय कल्पयेद्यस्य मारणम्। जुहुयान्निम्बतैलाक्तैः काकोलूकस्य पुच्छकैः ॥ दारयैनं शोषयैनं मारयेत्यभिधाय च। अष्टोत्तरशतेनैव मनुना विधिना ततः॥ होमान्ते विधिवत् कृत्वा बाह्ये अग्नेश्च

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

सान्निधौ।यो मे द्वेष्टि जनः कश्चिद्दूरस्थो वा-न्तिकेऽपि च ॥ पिब कृत्येऽमुकं तस्य ह्यमित्युक्त्वा निवेदयेत् ॥ संरक्ष्याग्निं विधानेन नवरात्रं समाचरेत् ॥ हुनेद्यावत्तावदस्य भवेदेव रिपोर्मृतिः । अर्कक्षीरे च मरिचं पिष्ट्वा सिद्धार्थमेव च ॥ जले संलोड्य मंत्रेण रिपुं ध्यात्वा निरुद्धदृक् । कृष्णाम्बरोत्तरीयाग्रपादेनाक्रम्य तद्रिपुम् । वज्रशूलमिति ध्यात्वा तस्योपरि तु निक्षिपेत् । नवरात्रात् परे शत्रुर्म्रियते नात्र संशयः ।

कृत्या देवी का पूजन कर नित्यप्रति अष्टोत्तर शत मंत्र जपे । मंत्रीको सदा विनियोग करना चाहिये । पुरश्चरणके कालको जान कर मोमसे प्रतिमा बनावे परन्तु शत्रुकी प्रतिमा १२ अंगुल प्रमाण हो और उसके नख लोमभी अवश्य हों "प्रतिमा विषय में नख लोम कृत्रिम होते हैं" प्रतिमाके हृदय में शत्रुका नाम और मर्मस्थानमें फट्कार लिखै । शत्रु प्रतिमाकी प्राणप्रतिष्ठा करके मिरचोंको पीसकर सर्वाङ्ग लेपकरे, पुनः मृतक ब्राह्मण तथा मृतक चाण्डालके केशोंसे प्रतिमा के हाथ पांव बांधकर अधोमुख तोरण में लटकादे और उसी प्रतिमाके नीचे मेखला युक्त त्रिकोण कुण्ड स्थापन अर्थात् निर्माण करै उस कुण्ड में अग्नि स्थापनकर

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

तृण और शरसे अग्निको आच्छादित करे। बहेडेकी माला पहनकर काक, उल्लू इन दोनोंकी पूंछको निम्बपत्र (नीमके पत्ते) और कडुआ तेल मिला हवनकरै, हवनके समय दास्य, शोषय, मारय इन तीन शब्दों का उच्चारण करताजाय। विधानपूर्वक १०८ वार मन्त्र द्वारा हवनकरै, पुनः अग्निके निकटहो कहै हे कृत्ये ! दूर देशमें रहनेवाला अथवा समीप रहनेवाला जोभी कोई मेरा शत्रुहो उसका रक्त पानकर ऐसा कह मन्त्र के अन्त में हुं बीज मिश्रितकर आहुति प्रदान करे। विधानपूर्वक अग्निकी रक्षा कर नवरात्रितक अथवा जबतक शत्रुका मरण न हो तबतक नियमपूर्वक हवन करतारहै। आकके दूधमें मिर्चोंको पीसकर और मन्त्रोच्चारणपूर्वक जल मिलाकर नेत्र मूँदकर शत्रुका ध्यानकर काले वस्त्रों से वेष्टित उस शत्रु प्रतिमाको चरण के अँगूठे से स्पर्शकर और वज्र शूलका ध्यानकर उक्त मरिच जलको शत्रु प्रतिमाके शरीरके ऊपर छिडकदे तो नवरात्रिके पश्चात् अवश्य शत्रुका मरण होगा इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है।

अथ बटुकभैरवप्रयोगः—अतःपरं महेशानि शृणुष्व कर्मसिद्धिदम्। बटुकं विमलाङ्गाख्यं पूजयेत् षट्सु कर्मसु॥ (आचम्य स्वास्ति वाचनसूक्तं पठित्वा) अभ्यर्च्य च शिरः पद्मे श्रीगुरुं करुणामयम्।

अब बटुकभैरवका प्रयोग कहाजाता है। हे महेशानि ! कर्म में सिद्धि देनेवाले बटुक भैरवका प्रयोग सुनो। विमल है अङ्ग

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

जिन का ऐसे श्रीबटुकभैरवजीका पूजन छहों कर्मोंमें करै। आचमनकर स्वस्तिवाचन सूक्तको पढ़कर निज शिरपद्ममें करुणामय श्रीगुरुजीका पूजन करै।

सङ्कल्पः-अद्येत्याद्यमुकगोत्रान्तनामग्रहविशिष्टोपशमनपूर्वकारोग्यायुर्वृद्धिकामो गणेशादिपूजापूर्वकबटुकपार्थिवशिवपूजनमहं करिष्ये ।

गुरु पूजनके पश्चात् यह संकल्प करना योग्य है।

शान्तिकादौ-रतिं च पूजयेदादौ क्षेत्रपालं ततः पुनः। रुद्रञ्च पूजयेद्देवि ध्यानं शृणु महामते ।

शान्तिकादिमें प्रथम रतिका पूजन करै तत्पश्चात् क्षेत्रपालका। हे देवि ! रुद्रकाभी पूजनकरै मैं अब ध्यानकोभी कहता हूँ सुनो।

प्रणवाद्यं ध्यानम्-शूलहस्तं महारौद्रं सर्वविघ्ननिषूदनम् । पूर्णचन्द्रसमाभासं रुद्रं वृषभवाहनम् ॥ एवं ध्यात्वा महाकालीं पूजयेद्रुद्रदैवतम् ॥ प्रणवाद्यं रुद्रायनमः इति । भक्तियोगतः शततोलकपरिमितालिङ्गमानीयकाँस्यपात्रे लिङ्गं संस्थाप्य । सामान्या-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

ध्यै ततः कृत्वा भूतशुद्धिं महेश्वरि। प्राणायाममंगन्यासं पीठन्यासं समाचरेत्।

प्रणव आदिमें कहकर ध्यान०। त्रिशूलहै हाथमें जिनके, महारौद्र स्वरूप, समस्त विघ्न नाश करनेवाले, पूर्ण चन्द्रमण्डलके तुल्य कान्तिवाले, वृषभ वाहन श्रीरुद्र (शिव) जीका ध्यान करते हैं। इसप्रकार रुद्रजीका ध्यान करके रुद्र देवता श्रीमहाकाली का पूजनकरे। प्रणवाद्य श्रीरुद्रजीको नमस्कार है भक्तिपूर्वक सौ १०० तोले प्रमाण शिव लिङ्गको लाकर काँशी के पात्रमें स्थापनकर तदनन्तर सामान्य अर्घप्रदानकर भूतशुद्धि, प्राणायाम, अंगन्यास, पीठन्यास करे।

ततः ऋष्यादिन्यासः।ततो देहन्यासः। यथा मूर्ध्नि ॐ भैरवाय नमः। एवं ललाटे भीमदर्शनाय नमः। नेत्रयोः भूताश्रयाय नमः। मुखे तीक्ष्णदर्शनाय नमः। कर्णयोः क्षेत्रपाय नमः। हृदि क्षेत्रपालाय नमः। नाभिदेशे क्षेत्राख्याय नमः। कट्यां सर्वाघनाशनाय नमः। ऊर्वोस्त्रिनेत्राय नमः। जंघयोः रक्तपाणिकाय नमः। पादयोः देवदेवेशाय। सर्वांगे वटुकाय।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

तदनन्तर। ऋष्यादि न्यास करे। तत्पश्चात् देहन्यास करै जैसे मूर्ध्नि भैरवाय नमः इस मंत्रसे मस्तक स्पर्श करै। एवं ललाटादि सर्वाङ्गका स्पर्श करै। ललाटे भीमदर्शनाय नमः। नेत्रयोः भूताश्रयाय नमः। मुखे तीक्ष्णदर्शनाय नमः। कर्णयोः क्षेत्रपाय नमः। हृदि क्षेत्रपालाय नमः। नाभिदेशे क्षेत्राख्याय नमः। कट्यां सर्वाघनाशनाय नमः। ऊर्वोः त्रिनेत्राय नमः। जंघयोः रक्तपाणिकाय नमः। पादयोः देवदेवेशाय नमः। सर्वाङ्गे बटुकाय नमः। इस प्रकार अंगन्यास करे।

अथ करांगन्यासः। ॐ ह्रीं वाँ अंगुष्ठाभ्यां नम इत्यादि।ॐ ह्रां वाँ हृदयाय नम इत्यादि ततो मूलेन व्यापकं कृत्वा ध्यायेत्।ॐ वन्दे बालमित्यादि संपूज्य। द्वाविंशदक्षरञ्चैवं जपेद्रुद्रसहस्रकम्। अभिषेकं तर्पणञ्च यथाविधि समाचरेत्। एषा शांतिर्महाशांतिः कथिता तव श्रद्धया।

अब करांगन्यास कहाजाता है। ॐ ह्रीं वाँ अंगुष्ठाभ्यां नमः इस मंत्रसे दोनों हाथोंके अंगुठोंका स्पर्श करे ॐ ह्राँ वाँ हृदयाय नमः। इस मंत्रसे हृदयका स्पर्श करे। फिर मूलसे व्यापक कर ध्यान करे। ॐ वन्दे बालमित्यादि इस ध्यान मंत्रसे ध्यानकरे। पूजनकर २२ अक्षरके मंत्रका ११ हजार जप करे। यथा विधान अभिषेक और तर्पण करे। हे देवि ! यह महाशांति तुम्हारी श्रद्धासे वर्णन करीगई है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

अथ वशीकरणम्—पूर्ववत् संकल्प्य । राजसध्यानेन ॐ उद्यद्भास्करादि ध्यात्वा ।

अब वशीकरण प्रयोग कहा जाता है । पूर्ववत् संकल्प करके । उद्यद्भास्करादि इस राजस ध्यानसे ध्यान करै ।

अथ स्तम्भनम्—अतः परं महादेवि पूजनं क्रूरकर्मणि । पूर्ववत् संकल्प्य । विद्वेषणोच्चाटनादिषु च क्रूरकर्मसु ध्यानम्—यथा ध्यायेन्नीलादिकान्तमित्यादि ध्यात्वा संपूज्य शिवसहस्रसंख्याकमुक्तं शेषे अमुकं वशमानय स्वाहा इति मन्त्रजपकर्माहं करिष्ये ।

अब स्तम्भन प्रयोग कहाजाताहै हे महादेवि ! क्रूरकर्ममें पूजन विधान कहाजाता है ! पूर्ववत् संकल्प करके कर्म आरम्भ करे विद्वेषण उच्चाटन आदि क्रूर कर्मोंमें ध्यान यथा ध्यायेन्नीलाद्रिकान्तम्० । इस श्लोकद्वारा ध्यान करे । ध्यानकर पूजन करे । जप संख्या ११००० ।

यन्त्रे पूजाक्रमः—पुनर्ध्यात्वा यन्त्रे पुष्पं निधाय आवाहनादिकं कुर्यात् । यथा । तत्र क्रमः मूलादि सद्योजातमन्त्रेणावाहनम् । यथा मूलं ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः । भवेऽभवेऽनातिभवेभजस्व

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

मांभवोद्भवाय वै नमः । पिनाकधृगिहागच्छ इहागच्छ । पुनर्मूलमुच्चार्य ॐ वामदेवाय नमः एवं ज्येष्ठाय रुद्राय कालाय कलाविकरणायबलाय बलविकरणाय बलप्रमथनाय सर्वभूतदमनाय नमो नमः । उन्मनाय नमः इहतिष्ठ इहतिष्ठ मूलं इह सन्निधेहि ।

अब यन्त्रमें पूजन विधान कहाजाता है । फिर ध्यान कर यन्त्र में पुष्प स्थापन कर आवाहनादि करे । जैसे मूलादि सद्यो जात मन्त्र से आवाहन करे आवाहन मन्त्र यथा । ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः। भवेऽभवेऽनातिभवेभजस्व मां भवोद्भवाय वै नमः पिनाकधृग् इहागच्छ इहागच्छ फिर मूलका उच्चारण कर इन नाम मंत्रों द्वारा आवाहन करे ।

ॐ वामदेवाय नमः । ॐ ज्येष्ठाय नमः । ॐ रुद्राय नमः।ॐ कालाय नमः।ॐ कलविकरणाय नमः। ॐ बलाय नमः ।ॐ बलविकरणाय नमः । ॐ बलप्रमथनाय नमः। ॐ सर्वभूतदमनाय नमोनमः। ॐ उन्मनाय नमः। इह तिष्ठ इह तिष्ठ मूलं इह सन्निधेहि ।

इस प्रकार आवाहन कर पूजन करे ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

अघोरेण सन्निरोधनम् पुनर्मूलं ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः॥सर्व्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमोऽस्तुते रुद्ररूपेभ्यः। इह सन्निरुद्धस्व।

घोर मंत्रसे सन्निरोधन करे। यही उपरोक्त घोर मन्त्र है।

तत्पुरुषेण योनिमुद्राप्रदर्शनम्। पुनर्मूलम्। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। इति योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्।

तत्पुरुषेण इस मंत्रसे मुद्रा दिखावे। फिर मूल मंत्रका जप करे ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् इस शिवगायत्री मंत्रसे मुद्रा दिखावे।

ईशानेन वन्दनमिति। पुनर्मूलम्। ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेऽस्तु सदाशिव ॐ। शिवं वन्दयामि नमः। ततः प्राणप्रतिष्ठा। आँ ह्रीं क्रों हंसः बटुकायनमः पशुपतेः शूलपाणेः प्राणाः इह प्राणाः जीव इह स्थितः। सर्वेन्द्रियाणि। चक्षुः श्रोत्रघ्राण-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

प्राणाः इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । हुं इत्यवगुण्ठ्य । वमिति धेनुमुद्रयामृतीकृत्य छोटिकाभिर्दिग्बंधनं कृत्वा षडंगानि संपूज्य देवं पूजयेत् ।

" ईशान " इस मंत्रसे वन्दना करे । फिर मूलज० । ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मा शिवोमेऽस्तु सदाशिवः ॐ शिवं वन्दयामि नमः । इन मंत्रोंसे शिवजीकी वंदनाकरे । फिर प्राणप्रतिष्ठा करे आँ ह्रीं क्रों हंसः बटुकाय नमः। पशुपतेः शूलपाणेः प्राणाः इह प्राणाः । जीव इह स्थितः । सर्वेन्द्रियाणि चक्षुःश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहागत्य सुख चिरंतिष्ठन्तु स्वाहा इन मंत्रोंद्वारा उक्त प्रतिमामें प्राणप्रतिष्ठा करे । हुँ इस बीजका अवगुण्ठन कर ' वम् ' इस बीजद्वारा धेनु मुद्रा दिखावे और अमृतीकरण करे छोटिका (ताली) द्वारा दिग्बन्धन और षडंग पजनकर देवदेव श्री शिवजीका पूजन करै ।

मूलमुच्चार्य एतत् पाद्यम् । ॐ महादेवाय सोममूर्तये बटुकात्मने पशुपतये शिवाय नमः। एवं क्रमेणार्घ्याचमनीयादिकं दद्यात् । स्नाने तु विशेषः । यथा। अद्येत्यादि अमुकस्याऽशेषाशुभनिवृत्तिपूर्वकग्रहारिष्टो-पशमनारोग्यायुर्वृद्धिकामनया शततोलक-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

परिमितदुग्धेन बटुकात्मकपशुपतेर्लिङ्गं स्नापयामि । ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि इत्यादिना स्नापयेत् । ततो जलेन स्नापयित्वा । मूलम् । एष गन्धः । ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः पुष्पे तु अद्येत्यादि उक्तवत् कामनया बटुकात्मकपशुपतये शिवाया-ष्टोत्तरशतद्रोणपुष्पाण्यहं संप्रददे। मूलमुच्चार्य ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः । इति मंत्रेण एकं एकं कृत्वा दद्यात् । एवं बिल्वपत्रम् । मधुपर्के धूपदीपे तु गन्धवत् । नैवेद्यम् । अद्येत्यादिस्नानीयवत् कामनया एतत् सोपकरणशततोलकपरिमितातपतण्डुलनैवेद्यं बटुकात्मकपशुपतये शिवाय तुभ्यमहं संप्रददे । ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः । शततोलकपरिमितसम्विदा चूर्णं पानीयं तांबूलं च पूर्ववत् संकल्प्य दद्यात् । इति ।

मूल मंत्र उच्चारण करै । ॐ महादेवाय सोममूर्तये बटुकात्मने पशुपतये शिवाय नमः । इस मंत्रसे शिवजी को पाद्यप्रदान

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

करै । इसी प्रकार अर्घ आचमन आदि प्रदानकरे । परन्तु स्नानमें कुछ विशेषताहै । यथा । प्रथम संकल्पकरे संकल्प यहहै । अद्येत्यादि अमुकस्याशेषाऽशुभनिवृत्तिपूर्वकग्रहारिष्टोपशमनाऽरोग्यायुर्वृद्धिकामनया शततोलकपारिमितदुग्धेन बटुकात्मकपशुपतेर्लिङ्गं स्नापयामि । ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि इत्यादिना स्नापयेत् । इस मंत्रसे शिव को स्नान करावे । फिर जलसे स्नानकरावे और मूल मंत्रका जप करे । महादेवाय सोममूर्तये नमः । इस मंत्र से गन्ध प्रदान करे पुष्पभी संकल्प पूर्वक चढाने योग्य हैं । यह संकल्प है । अद्येत्यादि अमुकस्याशेषाऽशुभनिवृत्तिपूर्वकग्रहारिष्टोपशमनाऽरोग्यायुर्वृद्धिकामनया बटुकात्मकपशुपतये शिवायाष्टोत्तरशतद्रोणपुष्पाण्यहं सम्प्रददे । तत्पश्चात् मूलमंत्र उच्चारण कर ॐ महादेवाय सोम मूर्तये नमः इस मंत्रसे एक २ पुष्प शिव प्रतिमा के ऊपर चढावे । इसीप्रकार बिल्वपत्र भी चढाना मधुपर्क धूप, दीप, गन्धके तुल्य चढाना संकल्पपूर्वक नैवेद्यभी अर्पणकरै यह संकल्पहै । अद्येत्यादि अमुकस्याऽशेषाऽशुभनिवृत्तिपूर्वकग्रहाऽरिष्टोपशमनाऽऽरोग्यायुर्वृद्धिकामनया एतत् सोपकरणशततोलकपारिमितातपतण्डुल नैवेद्यं बटुकात्मकपशुपतये शिवाय तुभ्यमहं संप्रददे । इसप्रकार नैवेद्य प्रदानकर तांबूल पूगीफल आदि भी संकल्प द्वारा अर्पणकरे । संकल्प पूर्ववत् जानना ।

वशीकरणमन्त्रे । मूलमुच्चार्य ॐ भवाय जलमूर्तये बटुकात्मने शिवाय नमः । एवं क्रमेण पूजयेत् । एवमर्घ्याचमनीयं दद्यात् ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

स्नाने तु अद्येत्यादि–अमुकस्यामुकवशीकरणार्थं शततोलकपरिमितघृतेन मधुना वा-बटुकात्मकपाशुपतशिवलिंगं स्नापयामि। मूलमुच्चार्य। एष गन्ध ॐ भवाय जलमूर्तये नमः। पुष्पे तु अद्येत्यादि अमुकस्यामुकवशीकरणार्थम् अष्टोत्तरशतद्रोणपुष्पं बटुकात्मने पशुपति शिवायाऽहं सम्प्रददे। मूलमुच्चार्य एतत् द्रोणपुष्पं ॐ भवाय जलमूर्तये नमः इति प्रत्येकम्। एवं बिल्वपत्रम्। धूपदीपे तु ॐभवाय जलमूर्तये नमः नैवेद्ये तु अद्येत्यादि अमुकस्यामुकवशीकरणार्थं शततोलकपरिमितसोपकरणनैवेद्यं ॐ बटुकात्मकपशुपतिशिवायाऽहं सम्प्रददे मूलमुच्चार्य एतत् सोपकरणशततोलकपरिमितनैवेद्यं सम्प्रदा चूर्णञ्च ॐ भवाय जलमूर्तये नमः। ततः पानार्थोदकं आचमनीयं ताम्बूलं च दद्यात्।

अब वशीकरण मन्त्र का विधान कहाजाता है। मूल मंत्रका उच्चारण करे। ॐ भवाय जलमूर्तये बटुकात्मने शिवाय नमः

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

इस क्रमानुसार पूजनकरे । इसही क्रमानुसार अर्घ, आचमन आदि प्रदान करे । स्नान विषयमें संकल्प करे । यह संकल्पहै । अद्ये-त्यादि अमुकस्याऽमुकवशीकरणार्थं शततोलकपरिमितघृतेन मधुना वा बटुकात्मकपशुपतिशिवलिंगं स्नापयामि । मूलमंत्रका उच्चारण कर ॐ भवाय जलमूर्तये नमः इस मंत्र से गंध प्रदान करे। पुष्प संकल्प द्वारा प्रदान करे । संकल्प यह है अद्येत्यादि अमुकस्यामुकवशीकरणार्थम् अष्टोत्तरशतद्रोणपुष्पं बटुकात्मने पशुपतिशिवायाऽहं सम्प्रददे । मूलमंत्र उच्चारण कर ॐ भवाय जलमूर्तये नमः इस मंत्रसे पृथक् पृथक् द्रोण (दोहना) पुष्प चढावे इसी प्रकार बिल्वपत्र भी चढावे । ॐ भवाय जलमूर्तये नमः । इस मंत्र से धूप दीप प्रदान करे । नैवेद्य संकल्पपूर्वक प्रदान करे । संकल्प यहहै अद्येत्यादि अमुकस्यामुकवशीकरणार्थं शततोलकपरिमितसोपकरणनैवेद्यं ॐ बटुकात्मकपशुपतिशिवाय संप्रददे । मूल मंत्रको उच्चारण कर ॐ भवाय जलमूर्तये नमः इस मंत्रद्वारा नैवेद्य जल ताम्बूल पूगीफल आदि प्रदान करे ।

ततः अष्टावरणं पूजयेत् । ततोष्टमूर्तिं पूजयेत् । ततो मूलेन पुष्पाञ्जलित्रयं दत्वा संकल्प्य शिवसहस्रसंख्याकं तन्मन्त्रं जपेत् । शान्तिकादौ क्रूरकर्मण्यापि । ततो गुह्यादिना जपं समाप्य स्तोत्रादिकं पठेत् ।

तदनन्तर अष्टावरण पूजन करे । फिर अष्टमूर्तिका पूजन

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

करे । पुनः मूलमंत्रसे तीन पुष्पाञ्जलि प्रदानकर ११ हजार शिव मंत्रका जप करे । शांतिकादि क्रूर कर्ममें भी तदनन्तर गुह्यादिसे मंत्र जपको समाप्तकर स्तोत्रादिका पाठ करे ।

ततो बलिदानम्—यथा-मूलमुच्चार्य वटुकभैरवाय एष बलिर्नमः । भैरवपरिवारगणैःसह मम शत्रून् सरुधिरं पिब पिब इमं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा । ॐ शत्रुपक्षस्य रुधिरं पिशितं च दिने दिने । भक्षय स्वगणैःसार्द्धं सारमेयसमन्वितम् ॥ ततो विहितद्रव्यैः अष्टोत्तरशतं सहस्रं वा होमयेत् ।

अब बलिदान प्रकार कहाजाताहै । मूल मंत्रको उच्चारण कर वटुकभैरवाय एष बलिर्नमः । इस मंत्रसे बलिप्रदान करे । भैरवपरिवारगणैः सह ममशत्रून् सरुधिरं पिब पिब इमं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा । बलिप्रदानके समय इस मंत्रका उच्चारण करे । ओं शत्रुपक्षस्य रुधिरं पिशितञ्च दिने दिने भक्षय स्वगणैः सार्द्धं सारमेयसमन्वितम् । यह समस्त मंत्र बलिप्रदानके समय उच्चारण करने तत्पश्चात् पीछे कहेहुये कर्मानुसार द्रव्योंसे १०८ अथवा १००० आहुति प्रदानकर हवन करे ।

वशीकरणे तु घृताक्तराजिकाभिरष्टोत्तरसहस्रहोमः । शान्त्यर्थं दूर्वादिकम् । क्रूरकर्मणि

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

बिल्वपत्रम् । उच्चाटने तु ॐ ह्रीं श्रीं हुं शिवाय स्वाहा । इति विशेषः । दक्षिणां बटुकात्मकपशुपतये शिवाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । श्वेतसर्षपं लवणमिति ।

वशीकरण प्रयोगमें घृत मिश्रित राईसे १००८ वार हवन करे शांतिके लिये दूर्वादिकसे हवन करे क्रूर कर्ममें बिल्वपत्रसे हवन करे । उच्चाटन प्रयोगमें ॐ ह्रीं श्रीं हुं शिवायस्वाहा मंत्रमें इतनी विशेषता है संकल्प द्वारा दक्षिणा प्रदान करे श्वेत सर्सों अथवा लवणसे हवन करे ।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे उमामहेश्वरसंवादे त्रयोदशः पटलः ॥ १३ ॥

अथ षट्कर्मणां कवचं शत्रुमर्दनम् ।

श्रीदेव्युवाच । श्रुतं बटुकमाहात्म्यं पूर्णविस्मयकारकम् । इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं वै षट्कर्मणाम् ॥

अब शत्रु विनाश कारक षट्कर्म कवच कहाजाता है । श्रीदेवीजी कहने लगीं । भगवन् ! आपके प्रसादसे महाविस्मयकारक बटुकमाहात्म्य श्रवण किया अब मेरी षट्कर्म कवच श्रवण करने की इच्छा है कृपापूर्वक वर्णन कीजिये ।

श्रीईश्वर उवाच। शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यन्मां

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

त्वं परिपृच्छसि । श्रवणात् पठनाद्वापि शत्रुनाशाय तत्क्षणात् ।

शिवजी कहनेलगे । हे देवि श्रवण करो तुम्हारी प्रीति के अर्थ मैं षट्कर्म कवच वर्णन करता हूं इस कवच के पाठ करनेसे शत्रुका नाश होता है ।

श्रीदेव्युवाच । त्रैलोक्यमोहनार्थन्तु कवचं मे प्रकाशय । त्रैलोक्यशत्रुसंहन्तुं नाशितुं यंत्क्षमं भवेत् ॥ एवमुक्तो महादेवः क्रुद्धो भूत्वा जगत्पतिः । देवीं प्रबोधयामास वाक्येनामृत वर्षिणा ।

देवीजी कहनेलगीं । भगवन् तीनोंलोकों के मोहनार्थ मेरे प्रति कवच का वर्णन करो । जिस कवच के पाठमात्रही से तीनों लोकोंके शत्रुओंका समुदाय मात्र नाशहो । इसप्रकार श्रीशिवजी महाराज देवीजीकी वाणी श्रवणकर महाक्रोधहो देवीजीसे कहनेलगे ।

श्रीमहादेव उवाच ।

परानिष्टे महादेवि कुतस्ते जायते मतिः ।

हे महादेवि ! पराये अनिष्टको जो चिंतन करती हो न जाने ऐसी विपरीत बुद्धि तुमको कहाँसे उत्पन्नहुई है ।

श्रीदेव्युवाच । जिघांसन्तं जिघांसीयान्न तेन ब्रह्महा भवेत् । ये यथा मां प्रपद्यन्ते श्रुतिर-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

स्ति पुरातनी। यदि ते वर्तते देव दया हि कथ्यतां मयि। शत्रूणां प्राणनाशार्थमुच्चाटन-वशीकृतौ। तेषां हि बलनाशार्थं सर्वदा प्रयता नराः।

श्रीदेवीजी कहने लगी। भगवन् यह पुरानी श्रुति है कि मारनेवालेको अवश्य मारे उसके मारनेसे ब्रह्महत्या दोष नहीं लगता। हे देव! यदि आपकी कृपा मेरे ऊपर है, तो दयाकर शत्रुके प्राणनाश करनेवाले उच्चाटन तथा वश्य आदि प्रयोगों को कहिये क्योंकि सर्वकाल में मनुष्य निज शत्रुके नाशके लिये यत्न कियाही करते हैं।

ईश्वर उवाच। शृणु देवि महाभागे कालाग्नि-प्राणवल्लभे। यस्य धारणमात्रेण शत्रूणां नाशनं भवेत्॥ धृत्वा तु पादमूलेन स्पृष्ट्वा दास इवाकगेत्। शरणागतमात्रन्तु नाशितुं नैव शक्यते॥ शृणु देवि महाभागे सावधानावधारय। शत्रूणां प्राणनाशार्थं कुपितः काल एव सः।

श्रीशिवजी कहनेलगे। हेकालाग्नि प्राणवल्लभे! महादेवि! श्रवण करो कि जिस कवचराजके धारण करनेमात्रही से शत्रुनाश होता है। इस कवचराजको पादमूलमें धारण कर शत्रुका स्पर्श करे

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

तो शत्रु दासकी नाईं आज्ञा पालन करनेमें प्रवृत्तहो फिर क्या जरूरतहै उसके प्राण नाश करनेकी क्योंकि शरणागतके प्राणनाश करनेमें प्रायश्चित्त है । हे देवि! हे महाभागे ! सावधान हो श्रवण करो कि यह कवचराज शत्रुके प्राण नाशकरनेमें कुपित कालके तुल्यहै।

दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा । कोटिसूर्यप्रभा काली मम शत्रून् विनाशय । नाशयित्वा क्षणं देवि अन्यशत्रुं विनाशय । क्रीं क्रीं क्रीं उग्रप्रभे विकटदंष्ट्रे परपक्षं मोहयमोहय पचपच मथमथ दहदह हनहन मारयमारय ये मां हिंसितुमुद्यता योगिनीचक्रैस्तान् वारयवारय छिन्धिः छिन्धि भिन्दिभिन्दि करालिनि गृह्णगृह्ण ओं क्रींक्रीं क्रींक्रीं स्फूरस्फूर पूरपूर पूनपून चूल्वचूल्व धकधक धमधम मारयमारय सर्वजगद्वशमानय ओंनमः स्वाहा ।

यह भद्रकाली का कवचकहाजाताहै । दशमुखवाली दशपाद, दशभुजा, अञ्जनपर्वतके तुल्य कृष्णवर्णवाली, करोडों सूर्यकान्ति से शोभित, महाकाली क्षणमात्रमें मेरे भूत भविष्य वर्तमान शत्रुओंका नाशकरे । यह कवचहै क्रीं क्रीं क्रीं उग्रप्रभे विकटदंष्ट्रे पर पक्षं मोहयमोहय, पचपच, मथमथ, दहदह, हनहन, मारयमारय

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

ये मां हिंसितुमुद्यता योगिनीचक्रैस्तान् वारयवारय, छिन्धिछिन्धि, भिन्दिभिन्दि, करालिनि गृह्णगृह्ण, ओं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्फूर स्फूर, पूरपूर, पूनपून, चूल्वचूल्व, धकधक, धमधम, मारयमारय सर्वजगद्वशमानय ओं नमः स्वाहा ।

इति ते कवचं देवि भद्रकाल्याः प्रचोदितम् । भूर्जे विलिखितश्चैतत् स्वर्णस्थं धारयेद्यदि । शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा धारयेद्यदि । त्रैलोक्यं मोहयेत् क्रोधात् त्रैलोक्यं चूर्णयेत क्षणात् ॥ पुत्रवान्धनवान्धीमान् नानाविद्यानिधिर्भवेत । ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रस्पर्शनात्ततः ॥ शत्रवो नाशमायान्ति रजतेन प्रधारितम् । मासमात्रेण शत्रूणां महाविपद्कारणम् ॥ यंयं शत्रुं स्मरन्मर्त्यः कवचं पठति ध्रुवम् ।तंतं नाशयते सद्यस्तथ्यं ते तद्वदाम्यहम् । धारणे भजते शत्रुः कण्ठशोषं सदा भवेत् ।हृत्कम्पो जायते तावद्यावत्तस्य कृपा न चेत् ।

हे देवि ! इस प्रकार श्रीभद्रकालीजीका कवच तुम्हारे प्रति वर्णन किया यदि इस कवचराजको गोरोचन आदि द्रव्योंसे भोजपत्रके ऊपर लिखकर सुवर्णके ताबीजमें बन्दकर शिखा, दक्षिण

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

बाहु, अथवा कण्ठमें धारण करे तो क्रोधपूर्वक तीनों लोकोंको मोहितकर तत्क्षण स्वाधीन करनेमें समर्थ हो, और पुत्रार्थी पुत्रको प्राप्त होय, धनार्थी धनको, विद्यार्थी नाना प्रकारकी विद्याओंको प्राप्तहो इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं है । यदि इस यंत्रराज को उक्त विधानानुसार लिखकर चांदीके ताबीजमें बन्दकर उक्त स्थानोंमें धारणकरै तो अवश्य धारण करनेवालेके शरीरके स्पर्श मात्रहीसे ब्रह्मादि अस्त्र शस्त्र शत्रुका नाश करनेमें समर्थ होय । इस प्रयोगके अनुष्ठान करनेसे एक मासके भीतर २ शत्रुओंको महा विपत्ति प्राप्त होजाती है । प्रयोगकर्त्ता जिस व्यक्तिका चिन्तवन कर इस प्रयोगका आरम्भ करैगा। अवश्य उस व्यक्तिका नाश होगा । शत्रुका ध्यानकर यदि यह कवचराज निज कण्ठ देशमें धारण कियाजाय तो शत्रुका कण्ठ सूखने लगै और शरीर कांपने लगै, जबतक भद्रकालीकी कृपा न हो कांपाही करै ॥ इति कवच ॥

अथ रिपुनाशकवचम् ।

ईश्वर उवाच ॥ त्रिकालं गोपितं देवि कलिकाले प्रकाशितम् । न वक्तव्यं न द्रष्टव्यं तव स्नेहात् प्रकाश्यते ॥ काली दिगम्बरी देवि जगन्मोहनकारिणी । तच्छृणुष्व महादेवि त्रैलोक्यमोहनन्त्विदम् ।

श्रीशिवजी कहनेलगे । हे देवि ! यह कवचराज सत्ययुगादि तीनों कालोंमें गुप्तरहा परन्तु अब इस कराल कलिकालके समय

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

में यह कवचराज प्रकाशित हुआ है इसमें तुम्हारा प्रेमही कारण है अन्यथा यह देवताओंको भी अलभ्य कवचराज प्रकाशके योग्य न था, "अच्छा" अब तुम यह कवचराज न तो किसीको देना और न किसीको दिखाना । हे प्रिये ! जगत् को मोह करनेवाली काली दिगम्बरीके प्रयोगको वर्णन करता हूं सुनो । हे महादेवि ! यह महाप्रयोग तीनों लोकोंको मोहित करनेवाला है !

अस्य महाकालभैरवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः । श्मशानकालिका देवता सर्वमोहने विनियोगः।ऐं क्रीं क्रूं क्रः स्वाहा विवादे पातु मां सदा । क्लीं दक्षिणकालिकादेवतायै सभामध्ये जयप्रदा ॥ क्रीं क्रीं श्यामांगिन्यै शत्रुं मारयमारय । ह्रीं क्रीं क्रीं क्लीं त्रैलोक्यं वशमानय । ह्रीं श्रीं क्रीं मां रक्षरक्ष विवादे राजगोचरे द्वाविंशत्यक्षरी ब्रह्म सर्वत्र रक्ष मां सदा ॥ कवचे वर्जितं यत्र तत्र मां पातु कालिका । सर्वत्र रक्ष मां देवि श्यामातूग्रस्वरूपिणी ॥ एतेषां परमं मोहं भवद्भाग्ये प्रकाशितम् । सदा यस्तु पठेद्वापि त्रैलोक्यं वशमानयेत् ॥ इदं कवचमज्ञात्वा पूजयेद्यो-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

स्वरूपिणीम् । सर्वदा स महाव्याधिपीडितो नात्र संशयः॥ अल्पायुः स भवेद्रोगी कथितन्तव नारद । धारणं कवचस्यास्य भूर्जपत्रे विशेषतः ॥ सयन्त्रं कवचं धृत्वा इच्छासिद्धिः प्रजायते । शुक्लाष्टम्यां लिखेन्मंत्री धारयेत् स्वर्णपत्रके ॥ कवचस्यास्य माहात्म्यं नाहं वक्तुं महात्मने । शिखायां धारयेद्योगी फलार्थी दक्षिणे भुजे ॥ इदं कल्पद्रुमं देवि तव स्नेहात् प्रकाश्यते । गोपनीयं प्रयत्नेन पठनीयं महामुने ।

इस कवच का महाकालभैरव ऋषि, अनुष्टुप् छन्द, श्मशान कालिका देवता है । और सर्व मोहनार्थ यह विनियोग है । ऐं क्रीं क्रूं क्रः स्वाहा विवादे पातु मां सदा । क्लीं दक्षिणकालिकादेवतायै सभामध्ये जयप्रदा । क्रीं क्रीं श्यामांगिन्यै शत्रुं मारयमारय ह्रीं क्रीं क्रीं क्लीं त्रैलोक्यं वशमानय ह्रीं श्रीं क्रीं मां रक्षरक्ष विवादे राजगोचरे द्वाविंशत्यक्षरी ब्रह्म सर्वत्र रक्ष मां सदा (यह कवच मंत्रहैं इनकी भाषा की कोई ऐसी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती अतः नहीं लिखी) रक्षा रहित स्थान में कालिका देवी मेरी रक्षा करें उग्रस्वरूपिणी श्यामा सदा सर्वस्थान में मेरी रक्ष

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

करैं । यह परम मोहन कवच है । हे प्रिये ! तुम्हारे भाग्यार्थ प्रकाशित किया गया है । जो मनुष्य सदा इस कवच का पाठ करते हैं तीनों लोक उनके वशमें हैं विना इस कवचके जानें जो मनुष्य घोररूपिणी कालिकाका पूजन करेंगे अवश्य सर्वदा वह मनुष्य महाव्याधियोंसे पीडित रहेंगे । वह मनुष्य अल्पायु और सदा रोगी रहेंगे । हे नारद ! यह बात सत्य जानों । विशेषकर भोजपत्रके ऊपर लिखकर इस यंत्रको धारण करे । यत्नपूर्वक इस कवचके धारण करनेसे इच्छासिद्धि होती है । शुक्लपक्षकी अष्टमीको भोजपत्रके ऊपर लिखकर धारण करे स्वर्णपत्रमें बंद करके हे महात्मन् ! इस कवचके माहात्म्यको वर्णन करनेके लिये मैं समर्थ नहीं हूं । योगी शिखामें धारणकरे, फलार्थी दक्षिण भुजामें धारणकरे हे देवि ! यह कल्पद्रुम तुम्हारे स्नेहसे प्रकाशित किया है । परन्तु सर्वथा यह कल्पद्रुम गुप्त रखने योग्य है ।

श्रीविष्णुरुवाच—इत्येवं कवचं नित्यं महालक्ष्मि प्रपठ्यताम् । अवश्यं वशमायाति त्रैलोक्यं सचराचरम् । शिवेन कथितं पूर्वं नारदे कलहास्पदे । तत्पाठान्नारदेनापि मोहितं सचराचरम् ।

श्रीविष्णु भगवान् कहनेलगे हे महालक्ष्मि ! इस प्रकार यह शत्रुमर्दन कवच पढना योग्य है अवश्य तीनों लोक वशमें

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

आजाते हैं । शत्रुवर्गसे विह्वल नारदजीके प्रति श्रीशिवजी महाराजने यह कवचराज वर्णन किया था इसके पाठ करनेसे नारदजीने भी सचर तथा अचर जीवमात्रको मोहित करलिया था ॥ इति कवच समाप्त ॥

इति श्रीक्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वरसम्वादे चतुर्दशः पटलः ॥ १४ ॥

अथ सर्वरक्षाकरं कवचम् ।

श्रीदेव्युवाच—भगवन्देवदेवेश सर्वाऽऽम्नायप्रपूजित। सर्वं मे कथितं देव कवचं न प्रकाशितम् ॥ प्रासादाख्यस्य मंत्रस्य कवचं मे प्रकाशय। सर्वरक्षाकरं देव यदि स्नेहोऽस्ति सम्प्रति ।

श्रीदेवीजी कहनेलगीं । हे भगवन् ! हे देवदेवेश ! हे सर्वाम्नायप्रपूजित ! देव ! सब कुछ आपने मेरे सन्मुख वर्णन किया परन्तु कवचका वर्णन नहीं किया सो अब कृपापूर्वक प्रासादाख्य मंत्रका कवच वर्णन कीजिये जो कि सर्वरक्षाओंका करनेवालाहै ।

श्रीभगवानुवाच—प्रासादमंत्रकवचस्य वामदेव ऋषिः । पंक्तिश्छन्दः । सदाशिवो देवता । साधकाभीष्टसिद्धये विनियोगः प्रकीर्तितः । शिरो मे सर्वदा पातु प्रासादाख्यः सदाशिवः।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

षडक्षरस्वरूपो मे वदनञ्च महेश्वरः ॥ पञ्चाक्षरात्मा भगवान् भुजौ मे परिरक्षतु । मृत्युञ्जयस्त्रिबीजात्मा आयू रक्षतु मे सदा ॥ वटमूलसमासीनो दक्षिणामूर्तिरव्ययः। सदा मां सर्वतः पातु षट्त्रिंशद्वर्णरूपधृक् ॥ द्वाविंशार्णात्मको रुद्रः कुक्षौ मे परिरक्षतु । त्रिवर्णात्मा नीलकंठः कण्ठं रक्षतु सर्वदा ॥ चिन्तामणिर्बीजरूपे सर्वनारीश्वरो हरः।सदा रक्षतु मे गुह्यं सर्वसम्पत्प्रदायकः ॥ एकाक्षरस्वरूपात्मा कूटरूपी महेश्वरः । मार्तण्डभैरवो नित्यं पादौ मे परिरक्षतु॥ ओमित्याख्यो महाबीजस्वरूपस्त्रिपुरान्तकः । सदा मां रणभूमौ तु रक्षतु त्रिदशाधिपः ॥ ऊर्द्धमूर्द्धानमीशानो मम रक्षतु सर्वदा । दक्षिणस्यां तत्पुरुषो अव्यान्मे गिरिनायकः ॥ अघोराख्यो महादेवः पूर्वस्यां परिरक्षतु ।वामदेवः पश्चिमस्यां सदा मे परिरक्षतु ॥ उत्तरस्यां सदा पातु सद्योजातस्वरूपधृक् ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

श्रीविष्णुभगवान् कहनेलगे। प्रासादमन्त्र कवचका वामदेव ऋषि, पंक्तिश्छन्दः, सदाशिव देवता है साधकअभीष्टसिद्धिके अर्थ विनियोग है। प्रासादाख्य सदाशिव मेरे शिरोभागकी रक्षा करें, षडक्षर स्वरूप महेश्वर मेरे मुखकी रक्षा करें। पञ्चाक्षरात्मा भगवान् शिव मेरी दोनों भुजाओंकी रक्षा करें। त्रिबीजात्मा मृत्युञ्जय सदा मेरी आयुकी रक्षाकरें। वटवृक्षकी मूलमें स्थित अव्यय दक्षिणामूर्ति, षट्त्रिंशत् (३६) अर्णरूप धारण करने वाले सदाशिव सर्वदा समस्त स्थानों में मेरी रक्षा करें। द्वाविंशवर्णात्मक रुद्रदेव मेरी दोनों कुक्षियोंकी रक्षा करें। त्रिवर्णात्मक नीलकण्ठ मेरे कण्ठकी रक्षा करें चिन्तामणि, सर्व नारियोंमें बीजरूप ईश्वर हर सदा मेरे गुह्यदेश की रक्षा करें। सर्वसम्पत्प्रदाता एकाक्षर स्वरूपात्मा, कुहरूपी महेश्वर, मार्तण्ड भैरव, नित्य मेरे पादकी रक्षा करें ओं इस आख्या (नाम) को धारण करनेवाले, महाबीजस्वरूप त्रिपुरान्तक, त्रिदशाधिप, सदा संग्रामभूमि में मेरी रक्षा करें। ईशान ऊर्द्धभाग में मेरी रक्षा करें। गिरिनायक तत्पुरुष दक्षिण दिशा में मेरी रक्षाकरें। अघोराख्य महादेव पूर्वदिशामें मेरी रक्षा करें। वामदेव पश्चिम दिशा में मेरी रक्षा करें सद्योजात स्वरूपधृक् उत्तर दिशा में मेरी रक्षा करें।

इत्थं रक्षाकरं देवि कवचं देवदुर्लभम् ।प्रातः काले पठेद्यस्तु सोऽभीष्टफलमाप्नुयात्॥पूजा काले पठेद्यस्तु साधको दक्षिणे भुजे। देवा मनुष्या गन्धर्वा वश्यास्तस्य न संशयः। कवचं यस्तु शिरसि धारयेद्यदि मानवः॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

करस्थास्तस्य देवेशि अणिमाद्यष्टसिद्धयः ।
स्वर्णपत्रे त्विमां विद्यां शुक्लपट्टेन वेष्टिताम् ॥
राजतोदरसंविष्टां कृत्वा च धारयेत्सुधीः ।
संप्राप्य महतीं लक्ष्मीमन्त्र च शिवरूप
धृक्॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदा-
चन ॥ शिष्याय भक्तियुक्ताय साधकाय
प्रकाशयेत् । अन्यथा सिद्धिहानिः स्यात्
सत्यमेतन्मनोरमे ॥ तव स्नेहान्महादेवि
कथितं कवचं शुभम् । न देयं कस्य चिद्भद्रे
यदीच्छेदात्मनो हितम् ॥ योऽर्चयेद्गन्ध
पुष्पाद्यैः कवचं मन्मुखोदितम् । तेनार्चिता
महादेवि सर्वे देवा न संशयः ।

हे देवि ! इसप्रकार देवताओंको दुर्लभ इस कवचराजका जो मनुष्य प्रातःकालके समय पाठ करते हैं उनको वांछासिद्धि प्राप्त होती है । जो साधक लोग पूजन समय इस कवचराजको दक्षिण भुजामें पाठ करते हैं उनके वश्य (आधीन) देव, मनुष्य, गन्धर्व रहते हैं, इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं है । जो मनुष्य कवचको शिरमें धारण करते हैं, हे देवि ! उन साधकों के हाथमें ही अणिमादि अष्टसिद्धियाँ वास करती हैं । इस कवचको स्वर्णके पत्र (तावीज) में बन्दकर श्वेत पट्टवस्त्रसे वेष्टित करे । अथ

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

चांदीके ताबीजमें बन्दकर सफेद रेशमके सूत्रसे पोकर भुजा या कण्ठदेशमें धारण करै तो महालक्ष्मीकी प्राप्तिहो और अन्तकाल में शिवरूप होके कैलासमें वास करे परन्तु स्त्री को वाम भुजा और पुरुष को दक्षिण भुजा में वह यंत्रराज धारण करना योग्यहै। साधकके विना अन्य किसी धूर्त्त पुरुष को यह यंत्रराज न देना और न प्रकाश करना भक्तियुक्त शिष्यके निकट प्रकाश करना अन्यथा व्यवहार करनेसे सिद्धि हानि होती है, हे महादेवि ! यह कवच तुम्हारे स्नेहसे कहागया है, हे भद्रे ! अपने शुभकी इच्छा करनेंवाला साधक यह कवचराज जिस किसीको न दे । हे महा-देवि ! जो साधक मेरे मुखसे निकले इस कवचराजका गंध पुष्पादिसे पूजन करते हैं मानों उन्होंने समस्त देवताओंका पूजन करलिया इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं ।

इति श्रीक्रियोड्डीशे महातंत्रराजे देवीश्वरसंवादे
पञ्चदशः पटलः ॥ १५ ॥

अथ त्र्यम्बकमृत्युञ्जयमन्त्रः ।

श्रीदेव्युवाच—इदानीं श्रोतुमिच्छामि पूर्व मुक्तं च त्र्यम्बकम् ।प्रभेदे कथितं देव शान्ति मृतसंजीवनीम् ।

श्रीदेवीजी कहनेलगीं । हे देव ! अब त्र्यम्बक प्रयोग के श्रवण करनेकी इच्छा है ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

ईश्वर उवाच । शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥ मातॄणां तिसृणामम्ब गर्भ-जातो यतो हरः ॥ अतस्त्र्यम्बक इत्युक्तं मम नाम महेश्वरि । वशिष्ठोऽस्य ऋषिः प्रोक्तश्छन्दोऽनुष्टुबुदाहृतः ॥ देवताऽस्य समुद्दिष्टस्त्र्यम्बकः पार्वतीपतिः । विभक्तैर्मन्त्रवर्णैश्च षडङ्गानां च कल्पनाम् ॥ ततश्च वह्नि बीजेन समन्ताज्जलधारया। प्राचीरं चिन्तनं कुर्यात्ततः संकल्पमाचरेत् ॥ पुनः संकल्पं देवेशि भूतशुद्ध्यादिकं च यत् ।ततः पश्चात् करन्यासं कुर्याच्च मम सुन्दरि ।

श्रीशिवजी कहनेलगे । हे देवि ! सुनो जो तुम मुझसे बूझती हो, मैं हर तीन मात्रिकाओंके गर्भ से उत्पन्न हूं । हे महेश्वरि ! इसी कारण मेरा नाम त्र्यम्बक है । इसका वसिष्ठ ऋषि, छन्द अनुष्टुप् है पार्वतीपति सदाशिव इसके देवता हैं, विभक्त मंत्रवर्णोंसे षडङ्गकल्पना करनी । फिर वह्निबीज से जलधारा प्रक्षेप करे । प्राचीर चिन्तवन कर संकल्प करे। पत्पश्चात् भूतशुद्धि करन्यास करे ।

त्र्यम्बकं अंगुष्ठाभ्यां नमः । यजामहे तर्जनीभ्यां स्वाहा । सुगंधिं पुष्टिवर्द्धनं मध्य-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2 Endowment Heritage Foundation, Jal

माभ्यां वषट् । उर्वारुकमिव बन्धनादनामिकाभ्यां हुम् । मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठाभ्यां वौषट् । मामृतात् करतलपृष्ठाभ्यां फट् । एवं हृदादिषु ।

अब न्यास कहेजाते हैं । त्र्यम्बकं अंगुष्ठाभ्यांनमः । दोनों हाथोंके अंगूठोंको दोनों हाथोंकी तर्जनी अंगुलियोंसे स्पर्श करे । यजामहे तर्जनीभ्यां स्वाहा । इस मंत्रसे दोनों हाथोंकी तर्जनी अंगुलियोंको दोनों हाथोंके अंगूठोंसे स्पर्श करे । एवं पांचों अंगुलियोंके और करतलपृष्ठको उक्त मंत्रों द्वारा स्पर्श करताजाय इसी प्रकार हृदयादिन्यास करे ।

ततो द्वात्रिंशन्मन्त्रवर्णान्न्यसेत् । पूर्वपश्चिमयाम्योत्तरेषु वक्रेषु ४ । उरोगलोद्ध्वास्ये ३ । पुनर्नाभिहृत्पृष्ठकुक्षिषु ४ । लिंगपायूरुमूलान्ते ६ । जानुयुग्मे २ । गुल्फयोर्युग्मे २ । स्तनयोः २ । पार्श्वयोः २ । पादयोः २ । पाण्योः २ । नासिकयोः २ । शीर्षे १ । मंत्रवर्णान्न्यसेत्क्रमात् पुनस्ततः पादाद्येकादशस्थानेषु न्यसेत् । शिरो १ भ्रूयुगला १ क्षिषु १ वक्रे १ गण्डयुगे १

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

भुजयोः२ हृदये १ जठरे १ पुनः गुह्ये १ ऊ१ जानु १ पादेषु १ न्यासमेवं समाचरेत्।

तत्पश्चात ३२ वर्णोंद्वारा न्यासकरे। पूर्व, पश्चिम, दक्षिण उत्तरमुख में ४ वक्षस्थल, गलप्रदेश, ऊर्द्धमुखमें न्यास करे ३। फिर नाभि, हृदय, पीठ, कुक्षियों में न्यास करे ४। पुंसचिह्न गुदप्रदेश, जंघामूलांत में न्यास करे ६। दोनों जानुओंमें न्या० २। दोनों गुल्फों में न्या० २। दोनों स्तनों में न्यास करे २। दोनों पार्श्वोंमें न्या० २। दोनों चरणों में न्या० २। दोनों हाथों में न्यास करे २। दोनों नासिकाके छिद्रोंमें न्या० २। शिर में न्यास १। फिर पादादि ११ स्थानों में न्यासकरे। शिर दोनों भौं, दोनों नेत्र, मुख, दोनों कनपटी, दोनों भुजा, हृदय, उदर, इन स्थानोंमें न्यास करे। फिर गुह्य, ऊरु, जानु, पाद में न्यास करे।

तत उक्तध्यानेन ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य विशेषार्घ्यं संस्थाप्य शैवोक्तपूजावाहनादिकं पञ्चपुष्पाञ्जलीन्दत्त्वा वरुणं पूजयेत्। त्र्यम्बकं हृदयाय नमः। इत्यादि षडङ्गानि पूजयेत्। ततोष्टपत्रेषु ॐ अर्काय नमः। एवमिन्दवे वसुधायै जलाय वह्नये वायवे व्योम्ने यजमानाय तद्बाह्ये पूर्वादितः ॐ

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

रामाय नमः । ॐ राकायै नमः । ॐ प्रभायै नमः । ॐ ज्योत्स्नायै नमः ॐ पूर्णायै नमः। ॐ उषसे नमः। ॐ पूषायै नमः ॐ स्वधायै नमः । ॐ विश्वायै नमः । ॐ विद्यायै नमः । ॐ सितायै नमः । ॐ कृत्यै नमः । ॐ श्रद्धायै नमः ॐ सारायै नमः । ॐ सन्ध्यायै नमः । ॐ दिवायै नमः । ॐ निशायै नमः । तद्वाह्ये ॐ आर्यायै नमः । ॐ आर्द्रायै नमः । ॐ प्रज्ञायै नमः । ॐ मेधायै नमः । ॐ कान्त्यै नमः । ॐ शान्त्यै नमः । ॐ पुष्ट्यै नमः । ॐ बुद्ध्यै नमः । ॐ धृत्यै नमः । ॐ मत्यै नमः । ततो धूपादिविसर्जनान्तं कर्म समापयेत् ।

तत्पश्चात् उक्त ध्यानसे ध्यानकर मानसिक पूजनकर, विशेष अर्घ्य स्थापन कर, शैवोक्त पूजन तथा आवाहनादि करके पञ्च पुष्पाञ्जलि प्रदानकर वरण पूजन करे । त्र्यम्बकं हृदयाय नमः इत्यादि षडङ्ग पूजन करे फिर अष्टदल कमलके मध्यमें इन नाम मन्त्रोंद्वारा पूजन करे। अर्काय नमः । इन्दवे नमः । वसुधायै नमः । जलाय नमः । वह्नये नमः । वायवे नमः । व्योम्ने नमः ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

यजमानाय नमः । कमलदलके बाहिरभागमें पूर्वादि क्रमानुसार पूजन करे । ओं रामाय नमः । ओं राकायै नमः । ओं प्रभायै नमः । ओं ज्योत्स्नायै नमः । ओं पूर्णायै नमः । ओं उषसे नमः । ओं पूषायै नमः । ओं स्वधायै नमः । ओं विश्वायै नमः । ओं विद्यायै नमः । ओं सितायै नमः । ओं कृत्यै नमः । ओं श्रद्धायै नमः । ओं सारायै नमः । ओं सन्ध्यायै नमः । ओं दिवायै नमः । ओं निशायै नमः । बहिर्भागमें ओं आर्यायै नमः । आर्द्रायै नमः । ओं प्रज्ञायै नमः । ओं मेधायै नमः । ओं कान्त्यै नमः । ओं शान्त्यै नमः । ओं पुष्ट्यै नमः । ओं बुद्ध्यै नमः । ओं धृत्यै नमः । ओं मत्यै नमः । तदनन्तर धूप आदि विसर्जनान्त कर्म समाप्त करे ।

प्रयोगस्तु शनैश्चरे कुजे वा अश्वत्थमूलं स्पृष्ट्वा सहस्रं जपेत् । पुरश्चरणविधानेन सर्वं कुर्यान्महेश्वरि । साक्षान्मृत्योर्विमुच्येत किमन्या क्षुद्रिकाः क्रियाः ॥ प्रत्यहं जुहुयान्मन्त्री चतुःस्थण्डिलविधानतः । द्विसहस्रं दूर्वावटजवाभिः करवीरकैः । बिल्वपत्रं पलाशञ्च तथा कृष्णापराजिता । वटवृक्षस्य समिधं जुहुयादयुतावधि ॥ धनधान्यसमृद्धिः स्यात्सत्यं सत्यं महेश्वरि ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

इसका प्रयोग शनिवार अथवा मंगलके दिन करे और अश्वत्थ (पीपल) वृक्षको स्पर्शकर एक हजार मंत्र जप करे। हे महेश्वरि! पुरश्चरणविधानसे समस्त प्रयोग करे। इस प्रयोगके करनेसे साक्षात् मृत्युसे मुक्ति प्राप्त होती है तो अन्य क्षुद्र क्रियाओंका तो कहनाही क्या है। मंत्रीको योग्य है कि प्रति दिन चतुःस्थंडिल विधानपूर्वक हवन करे। दो हजार दूबके नाल, जवा, कनेरके पुष्प, बिल्वपत्र, ढाककी समिधा, कृष्ण अपराजिता, वटवृक्षकी समिधा इन सब वस्तुओंसे दशहजार हवन करे तो अवश्य धन धान्यकी वृद्धि होवे हे देवि! यह बात सत्य जानों।

मृतसञ्जीविनी विद्या।

अतः परं देवि शृणु मृतसंजीविनीं तथा ॥ आदौ प्रासादबीजं तदनु मृतिहरं तारकं व्याहृतिं च प्रोच्चार्य त्र्यम्बकं यो जपति च सततं संपुटं चानुलोमम्। त्र्यम्बकमिति मृत्युंजयमंत्रस्य जपात् सर्वसिद्धिर्भवति। एतन्मंत्रं जपेदाशु व्याधिमुक्तोभवेद्ध्रुवम्।

अब मृतसंजीविनी विद्या कहीजाती है। हे देवि! तुम श्रवण करो। प्रथम प्रासाद बीजका उच्चारण करे तत्पश्चात् मृतिहर बीजका, तारक तथा व्याहृति को उच्चारण कर जो साधक लोग निरंतर संपुट तथा अनुलोम त्र्यम्बक मंत्रका जाप करते हैं उन को मृत्युञ्जय त्र्यम्बक मंत्र के प्रसादसे सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। इस मंत्र के जापसे शीघ्र व्याधि दूर होती है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

ध्यानं शृणु महादेवि। स्वच्छं स्वच्छारविन्दं स्थितमुभयकरे संस्थितौ पूर्णकुम्भौ पाण्यो र्हैलाक्षमाले निजकरकमले द्वौ घटौ नित्य- पूर्णौ । द्वाभ्यां तौ च स्रवन्तौ शिरसि शशि कला चामृतैः प्लावयन्तीं देहं देवो दधाने विदिशतु विशदा कल्पजालां श्रियं नः॥ एवं ध्यात्वा त्र्यम्बकाय महारुद्राय नमः ॥ महा घोरं यदि तदा पूजयेत्परमेश्वरम् । ततः सुर- सुन्दरीत्यादियोगिनीसाधनम् । ततो भू- तिनीसाधनम् ।

हे महादेवि अब ध्यान सुनों । दो हाथां में स्वच्छकमलदलके धारणकरनेवाले दो हाथों में पूर्णकुम्भ धारण करनेवाले, दो हाथों में हेलार्थ अक्षमाला धारण करने वाले, दो हाथों म पूर्ण और स्रावी घट धारणकरने वाले शिरोभाग में अमृतस्राविणी शशिकला धारणकरनेवाले, ऐसे देवदेव श्रीसदाशिव कल्पकल्पा- न्ततक हम लोगोंको उत्तम लक्ष्मीप्रदान करे । इस प्रकार ध्यान करे त्र्यम्बक और महारुद्र का यदि महाघोरमन्त्रका जप करे तो परमेश्वर सदाशिवका ध्यान करे । तत्पश्चात् सुर- सुन्दरी आदियोगिनी साधन करे प्रथम भूतिनीसाधन ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

अथ भूतिनीसाधनम्।

श्रीदेव्युवाच। योगिनीसाधनं ज्ञातं भूतिनीसाधनोत्तमम्। तद्वदस्व महादेव कृपास्ति यदि माम्प्रति।

श्रीदेवीजी कहनेलगीं। हे देव! योगिनीसाधन तो जाना अब यदि आपकी पूर्ण कृपा हो तो भूतिनीसाधनको भी सुनाइये।

श्रीईश्वर उवाच। आद्या विभूषिणी देवी परा कुण्डलधारिणी। हारिणी सिंहिनी चैव हंसिनी च ततो नटी। कामेश्वरी तथा प्रोक्ता रतिदेवी ततः प्रिया। इत्यष्टौ नायिका प्रोक्ताः साधकानां सुखावहाः।

श्रीशिवजी कहनेलगे। हे प्रिय! आठ नायिका साधकवर्ग को सुखदेनेवाली हैं इनके पृथक् २ नाम सुनो।, आद्या विभूषिणी १, परा कुण्डलधारिणी २।; हारिणी ३।, सिंहिनी ४।, हंसिनी ५।, नटी ६।, कामेश्वरी ७।, प्रिया रतिदेवी ८। यह आठ नायिका साधकों के सुखार्थ कही हैं।

अथ आद्याविभूषिणीसाधनम्।

यथामंत्रं महेशानि आद्याविभूषिणी तथा। मंत्रः। हूं फट् फट् ह्रीं भूतिनी हूं हूं हूं। क्रोधास्त्रद्वयं मायान्ते भूतिनीं च त्रिकूर्चतः।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

अथवा शृणु देवेशि । ॐ ह्रीं ह्रीं फट् फट् विभूषिणी हूं हूं । तारं लज्जाद्वयास्त्रद्वयं विभूषिणीक्रोधद्वयम् ।

हे देवि! यथामंत्र आद्याविभूषिणीका साधन करना योग्य है। यह मंत्र है । हूं फट्फट् ह्रीं भूतिनी हूं हूं हूं । क्रोधास्त्रद्वय, मायान्तमें भूतिनी बीज, त्रिकूर्च मिश्रित करे । हे देवेशि ! और भी सुनो ॐ ह्रीं ह्रीं फट् फट् विभूषिणी हूं हूं हूं । तार, लज्जाद्वयास्त्रद्वयविभूषिणी क्रोधद्वयमिश्रित करे ।

अथ ध्यानम् ।

दक्षे कर्त्तरिकां परेऽसिलतिकां हस्ताब्जके बिभ्रती ह्युत्तुङ्गस्तनशोभिवक्षसि चलैर्हारादिभिः शोभिता । दन्तान्तर्गतमांसशोणितवसासिक्तास्ति यस्यास्तनूः कालश्यामलवर्णिकाम्रगभुजंगैर्वेष्टिता रक्षतु ।

अब ध्यान कहाजाता है । एक हाथमें कर्तरी और दूसरें हाथ में तलवार धारण करनेवाली, ऊंचे कुम्भ तुल्य स्तनवाली, हृदय में आभूषण धारणकरनेवाली, दांतों के अग्रभाग से दुष्टों के मांस शोणितको तथा चर्बीको चाबकर पीनेसे जिसका देह भीग गया है और कालके तुल्य श्यामवर्णवाली, रसालवृक्षके आश्रित व्यालवर्गसे सुशोभित पृष्ठदेशवाली ऐसी पर्वतवासिनी देवी रक्षाकरे ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Jal

स्थानं वृक्षतले तत्र यामिन्यां दिवसद्वयम् ।
जपेदष्टसहस्रन्तु ध्यायेदेकाग्रमानसः ।
जपान्ते च महापूजा पुनर्धूपं निवेदयेत् ।
चन्दनोदकमिश्रेण दत्त्वार्घ्यं तुष्यति ध्रुवम् ।
माता वा भगिनी भार्या दृष्टा भवति कामिता ।
करामलकतां कृत्वा माता भूत्वा जगत्रयम् ।
शताष्टपरिवारस्य ददात्यंजनभूषणम् । भ-
गिनी चेन्महाभागा सहस्रयोजनादपि ।
ददाति स्त्रियमानीय दिव्यं रसं रसायनम् ।
भार्या चेत्पृष्ठमारोप्य स्वर्गं प्रयाति नित्यशः ।
दीनाराणां सहस्रन्तु रसं चैव रसायनम् ।
सर्वाशां पूरयत्येव सदा देवी विभूषिणी ।

तीन रात्रितक अश्वत्थ वृक्षके नीचे वासकर आठ हजार मंत्र जपे और एकाग्रमनसे ध्यान करे जपान्तमें महापूजा करे और फिर धूप प्रदान करे । चन्दनमिश्रित अर्घप्रदान करनेसे देवता विशेष प्रसन्न होती है । कामनार्थ माता, भगिनी, भार्या इस प्रकार इन स्वरूपोंका ध्यानकर पूजन करे तो देवता अत्यन्त प्रसन्नहो अभीष्ट प्रदान करे । मातारूप देवता प्रसन्नहो दिव्य दृष्टि देती है । भगिनीरूप देवता प्रसन्नहो सहस्रयोजन ४००० (क्रोस)

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

दूरमें स्थित दिव्यरस और रसायन तथा स्त्रीको क्षणभरमें ला सामने उपस्थित करदेतीहै । भार्यारूप देवता रस, रसायन, तथा असर्फियोंको अपनी पृष्ठमें लादकर कुबेरके भण्डारसे लाकर सामने उपस्थित करदेती है । विशेष क्या स्त्रीरूपसे ध्यान करीहुई आद्या विभूषिणी देवी स्त्रीके तुल्य समस्त आशा पूर्ण करनेमें समर्थ होती है ।

अथ पराकुण्डलिनीसाधनम् ।

पराकुण्डलिनीध्यानं शृणु देवि महेश्वरि ।
कर्णे कुण्डलधारिणी शशिमुखी लीलावती सस्मिता शैलश्रोणिविलम्बिकाञ्चिवितता व्यामुग्धलोकत्रया । मुक्ताहारमरीचिकान्तिविलसत्प्रोत्तुंगकुम्भस्तनी पायात्कुण्डलधारिणी त्रिजगतामानन्दसन्दोहभूः ।

हे देवि ! पराकुण्डलधारिणीका ध्यान सुनो । कानोंमें कुण्डलोंसे सुशोभित, चन्द्रमाके तुल्य मुखवाली, लीलावती, मन्द मन्द मुसकान करनेवाली, पर्वतरूप श्रोणितटमें विततकांची धारण करनेवाली, तीनों लोकोंको मुग्ध करनेवाली, मोतियोंके हारकी कान्तिसे विभूषित, उन्नत कुम्भके तुल्य स्तनोंवाली, तीनों लोकोंको आनन्द देनेवाली पृथिवीस्वरूपा कुण्डलधारिणी योगिनी हमारी रक्षा करै ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Jal

श्मशाने पूजयेद्देतामयुतं जपमाचरेत् । आ-
याति तत्क्षणाद्देवी ततः कुण्डलधारिणी ।
साधकेनापि रक्तार्घ्यं देयं तुष्टा वदत्यपि ।
किं कर्तव्यं मया वत्स मातरुक्त्वेति साधकः।
पञ्चाशतञ्च दीनारान्देहि त्रैलोक्यदायिनि ।

यह प्रयोग श्मशानमें करने योग्य है, और १०००० जप करै । तत्क्षणमें प्रसन्न हुई कुण्डलधारिणी देवी साधकके सम्मुख आ उपस्थित होती है । प्रसन्नचित्त साधक रक्त अर्घ प्रदानकरे तो देवता प्रसन्नहो कहै कि हे वत्स ! अब मुझको क्या कर्तव्य है आज्ञादे, तब साधक कहै हे मातः ! तुम त्रैलोक्यदाताहो, अतः पचाश असर्फी मुझको भी दो ।

अथ सिन्दूरहारिणीसाधनम् ।

अतः परन्तु चार्वंगि सिन्दूरहारिणीमनुः ॥
क्रोधद्वयेन्दुसंयुक्तः सिन्दूरहारिणीपदम् ।
कूर्चबीजत्रयं चास्त्रं सम्प्रोक्तं विविधं तथा ।

अब सिन्दूरहारिणी योगिनीका साधनप्रकार कहाजाताहै । हेचार्वंगि ! सिन्दूरहारिणी योगिनीका मन्त्र श्रवण करो । इन्दु-संयुक्त क्रोधद्वय कूर्चबीजत्रय, अस्त्र इनको मिश्रितकर हारिणी योगिनीका मन्त्रोद्धार होता है ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

ध्यानम् । सिन्दूराकृतिहारिणी चलदलव्यालोलशाखास्वरा सोत्कण्ठीकृतगात्रयष्टिशुभगा शुभ्रांशुचन्द्रास्मिता । अन्तः सन्ततदन्तकान्तिमलिना त्रैलोक्यशोभाकरी पायादुन्नतबाहुयुग्मलतिका सिन्दूरहारिण्यसौ ।

सिन्दूरके तुल्य आकृतिवाली, शत्रुवर्गको हरणकरनेवाली, सकम्पस्वरा, उत्कण्ठायुक्त देहसे शोभित, उज्ज्वलहास्यपूर्णमलिनदन्तकान्ति, तीनों लोकोंकी शोभा करनेवाली, दीर्घबाहुयुक्त सिन्दूरहारिणी योगिनी हमारी रक्षा करै ।

शून्ये देवालये गत्वा निर्जने निशि साधकः। तत्त्वसंख्यादिनं यावज्जपस्तत्त्व (२५) सहस्रकः॥ तदन्ते महितीं पूजां वस्त्रालंकारभूषणैः । कुर्यात्साधकवर्यस्तु भार्या भवति कामिता॥ वरं वरय शीघ्रं त्वं प्रोक्ता सिन्दूरहारिणी । रक्षति द्वादशादिनं देवी सिन्दूरहारिणी ।

साधक २५ दिनतक निर्जन देवस्थानमें रात्रिके समय १५ हजार जप करै तदनन्तर महापूजा कर वस्त्र और भूषणादिसे देवताको अलंकृत करे तो कामिता भार्या होय; और उसी समय

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

सिन्दूरहारिणी सम्मुख आकर कहैंगी हे साधक ! वर मांग और द्वादश (१२) दिनतक देवी सिन्दूरहारिणी रक्षा करनेमें समर्थ होगी ।

अथ सिंहिनीसाधनम् ।

अतः परं देवि शृणु सिंहिन्याश्च महामनुम्। मायाद्वयं क्रोधद्वयं सिंहिनीति पदन्ततः ॥ पुनः क्रोधं तदन्ते च सिंहिनी च महामनुः ॥ ह्रीं ह्रीं फट् फट् सिंहिनी हूं हूं फट् । शैलाग्रे निर्जने वापि सिंहिन्याः पूजनं तथा ।

अब सिंहिनी साधन कहाजाता है । हे देवि ! सिंहिनीके महा मन्त्रको सुनो । दो मायाबीज (ह्रीं ह्रीं) दो क्रोधबीज (फट् फट्) और सिंहिनी पद फिर क्रोधबीज (हूं हूं फट्) के मिश्रित करनेसे सिंहिनी का मन्त्र होता है, यथा " ह्रीं ह्रीं फट् फट् सिंहिनी हूं हूं फट् " । सिंहिनी देवीका पूजन पर्वत अथवा निर्जन स्थानमें करै ।

ध्यानम्-शैलाग्रक्रमदुर्गमन्तु अटवीदुर्गास्तु दैत्याहतकेशाग्रस्थसमस्तविष्णुचरणंप्रभ्रष्टसं सिंहिनी । यावन्तो बलदण्डवारणबलात् प्रक्षु क्षसिद्धांगना शेषं पातुसमस्तमन्तककुलव्याकल्पमानाकला ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

यह सिंहिनी योगिनीका ध्यानमंत्र है। यह ध्यानमंत्र पूजन समय उच्चारण करना योग्यहै ।

गत्वैकालिंगं यामिन्यां प्रजपेदयुतं मनुम् । ततो हृष्टातिवरदा सिंहिनी चेति पूजिता ॥ किं करोमि वदत्येव भार्या भवति कामिता । दिनावसाने यामिन्यां सिंहिन्यायाति राति च । वस्त्रयुग्मं रसमयं साधकाय दिनेदिने ।

शिवमंदिरमें रात्रि समय जाकर १०००० मंत्र जप करे । इस प्रकार मंत्रके जप और पूजनके करनेसे वरदा सिंहिनी देवी प्रसन्नहो साधकसे कहेगी कि हे साधक ! आज्ञाकर अब मेरा क्या कर्त्तव्य है । सिंहिनी देवी दिनावसान (सायंकाल) में साधकके सम्मुख स्थितहो साधकको वस्त्रयुग्म और रसमय पदार्थ प्रतिदिन प्रदान करेगी ।

हंसिनीसाधनम्

अतः परं शृणु चार्वंगि हंसिनीसाधनक्रमम् । ॐ हूं हूं हूं फट् हंसिनी । प्रणवञ्च त्रिकूर्चास्त्रहंसिनी कथितो मनुः ।

अब हंसिनीसाधन प्रकार कहाजाता है । हे चार्वंगि ! अब हंसिनी योगिनीके साधन प्रकारको सुनो । ॐ हूं हूं हूं फट् हंसिनी । यह हंसिनीके साधन प्रकारका मंत्र है ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

ध्यानम्-शुभ्रा शुभ्रसरोजतुल्यनयना सायुग्म बाणान्विता शुश्रूषाकुलमुग्धसाध्यवनिता संसेविता सादरम्। किंचित्तिर्यगपांगलोलवलितव्यामुग्धस्मेरानना दिव्या काञ्चन रत्नहारललिता श्रीहंसिनी पातु नः।

श्वेतवर्ण, श्वेतकमलदलके तुल्य नेत्रवाली, युग्म (दो) शरसे व्याप्त, सेवामें तत्पर मूढ साध्य वधूगणसे आदरपूर्वक सेवित कुछ एक अपाङ्ग भागको तिरछा तिरछाकर मधुर हास्य करनेवाली, मनोहर सुवर्णकी माला धारण करनेवाली देवी हंसिनी हमारी रक्षाकरे।

वज्रपाणिर्गृहं गत्वा प्रतिमां शोभनां लिखेत्। अवधानेन संपूज्य जपेदयुतसंख्यकम्॥ यावदर्द्धनिशा देवि ! हंसिन्यायाति निश्चितम्। चन्दनार्घ्यप्रदानेन हृष्टा भवति हंसिनी॥किं मया ते प्रकर्तव्यं शीघ्रं तद्वद साधक। वस्त्रालंकारभोज्यानि दिव्यार्थं संप्रयच्छति। अवशेषव्ययाभावान्न ददाति प्रकुप्यति।

हस्तमें वज्रको लेकर गृहमें प्रवेश करे और शोभायमान हंसिनीकी प्रतिमाको लिखे। सावधान होकर १०००० दसहजार मंत्र-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

का जप करना योग्य है । हे देवि ! अर्द्धरात्रिके समय हंसिनी देवी साधकके सम्मुख आकर स्वयं उपस्थित होगी उस समय साधकको योग्य है कि चन्दनादि पूजाद्रव्यद्वारा देवीका पूजन आनन्दपूर्वक करे यही देवताको प्रसन्न करनेका महोपाय है । इस विधानके अनन्तर देवी साधकसे कहेंगी कि हे साधक ! इस समय मुझको क्या करना चाहिये आज्ञा कर ऐसा कह साधकको वस्त्र, अलंकार, भोज्य आदि पदार्थ देती है तब साधकको योग्य है कि उक्त लब्ध पदार्थोंको अपने व्ययसे अधिक अपने पास न रक्खे किन्तु दीन दुःखियोंको दान करदे अन्यथा देवी क्रोध करती है ।

अथ नटीसाधनम् ।

इतः परं महामाये शृणु मे नटीसाधनम् । "ॐ हूँ हूँ फट्फट् नटी हूँ हूँ हूँ" ॥ तारं कूर्चक्रोधास्त्रद्वयतो नटीति पदमुद्धरेत्।कूर्चं त्रयन्तु मंत्रोऽयं कथितो नर्तकी मनुः ।

हे महामाये ! अब नटी योगिनीका साधन सुनो । प्रथम नटी मन्त्र कहाजाताहै बीजोद्धारानुसार ॐ हूँ हूँ फट् फट् नटी हूँ हूँ हूँ ।

ध्यानम्–फुल्लेन्दीवरसुन्दरोदरमुखी प्रोत्तुङ्ग कुम्भस्तनी मृगयुग्मनयना सानन्दाह्लाद-स्मिता क्षीराम्भोनिधिसम्भवा त्रिलासिता

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

मानुषवैरिविनाशिनी वीणासंगीतशालिनी मणिमयकुण्डले कर्णे धारणतत्परा व्याहारवाक्चातुरी ।

अब ध्यान कहाजाताहै । प्रफुल्लितकमलदलके सदृश मुख तथा उदरवाली उच्च कलशके तुल्य स्तनवाली, मीन के तुल्य चंचल दो नेत्रों को धारण करनेवाली, आनन्दपूर्वक मंद २ हास्य करनेवाली, क्षीरसागरसे उत्पन्न हुई, भक्तोंके शत्रुओंको नाश करनेवाली, वीणायुक्त मनोहर गान करनेवाली मणि जटित कुण्डलोंको कानमें धारण करनेवाली, मनोहरवाणी बोलनेवाली नटी योगिनीका हम ध्यान करते हैं ।

नीचपाशंगमङ्कत्वा सप्ताहजपपूजने । नटी सुसिद्धा भवति धूपं दद्यान्मुहुर्मुहुः ॥ चन्दनेनार्घ्यं देयन्तु नैवेद्यञ्च मनोहरम् । सदा कामभोगदात्री भार्या भवति नर्तकी ॥ सुवर्णफलमेकन्तु व्ययं त्यक्त्वानुगच्छति । दिने दिने नटी देवी स्थायिनी भवति ध्रुवम् ।

नीच स्थानमें एक सप्ताह इस प्रयोगको करे और मंत्रजपभी करे । वारम्वार धूपके देनेसे देवी प्रसन्न होती है और तत्क्षण सिद्धि प्राप्त होती है । चन्दनमिश्रित अर्घ प्रदान कर मनोहर नैवेद्य प्रदान करे तो नर्तकी सर्वदा स्त्रीवत् प्रसन्न हो काम भोग

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

प्रदान करेगी । और प्रतिदिन नटी देवी साधकके खर्चके लिये एक सुवर्ण फल प्रदान कर स्थिर रहेगी ।

अथ चेटीसाधनम् ।

अतः परं महादेवि चेट्या आकर्षणं शृणु । मन्त्रो यथा—तारं कूर्चद्वयान्ते च अस्त्रयुग्मन्ततः परम् । चेटी क्रोधद्वयश्चोक्तं चेटीमन्त्रोत्तमोत्तमः ।

अब चेटीसाधन प्रकार कहाजाताहै । हे देवि! चेटी योगिनीके आकर्षण प्रयोगको श्रवण करो वह चेटी योगिनीका मन्त्र है । ॐ हूँ हूँ हूँ फट् फट् चेटी हूँ हूँ ।

ध्यानम्—देव्येषाऽमृतभाषिणी शशिमुखी भ्रष्टोत्तरीयाधरा बिभ्राणा कलशं सरोजममलं स्वर्णञ्च सीमन्तके । श्रीखण्डादिविलेपनामलवपुः सौरभ्यसंभाविता किञ्चिद्धर्मसमाहितापिकरवापायात्प्रभाचेटिका ।

अमृतभाषिणी, चन्द्रमुखी, उत्तरीयको धारण करनेवाली, मनोहर अधरोष्ठवाली, कमलदलवत् सुन्दर कलश धारण करनेवाली सीमन्तभागमें सुवर्ण धारणकरनेवाली, चन्दनादि विलेपसे सुगंधित शरीरवाली, कोकिलाके तुल्य मनोहर कण्ठवाली चेटी योगिनी हमारी अथवा तुम्हारी रक्षा करे ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

अत्रापि भीषणस्थाने नामोच्चारणमात्रतः ।
ध्रुवं चेटी समागत्य चेटीकर्म करोत्यपि ॥
अथवा स्वगृहद्वारे त्र्यहं रात्रौ जपं चरेत् ।
आगत्य नियतं देवी चेटीकर्म करोति च ।

भीषण स्थानमें नाममात्रके उच्चारण करनेसे निश्चय चेटी देवी आकर कर्म करनेमें समर्थ होती है अथवा निज गृहके द्वारपर तीन दिन और तीन रात्रितक मंत्र जापकरे तो चेटी देवी स्वयं आकर दासीवत् कर्म करनेमें समर्थ होय ।

अथ कामेश्वरीसाधनम् ।

कामेश्वरीप्रयोगः । तारं कूर्चास्त्रयुग्मं कामेश्वरी भूतिनी ततः। परं ङेन्तं क्रोधत्रयं कामेश्वर्य्याः मनुः स्मृतः ।

अब कामेश्वरीसाधन कहाजाताहै । यह कामेश्वरीका मंत्रोद्धार है । मन्त्र यथा। कामेश्वरी ॐ हूँ फट् फट् कामेश्वर्यै भूतिन्यै हूँ हूँ हूँ ।

ध्यानम्—ॐ तालस्कन्धसमागता मधुरता कामन्तु पुष्पान्विता गायत्री मधुराधरा स्मितमुखी वीणायुता गायते । रक्ताम्भोजविलोचना मधुमदैर्युक्ता समन्तादियं पुष्यत्पुष्प्यधनुर्धरा मधुमुखी कामेश्वरी भूतिनी ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

तालवृक्षमें निवास करनेवाली मधुपानमें आसक्त बहुत फूल युक्त भक्तकी रक्षा करनेवाली सुन्दर होठोंवाली हँसमुखी, वीणा बजाकर गानेवाली, लाल कमलके समान नेत्रवाली, मधुपानसे मत्त फूलेहुए फूलोंका धनुष धारण करनेवाली कामेश्वरी हमारी रक्षा करे ।

तत्र स्थानं समागत्य कृत्वा मांसस्य भक्षणम् । मांसादिना बलिं दत्त्वा सहस्रं जपमाचरेत् ॥ मनुमर्कसहस्रन्तु जपित्वा सिद्धिमाप्नुयात् । जपान्निशीथमायाति रक्तेनार्घ्यं निवेदयेत् । कामेश्वरी भवेत्तुष्टा भार्या भवति कामिता । सर्वाशां पूरयेत्येव राज्यं यच्छति निश्चितम् ।

उस स्थानपर जाय मांसका भक्षण कर तथा मांस आदिसे बलिदान कर एक हजार जप करै । इस प्रकार बारह हजार जप करनेसे अवश्य सिद्धि होती है, जप करते २ रात्रिमें रक्तका अर्घ देना । ऐसा करनेसे कामेश्वरी देवी सन्तुष्ट होजाती है और मनमानी स्त्री होती है संपूर्ण आशायें पूर्णकर राज्यतक देदेती है ।

अथ कुमारीसाधनम् । हूं हूं फट् फट् देव्यै हूं हूं हूं । क्रोधद्वयास्त्रयुग्मञ्च देवीति पदमुद्धरेत् । ङेन्तं क्रोधत्रयं गुप्तं कुमारीमन्त्रमुत्तमम् ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

कुमारीसाधन कहते हैं । 'हूं हूं फट् फट् देव्यै हूं हूं हूं' यह मंत्र जानना । इस मंत्रका उद्धार दिखातेहैं । यथा–क्रोधद्वय (हूं हूं) तथा–अस्त्रयुग्म (फट् फट्) और 'देव्यै' ऐसा पद, पुनः क्रोधत्रय (हूं हूं हूं) इतने अक्षर जिसमें हों वही कुमारी देवीका मंत्र है ।

ध्यानम्–दिव्यकार्मुकहेमाभा कुमारी दिव्य रूपिणी ॥ सर्वालंकारसंयुक्ता भार्या भवति साधिता ।

दिव्य धनुषको धारण किये, सोनेकीसी कान्तिवाली, संपूर्ण अलंकारोंसे शोभित, दिव्य रूपवाली कुमारी देवी पूर्वोक्त जपादि करनेसे भार्या होजाती है ।

रात्रौ देवगृहं गत्वा तत्र शय्यां प्रकल्पयेत् । सितवस्त्रं चंदनं च ज्योतिः पुष्पं प्रदापयेत् ॥ धूपं तु गुग्गुलं दत्त्वाष्टसहस्रं जपेन्मनुम् । जपान्ते नित्यमायाति चुम्बनालिंगनादिभिः ॥ कामिता जायते भार्य्या सत्यं देवी कुमारिका । ददात्यष्टौ च दीनारान्दिव्यवस्त्रयुगं तथा ॥ कामिकं भोजनं दिव्यं परिवारस्य दास्यति । अन्याश्रमगृहाद्द्रव्यमानीयाशु प्रयच्छति॥नित्यं सहस्रं जप्त्वा तु सा चायाति

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

कुमारिका। सत्यं सत्यं पुनः सत्यं शृणु मे प्राणवल्लभे ॥

रात्रिके समय देवमन्दिरमें जाकर वहां शय्याकी रचना करे सफेद चन्दन तथा सफेद वस्त्र और चमेलीके फूल चढावै । गूगलकी धूप दे आठ हजार मन्त्र जपै इसप्रकार मन्त्र जपनेके पश्चात चुम्बन आलिंगन आदिको देती हुई कुमारी देवी अवश्य आती है और आकर आठ अशरफियोंको देती है तथा दिव्य वस्त्र, दिव्य भोजन देतीहै । हे प्राणप्यारी! मैं सत्यही तुझसे कहताहूं कि जो पुरुष प्रति दिन एक हजार जप पूर्वोक्त मन्त्रका करताहै उसके पास देवी कुमारि आती है तथा दूसरोंका भी धन लाकर उस साधकको देजाती है ।

मुहुर्मुहुर्जपेन्मन्त्रं क्रोधस्य मंत्रमुत्तमम् । क्रोधाधिपं व्योमवक्रं वज्रपाणिं सुरान्तकम् । एतन्मन्त्रमविज्ञाय यो जपेत्सिद्धिकांक्षया । तस्य स्यान्निष्फलं कर्म अन्ते नरकमाप्नुयात् । कालिकल्पतरोर्वल्ली भूतिनीसिद्धिरुच्यते ।

उत्तम क्रोधमन्त्रको वारम्वार जपे । जो साधक लोग विना प्रयोगविधि जानें मन्त्रजप करते हैं कदापि उनको सिद्धि प्राप्त नहीं होती किन्तु अन्तमें नरकगामी होते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

अथ साधनक्रमः—अतःपरं देवि शृणु सुन्दरीसिद्धिसाधनम् । सुन्दर्यादिप्रभेदेन प्रत्येकं पूजयेच्छिवे ॥ प्रातरुत्थाय सुस्नातो नित्यकर्म समाचरेत् । ततः प्रासादमारुह्य पूजास्थानं सुशोभनम् ॥ बिल्वमूले श्मशाने वा प्रान्तरे च चतुष्पथे । तत्रस्थः साधयेद्योगी योगिन्यादिं च भूतिनीम् ।

हे सुन्दरि ! अब सुन्दरीक सिद्धिसाधन क्रमको सुनो । हे शिवे ! सुंदरी आदि भेदानुसार प्रत्येकका पूजन करे साधक प्रातःकाल शय्यामें उठकर स्नानादि समाप्तकर नित्यकर्म करे । तत्पश्चात् गृहमें आकर पूजास्थानमें स्थितहो बिल्वमूल अथवा श्मशानमें या चौराहेमें योगिनी आदि भूतिनीका साधन करे ।

अजिनासनगः शुद्धस्तिलकं मूर्ध्नि कारयेत् । ततो विधिवदाचम्य सूर्यार्घ्यं प्रददेत्ततः ॥ स्वस्तिवाचनिकं कृत्वा शान्तिपाठं पुनः पुनः ॥ गणेशं वटुकञ्चैव पूजयेद्यन्त्रकोपरि ॥ ततश्चोदङ्मुखो भूत्वा संकल्पं तत्र कारयेत् । गणेशं क्रोधभैरवं पूजयेत्परमेश्वरि ॥ मूलमंत्रेण प्राणायामं षडंग-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

न्यासमाचरेत् । पूर्ववच्च पुनर्ध्यात्वा मानसैः पूजयेत्ततः ॥ कृत्वार्घ्यं स्थापनं तत्र पद्ममष्टदलं लिखेत् । तन्मध्ये च विनिर्माय चन्दनेन विलेपनम् ॥ लज्जाबीजं लिखेत्तत्र पुनर्ध्यात्वा प्रपूजयेत् । निशायां पूजयेद्वीरं दिवायां पूजयेत्पशुम् ॥ मूलमन्त्रं महादेवि मासं व्याप्य जपेत् सुधीः । अर्द्धरात्रे ततः पूजां बलिं कृत्वा विधानतः ॥ निर्भयः सञ्जपेन्मंत्रं हृद्गतं च निवेदयेत् ।

मृगचर्मके ऊपर स्थित होकर निज मस्तकमें तिलक करे । पुनः आचमन करे । स्वस्तिवाचनपूर्वक सूर्य भगवान्को अर्घ प्रदान करे । यंत्रके ऊपर गणेशजी तथा बटुकजीका पूजन करे फिर उत्तर मुख हो संकल्प करे । हे परमेश्वरि! गणेश तथा क्रोध भैरवजीका पूजन करे । मूलमंत्रसे प्राणायाम तथा षडंगन्यास करे फिर उक्तरूपसे ध्यान कर मानसिक पूजन करे अर्घ स्थापन कर अष्टदल कमल लिखे और उस अष्टदलके मध्यमें चन्दनसे लेप करे । उक्त दलके मध्यमें लज्जाबीज लिखकर श्री भगवतीका ध्यानकर पूजन करे । रात्रि समय वीरका और दिनके समय पशुका पूजन करे । हे महादेवि ! साधकको योग्य है कि एक

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

मासपर्यंत मूलमंत्रका जप करे । अर्द्धरात्रिके समय पूजनकर बलिप्रदान दे और निर्भय हो मन्त्रका जप करे ।

अथ यक्षसाधनम् ।

अतः परं महादेवि यक्षसाधनमुत्तमम् ।

अब यक्षसाधन कहाजाता है । हे महादेवि! यक्षसाधन प्रकार सुनो । प्रथम बीस (२०) प्रकारके यक्षोंके नाम कहेजाते हैं ।

भीमवक्र १ महावक्र २ सिंहवक्र ३ हयानन ४ गर्द्धभास्य ५ महावीर ६ बहुवक्र ७ गजानन ८ विभ्रम ९ बाहुक १० वीर ११ सुग्रीव १२ रञ्जक १३ पिशाचास्य १४ जृम्भक १५ वामक १६ अर्थद १७ जयद १८ माणिभद्र १९ मनोहर २० । यह २० यक्ष हैं साधकको सिद्धिदेनेवाले हैं ।

अथ यक्षमंत्रः—गगनो ग्रहणश्चैव युक्तचन्द्रार्द्धशेखरः । एकाक्षरमहामन्त्रो साधकैर्जप्यते यदि । संख्ययाष्टसहस्राश्च सर्वसिद्धिप्रदायकः ।

इस एकाक्षर यक्षमंत्रका ८००० हजार जप करे तो साधकको सर्वसिद्धि प्राप्त होय ।

श्रीदेव्युवाच । भीमवक्रादियक्षाणां महामन्त्राः श्रुता मया ॥ चंद्रशेखर तद्ध्यानं संक्षेपेण वद प्रभो ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

श्रीदेवीजी कहनेलगीं । हे चन्द्रशेखर ! भीमवक्रादि २० यक्षों के महामंत्रको कहो । श्रीशिवजी कहते हैं, हे प्रिये ! नाम मंत्र श्रवण करो । यथा–हौं भीमवक्राय स्वाहा १ हौं हौं महावक्राय स्वाहा २ बं हौं सिंहवक्राय स्वाहा ३ हौं ळं कर्माणि साधय हयाननाय स्वाहा ४ हौं कुरु कर्माणि साधय साधय गर्द्धभास्याय स्वाहा ५ हौं महावीराय स्वाहा ६ हौं कुरुकुरु बहुवक्राय स्वाहा ७ हौं महाबलिने गजाननाय स्वाहा ८ हौं विभ्रमाय स्वाहा ९ हौं हौं वाहुकाय स्वाहा १० हौं ऐं वीराय स्वाहा ११ हौं सुग्रीवाय स्वाहा १२ हौं रंचकाय स्वाहा १३ हौं सर्वकर्माणि साधय पिशाचाय स्वाहा १४ हौं जृम्भकाय स्वाहा १५ हौं ळुं वामकाय स्वाहा १६ हौं अर्थदाय स्वाहा १७ हौं जयप्रदाय स्वाहा १८ हौं मणिभद्राय स्वाहा १९ हौं मनोहराय स्वाहा २० । हे महादेवि ! इसके पश्चात् ध्यान सुनो ।

अथ यक्षाणां ध्यानानि ।

भीमवक्रध्यानम् । प्रत्यालीढपदं कृष्णं खर्वकर्बुरमूर्धजम् । द्विभुजं दक्षिणे कर्त्रीं वामे खर्परधारिणम् । व्याघ्रचर्माम्बरधरं त्रिनेत्रं भीषणाननम् ।

अब यक्षोंके ध्यान कहेजाते हैं । प्रथम भीमवक्रका ध्यान कहाजाता है कृष्ण वर्ण, छोटे शरीरवाला कर्बुर केश, दो भुज दक्षिण हाथमें कर्त्री (कैंची) और वाम हाथमें खप्पर धारण

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

करनेवाला, बघेरेके चर्मको धारण करनेवाला, त्रिनेत्र ऐसे भीषणाननका ध्यान करतेहैं।

महावक्त्रध्यानम्। ध्यायेद्देवं महावक्त्रमग्निवर्णं त्रिनेत्रकम्। द्विभुजं दक्षिणे खड्गं खेटकं वामहस्तके ॥ कृष्णकेशन्तु कुटिलं विकृतास्यं भयानकम्। साधकाय प्रयच्छन्तमभयं वरमेव च।

महावक्त्रका ध्यान कहाजाता है। अग्निके तुल्य वर्णवाले त्रिनेत्र, द्विभुज अर्थात् दो भुजावाले, दक्षिण हस्तमें खड्ग और वाम हस्तमें खेटको धारण करनेवाले, कृष्णकेश और कुटिल, फैले मुखवाले भयानक, साधकके अर्थ अभय और वर देनेवाले महावक्त्र देवका हम साधक लोग ध्यान करते हैं।

सिंहवक्त्रध्यानम्।ध्यायेद्देवं सिंहवक्त्रं जटाभारसमन्वितम्। विकृतास्यं द्विजिह्वं च चतुर्नेत्रं द्विकर्णकम्॥ द्विभुजं च गदापाणिं वामे चाऽभयसंयुतम्।

सिंहवक्त्रका ध्यान कहाजाताहै। जटाओंके भारसे समन्वित टेढ़े मुखवाले, दो जिह्वावाले, हाथमें गदाधारण करनेवाले वाम हाथसे अभय प्रदान करनेवाले ऐसे सिंहवक्त्रजीका हम ध्यान करते हैं।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

अथ हयाननध्यानम्। श्वेतो हयाननः खर्वो द्विभुजोऽतिभयानकः । दक्षे डमरुकं धत्ते वामे चैव त्रिशूलकम् ।

अब हयानन यक्षका ध्यान कहाजाता है । श्वेतवर्ण, छोटे शरीरवाला, भयङ्कर स्वरूप, दक्षिण हाथमें डमरू औरं वाम हाथ में त्रिशूल धारण करनेवाला हयानन यक्ष हमारी रक्षाकरे ।

महावीरध्यानम्। ध्यायेद्देवं महावीरं द्विकर्णन्तु त्रिनेत्रकम् । द्विभुजं हास्यवदनं वराऽभयविधारकम् ।

अब महावीरका ध्यान कहाजाता है । दो कर्णवाले, तीनं नेत्रवाले, दो भुज और हास्य करनेवाले, दोनों हाथोंमें वर और अभय धारण करनेवाले ऐसे महावीरका ध्यान करते हैं, और यक्षोंके ध्यान डामरतन्त्र में विस्तारसे कहेगये हैं ।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे गौरीश्वरसम्वादे षोडशः पटलः ॥ १६ ॥

अथ मृत्युञ्जयविधानम् ।

देव्युवाच-प्राणनाथ कृपासिन्धो ब्रूहि शास्त्रविशारद । मृत्युञ्जयस्य पूजायाः किं फलं किं विधानकम् ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

अब मृत्युञ्जय विधान कहाजाताहै। हे प्राणनाथ! हे कृपासि-न्धो ! हे शास्त्रविशारद ! मृत्युञ्जय शिवपूजा का क्या विधान और क्या फल है कृपाकर कहो ।

श्रीशिव उवाच । वक्तुन्नाहं क्षमो गौरि त्वयि स्नेहात् प्रकाशितम् । मृत्युञ्जयाविधानं तु न वक्तव्यं बहिर्मुखे । मुखे तु देवि वक्तव्यं यत्नतः प्राणवल्लभे । मृत्युञ्जयो महादेवः साक्षान्मृत्युहरः परः।विधानं तस्य संक्षेपाद्व-क्तव्यं शृणु सुन्दरि । देवेशि रोगशान्त्यर्थे तस्य पूजाविधिर्यथा ॥ मृत्युञ्जयं समापूज्य लिंगं त्रिभुवनेश्वरम् । रोगार्तो मुच्यते रोगा-द्बद्धो मुच्येत बन्धनात् । यस्तु संपूजये-द्भक्त्या लिंगं मृत्युंजयाभिधम् । यमोऽपि प्रणमेद्भक्त्या किंकरिष्यति पामरः ।

शिवजी कहने लगे । हे गौरि ! इस प्रयोगको प्रकाश करनेकी मेरी इच्छा नहीं है तथापि तुम्हारे स्नेहवश प्रकाश करता हूं । यह प्रयोग धर्मविमुख पुरुषके संमुख न कहना । हे प्राणवल्लभे! श्रद्धा-वान् पुरुषके निकट यह प्रयोग प्रकाश करना योग्य है । साक्षात् मृत्युञ्जय श्रीशिवजी मृत्यु के हरनेवाले हैं । हे सुन्दरि ! अब

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

मैं उनका विधान संक्षपसे कहता हूं सुनो । हे देवेशि ! रोगशांति के अर्थ शिवलिंगका पूजन करे तो रोगी रोगसे छूटे । बंदी बंधनसे छूटे जो लोग शिवलिंगका पूजन करते हैं यमराजभी आकर उनको भक्तिपूर्वक प्रणाम करतेहैं अन्य पामर मनुष्योंकी कौन कथा ।

तस्य पूजाविधिं वक्ष्ये शृणु मत्प्राणवल्लभे । जातिभेदैर्मृत्तिकान्तु गृहीत्वाशीतितोलकाम् ॥ निर्माय पार्थिवं लिंगं कांत्याधारे निवेशयेत्।पौराणिकेन मंत्रेण कुर्याच्च पठनं बुधः ॥ स्नापयेत् पञ्चगव्येन प्रत्येकस्याष्टतोलकम् । स्वस्वमन्त्रैश्च प्रत्येकद्रव्येण स्नापयेत् सुधीः ॥ रोगक्षयेच्छया विद्वान्नामगोत्रादिपूर्वकम् । उपविश्यासने विप्रो धृत्वा धौतञ्च वाससम् ॥ रुद्राक्षमालां कण्ठे वै धृत्वा भस्मात्रिपुण्ड्रकम् । उपचारः षोडश तु देया भक्त्या प्रयत्नतः ॥ सुवर्णस्यासनं देयं तथैवाभरणानि च। वस्त्रयुग्मं प्रदद्यात्तु परिधेयं यथा भवेत् ॥

हे प्राणवल्लभे ! पूजनविधान कहता हूं सूनो । जातिभेदसे ८० तोले मृत्तिका लेकर शिवलिंग बनावे । और उस लिंगको

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

कासीके पात्रमें स्थापन कर पौराणिक मंत्रोंद्वारा पूजन करे पंच गव्यसे स्नान करावे निज निज मन्त्रमें कहे द्रव्यसे पृथक् २ स्नान करावे। रोगनाशकी इच्छासे नाम और गोत्रको उच्चारणकर स्नान करावे। विप्र आसन पर बैठकर और धौत वस्त्र पहनकर कण्ठमें रुद्राक्षकी माला पहनकर भस्मका त्रिपुण्ड्र लगाकर भक्तिपूर्वक षोडशोपचारोंसे पूजन करके सुवर्णनिर्मित आसन प्रदान करे और आभूषण तथा वस्त्रादिक भी प्रदान करे।

शिवयन्त्रं यथा—षट्कोणमण्डलं कृत्वा तदन्तेसाध्यनामकम्। प्रसादबीजं हौं संलिख्य ततः षट्कोणेषु प्रणवसाहितपञ्चाक्षरवर्णान् षडंगमंत्रांश्च विलिख्य तद्बहिः पञ्चदलानि विरच्य तद्दलेषु ॐ ईशानाय नमः। ॐ तत्पुरुषाय नमः। ॐ अघोराय नमः। ॐ सद्योजाताय नमः। ॐ वामदेवाय नमः। इति पञ्च मंत्रान् प्रागादिक्रमेण लिखेत्। तद्बहिरष्टदलानि रचयित्वा तद्दलेषु मातृका वर्णान् लिखेत्। तद्बहिर्वृत्तं त्र्यम्बकेन वेष्टयेत्। एतद्यन्त्रं जपहोमादिना संपूज्य धारयेत्। आयुरारोग्यैश्वर्यादिसिद्धिर्भवति।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

अब शिवयंत्र कहाजाता है । प्रथम षट्कोण यंत्रको लिखकर उसके मध्यमें साध्य व्यक्तिका नाम लिखे और प्रसाद बीजों को लिखकर षट्कोणोंमें प्रणवसहित पंचाक्षरमंत्रके वर्णों (अक्षरों) को लिखे तथा षडङ्गमंत्रोंको भी लिखे । उसके बहिर्भागमें पंचदल निर्माण कर उसके दलोंमें ॐ ईशानाय नमः । ॐ तत्पुरुषाय नमः । ॐ अघोराय नमः । ॐ सद्योजाताय नमः । ॐ वामदेवाय नमः । इन पांच मंत्रोंको प्रागादि क्रमसे लिखे । उस यंत्रके बहिर्भागमें अष्टदल निर्माण कर दलोंमें मातृकाओंके वर्णोंको लिखे । अष्टदलके बहिर्भागको त्र्यम्बक मंत्रसे वेष्टित करे । इस यंत्रको जपहोम आदिसे पूजन कर धारण करे तो आयु आरोग्य ऐश्वर्य आदिकी सिद्धि होय ।

अथ मृत्युञ्जयमंत्रः—अथवा शृणु देवेशि यंत्रं सर्वसुसिद्धिदम् । मध्ये साध्याक्षराढ्यं ध्रुवमभिविलिखेन्मध्यमं दिग्दलेषु कोणेष्वन्तं मनोस्तत् क्षितिभुवनमथो दिक्षु चन्द्रं विदिक्षु। ढान्तं यन्त्रं तदुक्तं सकलभयहरं क्ष्वेडभूतापमृत्युव्याधिव्यामोहदुःखप्रशमनमुदितं श्रीप्रदं कीर्तिदायि ॥

मृत्युञ्जय यंत्रका चित्र अन्य तंत्रोंमें वर्तमान है बुद्धिमान् जन उन ग्रंथोंको देखकर अपनी तृप्ति करसकते हैं । ग्रन्थ विस्तारके भयसे यहां चित्र नहीं बनायागया है । विना चित्र दिखाये

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

विशेष व्याख्यासे कुछ काम साधारण पुरुषोंका नहीं निकल सकता है । इस यंत्रका सांगोपांग पूजन करनेसे श्रीप्राप्ति होतीहै ।

मधुपर्कं कांस्यपात्रे दद्याद्भोजनयुग्मकम् । बिल्वपत्रसहस्रन्तु ह्यभग्नं विनिवेदयेत् ॥ एवं संपूज्य लिंगैकं द्विसहस्रं मनुं जपेत् । समिद्भिस्तु गुडूच्यास्तु तत्र होमं समाचरेत् ॥ दक्षिणां ब्राह्मणे देवि सुवर्णं वस्त्रकं तथा । तदर्धं वा तदर्द्धं वा यथाविभवमानतः ॥ अंगहीना न कर्तव्या पूजा चाफलदा यतः । एकलिंगं समाराध्य फलं स्यादन्यके युगे ॥ तत्फलं लभते देवि कलौ संख्या चतुर्गुणा । आम्रपात्रे तु संस्थाप्य जलश्चाशीतितोलकम् ॥ तज्जलेनैव देवेशि कुशैः सम्मार्ज्य रोगिणम् । क्षिपेद्दीपशिखायां च मंत्रमुच्चार्य मानकम् ॥ एवं विधिविधानेन पूजयेन्मम लिंगकम् । यादृग्यादृग् भवेद्रोगो नाशमेति मयोदितम् । साङ्गेन पूजयित्वा तु लभते वांछितं फलम् ॥ अंगव्यतिक्रमेणैव वृथा भवति वासना । रोगी

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

प्रमुच्यते सद्यो भोगीवोज्झितकंचुकः । यदि मद्वचने भक्तिस्तदा मुक्तो भवेद्ध्रुवम् । अन्यथा यदि देवेशि सर्वं भवति निष्फलम् ।

अब मधुपर्क कहाजाता है ' कांसी के पात्र में युग्म भोजन प्रदानकरे । छिद्ररहित १००० बिल्वपत्र प्रदान करे । इस प्रकार लिंग का पूजन कर दो हजार मंत्र जप करे । गिलोय की जड़ की समिधाओंसे हवन करे । हे देवि ! सुवर्ण तथा वस्त्र ब्राह्मणों को देवे और शुभ दक्षिणा भी देवे शक्तिके अनुसार आधा अथवा आधे का आधा जितना होसके भक्तिपूर्वक प्रदान करे । अंगहीन कर्म न करना चाहिये क्योंकि प्रयोग निष्फल होजाता है । एक लिंगका पूजन करनेसे अन्य युग में भी फल होता है । हे देवि ! कलियुग में यदि तंत्रशास्त्र में कहे विधान से चौगुना जपादि करे तो फल प्राप्त होता है । आम के पात्रमें ८० तोले जल भर कर रोगीको कुशाओं से मार्जन करे । इसविधि के अनुसार शिवलिंग का पूजन करे तो जिस किसी प्रकारका भी रोगी को रोग होगा वह शीघ्रही नाश को प्राप्त होजायगा । सागोपांग पूजन के करनेसे वांछित फलकी प्राप्ति होतीहै । अंगहीन प्रयोग के करने से समस्त वासना वृथा होजाती हैं । इस प्रयोग के करनेसे रोगी इस प्रकार रोग से मुक्त होजाता है जैसे कि कैंचलीसे सर्प मुक्त होजाता है । जिन पुरुषों की शिववाक्य में भक्ति और विश्वास है वोही सहसा रोग से छूट सकते हैं । हे देवेशि ! जिन पुरुषों

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

का मेरे ऊपर पूर्णता से विश्वास नहीं है उनकी समस्त क्रिया निष्फल होजाती हैं।

अथ मंत्रपूजाविधानम्। अतः परं देवि शृणु यंत्रपूजाविधानकम्।

अब मंत्रपूजा का विधान कहाजाता है। हे देवि! अब इस-के पश्चात् यंत्रपूजन के विधान को सुनो।

कृतनित्यक्रियो देवि स्वस्तिवाचनपूर्वकम्। संकल्पं च ततः कुर्याद्विधिवाक्यानुसारतः॥ अद्येत्यादि अमुकगोत्रः श्रीपूर्वकदेवशर्मा यं-त्राधिष्ठितदेवतायाः पूजार्थममुकयंत्रसंस्का-रमहं करिष्ये। इति संकल्प्य महादेवि गुरो-रर्चनमाचरेत्। पञ्चगव्यं ततः कृत्वा शिवमंत्रेण मंत्रितम्। तत्र चक्रं क्षिपे-न्मंत्री प्रणवेन समाकुलम्। तदुद्धृत्य तत-श्चक्रं स्थापयेत्स्वर्णपात्रके॥ पञ्चामृतेन दुग्धेन कस्तूरीकुंकुमेन च। पयोदधिघृत-क्षौद्रशर्कराद्यैरनुक्रमात्॥ तोयधूपान्तरैः कुर्यात् पंचामृतमनुत्तमम्। अष्टाभिः कल-शैर्देवीमष्टाभिर्वारिपूरितैः॥ कषायजलस-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

स्पन्नैः कारयेत् स्नानमुत्तमम् । स्नानं समाप्य तां देवीं स्थापयेत् स्वर्णपीठके ।

स्वस्तिवाचनपूर्वक नित्यक्रिया को करे फिर विधिवाक्यके अनुसार संकल्प करे । अद्येत्यादि यहां संकल्प है । पुनः गुरुपूजा करे । तत्पश्चात् पंचगव्यको निर्माण कर शिवमंत्रसे अभिमंत्रित करे । फिर प्रणवयुक्त चक्र निर्माण करे उस चक्रको स्वर्णके पात्रमें स्थापन करे । पंचामृत, दुग्ध, कस्तूरी, कुंकुम, पय, दधि घृत, सहत, शर्करा इत्यादिसे क्रमानुसार यंत्रराजको स्नान करावे। और धूप दीप आदि प्रदान करे । आठ प्रकारके जलोंसे पूरित आठ कलशोंमें सर्वौषधि आदि सुगंधित पदार्थ स्थापन करे और उसी जलसे स्नान करे और उसी देवीको सुवर्णके सिंहासनमें स्थापन करे ।

गायत्री यथा—यंत्रराजाय विद्महे महायंत्राय धीमहि तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात् । स्पृष्ट्वा यंत्रं कुशाग्रेण गायत्र्या चाभिमन्त्रयेत् । अष्टोत्तरशतं देवि देवताभावसिद्धये ॥ आत्मशुद्धिं ततः कृत्वा षडंगैर्देवतां यजेत् । तत्रावाह्य महादेवि जीवन्यासञ्च कारयेत् ।

उक्त गायत्रीमंत्रको उच्चारण कर यंत्रको कुशाग्रभागसे स्पर्श कर अभिमंत्रित करे । हे देवि! देवताभावकी सिद्धिके अर्थ १०८

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

बार मंत्र जपकरे पुनः आत्मशुद्धिकर षडंगद्वारा देवताका पूजन करे। हे महादेवि!यंत्रमें देवताका आवाहन कर जीवन्यास करें।

प्राणप्रतिष्ठा—अस्य प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मा विष्णुमहेश्वरा ऋषयः। ऋग्यजुःसामानि च्छंदांसि। चैतन्यं देवता। प्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः। उपचारैः षोडशभिर्महामुद्रादिभिस्तथा। फल ताम्बूलनैवेद्यैः शिवं तत्र समर्चयेत् ॥ पट्टसूत्रादिकं दद्याद्वस्त्रालंकारमेव च। अगुरुं चामरं घण्टां यथायोग्यं महेश्वरि ॥ सर्वमेतत्प्रयत्नेन दद्यादात्महिते रतः। ततो जपेत्सहस्रन्तु सकलेप्सितासिद्धये ॥ जपसमापनं कुर्यादष्टांगेन नमस्कृतम्। अष्टोत्तरशतं हुत्वा सम्पाताज्यं विनिक्षिपेत् ॥ होमकर्मण्यशक्तश्चेद्द्विगुणं जपमाचरेत् ।गुरवे दक्षिणां दद्यात्ततो देवीं विसर्जयेत्।

अब प्राणप्रतिष्ठा कही जाती है। प्रथम विनियोग समाप्त कर षोडश उपचार और महामुद्रादि द्वारा पूजन करे। फल ताम्बूल

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

नैवेद्य आदि शिवजीको समर्पण करे। रेशमीन वस्त्र, तथा अन्य प्रकारके वस्त्र आभूषणादिसे शिवजीको प्रसन्नकर पूजन करे और आत्मकामनाके अर्थ अगुरु चामर घंटा, यथाशक्ति प्रदान करे फिर सहस्त्रवार मूल मंत्रका जप करे। जप समाप्त कर अष्टांग नमस्कार करे। १०८ वार हवन करके धाराबांध अग्निमें घृत प्रदान करे। यदि हवन करनेकी शक्ति न हो तो दुगुना मंत्र जप करे। और गुरुको दक्षिणा देकर देवताका विसर्जन करे।

अस्य प्रयोगः । कृतनित्यक्रियः स्वस्तिवाचनपूर्वक संकल्पं कुर्यात् । अद्येत्यादि अमुकगोत्रः श्रीअमुकदेवशर्मा अमुकदेवता पूजार्थममुकयंत्रसंस्कारमहं करिष्ये । ततः पंचगव्यमानीय ह्रौं इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य प्रणवेन यंत्रं तत्र क्षिपेत् । तत उत्थाप्य स्नापयेच्छीतलजलचन्दनगन्धकस्तूरीकुंकुमैः । स्नापयित्वा पंचगव्यमानीय ह्रौं इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य प्रणवेन शोधयित्वा स्नापयेत् । तत्र क्रमः । प्रथमं क्षीरेण स्नापयित्वा धूपं दद्यात् । एवं

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

दध्ना घृतेन मधुना शर्करया च । ततोऽष्टाभिः कलशैः स्नापयेत् । कुंकुमगोरोचनया चंदनमिश्रितैस्तोयैः स्नापयेत् । सर्वत्र स्नानं मूलमंत्रेण ततो यन्त्रमुत्तोल्य कुशाग्रेण तत्स्पृष्ट्वा गायत्र्यष्टोत्तरशताभिमंत्रितं कृत्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् । अस्य प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयो ऋग्यजुःसामानि च्छन्दांसि चैतन्यं देवता प्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः । तद्यथा—ॐ ह्रीं क्रौं यं वं लं वं शं यं सं हौं हंसः

अमुकदेवतायाः प्राणा इह प्राणाः । जीव इह स्थितः । सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मन इत्यादि प्राणान् प्रतिष्ठाप्य तत्र प्रकृतिदेवतामावाह्य षोडशोपचारैः पंचोपचारैर्वा पूजयेत् । तत्र पट्टसूत्रादिकं दत्वा अष्टोत्तरशतं सहस्रं वा जपित्वा शक्तश्चेद्बलिं दद्यात् । ततोऽष्टोत्तरशतं होमं कुर्यात् । होमाभावे द्विगुणो

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

जपः कार्यः । ततो दक्षिणां दत्वा छिद्रावधा रणं कुर्य्यात् ।

अब इसका प्रयोग कहाजाता है नित्य क्रिया को समाप्त कर स्वस्तिवाचन पूर्वक संकल्प करे । अद्येत्यादि यह संकल्प है फिर पंचगव्य को लाकर हौं इस मंत्र से १०८ वार अभिमंत्रित कर प्रणवसे यन्त्र को उस में निक्षेप करे । फिर उस यंत्रको उठाकर शीतळ जळ, चन्दन, गन्ध, कस्तूरी कुंकुमसे स्नान करावे । फिर हौं इस मंत्रको उच्चारण कर प्रणवसे शोधन कर स्नान करावे । यह क्रम है । प्रथम दूध से स्नान कराकर धूप प्रदान करें इसीप्रकार दही, घृत, सहत, शर्करा से स्नान करा अष्ट कळशसे स्नान करावे । कुंकुम, गोरोचन, चन्दन मिश्रित करावे । सब जगह मूलमन्त्रसे स्नान करावे । फिर यंत्रको उठाकर कुशा के अग्रभागसे छूकर गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित कर प्राण प्रतिष्ठा करे । और उक्त विनियोग प्रदान करे आँ ह्रीं क्रौं यँ वँ लँ वँ शँ यँ सँ हौं हंसः अमुक देवतायाः प्राणा इह प्राणाः जीव इह स्थितः इत्यादि उच्चारणकर देवताका आवाहनकर पंचोपचार तथा षोड़शोपचार पूजन करे और रेशमीन वस्त्र आदि देकर १०८ वार अथवा १००० मंत्र जप करे यदि शक्ति हो तो बलिदान भी करदे । फिर १०८ वार हवन करे । होमाभावमें द्विगुण जप करे । तदनन्तर दक्षिणा देकर छिद्रावधारण करे ।

इति श्रीक्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वरसंवादे सप्तदशः पटलः ॥ १७ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

अथ शिवयंत्रम् ।

तत्रादौ षट्कोणमण्डलं कृत्वा तदन्ते साध्ये नामयुक्तं प्रसादबीजं विलिख्य षट्कोणेषु प्रणव सहितपञ्चाक्षरवर्णान् विलिख्य विवरेषु षडंगमंत्रान् तद्बहिः पंचदलानि विरच्य तद्दलेषु ॐवामदेवाय नमः । ॐईशानाय नमः । ॐतत्पुरुषाय नमः । ॐअघोराय नमः । ॐसद्योजाताय नमः इति पंच मंत्रान् प्रागादिक्रमेण लिखेत् तद्बहिरष्टदलानि रचयित्वा तद्दलेषु मातृकावर्णान् लिखेत् । तद्बहिर्वृत्तं त्र्यम्बकेन वेष्टयेत् । तद्यन्त्रे जप होमादिः कार्यः ।

अब शिव यंत्र कहाजाताहै–प्रथम षट्कोण मण्डल निर्माण करे और उस मण्डलके बीचमें साध्य व्यक्तिके नामको लिखे और प्रसाद बीजको भी लिखे । छओं कोणोंमें प्रणवसहित पञ्चाक्षर मंत्रके वर्णोंको लिखे । विवरोंमें षडंग मंत्रोंको लिखे यंत्रके बाहिर्भागमें पंचदल बनावे । दलोंमें नाममंत्रोंको लिखे यह नाममंत्रहै । ॐ वामदेवाय नमः।ॐ ईशानाय नमः। ॐ तत्पुरुषाय नमः

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

ॐ अघोराय नमः । ॐ सद्योजाताय नमः । इस प्रकार इन पांच मंत्रोंको प्रागादि क्रमसे लिखे पुनः यंत्रके बहिर्भागमें अष्टदल निर्माण करे। दलोंमें मातृकाओंकें वर्णोंको लिखे। दलोंके बहिर्भागको त्र्यम्बक मंत्रसे वेष्टित करे और यंत्रमें जप होमादिक करे ।

अथ मृत्युञ्जययन्त्रम्–मध्ये साध्याक्षराढ्यं ध्रुवमभिविलिखेन्मध्यमं दिग्दलेषु कोणेष्वन्तं मनस्तत्क्षितिभुवनमथो दिक्षु चन्द्रं विदिक्षु। ढान्तं यन्त्रं तदुक्तं सकलभयहरं क्ष्वेडभूतापमृत्युव्याधिव्यामोहदुःखप्रशमनमुदितं श्रीप्रदं कीर्त्तिदायि ।

इसका अर्थ पिछाड़ी कहचुके हैं ।

अथ रोगशान्त्यर्थं–त्र्यम्बकामृतसंजीविनीविधानम् ।

स्वच्छं स्वच्छारविन्दास्थितमुभयकरे संस्थितौ पूर्णकुम्भौ द्वाभ्यामेणाक्षमाले निजकरकमले द्वौ घटौ नित्यपूर्णौ । द्वाभ्यां द्वौ च स्रवन्तौ शिरसि शशिकलां चामृतैः प्लाव-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

यन्तं देहं देवो दधानं विदिशतु विशदां कल्पजालैः श्रियं वः।

इसका भी भाषार्थ हम पिछाड़ी लिख चुके हैं अतः पिष्टपेषण न्यायसे क्या काम ?

आदौ प्रासादबीजं तदनु मृतिहरं तारकं व्याहृतिश्च प्रोच्चार्य त्र्यम्बकं यो जपति च संतत सपुटं चानुलोमम्। गायत्र्याः पूर्वपादं तदनु च शिवदं त्र्यम्बकस्यादिमं तत्प्रोच्चार्य्यध्यानपूर्वं जपति हि मननोऽत्येति मृत्युं ध्रुवं सः॥ प्रासादबीजं हौं मृतिहरं त्र्यक्षरं मृत्युञ्जयमंत्रं ॐ जूं सः। तारकम् ॐ। व्याहृतयः भूर्भुवः स्वः। तेन हौं ॐ जूं सः। ॐ भूर्भुवः स्वः ततस्त्र्यम्बकमंत्रः पूर्वमंत्रेणानुलोमक्रमेण संपुटितः। अस्य जपात् सर्वसिद्धिर्भवति पुनः ❀ ❀ गायत्र्याः प्रथमपादं त्र्यम्बकस्य प्रथमपादमित्यादि च ध्यानं पूर्वमुक्तम्।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

प्रथम प्रासादबीज तत्पश्चात् मृत्युहर तारक तथा व्याहृतिका उच्चारण कर जो मनुष्य निरन्तर संपुट तथा अनुलोम त्र्यंबक मंत्रका जप करते हैं उनको सर्वसिद्धि प्राप्त होती हैं । हौं यह प्रासादबीज है । मृत्युहर तीन अक्षरका ॐ जूं सः यही त्र्यम्बक मंत्र है । ॐ को तारक कहते हैं । भूर्भुवः स्वः इनको व्याहृति कहते हैं । हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ! इस अनुलोम क्रमानुसार संपुटितकर जप करे सिद्धि प्राप्त होगी । फिर गायत्री मंत्रका प्रथम पाद और त्र्यम्बक मंत्रके प्रथमपादको संपुटितकर जप करे ध्यान प्रथम कह चुके हैं !

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे देवीश्वरसंवादे

ऽष्टादशः पटलः ॥१८॥

अथ मृत्युञ्जयकवचम् ।

श्रीदेव्युवाच–भगवन् देवदेवेश देवताभिः प्रपूजितः । सर्वं मे कथितं देव कवचन्न प्रकाशितम् ॥ मृत्युरक्षाकरं देव सर्वाशुभविनाशनम् । कथयस्वाद्य मे नाथ यदि स्नेहोऽस्ति मां प्रति ।

अब मृत्युञ्जय कवच कहाजाताहै । श्री देवीजी कहतीहैं । हे देव देवेश! हे देवताओंसे प्रपूजित! भगवन्! आपने मुझसे सब कुछ कहा

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

परन्तु मृत्युहर, सर्व रक्षाकर, अशुभनाशक कवच नहीं कहा कृपाकर कहिये । हे भगवन् ! यदि मेरे ऊपर आपका परम स्नेह है तो ।

ईश्वर उवाच—अस्य मृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेव ऋषिर्गायत्रीच्छन्दो मृत्युञ्जयो देवता साधकाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । शिरो मे सर्वदा पातु मृत्युञ्जयसदाशिवः । स त्र्यक्षरस्वरूपो मे वदनञ्च महेश्वरः।पञ्चाक्षरात्मा भगवान् भुजौ मे परिरक्षतु । मृत्युञ्जयस्त्रिबीजात्मा ह्यायू रक्षतु मे सदा ॥ बिल्ववृक्षसमासीनो दक्षिणामूर्तिरव्ययः । सदा मे सर्वतः पातु षट्त्रिंशद्वर्णरूपधृक्॥द्वाविंशत्यक्षरो रुद्रः कुक्षौ मे परिरक्षतु । त्रिवर्णात्मा नीलकण्ठः कण्ठं रक्षतु सर्वदा ॥ चिन्तामणिर्बीजपूरे ह्यर्द्धनारीश्वरो हरः । सदा रक्षतु मे गुह्यं सर्वसम्पत्प्रदायकः ॥ स त्र्यक्षरस्वरूपात्मा कूटरूपी महेश्वरः । मार्तण्डभैरवो

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

नित्यं पादा मे परिरक्षतु ॥ ॐ जूं सः महाबीजस्वरूपस्त्रिपुरान्तकः । ऊर्द्ध्वमूर्द्धनि चेशानो मम रक्षतु सर्वदा ॥ दक्षिणस्यां महादेवो रक्षेन्मे गिरिनायकः । अघोराख्यो महादेवः पूर्वस्यां परिरक्षतु ॥ वामदेवः पश्चिमस्यां सदा मे परिरक्षतु । उत्तरस्यां सदा पातु सद्योजातस्वरूपधृक् ॥ इत्थं रक्षाकरं देवि कवचं देवदुर्लभम् । प्रातर्मध्याह्नकाले तु यः पठेच्छिवसन्निधौ ॥ सोऽभीष्टफलमाप्नोति कवचस्य प्रसादतः । कवचं धारयेद्यस्तु साधको दक्षिणे भुजे ॥ सर्वसिद्धिकरं पुण्यं सर्वारिष्टविनाशनम् । योगिनीभूतवेतालाः प्रेतकूष्माण्डपन्नगाः ॥ न तस्य हिंसां कुर्वन्ति पुत्रवत्पालयन्ति ते । पठित्वाभ्यर्चयेद्देवि यथाविधि पुरःसरम् ॥ लक्षञ्च मूलमंत्रस्य पुरश्चरणमुच्यते । तद्धारणे

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Jal

महादेवि मृत्युरोगविनाशनम् ॥ एवं यः कुरुते मर्त्यः पुण्यां गतिमवाप्नुयात् । इति ज्ञातं महादेवि तस्य वक्त्रे स्थितं सदा ॥ कव चस्य प्रसादेन मृत्युमुक्तो भवेन्नरः । अन्यथा सिद्धिहानिः स्यात्सत्यमेतन्मनोरमे ॥ तव स्नेहान्महादेवि कथितं कवचं शुभम् । न देयं कस्यचिद्भद्रे यदीच्छेदात्मनो हितम् ।

श्रीशिवजी कहनेलगे । इस मृत्युञ्जय मंत्र का वामदेव ऋषि गायत्री छंद मृत्युञ्जय देवता है और साधकोंके मनोरथ सिद्धि के अर्थ विनियोग कहा है । मृत्युञ्जय सदाशिव मेरे शिरकी रक्षा करें । तीन अक्षरस्वरूप महेश्वर मेरे मुख की रक्षा करें । पंचवर्णात्मक भगवान् सदाशिव मेरी दोनों भुजाओंकी रक्षा करें मृत्युञ्जय मेरी आयुकी रक्षा करें । बिल्ववृक्ष के नीचे वासकर नेवाले अव्यय सदाशिव, दक्षिणामूर्ति षट्त्रिंशत् (३६) वर्ण रूप धारण करनेवाले सर्वस्थानों में मेरी रक्षा करें । द्वाविंशति रूपात्मक रुद्र मेरी कुक्षिकी रक्षा करें त्रिवर्णात्मक नीलकंठ मेरे कण्ठकी रक्षा करें । बीजपूरमें चिन्तामणिक तुल्य अर्द्धनारीश्वर भगवान् सदाशिव मेरे गुह्यभागकी रक्षा करें । त्रिवर्णात्मक, कूटरूप, महेश्वर, मार्तण्ड भैरव नित्य मेरे पांवकी रक्षा करें।ॐ जूँ सः इन बीजोंके रूपको धारण करनेवाले त्रिपुरा-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

न्तक मेरे ऊर्द्धभाग अर्थात् मस्तककी रक्षा करें। गिरिनायक महादेव दक्षिण दिशामें मेरी रक्षा करें। अघोराख्य महादेव पूर्वदिशामें मेरी रक्षा करें। वामदेव पश्चिम दिशामें मेरी रक्षा करें। सद्योजातस्वरूप धारण करनेवाले उत्तरदिशामें मेरी रक्षा करें। हे देवि! इस प्रकार देवताओंको भी दुर्लभ ऐसे रक्षा कर कवचका प्रातःकाल और सायंकाल जो मनुष्य शिवमंदिरमें पाठ करते हैं उनको इस कवचके प्रसादसे वांछित फल प्राप्त होता है। जो साधक इस परम पवित्र कवचको दक्षिण भुजामें धारण करते हैं उनको सम्पूर्ण संपत्तियाँ प्राप्त होती हैं और समस्त रोग उनके नाश होजाते हैं। और योगिनी, भूत, वेताल आदि कदापि उसकी हिंसा नहीं करते किंतु पुत्रवत् पालन करते हैं। हे देवि! यथाविधान इस कवचका पाठ करके शिवपूजनकरे लक्ष अर्थात् एक लाख मूलमंत्रके जप करनेसे एक पुरश्चरण होता है। हे देवि! इस पुरश्चरणके करनेसे मृत्यु और रोगका नाश होता है। इस प्रकार करनेसे पुण्य गति प्राप्त होतीहै। हे देवि! इस कवचके ज्ञाता मृत्युसे निर्भय रहते हैं। न करनेसे सिद्धिकी हानि होती है। हे महादेवि! तुम्हारे स्नेहसे शुभ कवचराज कहाहै। हे भद्रे! अपनी कामना पूर्ण होनेकी इच्छा करनेवाला अन्यको यह कवच न दे। मृत्युञ्जय कवच समाप्त। पूर्वमें पूजन विधान कहआये हैं।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वरसंवादे एकोनविंशतितमः पटलः ॥ १९ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

अथ यन्त्रप्रकरणम् ।

वन्ध्यायन्त्रम्—अतः परं देवि शृणु यन्त्र धारणमुत्तमम् । यन्त्रधारणमात्रेण सर्वाभीष्टफलं लभेत् ॥ जन्मवन्ध्या च या नारी शुभपुत्रवती भवेत् ! तदा गोरोचनाद्येन लिखेद्यन्त्रमनुत्तमम् ॥ वृत्तद्वयं समालिख्य पद्ममष्टदलं लिखेत् । प्रतिपद्मे लिखेन्माया बीजं भूपुरकंततः ॥ भूर्जपत्रे लिखेद्यन्त्रं धारयेत्तु महेश्वरि । कुक्षौ धृत्वा महायन्त्रं शुभ पुत्रवती भवेत् ॥ प्रयोगान्तरमन्यत्र प्राणशङ्कटतो नहि । दक्षिणां गुरवे दत्त्वा गृह्णीयाद्यन्त्रमुत्तमम् ॥

अब यन्त्रप्रकरण कहाजाताहै । प्रथम वन्ध्यायन्त्र । हे देवि यन्त्रधारणविधानको सुनो । यन्त्रके धारणमात्रहीसे समस्त वांछित फल प्राप्त होजाते हैं । जन्मवन्ध्या स्त्री शुभ पुत्रको प्राप्त होजातीहै । गोरोचनादि सुगंधित पदार्थोंसे उत्तम यन्त्रको लिखे । दो वृत्त निर्माण कर अष्टदल कमल लिखे । प्रतिपद्ममें माया बीज और भूपुर लिखें । हे महेश्वरि ! भोजपत्रके ऊपर लिखकर

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

इस यंत्रको धारण करे तो इसके प्रसादसे वन्ध्या स्त्री भी पुत्रवती हो । इस प्रयोगकी समाप्तिमें गुरुजीको दक्षिणा देवे ।

वृत्तं चतुर्दलं पद्मं भूपुरेण समन्वितम् । वृत्त-मध्ये लिखेद्देवि साधकाख्यां विशेषतः ॥ पुत्रवतीपदं पश्चात् भवत्विति पदं ततः । प्रणवैः पुटिता लज्जा त्रिधा पत्रेषु संलिखेत् ॥ पूर्ववत्पूजयेद्देवि धारयेद्दक्षिणे भुजे । सत्यंसत्यं हि देवेशि वन्ध्या पुत्रवती भवेत् ॥ दुर्भगा चेद्भवेन्नारी सुभगा मासतो भवेत् ।

वृत्तचतुर्दलपद्म भूपुरयुक्त निर्माण करे । हे देवि ! वृत्तके मध्यमें साधकके नामको लिखें और पुत्रवती इस पदको लिखके भवतु इस पदको लिखे (उदाहरण) रमा पुत्रवती भवतु इस उदाहरणके अनुसार लिखे फिर प्रणवपुटित लज्जाबीज तीन प्रकार पत्रोंमें लिखे । हे देवि ! पूर्ववत् पूजन करे । और दक्षिण भुजामें धारण करे । हे देवि ! यह सत्य बात है कि इसके धारण करनेसे वन्ध्या पुत्रवती होतीहै । दुर्भगा स्त्री एक मासके भीतर सौभाग्यवती होजाती है ।

अथ रक्षायन्त्रम् ।

अतः परं प्रवक्ष्यामि महारक्षाकरं परम् । धारणाद्दानवपतिर्महारक्षाकरो भवेत् ॥पञ्च-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

दलं लिखेद्देवि ग्लौं बीजेनैव लाञ्छितम् ।
गंपञ्चकं सर्वमध्ये लिखित्वा धारयेद्यदि ॥
न तस्य पुत्रभीतिः स्यात्तत्र रक्षाकरो हरः ।
गोरोचनाकुंकुमाभ्यां भूर्जे संलिख्य धार-
येत् ॥ तत्र पूजां महादेवि गणपस्य समाच-
रेत् । पूजितं धारितश्चैव सर्वोपद्रवनाशनम्॥
वृत्तमष्टदलं पद्मं पुनः पद्मेषु संलिखेत् ।
गोरोचनाभिः संलिख्य धारयेत्परमेश्वरि ॥
उक्तरूपेण लिङ्गस्य पूजां कृत्वा महेश्वरि ।
धारयेद्यो भवेत्तस्य ह्यल्पमृत्युविनाशनम् ॥

अब महारक्षाकर यन्त्र कहाजाता है जिसके धारण करने से दैत्येश्वर भी रक्षा करनेवाला हो जाता है । हे देवि!पंचदल कमल लिखकर ग्लौंबीजसे अंकितकरे । और सर्वदलों के मध्य में गंबीज लिखकर पूजन कर धारण करे तो पुत्रभय कदापि न हो किन्तु शिवजी महाराज स्वयं आकर रक्षाकरेंगे । भोजपत्र के ऊपर गोरोचन और कुंकुमसे लिखकर धारण करे और गणपति का पूजन कर यंत्र धारणकरे तो समस्त उपद्रव नाश हों और पुत्र की प्राप्ति । वृत्त अष्टदल कमलके प्रति दलमें लाबीज लिखे । हे परमेश्वरि!

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

गोरोचनादि सुगंधित पदार्थोंसे लिखकर धारण करनेसे पुत्रप्राप्ति होतीहै । हे महेश्वरि ! उक्तविधानके अनुसार यंत्रका पूजन करे । हे देवि ! पूजन और यंत्रके धारणकरनेसे अपमृत्यु दोष दूर होताहै ।

अथ पुत्रजननयन्त्रम् ।

बिन्दुवृत्तं समालिख्य लिखेदष्टदलं ततः प्रतिपत्रेषु यंबीजं लिखेदथ पृथक्पृथक् ॥ पूर्ववत्पूजयेद्देवि धारणान्मृत्युनाशनम् । काकवन्ध्याजनस्यापि बहुपुत्रकरं परम् ॥ षट्कोणं विलिखेद्वृत्तं ततश्चाष्टदलं लिखेत् । षट्कोणेषु च षट् दीर्घान् विलिखेत्परमेश्वरि ॥ ऐं ह्रीं ॐ ऐं ह्रीं फट् स्वाहा लिखेदष्टदले ततः । सर्वमध्ये लिखेद्देवि ततः शृणु महेश्वरि ॥ प्रणवस्तु ततो माया साधकाख्यं तु ङेन्तकम् । सुपुत्रञ्च समालिख्य उत्पादयपदन्ततः ॥ विधाय चैवं विधिवद्धारयेद्यन्त्रमुत्तमम् । धारणात्सर्वसम्पत्तिर्भवे-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

देवि न संशयः ॥ पूजनं पूर्वमुक्तम् । देवीं कालीमंत्रेण पूजयेत् ।

अब पुत्र उत्पन्न करनेवाला यंत्र कहाजाता है। बिन्दुवृत्तको लिखकर अष्टदल कमल लिखे; और उक्त कमलदलके प्रतिदलमें पृथक् २ यंबीजको लिखे। हे देवि ! पूर्ववत् पूजनकर धारण करे तो मृत्युसे भय न हो। काकवन्ध्या स्त्री भी बहुपुत्र लाभकरे षट्कोण वृत्त लिखकर पुनः अष्टदल लिखे और छहों कोणों में बीजमंत्र लिखे। "ऐं ह्रीं ॐ ऐं ह्रीं फट् स्वाहा" इनको अष्टदल में लिखे। यंत्रके मध्यमें प्रणव, मायाबीज, साधकका नाम, सुपुत्र, उत्पादय इन पदोंकी योजनाकर सविभक्तिक लिखे। विधिपूर्वक इस उत्तम यंत्र को धारण करे। हे देवि! यंत्र धारण करने से समस्त सम्पत्ति प्राप्त होती हैं, इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहींहै। इसका पूजनविधान पिछाड़ी कह आयेहैं। देवीजीका पूजन कालीके मंत्रसे करै।

अथ वशीकरणम् ।

वशीकरणयन्त्रन्तु शृणु मत्प्राणवल्लभे ।
यस्य धारणमात्रेण वशी कुर्यात् पुनः प्रिये ॥
चतुर्वृत्तं समालिख्य लिखेदष्टदलं ततः ।
ॐ शत्रुमुखं बन्धयेति प्रतिपद्मदलं लिखेत् ॥
यस्य नामाभिसंलिख्य बाहौ संधारयेच्छिवे।
पूर्ववत्पूजयेद्देवीं जपेल्लक्षं विधानतः ॥ चा-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

मुण्डोक्तविधानेन पूजयेद्देवि साधकः । हुत्वा चैव विधानेन स वशी भवति ध्रुवम् ।

हे मत्प्राणवल्लभे ! अब वशीकरण यंत्र सुनो कि जिसके धारण करनेही मात्रसे वशीकरण होसक्ताहै । चतुर्वृत्त लिखकर अष्टदल लिखे । " ॐ शत्रुमुखं बन्धय " प्रतिदलमें लिखे । साध्यव्य क्तिके नामको लिखकर बाहुमें धारण करे और पूर्ववत् पूजन करे । चामुण्डाके विधानको देखकर पूजन करे और विधान पूर्वक हवन करे ।

अथ बन्धमुक्तियंत्रम् ।

लिखेद्वृत्तं तद्बहिस्तु स्वरान् लिखेत् । बहि- र्भुभूद्वयं लिख्य चतुर्दिक्षु च ह्रीं लिखेत् ॥ वृत्तयुग्माष्टपत्रञ्च लिखेद्गोरोचनादिना । ग्रीवायां कंठदेशे वा शिखायां वापि धार- णात् । बन्धमुक्तिर्भवेत्तस्य नवमे दिवसे तथा । पूर्वोक्तविधिना लक्षं दुर्गामंत्रं जपेद्बुधः ।

अब बंदीमोचन यंत्र कहाजाता है । वृत्तलिखे और उस वृत्त के बहिर्भागमें स्वरोंको लिखे । बहिर्भागमें दो भुभू लिखे और चारों दिशाओंमें ह्रीं लिखे दो वृत्त लिखकर गोरोचनादिकसे अष्ट

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Jal

दल लिखे । ग्रीवा (गर्दन) कण्ठ, शिखामें, धारणकरे तो नौवें-दिन बन्धनसे मुक्ति हो । पूजन प्रकार पूर्व कहदियाहै एक लाख दुर्गामन्त्र जपे ।

अथ डाकिन्यादिभयविनाशनयंत्रं जीववत्सायंत्रं च ।

वृत्तयुग्मं लिखेत्तत्र महाबीजचतुष्टयम् । चतु-ष्कोणद्वयं बाह्ये लिखित्वा धारयेद्यदि ॥
नाशयेत्क्षणमात्रेण डाकिन्यादिभवं भयम् ।
मृतवत्सा यदि भवेन्नारी दुःखपरायणा ॥
धारयेत् परमं यंत्रं जीववत्सा ततो भवेत् ।

अब डाकिनी आदि भयनाशक तथा जीववत्सायंत्र कहाजाता है । दो वृत्त लिखकर चारों कोनोंमें चार महाबीज लिखे और पूजन कर धारण करे तो डाकिनी आदि भय नाश हो । अथवा जिस स्त्रीका पुत्र उत्पन्न होकर मरजाताहो और सर्वथा सन्तानसे दुःखितहो यदि वह स्त्री इस यंत्रराजको सांगोपांग धारण करे तो उसकी सन्तान जिये और सुख भोगे ।

दीर्घरेखाद्वयं दत्त्वा तद्गात्रेऽष्टदलं लिखेत् ।
ॐ ह्रीं देवदत्त ह्रीं रेखामध्ये लिखेच्छिवे ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

रेखागात्रदले ॐ हूँ रेखाद्यन्तदले च ॐ (लिखेत्)। गोरोचनाकुंकुमेन तथैवाल-क्तकेन वा ॥ यस्य नाम तु संलिख्य स्थाप-येत्परमेश्वरि । पंचामृतेषु देवेशि जीववत्सा भवेद्धि सा ॥ तत्सुतस्याकालमृत्युर्नान्यथा जायते प्रिये । उक्तरूपे तथा पूजां लक्षमन्त्रं जपेच्छिवे ॥ १० ॥

दो दीर्घ रेखा लिखकर उनमें अष्टदल कमल लिखे और उक्त रेखाओंके मध्यमें ॐ ह्रीं देवदत्त ह्रीं ॐ इस मंत्रको लिखे । रेखाके गात्रदलमें ॐ हूं, रेखाके अन्तदलमें ॐ इन बीजोंको लिखे। हे परमेश्वरि ! गोरोचन, कुंकुम, लाख इनसे साध्य व्यक्तिके नामको लिखे और पंचामृतमें स्नान करावे हे देवेशि ! स्त्री अवश्य जीववत्साहो । हे शिवे ! इस यंत्रको धारण करनेवाली स्त्रीका पुत्र कदापि अकाल मृत्युको न प्राप्त होगा । परंतु उक्त विधिके अनुसार पूजन करे और एक लाख मंत्र जप करे ।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वरसंवादे विंशतितमः पटलः समाप्तः ॥ २० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

अथ विजयानुपानम् ।

दुग्धयोगेन विजया महातेजस्करी स्मृता । क्षुद्बोधबलकारित्वाच्चक्षुर्दोषापहारिणी ॥ जलयोगेन सा हन्ति ह्यजीर्णादिगदान्क्षणात् । घृतेन मेधाजननी वाग्देवीवशकारिणी ॥ कफदोषानशेषांस्तु मधुना सह नाशयेत् । सैन्धवेन युता साहि जठराग्निं विवर्द्धयेत् ॥ सितया लवणेनापि गुडेन सह सेविता ! अम्लपित्तं तथा शूलं विनाशयति तत्क्षणात् ॥ बलपुष्टिप्रदा प्रोक्ता मधुरस्वरकारिणी । कैवल्यज्ञानदा चेत्थं सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।

अब विजया अनुपानका विधान कहाजाता है । यदि विजया (भंग) दूधके साथ पी जाय तो तेजका उदय हो नेत्र आदिका दोप दूर हो । कोई कहते हैं कि विजयाके पान करनेसे चक्षु आदि दोष उत्पन्न होजाते हैं यदि विजयाको केवल जलमें पीसकर और पानीमें छानकर पिये तो अजीर्ण रोग दूर होजाता

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

है । घृतके योगसे विजयाका सेवन करना वाणीकी चतुराई देता है । सहतके योगसे विजयाका सेवन करना समस्त कफ दोषोंको नाश करता है । सेंधे नमकके योगसे विजयाका सेवन करना जठराग्निको प्रज्वलित करताहै लवण, अथवा शर्करा, वा गुड़ के योगसे विजयाका सेवन करना शूल और अम्लपित्तको नाश करताहै । विजयाके सेवन करने से बल, पुष्टि प्राप्त होती है और ज्ञानभी प्राप्त होता है । विजया समस्त सिद्धियों को देनेवाली परमासिद्धि है ।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वरसंवादे एकविंशतितमः पटलः ॥ २१ ॥

अथ मङ्गलचडीप्रयोगः ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपूज्ये देवि मंगलचंडिके हूँ हूँ फट् स्वाहा । इत्येकविंशाक्षरो मनुः । ध्यानं यथा—देवीं षोडशवर्षीयां शश्वत्सुस्थिरयौवनाम् । सर्वरूपगुणाढ्यां च कोमलांगीं मनोहराम् ॥ श्वेतचम्पकवर्णाभां चन्द्रकोटिसमप्रभाम् । वह्निशुद्धां करालां च

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Jal

रत्नभूषणभूषिताम् ॥ बिभ्रतीं कबरीभारं मल्लिकामाल्यभूषितम्[1] ॥ बिम्बोष्ठीं सुदतीं शुद्धां श्वेतपद्मनिभाननाम् । ईषद्धास्यप्रसन्नास्यां सुनीलोत्पललोचनाम् ॥ जगद्धात्रीञ्च दात्रीं च सर्वेभ्यः सर्वसम्पदाम् । संसारसागरे घोरे पोतरूपां वरां भजे ।

इति श्रीमदिन्द्रजिद्विरचितः क्रियोड्डीशः समाप्तः ।

अब मंगलचंडीप्रयोग कहाजाता है । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपूज्ये देवि मंगलचंडिके हूं हूं फट् स्वाहा । यह २१ अक्षरका मंगलचंडीका मंत्र है । अब ध्यान कहाजाता है । १६ वर्षकी अवस्थावाली, निरंतर युवावस्था पूर्ण, समस्त गुण तथा रूपसे सुशोभित, कोमल अंगवाली, मनको हरनेवाली, श्वेत चम्पाके तुल्य कांतिवाली, चन्द्रकिरणके तुल्य उज्ज्वल, अग्निके तुल्य शुद्ध कराल (भयंकर) स्वरूप धारण करनेवाली, रत्नोंके भूषणोंसे भूषित, श्वेतवस्त्र धारण करनेवाली चमेलीके फूलोंसे जटित कबरी (चोटी) को धारण करनेवाली, कन्दूरी के तुल्य रक्त ओष्ठवाली,

१ मल्लिकामाल्यभूषितामिति पाठांतरम् ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

श्रेष्ठदांतवाली श्वेत अर्थात् पवित्र, कमलकी कांति को धारणकरनेवाली, मंद मुसकान करनेवाली, नीलकमलदलके तुल्य नेत्रोंवाली, जगत् को धारण करनेवाली, समस्त सम्पत्ति देनेवाली, इस दुष्पारसंसार में नौका के तुल्य पार लगानेवाली जगज्जननी देवीजी का हम साधक लोग ध्यान करते हैं ।

इति श्रीवैद्यरामनारायणशास्त्रिकृतभाषानुवादसमेतं
क्रियोड्डीशतंत्रं समाप्तम् ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालय-बंबई.

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानेकी परमोपयोगी स्वच्छ शुद्ध और सस्ती पुस्तकें।

यह विषय आज २५।३० वर्षसे अधिक हुआ भारतवर्षमें प्रसिद्धहै कि, इस छापाखानेकी छपी हुईं पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दर प्रतीत तथा प्रमाणित हुईं हैं सो इस यन्त्रालय में प्रत्येक विषय की पुस्तकें जैसे--वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, छन्द, ज्योतिष, काव्य, अलंकार, चम्पू, नाटक, कोष, वैद्यक, साम्प्रदायिक तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दी भाषाके प्रत्येक अवसर पर विक्रीके अर्थ तैयार रहतेहैं। शुद्धता स्वच्छता तथा काग़ज़की उत्तमता और जिल्द की बँधाई देश भरमें विख्यात है। इतनी उत्तमता होनेपर भी दाम बहुत ही सस्ते रक्खे गये हैं और कमीशनभी पृथक् काट दियाजाताहै। ऐसी सरलता पाठकों को मिलना असंभवहै संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अवश्य अपनी २ आवश्यकतानुसार पुस्तकों के मँगानेमें त्रुटि न करना चाहिये ऐसा उत्तम, सस्ता और शुद्ध माल दूसरी जगह मिलना असम्भव है 'सूचीपत्र' मँगा देखो॥

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना--खेतवाड़ी--बम्बई.

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

॥ श्रीः ॥

दत्तात्रेयतन्त्र ।

भाषाटीकासमेत ।

BOMBAY.

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-मुंबई.

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri Sarayu Trust. Funding IKS MoE Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

॥ श्रीः ॥

दत्तात्रेयतन्त्र ।

श्रीयुत पण्डित श्यामसुन्दरलाल त्रिपाठी विरचित-

भाषाटीका समेत ।

इसमें

मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, स्तम्भन,
आदि प्रयोग अनेक प्रकारसे वर्णित हैं।

वही
खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेसमें
मुद्रितकर प्रकाशित किया।

संवत् १९६६, शके १८३१.

इस ग्रन्थका पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार राजनियमानुसार
प्रकाशकने स्वाधीन रक्खा है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

भूमिका.

"यद्गृहे निवसेत्तंत्रं तत्र लक्ष्मीः स्थिरायते"। महाशय ! तन्त्रशास्त्रके पठन पाठन और मनन करनेसे अवश्यही सिद्धि प्राप्त होती है। जो कार्य सहस्रशः व्रत करने परभी सिद्ध नहीं होता वही कार्य तंत्रशास्त्रकी केवल एक क्रियासेही सरलतापूर्वक होसकता है। **योगिराज श्रीदत्तात्रेयप्रणीत** यह ग्रंथ यंत्र—मन्त्राकांक्षियों, कौतुकियों और रसायनिकोंके हितार्थ अद्वितीय है। इसमें—अनेक प्रकारके उपयोगी तथा सिद्धिदेनेवाले मंत्र, मोहन, मारण, उच्चाटन, वशीकरण, स्तम्भनादि अनेक प्रकारके प्रयोग उत्तमतापूर्वक वर्णित हैं। इसके सिवाय अन्यान्य ग्रन्थोंमें जो २ विषय अतिक्लिष्ट हैं उन सबका इस ग्रन्थमें भलीभांति समावेश हुआ है। मंत्र—तंत्रके ज्ञाता जैसा इससे लाभ उठासकते हैं उतनाही लाभ इसे सामान्यव्यक्तिभी उठासकैंगे। यह ग्रन्थ संस्कृतमें होनेसे सर्वसाधारणको इसका लाभ नहीं होताथा इस कारण श्रीयुत पं० श्यामसुन्दरलाल त्रिपाठीजीसे इसकी सरल सुबोध **भाषाटीकाकराय** हमने निज "**श्रीवेङ्कटेश्वर**" स्टीम्—मुद्रणालयमें मुद्रितकर प्रसिद्ध किया है। आशा है कि, यन्त्रशास्त्रप्रेमी महाशय इसके अवलोकनसे लाभ उठावेंगे और हमारे परिश्रमको सफल करैंगे।

विद्वज्जनकृपाकांक्षी—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् मुद्रणालय—बम्बई.

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

अथ दत्तात्रेयतन्त्रविषयानुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठ.
ग्रन्थोपक्रमः	१
मारण	५
मोहन	८
स्तम्भन	१२
स्थानस्तम्भन	१४
बुद्धिस्तम्भन	,,
शस्त्रस्तम्भन	१५
सेनास्तम्भन	१७
सेनापलायन	१८
मनुष्यस्तम्भन	,,
गोमाहिष्यादिपशुस्तम्भन ...	१९
मेघस्तम्भन	,,
निद्रास्तम्भन	,,
नौकास्तम्भन	,,
गर्भस्तम्भन	२०
विद्वेषण	२१
उच्चाटन	२४
सर्वजनवशीकरण ...	२७
स्त्रीवशीकरण	३१
पुरुषवशीकरण	३४
राजवशीकरण	३५
आकर्षणप्रयोग	३८
इन्द्रजाल	४०
यक्षिणीसाधन	४९
महायक्षिणीसाधन ...	५१
सुरसुन्दरीसाधन ...	५२
मनोहरीसाधन	५३
कनकावतीसाधन ...	५४
कामेश्वरीसाधन ...	५४
रतिप्रियासाधन ...	५५
पद्मिनी, नटी व अनुरागिणिओंकासाधन	,,
विशालासाधन ...	५६
चन्द्रिकासाधन... ...	५७
लक्ष्मीसाधन	,,
शोभनासाधन	५८
मदनासाधन	,,
रसायन	५९
कालज्ञान	६१
अनाहार	६६
आहार	६८
निधिदर्शन	६९
वन्ध्यापुत्रवतीकरण ...	७०
मृतवत्साजीवन ...	७५
काकवन्ध्याकीचिकित्सा ...	७८
जयकी विधि	७९
वाजीकरण	८०
द्रावणादिकथन... ...	८३
केशरञ्जनप्रयोग ...	८६
लोमशातन	८८
लिंगवर्द्धन	,,
भूतग्रहादिनिवारण ...	८९
सिंहव्याघ्रादिनिवारण ...	९१
सर्पभयनिवारण ...	,,
वृश्चिकभयनिवारण ...	९२
अग्निभयनिवारण ...	,,

॥ इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

॥ श्रीः ॥

श्रीदत्तात्रेयतन्त्र।

भाषाटीकासहित।

प्रथम पटल।

कैलासशिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम्।
दत्तात्रेयस्तु पप्रच्छ शंकरं लोकशंकरम् ॥ १ ॥
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा पृच्छते भक्तवत्सल।
भक्तानां च हितार्थाय कल्पतन्त्रञ्च कथ्यताम् ॥ २ ॥

कैलास पर्वतकी चोटीपर विराजमान देवदेव जगत्के गुरु संसारका कल्याण करनेवाले श्रीशंकर भगवान्से दत्तात्रेयजी हाथ जोडकर पूछतेहुये कि हे भक्तवत्सल! भक्तोंके हितके लिये आप कल्पतंत्रको कहिये॥ १ ॥ २ ॥

कलौ सिद्धिप्रदं कल्पं तन्त्रविद्याविधानकम्।
कथयस्व महादेव देवदेव महेश्वर ॥ ३ ॥

हे महादेव! हे देवदेव महेश्वर! कालिकालमें सिद्धि देनेवाले महाकल्प तंत्रको विधिसे कहिये ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Ja

सन्ति नानाविधा लोके यन्त्रमन्त्राभिचारकाः ।
आगमोक्ताः पुराणोक्ता वेदोक्ता डामरे तथा ॥ ४ ॥
उड्डीशे मेरुतन्त्रे च कालीचण्डेश्वरे मते ।
राधातन्त्रे च उच्छिष्टे धारातन्त्रे मृडेश्वरे ॥ ५ ॥

हे प्रभो ! लोकमें अनेक प्रकारके आगमोक्त, पुराणोक्त और वेदोक्त, डामर, उड्डीश, मेरुतंत्र, कालीतंत्र चंडेश्वर, राधातंत्र, उच्छिष्टतंत्र, धारातंत्र और मृडेश्वर आदि तंत्रोंमें यंत्र मंत्र एवं अभिचारके प्रयोगोंका वर्णन है ॥ ४ ॥ ५ ॥

ते सर्वे कीलिताश्चैव कलौ वीर्यविवर्जिताः ।
ब्राह्मणाः कामक्रोधाढ्या एतस्मादेव कारणात् ॥६॥

सो वे सब कीलकर कलियुगमें शक्तिहीन करादिये गये क्यों कि ब्राह्मण कामी और क्रोधी होगये हैं ॥ ६ ॥

विना कीलकमन्त्राश्च तन्त्राश्च कथिताः शिव ।
तन्त्रविद्यां क्षणंसिद्धिं कथयस्व मम प्रभो ॥ ७ ॥

हे शिव ! हे प्रभो ! विना कीलेहुये मंत्र और तंत्र जो कहेहैं सो, और क्षणमात्रमें सिद्धि देनेवाली तंत्रविद्याको मुझसे कहिये ॥ ७ ॥

ईश्वर उवाच-शृणु सिद्धिं महायोगिन् सर्वयोगविशारद ।
तन्त्रविद्यां महागुह्यां देवानामपि दुर्लभाम् ॥ ८ ॥

शिवजी बोले-हे महायोगिन् ! (दत्तात्रेयजी) हे सर्व योगविशारद ! तंत्रविद्या परमगुप्त होनेके कारण देवताओंको भी दुर्लभ है ॥ ८ ॥

तवाग्रे कथ्यते देव तन्त्रविद्याशिरोमणिः ।
गुह्याद्गुह्या महागुह्या गुह्या गुह्या पुनःपुनः ॥ ९ ॥

हे देव ! तुमसे तंत्रविद्याशिरोमणिको कहता हूं यह गुप्तसे गुप्त महागुप्त है अतएव वारम्वार इसको गुप्तही रखना चाहिये ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

गुरुभक्ताय दातव्या नाऽभक्ताय कदाचन।
मम भक्त्येकमनसे दृढचित्तयुताय च ॥ १० ॥

जो मेरी भक्तिमें लीन, दृढ़चित्त एवं गुरुका भक्त हो उसको तंत्रविद्या देनी चाहिये अभक्तको नहीं दे ॥ १० ॥

शिरो दद्यात्सुतं दद्यान्न दद्यात्तन्त्रकल्पकम्।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम् ॥११॥

समय पडनेपर अपना शिर देदे, पुत्र देदे परन्तु हरएकको यह तंत्रकल्प नहीं दे यह मेरा सत्य वचन माने ॥ ११ ॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि दत्तात्रेय तथा शृणु।
कलौ सिद्धमहामन्त्रो विना कीलेन कथ्यते ॥ १२ ॥

हे दत्तात्रेयजी ! अब मैं कलियुगमें सिद्धिदेनेवाले विनाकीले हुये मंत्रोंको कहताहूं उनको सुनो ॥ १२ ॥

न तिथिर्न च नक्षत्र नियमो नास्ति वासरः।
न व्रतं नियमो होमः कालवेलाविवर्जितम् ॥ १३ ॥
केवलं तन्त्रमात्रेण ह्यौषधिः सिद्धिरूपिणी।
यस्य साधनमात्रेण क्षणात्सिद्धिश्च जायते ॥ १४ ॥

जिनके साधनमें तिथि, नक्षत्र, दिन, व्रत, नियम, हवन और समयके विचारकी भी आवश्यकता नहीं है ॥ उनमें केवल तंत्रमात्रसे औषधि सिद्धिरूपिणी होजाती है, जिसके प्रयोगसे मनुष्य क्षणभरमें सिद्धि प्राप्त करता है ॥ १३ ॥ १४ ॥

मारणं मोहनं स्तम्भो विद्वेषोच्चाटने वशम्।
आकर्षणं चेन्द्रजालं यक्षिणी च रसायनम् ॥ १५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

मारण, मोहन, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन वशीकरण, आकर्षण, इन्द्रजाल, यक्षिणीसाधन, रसायनविद्या ॥ १५ ॥

कालज्ञानमनाहारं साहारं निधिदर्शनम् ।
वन्ध्यापुत्रवतीयोगं मृतवत्सासुतजीवनम् ॥ १६ ॥

कालज्ञान, अनाहार, आहार, निधिदर्शन, वंध्यापुत्रवतीयोग, मृतवत्सासुतजीवन ॥ १६ ॥

जयवादं वाजिकरणं भूतग्रहनिवारणम् ।
सिंहव्याघ्रभयं सर्पवृश्चिकानां तथैव च ॥ १७ ॥
निवारणं भयात्तेषां नान्यथा मम भाषितम् ।
गोप्यं गोप्यं महागोप्यं गोप्यं गोप्यं पुनःपुनः ॥१८॥

जयवाद, वाजीकरण, भूतग्रहनिवारण, सिंह, व्याघ्र, सर्प और वीछी-आदिके भय निवारणके इस तंत्रमें सत्य प्रयोग कहेहैं सो इनको यत्नसे गुप्त रक्खे ॥ १७ ॥ १८ ॥

सर्वोपरि मन्त्रः-"ॐ परब्रह्मपरमात्मने नमः उत्पत्तिस्थितिप्रलयकराय ब्रह्महरिहराय त्रिगुणात्मने सर्वकौतुकानि दर्शय दर्शय दत्तात्रेयाय नमः तन्त्रसिद्धिं कुरुकुरु स्वाहा" अयुतजपात्सिद्धिः । अष्टोत्तरशतजपात् कार्यसिद्धिर्भवति ॥

उपरोक्त 'ॐ परब्रह्मपरमात्मने' से 'स्वाहा'तक सर्वोपरि मंत्र है इसे दशहजार जपकर प्रथम सिद्ध करले पीछे अष्टोत्तरशत जपनेसें कार्य सिद्ध होताहै ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे तंत्रविषयसर्वोपरिमंत्रकथनं नाम प्रथमः पटलः ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

द्वितीय पटल।

मारण.

ईश्वर उवाच–अथाग्रे संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं मारणाभिधम् ।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणुष्वावहितो मुने ॥ १ ॥

शिवजी बोले, हे दत्तात्रेयजी ! अब मनुष्योंको शीघ्र सिद्धिदायक मारणके प्रयोगोंको वर्णन करूंगा तुम सावधानीसे सुनो ॥ १ ॥

मारणं न वृथा कार्यं यस्य कस्य कदाचन ।
प्राणांतसंकटे जाते कर्तव्यं भूतिमिच्छता ॥ २ ॥

निष्प्रयोजन मारणका प्रयोग किसीपर न करै, मरनेकी समान संकट उपस्थित होनेपर अपने कल्याणकी इच्छासे मारणके प्रयोगका साधन करै ॥ २॥

ब्रह्मात्मानं तु विततं दृष्ट्वा विज्ञानचक्षुषा ।
सर्वत्र मारणं कार्यमन्यथा दोषभाग्भवेत् ॥ ३ ॥

जो ब्रह्मज्ञानी पुरुष अपनी दृष्टिसे सर्वत्रही ब्रह्मको देखता है वह आवश्यकता होनेसे मारणके प्रयोगको करै तो ठीक है नहीं तो दोष लगताहै ॥ ३ ॥

तस्माद्रक्ष्यः सदात्मा हि मारणं न क्वचिच्चरेत् ।
कर्तव्यं मारणं चेत्स्यात्तदा कृत्यं समाचरेत् ॥ ४ ॥

अतएव अपनी रक्षा चाहनेवाला मनुष्य मारणको न करै यदि मारण प्रयोग करना ही पड तो इस प्रकारसे करै ॥ ४ ॥

चिताभस्मसमायुक्तं धत्तूरचूर्णसंयुतम् ।
यस्याङ्गे निक्षिपेद्धीमे सद्यो याति यमालयम् ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

चिताकी भस्ममें धतूरेका चूर्ण मिलाय मंगलके दिन जिसके शरीरपर डाले वह शीघ्र मरजाता है ॥ ५ ॥

भल्लातकोद्भवं तैलं कृष्णसर्पस्य दन्तकम् ।
विषं धत्तूरसंयुक्तं यस्यांगे निक्षिपेन्मृतिः ॥ ६ ॥

भिलावेका तेल, काले सर्पके दांत और विषको धतूरेके चूर्णमें मिलाय जिसके अङ्गपर छोडे उसकी मृत्यु होजाती है ॥ ६ ॥

नरास्थिचूर्णं ताम्बूले भुक्तं मृत्युकरं ध्रुवम् ।
सर्पास्थिचूर्णं यस्यांगे निक्षिपेन्मृत्युमाप्नुयात् ॥ ७ ॥

मनुष्यकी हड्डीका चूर्ण पानमें खिलानेसे मनुष्यकी मृत्यु होती है, सर्पकी हड्डीका चूर्ण जिसके जिसके अंगपर डाला जाय वह मर जाता है ॥ ७ ॥

चिताकाष्ठं गृहीत्वा तु भौमे च भरणीयुते ।
निखनेच्च गृहद्वारे मासे मृत्युर्भविष्यति ॥ ८ ॥

भौमवारके दिन भरणी नक्षत्र होनेपर चितामेंसे लकडी लाकर जिसके दरवाजेपर गाडदे उसकी १ मासमें मृत्यु होजाती है ॥ ८ ॥

कृष्णसर्पवसां ग्राह्या तद्वर्तिं ज्वालयेन्निशि ।
धतूरबीजतैलेन कज्जलं नृकपालके ॥ ९ ॥
चिताभस्मसमायुक्तं लवणं पंच संयुतम् ।
यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालयम् ॥ १० ॥

काले सर्पके चर्बीकी बत्ती बनाय धतूरके बीजोंके तेलद्वारा मनुष्यकी खोपडी में काजल पारे ॥ फिर उसमें चिताकी भस्म और पांचो नोन मिला चूर्णकर जिसके अंगपर डाले उसकी शीघ्र मृत्यु होती है ॥ ९ ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

गृहीत्वा वार्श्चिकं मांसमुलूकचूर्णसंयुतम् ।
यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं तन्नुर्मृत्युर्भविष्यति ॥ ११ ॥

बीछी और उल्लूके मांसका चूर्ण जिसके अंगपर डाले उसकी मृत्यु होजाती है ॥ ११ ॥

लिखेत्पंचदशीयन्त्रं चिताभस्म विलोमतः ।
श्मशानाग्नौ क्षिपेद्यन्त्रं भौमे च म्रियते रिपुः ॥१२॥

चिताकी भस्मसे पंचदशीयंत्रको विलोमरीतिसे लिख मंगलके दिन चिताकी अग्निमें डालनेसे शत्रुकी मृत्यु होती है ॥ १२ ॥

उलूकविष्ठां गृहीत्वा तु विषचूर्णसमन्विताम् ।
यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालयम् ॥१३॥

उल्लूकी विष्ठाको ले विष मिलाय चूर्णकर जिसके अंगपर डाले वह शीघ्र मरजाताहै ॥ १३ ॥

रिपुविष्ठां गृहीत्वा च नृकपाले तु धारयेत् ।
उद्याने निखनेद्भूमौ यस्य नाम लिखेत्स हि ॥ १४ ॥
यावच्छुष्यति सा विष्ठा तावच्छत्रुर्मृतो भवेत् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥१५॥

शत्रुकी विष्ठाको ले मनुष्यकी खोपडीमें रख उद्यानमें जिसका नाम लिखकर गाडे तो विष्ठाके सूखनेतक निश्चय शत्रु मरजाताहै इस प्रयोगको हरएक मनुष्यको न दे ॥ १४ ॥ १५ ॥

कृकलाया वसातैलं यस्यांगे बिन्दुमात्रतः ।
निक्षिपेन्म्रियते शत्रुर्यदि रक्षति शंकरः ॥ १६ ॥

गिरगिटकी चर्बीका तेल जिसके अंगपर बूंदभर भी डालदियाजाय तो उसकी शंकरके रक्षाकरनेपर भी मृत्यु होजाती है ॥ १६ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

गृहदीपे तु निक्षिप्तं लवणं विजयायुतम् ।
यस्य नाम्ना मृतिः सत्यं मासेनैकेन निश्चिता ॥१७॥
ओं नमः कालरूपाय अमुकं भस्मी कुरु कुरु स्वाहा ॥

इस मंत्रसे अभिमंत्रित करके लवण और भांगको जिसके नामसे घरके दीपकमें डाले उसकी एक मासमें निश्चय मृत्यु होजाती है ॥ १७ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे मारणप्रयोगो नाम द्वितियः पटलः ॥ २ ॥

तृतीय पटल ।

मोहन.

ईश्वरउवाच-अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं मोहनाभिधम् ।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणु योगीन्द्र यत्नतः ॥ १ ॥

शिवजी बोले हे योगीन्द्र ! अब मोहनके प्रयोगोंको कहताहूं जिसके साधनसे मनुष्योंको शीघ्र सिद्धि प्राप्त होतीहै उसको तुम यत्नसे सुनो ॥ १ ॥

तुलसीबीजचूर्णस्य सहदेव्या रसेन च ।
रवौ यस्तिलकं कुर्यान्मोहयेत्सकलं जगत् ॥ २ ॥

रविवारके दिन तुलसीके बीजोंका चूर्ण सहदेवीके रसमें मिलाकर तिलक लगानेसे मनुष्य सब जगत् को मोह लेताहै ॥ २ ॥

हरितालं चाश्वगंधां पेषयेत्कदलीरसैः ।
गोरोचनेन संयुक्तं तिलकं लोकमोहनम् ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

हरताल, असगंध और गोरोचनको केलेके रसमें पीस तिलक लगानेसे मनुष्य सबको मोहित करताहै ॥ ३ ॥

शृंगीचंदनसंयुक्तं वचाकुष्ठसमन्वितम् ।
धूपं देहे तथा वस्त्रे मुखे चैव विशेषतः ॥
राजप्रजापक्षिपशुदर्शनान्मोहकारकम् ॥ ४ ॥

काकडासिंही, चंदन, वच और कूठकी धूप शरीरमें, मुखमें और वस्त्रोंमें दे तो देखतेही राजा प्रजा और पशु, पक्षी मोहित होजाते हैं ॥ ४ ॥

गृहीत्वा मूलताम्बूलं तिलकं लोकमोहनम् ॥ ५ ॥

पानकी जडको पीस तिलक लगानेसे भी सब मोहित होजातेहैं ॥ ५ ॥

सिन्दूरं कुंकुमं चैव गोरोचनसमन्वितम् ।
धात्रीरसेन संपिष्टं तिलकं लोकमोहनम् ॥ ६ ॥

सिन्दूर, केशर और गोरोचनको आमलेके रसमें पीस तिलक लगानेसे सब मोहित होजातेहैं ॥ ६ ॥

मनःशिलाश्च कर्पूरं पेषयेत्कदलीरसैः ।
तिलकं मोहनं नृणां नान्यथा मम भाषितम् ॥ ७ ॥

मनशिल, कपूरको केलेके रसमें पीस तिलक लगानेसे सब मनुष्योंको मोहित करता है यह मेरा सत्यवचन जानो ॥ ७ ॥

सिन्दूरश्च वचां श्वेतां ताम्बूलरसपेषिताम् ।
अनेनैव तु मंत्रेण तिलकं लोकमोहनम् ॥ ८ ॥

सिन्दूर और सफेद वचको केलेके रसमें पीसकर मंत्रसे अभिमंत्रितकर तिलक लगानेसे सबको मोहलेताहै ॥ ८ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

भृंगराजो ह्यपामार्गो लाजा च सहदेविका ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः ॥ ९ ॥

भांगरा, अपामार्ग, लज्जावंती और सहदेवीको पीस तिलक लगाकर मनुष्य त्रिलोकीको मोहलेताहै ॥ ९ ॥

श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु हरितालञ्च पेषयेत् ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः ॥ १० ॥

सफेद दूर्वाको हरितालके साथ पीस तिलक लगाकर मनुष्य त्रिलोकीको मोह लेता है ॥ १० ॥

गृहीत्वौदुम्बरं पुष्पं वर्तिं कृत्वा विचक्षणः ।
नवनीतेन प्रज्वाल्य कज्जलं कारयेन्निशि ॥ ११ ॥
कज्जलं चाञ्जयेन्नेत्रे मोहनं सर्वतो जगत् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ १२ ॥

बुद्धिमान मनुष्य गूलरके फूलकी वत्ती वनाय मक्खनसे दीपक रात्रिमें वालकर काजल पारै ॥ इस काजल को नेत्रोंमें लगानेसे मनुष्य सब जगत्को मोहित करताहै, यह प्रयोग देवताओंको भी दुर्लभहै अतएव हरएकको न दे ॥ ११ ॥ १२ ॥

श्वेतगुञ्जारसे पेष्यं ब्रह्मदण्डीयमूलकम् ।
लेपमात्रे शरीराणां मोहनं सर्वतो जगत् ॥ १३ ॥

ब्रह्मदंडीको सफेद घुंघुचीके रसमें पीस शरीरमें लेपमात्र करनेसे सब जगत्को मोहित करताहै ॥ १३ ॥

बिल्वपत्रं गृहीत्वा तु छायाशुष्कं तु कारयेत् ।
कपिलापयसा युक्तं वटीं कृत्वा तु गोलकम् ॥ १४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

एभिस्तु तिलकं कृत्वा मोहनं सर्वतो जगत् ।
क्षणेन मोहनं याति प्राणैरपि धनैरपि ॥ १५ ॥

बेलके पत्तोंको ले छायामें सुखाय कपिला गौके दूधमें पीस गोली बनावै ॥ इस गोलीके तिलक लगानेसे सम्पूर्ण जगत् प्राण और धनसे मोहित होजाता है ॥ १४ ॥ १५ ॥

श्वेतार्कमूलमादाय श्वेतचन्दनसंयुतम् ।
अनेन लेपयेद्देहे मोहनं सर्वतो जगत् ॥ १६ ॥

सफेद आककी जडको सफेद चंदनमें मिलाकर शरीरमें लगानेसे सब जगत् मोहित होजाता है ॥ १६ ॥

विजयापत्रमादाय श्वेतसर्षपसंयुतम् ।
अनेन लेपयेद्देहे मोहनं सर्वतो जगत् ॥ १७ ॥

भांगको सफेद सरसोंमें मिलाकर शरीरमें लेप करनेसे सब जगत् मोहित होजाता है ॥ १७ ॥

गृहीत्वा तुलसीपत्रं छायाशुष्कं तु कारयेत् ।
अश्वगंधासमायुक्तं विजयामजसंयुतम् ॥ १८ ॥
कपिलादुग्धसार्द्धेन वटी टंकप्रमाणतः ।
भक्षिता प्रातरुत्थाय मोहनं सर्वतो जगत् ॥ १९ ॥

तुलसीके पत्तोंको छायामें सुखाय असगंध और भांग मिलाकर कपिला-गौके दूधके साथ चार मासेकी गोली बनावै यह गोली प्रातसमय खानेसे मनुष्य सब जगको मोहलेता है ॥ १८ ॥ १९ ॥

कटुतुम्बीबीजतैलं ज्वालयेत्पटवर्त्तिकाम् ।
कज्जलं चाञ्जयेन्नेत्रे मोहनं सर्वतो जगत् ॥ २० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

कड़ुई तोंबीके बीजोंके तेलमें कपडेकी बत्ती डाल दीपक जलाय काजल और फिर उसे नेत्रोंमें लगानेसे सब जगको मोहलेता है ॥ २० ॥

पंचांगदाड़मीं पिष्ट्वा श्वेतगुंजासमन्विताम् ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा मोहनं सर्वतो जगत् ॥ २१ ॥

दाडमीके पंचांग[१]को सफेद घुंघुचीके साथ पीसकर तिलक लगानेसे सब जगतको मोहलेता है ॥ २१ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे मोहनप्रयोगकथनं नाम तृतीयः पटलः ॥ ३ ॥

चतुर्थ पटल ।

स्तम्भन ।

ईश्वर उवाच-अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं स्तंभनाभिधम् ।
यस्य साधनमात्रेण सिद्धिः करतले भवेत् ॥ १ ॥

शिवजी बोले हे दत्तात्रेयजी ! अब स्तम्भनप्रयोगको कहताहूं जिसके साधनसे मनुष्यकी हथेलीमें सिद्धि होजाती है ॥ १ ॥

तत्रादौ संप्रवक्ष्यामि अग्निस्तम्भनमुत्तमम् ।
वसां गृहीत्वा माण्डूकीं कौमारीरसपेषयेत् ॥ २ ॥
मंडूकस्य वचा ग्राह्या कर्पूरेणैव संयुता ।
लेपमात्रे शरीराणामग्निस्तम्भः प्रजायते ॥ ३ ॥

---

१ फल, फूल, पत्ते, छाल और जड़, को वृक्षका पंचांग कहते हैं ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

प्रथम श्रेष्ठ अग्निस्तंभनको कहूंगा, मेढककी चर्बीको लेकर घीग्वारके रसमें पीसकर अथवा मेढककी चर्बीमें वच और कपूरको पीसकर शरीरमें लेप करै तो शरीर अग्निसे नहीं जलेगा ॥ २ ॥ ३ ॥

कुमारीरसयुक्तेन तैलेनाभ्यंगमाचरेत्।
अग्निश्च न दहेदङ्गमग्निस्तम्भः प्रजायते ॥ ४ ॥

घीग्वारके रसमें तेल मिलाय शरीरमें लगानेसे शरीर आगसे नहीं जलताहै ॥ ४ ॥

कदलीरसमादाय कुमारीरसपेषयेत्।
अर्कदुग्धं तथा युक्तमग्निस्तम्भः प्रजायते ॥ ५ ॥

केलेके रसमें घीग्वारका रस और आकका दूध मिलाकर लेपकरनेसे आगसे नहीं जलताहै ॥ ५ ॥

कुमारीरसलेपेन किञ्चिद्वस्तु न दह्यते।
अग्निस्तम्भनयोगोऽयं नान्यथा मम भाषितम् ॥ ६॥

घीग्वारके रसके लेपकरनेसे कोई वस्तु आगसे नहीं जलतीहै, अग्निस्तंभनके योग मेरे कहे सत्य जानो ॥ ६ ॥

पिप्पलीं मरिचं शुंठीं चर्वयित्वा ततः पुनः।
दीप्तांगारं नरो भक्षेन्न ततो दह्यते क्वचित् ॥ ७ ॥

पीपल, मिर्च, गोल और सोंठको चाबकर जलतेहुए अंगारेको मुखमें रखनेसे मुख नहीं जलताहै ॥ ७ ॥

आज्यं शर्करया पीत्वा चर्वयंस्तगरं तथा।
तप्तलोहं लिहेत्पश्चाद्वक्त्रं न दह्यते क्वचित् ॥
अग्निस्तम्भनयोगोयं नान्यथा मम भाषितम् ॥ ८ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

तगरको चाबै ऊपरसे घी और शक्कर पिये तो जलते हुए लोहेको मुखमें रखनेसे मुख नहीं जलेगा इस अग्निस्तंभन योगको मेरा कहा सत्य जानो ॥ ८ ॥

मंत्रः-ॐ नमो अग्निरूपाय मम शरीरस्तंभनं कुरुकुरु स्वहा। अयुतजपात् सिद्धिः।

उपरोक्त मंत्र अग्निस्तंभनका है १०००० जपनेसे यह सिद्ध होजाता है।

स्थानस्तम्भन ।

नृकपाले मृदं क्षिप्त्वा श्वेतगुंजाश्च निर्वपेत्।
गोदुग्धेन तु संसिच्य कुर्य्याद्गुंजालतां शुभाम् ॥ ९ ॥
यस्यांगे तल्लता क्षिप्ता स्थानस्तंभः प्रजायते।
यस्य नाम्ना च लवणैः श्मशानाग्नौ हुनेत्तथा ॥ १० ॥

ओं नमो दिगम्बराय अमुकस्यासनं स्तंभयस्तंभय फट् स्वाहा। अस्य मंत्रस्य लक्षजपात्सिद्धिर्भवति ॥ ११ ॥

मनुष्यकी खोपडीमें मट्टीभरकर सफेद घुंघुचीके बीज बोवै और गौके दूधसे सींचै उसमें जो घुंघुचीकी लता उत्पन्न हो उस लताको जिसके अंगपर डाले उसका आसन स्तंभित होता है और जिसका नाम लेकर श्मशानकी आगमें लवणके साथ मंत्र पढकर उस लताका हवन करे तो उसका आसन स्तंभित होजाताहै ॥ ९ ॥ १० ॥ मंत्र मूलमें स्पष्ट लिखाहै वह एक लक्ष जपनेसे सिद्ध होताहै ॥ ११ ॥

बुद्धिस्तंभन ।

उलूकस्य कपर्वापि तांबूले यस्य दापयेत्।
क्षिप्तं प्रयत्नतस्तस्य बुद्धिस्तंभः प्रजायते ॥ १२ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

भृंगराजो ह्यपामार्गः सिद्धार्थः सहदेविका ।
कोलं बचा च श्वेतार्कस्सत्त्वमेषां समाहरेत् ॥ १३ ॥
लोहपात्रे विनिक्षिप्य त्रिदिनं मर्दयेत्सुधीः ।
ललाटे तिलकं कुर्य्याद् दुष्टबुद्धिः प्रणश्यति ॥ १४ ॥
मंत्रः-ॐ नमो भगवते अमुकस्य स्तंभनं कुरु-
कुरु फट् स्वाहा । लक्षैकजपात्सिद्धिः ॥ १५ ॥

उल्लू पक्षीकी और वन्दरकी विष्टाको पानमें रखकर खिलानेसे बुद्धिस्तंभित होतीहै ॥ १२ ॥ भांगरा, अपामार्ग, सरसों, सहदेयी, कंकोली, वच और सफेद आकके सतको लेकर ॥ १३ ॥ लोहे के पात्रमें डाल तीनदिन तक मंत्र पढताहुआ बुद्धिमान पुरुष मर्द्दन करै चौथे दिन शत्रुके नामसे मस्तकपर तिलक लगाय शत्रुके आगे जानेसे शत्रुकी बुद्धि नष्ट होजातीहै १४॥ मंत्र मूल में लिखाहै । एक लाख जपनेसे सिद्ध होताहै ॥ १५ ॥

शस्त्रस्तंभन ।

पुष्यार्के तु समुद्धृत्य विष्णुक्रान्तां समूलिकाम् ।
वक्त्रे शिरसि धार्य्य तच्छस्त्रस्तम्भः प्रजायते ॥ १६ ॥

रविवारको पुष्यनक्षत्र होनेसे विष्णुक्रान्ताको जडसमेत उखाडकर मुखमें अथवा शिरमें धारण करनेसे शस्त्र स्तंभित होताहै ॥ १६ ॥

पुष्यार्के तु समादाय अपामार्गस्य मूलकम् ।
घृष्ट्वा लिंपेच्छरीरे स्वे शस्त्रस्तम्भः प्रजायते ॥ १७ ॥

रविवारको पुष्यनक्षत्रमें अपामार्गकी जड लाकर घिसकर अपने शरीरमें लगानेसे शस्त्रका असर शरीरपर नहीं होताहै ॥ १७ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

करे सौदर्शनं मूलं बद्ध्वा तालस्य वै मुखे।
केतक्या मस्तके क्षिप्तं खड्गस्तम्भः प्रजायते ॥१८॥

हाथमें सुदर्शनकी जड, मुखमें ताडकी जड और मस्तकमें केतकीकी जड धारणकरनेसे उसपर खड्ग असर नहीं करताहै ॥ १८ ॥

एतानि त्रीणि मूलानि चूर्णितानि घृतं पिबेत्।
आयाताऽनेकशस्त्राणां समूहं स निवारयेत् ॥ १९॥

सुदर्शनकी जड, ताडकी जड और केतकीकी जडका चूर्णकर घीमें मिलाकर मंत्रसे अभिमंत्रितकर पीनेसे चलते हुए अनेक प्रकार शस्त्रोंको वह निवारण करताहै अर्थात् कोई शस्त्र उसके शरीरमें नहीं लगताहै ॥ १९ ॥

खर्जूरी मुखमध्यस्था करे बद्धा च केतकी।
भुजदण्डस्थितं चार्कं सर्वशस्त्रनिवारणम् ॥ २० ॥

खजूरको मुखमें रख हाथमें केतकी और भुजदंडमें आकको बाँधनेसे सब शस्त्रोंका निवारण होताहैं ॥ २० ॥

गृहीत्वा रविवारे च बिल्वपत्रं सुकोमलम्।
पिष्ट्वा विषसमं चैव शस्त्रस्तम्भनलेपनम् ॥ २१ ॥

रविवारके दिन कोमल बेलके पत्तोंको लावै और विष मिलाकर पीसके लेप करनेसे शस्त्रका स्तम्भन होता है ॥ २१ ॥

पुष्यार्के श्वेतगुञ्जाया मूलमुद्धृत्य धारयेत्।
हस्ते शस्त्रभयं नास्ति संगरे च कदाचन ॥ २२ ॥

मन्त्रः-ॐ नमो भगवते महाबलपराक्रमाय शत्रूणां शस्त्रस्तम्भनं कुरु २ स्वाहा। लक्षैकजपात्सिद्धिः।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

रविवारके दिन पुष्यनक्षत्रमें सफेद घुंघुचीकी जड उखाडकर हाथमें धारण करनेसे संग्राममें शस्त्रका भय नहीं रहता है । 'ॐ नमो भगवते' से 'स्वाहा' तक स्तम्भन मंत्र हैं, एकलाख जपनेसे सिद्ध होता है ॥ २२ ॥

सेनास्तम्भन ।

चिताङ्गारेण विलिखेन्मन्त्रं पात्रे च मृन्मये ।
रिपुनामयुतं तच्च जलकुण्डे विनिक्षिपेत् ॥ २३ ॥

चिताके अंगारेसे मट्टीके पात्रमें मंत्र पढकर शत्रुका नाम लिख जलके कुंडमें डालनेसे सेनास्तम्भन होता है ॥ २३ ॥

मन्त्रभावे गृहीत्वा तु श्वेतगुंजां विधानतः ।
निखनेत्तु श्मशाने च पाषाणैस्तपिधापयेत् ॥ २४ ॥

मंत्र पढकर सफेद घुंघुचीको लाकर श्मशानमें गाडै ऊपरसे पत्थर रखदे २४

अष्टौ च योगिनीः पूज्य ऐन्द्रीं माहेश्वरीं तथा ।
वाराहीं नारासिंहीं च वैष्णवीं च कुमारिकाम् ॥२५॥
लक्ष्मीं ब्राह्मीं च सम्पूज्य गणेशं वटुकं तथा ।
क्षेत्रपालं तथा पूज्य सेनास्तम्भो भविष्यंति ॥ २६ ॥
पृथक् पृथक् बलिं दद्यात्तस्य नामाभिभागतः ।
मद्यं मांसं तथा पुष्पं धूपं दीपं बलिक्रिया ॥ २७ ॥

१ ऐन्द्री २ माहेश्वरी ३ वाराही ४ नारसिंही ५ वैष्णवी ६ कुमारिका ७ लक्ष्मी ८ ब्राह्मी आठों योगिनीका एवं गणेश, बटुक और क्षेत्रपालका पूजन करके पृथक् २ मद्य, मांस, पुष्प, धूप, दीपकी मंत्रपूर्वक बलिदे तो सेनाका स्तम्भन होजाता है ॥ २५–२७ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

ॐ नमः कालरात्रि शूलधारिणि मम शत्रुसेना-स्तंभनं कुरु २ स्वाहा । लक्षजपात्सिद्धिः ॥

उपरोक्त सेनास्तंभनका मंत्र है, एक लाख जपनेसे मंत्र सिद्ध होताहै ॥

सेनापलायन ।

भौमवारे गृहीत्वा तु काकोलूकस्य पक्षकौ ।
भूर्जपत्रे लिखेन्मंत्रं तस्य नामसमन्वितम् ॥ २८ ॥
गोरोचनैर्गले बद्धा काकोलूकस्य पक्षकौ ।
सेनानीसन्मुखं गच्छेन्नान्यथा शंकरोदितम् ॥ २९ ॥

मंगलवारके दिन कौआ और उल्लूके परोंसे भोजपत्रपर मंत्र लिख शत्रुके नामसे अभिमंत्रित कर कौआ और उल्लूके पर गलेमें बांध सेनाके सन्मुख जाय तो निश्चय सेना भागजातीहै ॥ २८ ॥ २९ ॥

शब्दमात्रे सैन्यमध्ये पलायन्ते सुनिश्चितम् ।
राजा प्रजा गजाद्याश्च नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ३० ॥

उपरोक्त प्रयोगका अनुष्ठान करके सेनामें जाय ललकारनेसे राजा, प्रजा और हाथी आदि निश्चय भागजातेहैं ॥ ३० ॥

ॐ नमो भयंकराय खड्गधारिणे मम शत्रुसैन्यपलायनं कुरु २ स्वाहा । लक्षैकजपात्सिद्धिः ।

उपरोक्त सेनापलायनका मंत्र एक लाख जपनेसे सिद्ध होताहै ।

मनुष्यस्तंभन ।

ऋतुमत्या योनिवस्त्रे लिखेद्गोरोचनैर्नरम् ।
तन्नाम्ना प्रक्षिपेत्कुंभे नरस्तंभः प्रजायते ॥ ३१ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

रजस्वला स्त्रीके योनिके वस्त्रपर गोरोचनसे मनुष्यका चित्र बनाय उसके नामसे अभिमंत्रित कर घडेमें बंदकरदेनेसे मनुष्यका स्तंभन होजाताहै ॥३१॥

गोमहिष्यादिपशुस्तंभन ।

उष्ट्रस्यास्थि चतुर्दिक्षु निखनेद् भूतले ध्रुवम् ।
तदा धेनुमहिष्यादिपशुस्तंभः प्रजायते ॥ ३२ ॥

ऊंटकी हड्डीको जिस पशुके स्थानमें चारों ओर गाडदे तो भैंसआदि पशुका स्तंभन होजाताहै ॥ ३२ ॥

मेघस्तम्भन ।

इष्टकासम्पुटं कृत्वा तस्मिन्मेघं समालिखेत् ।
श्मशानभस्मना स्थाप्यं भूमौ स्तम्भः प्रजायते॥३३॥

दो ईंटोंका संपुट बनाय बीचमें चिताकी भस्मसे मेघ लिखकर भूमिमें गाड-देनेसे मेघ स्तम्भित होताहै ॥ ३३ ॥

निद्रास्तम्भन ।

मधुना बृहतीमूलैरञ्जयेल्लोचनद्वयम् ।
निद्रास्तम्भो भवेत्तस्य नान्यथा मम भाषितम्॥३४॥

कटेरीकी जडको शहतमें घिसकर दोनों नेत्रोंमें लगानेसे निद्रा स्तंभित होजाती है॥ ३४ ॥

नौकास्तंभन ।

भरण्यां क्षीरकाष्ठस्य कीलं पञ्चांगुलं खनेत् ।
नौकामध्ये तदा नौकास्तम्भनं जायते ध्रुवम् ॥३५॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

भरणीनक्षत्रमें गूलरकी लकडीकी पांच अंगुलकी कील बनाय नौकाकी पेंदीमें गाडनेसे नौका स्तंभित होती है ॥ ३५ ॥

गर्भस्तंभन ।

पुष्यार्केण तु गृह्णीयात्कृष्णधत्तूरमूलकम् ।
कट्यां बद्ध्वा गर्भिणीनां गर्भस्तम्भः प्रजायते ॥३६ ॥

रविवारके दिन पुष्यनक्षत्रमें काले धतूरेकी जडको लाय कमरमें बांधनेसे गर्भिणी स्त्रीका गर्भ नहीं गिरता है ॥ ३६ ॥

तंदुलीमूलकं चैव देयं तंदुलवारिणा ।
धत्तूरमूलचूर्णन्तु योनिस्थं गर्भधारणम् ॥ ३७ ॥

चौलाईकी जडको चावलोंके पानीके साथ पीनेसे तथा धतूरेकी जडका चूर्ण पोटलीमें रख योनिमें धरनेसे गर्भ नहीं गिरता है ॥ ३७ ॥

ललना शर्करा पाठा कुन्दश्च मधुनान्वितः ।
भक्षितो वारयत्येव पतन्तं गर्भमञ्जसा ॥ ३८ ॥

केशर, मिंश्री, पाठा और कुंदको शहतके साथ खानेसे गिरता हुआ गर्भ रुकजाता है ॥ ३८ ॥

कुलालपाणिसंलग्नः पंकः क्षौद्रसमन्वितः ।
अजाक्षीरेण संपीतो गर्भस्तम्भं करोत्यलम् ॥ ३९ ॥

कुम्हारके हाथमें लगीहुई मट्टीमें शहत मिलाय बकरीके दूधके साथ पीनेसे गर्भ नहीं गिरता है ॥ ३९ ॥

ॐ नमो भगवते महारौद्राय गर्भस्तंभनं कुरु २ स्वाहा । लक्षजपात्सिद्धिः ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

उपरोक्त मंत्र गर्भस्तंभनका है, एक लाख जपनेसे सिद्ध होताहै, इस मंत्र से अभिमंत्रित करके जल पिलानेसे भी गर्भ नहीं गिरताहै ।

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे श्रीदत्तात्रेयेश्वरसंवादे स्तंभनकथनं नाम चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

पंचम पटल ।

विद्वेषण ।

ईश्वर उवाच–विद्वेषं नरनारीणां विद्वेषं राजमंत्रिणोः ।
महाकौतुकविद्वेषं शृणु सिद्धिं प्रयत्नतः ॥ १ ॥

शिवजी बोले हे दत्तात्रेयजी ! पुरुष स्त्रियोंका विद्वेष, राजा और मंत्रियोंका विद्वेष और महाकौतुककारी विद्वेषकी सिद्धिको यत्नसे सुनो ॥ १ ॥

एकहस्ते काकपक्षमुलूपक्षं करे परे ।
मंत्रयित्वा मिलत्यग्रे कृष्णासूत्रेण वेष्टयेत् ।
यद्गृहे निखनेद्भूमौ विद्वेषस्तस्य जायते ॥ २ ॥

एक हाथमें कौआका पंख और दूसरे हाथमें उल्लूके पंखको ले दोनोंके अग्रभागको मिलाय काले सूतसे लपेटकर जिसके घरमें गाडे उसको विद्वेष होता है ॥ २ ॥

गृहीत्वा गजकेशं च गृहीत्वा सिंहकेशकम् ।
गृहीत्वा मृत्तिकां पादतलाद्धि निखनेद्भुवि ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

तदुपरि स्थापयेदग्निं मालतीपुष्पं होमयेत् ।
विद्वेषं कुरुते तस्य नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ४ ॥

हाथीके बाल और सिंहके बाल लेकर शत्रुके पैरके नीचेकी मट्टी ले पृथ्वीमें गाडदे ॥ तिसके ऊपर अग्निको स्थापित कर मालतीके फूलोंसे जिनके नामसे हवन करै उनमें विद्वेष होजाताहै ॥ ३ ॥ ४ ॥

मार्जारकमूषकयोर्विष्ठामादाय यत्नतः ।
विद्वेष्यपादतलतो मृदमादाय मिश्रयेत् ॥ ५ ॥
जपेन्मंत्रशतं कुर्यान्नरपुत्तलिकां शुभाम् ।
नीलवस्त्रेण संवेष्ट्य तद्गृहे निखनेद्यदि ।
विद्वेषो जायते शीघ्रं पुत्रपित्रोरपि ध्रुवम् ॥ ६ ॥

बिल्ली और चूहेकी बिष्ठाको लेकर जिनमें वैर करानाहो उन्हींके पैरतलेकी मट्टी लेकर मिलावे ॥ फिर उस मट्टीको सौवार मंत्रसे अभिमंत्रित कर मनुष्यके आकारकी पुतली बनावै फिर नीले कपडेसे पुतलीको लपेट घरमें गाढदेनेसे पुत्र और पितामें भी वैर होजाताहै ॥ ५ ॥ ६ ॥

चिताभस्मयुतं बभ्रुसर्पयोर्दन्तचूर्णकम् ।
पृथक् पुत्तलिकां कृत्वा तत्तन्नाम्नाभिमंत्रिताम् ।
उद्याने निखनेद्भूमौ विद्वेषो जायते ध्रुवम् ॥ ७ ॥

चिताकी भस्ममें नौले और सर्पके दांतोंका चूर्ण मिलाय दो पुतली बनावै फिर जिनमें वैर करानाहै उनके नामसे अभिमंत्रित कर दोनों पुतलियोंको अलग २ बगीचेकी भूमिमें गाडदे तो दोनोंमें बैर होजाता है ॥ ७ ॥

गजकेसरिणोर्दन्तान्नवनीतेन पेषयेत् ।
यन्नाम्ना हूयते चाग्नौ तयोर्विद्वेषणं भवेत् ॥ ८ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

हाथी और सिंहके दांतोंका चूर्ण मक्खनमें मिलाकर जिनके नामसे हवन कियाजाय उनमें वैर होजाता है ॥ ८ ॥

अश्वकेशं गृहीत्वा च माहिषकेशसंयुतम् ।
सभायां दीयते धूपो विद्वेषो जायते क्षणात् ॥ ९ ॥

घोडे और भैंसेके बालोंकी जिनके नामसे सभामें धूप दे तो उनमें वैर होजाता है ॥ ९ ॥

गृहीत्वा सल्लकीकंटं निखनेद्भुवि द्वारके ।
कलहो जायते नित्यं तद्गृहे नात्र संशयः ॥ १० ॥

सेहीके कांटेको लेकर जिसके द्वारपर गाडे तो उस घरमें निःसंदेह कलह होताहै ॥ १० ॥

यस्य कस्य भवेद्द्वेषो यावज्जीवं भवेत्तदा ।
तत्पादमृत्तिकायुक्तां शत्रुपांसुसमन्विताम् ॥ ११ ॥
पुत्तली क्रियते सम्यक् श्मशाने निखनेद्भुवि ।
विद्वेषो जायते सत्यं सिद्धयोग उदाहृतः ॥ १२ ॥

जिस किसीमें जन्मभर वैर कराना हो तो उन दोनोंके पैरतलेकी मट्टीकोले परस्परमें मिलाय दो पुतली बनाकर चिताकी भूमिमें पृथक् २ शत्रुके नामसे अभिमंत्रितकर गाडदेनेसे निश्चय इस सिद्धयोगसे विद्वेष होजाता है ११॥१२॥

मंत्रः-ॐनमो नारदाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषं कुरुकुरुस्वाहा । लक्षैकजपात्सिद्धिः ।

उपरोक्त विद्वेषकारक मंत्र एकलाख जपनेसे सिद्ध होजाता है ।

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे विद्वेषणप्रयोगो नाम पंचमः पटलः ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

षष्ठ पटल ।

उच्चाटन.

ईश्वर उवाच-अथाग्रे संप्रवक्ष्यामि उच्चाटनविधिं परम् ।
यस्य साधनमात्रेण भवेदुच्चाटनं नृणाम् ॥ १ ॥

शिवजी बोले-अब मैं उच्चाटनविधिको कहताहूं, जिसके साधनमात्रसे मनुष्योंका उच्चाटन होताहै ॥ १ ॥

येनाहृतं गृहं क्षेत्रं कलत्रं धनपुत्रकम् ।
उच्चाटनं वधं कुर्याच्छृणु योगीन्द्र यत्नतः ॥ २ ॥

हे योगिराज ! (दत्तात्रेयजी) जिसने घर, खेत, स्त्री, पुत्रादिका हरण किया हो उसका उच्चाटन और मारण करै (अब उसको) सुनो ॥ २ ॥

ब्रह्मदंडीं चिताभस्म शिवलिङ्गे प्रलेपयेत् ।
सिद्धार्थेन च संयुक्तं शनिवारे क्षिपेद्गृहे ॥ ३ ॥
उच्चाटनं भवेत्तस्य स्त्रीपुत्रैर्बान्धवैस्सह ।
उच्चाटनं परं चैतन्नान्यथा मम भाषितम् ॥ ४ ॥

ब्रह्मदंडी, चिताकी भस्म और सरसों मिलाय शिवलिङ्गपर लेपकर शनीचरके दिन मंत्रसे अभिमंत्रित कर जिसके घरमें डाले उसका स्त्री, पुत्र और कुटुम्बीजनोंके साथ उच्चाटन होजाताहै यह शङ्करका सत्य वचन है ॥३॥४॥

गृहीत्वा रासभीं धूलीं वामपादेन निश्चितम् ।
मध्याह्ने भौमवारे च यद्गृहे प्रक्षिपेन्नरः ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

उच्चाटनं भवेत्तस्य जायते मरणान्तकम् ।
विना मन्त्रेण सिद्धिश्च सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ६ ॥

जिस स्थानमें गदहा लेटाहो उस स्थानकी धूलिको मंगलके दिन दुपहरके समय बायें पैरसे उठाकर जिसके घरमें फेंकीजाय उसका जीवनपर्यन्त उच्चाटन होताहै यह विना मंत्रके सिद्धि देनेवाला सिद्ध प्रयोग है ॥ ५ ॥ ६ ॥

सिद्धार्थाञ्छिवनिर्माल्यं यद्गेहे निखनेन्नरः ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य उद्धृते च पुनः सुखी ॥ ७ ॥

सरसों और शिवनिर्माल्यको ले मनुष्य जिसके घरमें गाडदे उसका उच्चाटन होताहै जब उखाडाजाय तब वह मनुष्य सुखी होताहै ॥ ७ ॥

काकपक्षान् रवेर्वारे यद्गेहे निखनेन्नरः ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य नान्यथा मम भाषितम् ॥ ८ ॥

काकके पंखको रविवारके दिन लेकर मनुष्य जिसके घरमें गाड दे उसका निश्चय उच्चाटन होता है ॥ ८ ॥

घूकपक्षं भौमवारे यद्गेहे निखनेन्नरः ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य विना मन्त्रेण सिद्ध्यति ॥ ९ ॥

उल्लू पक्षिके पर मंगलके दिन लेकर जिसके घर मनुष्य गाड दे उसका उच्चाटन होता है यह विनाही मंत्रके सिद्ध होता है ॥ ९ ॥

घूकविष्ठां च संगृह्य सिद्धार्थेन समन्विताम् ।
यस्याङ्गे निक्षिपेच्चूर्णं सद्य उच्चाटनं भवेत् ॥ १० ॥

उल्लू पक्षीकी बीटमें सरसों मिलाय सुखाकर पीसले फिर उस चूर्णको जिसके अंगपर डाले उसका तत्काल उच्चाटन होजाता है ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

गृहीत्वौदुम्बरं कीलं मंत्रेण चतुरंगुलम् ।
यस्य वै निखनेद्द्वारे स्यात्तस्योच्चाटनं ध्रुवम् ॥ ११ ॥

चार अंगुलकी गूलरकी लकडी मंत्रसे अभिमंत्रित कर जिसके दरवाजेपर गाडे उसका उच्चाटन होजाता है ॥ ११ ॥

काकोलूकस्य पक्षाणि यस्य चुल्यां खनेद्रवौ ।
यन्नाममन्त्रयोगेन स्यात्तस्योच्चाटनं ध्रुवम् ॥ १२ ॥

कौआ और उल्लू पक्षीके परको रविवारके दिन जिसके चूल्हेमें मंत्रसे अभिमंत्रितकर गाडे उसका उच्चाटन होता है ॥ १२ ॥

नरास्थिकीलमादाय निखनेच्चतुरंगुलम् ।
मन्त्रयुक्तं रिपोर्द्वारे शीघ्रमुच्चाटनं भवेत् ॥ १३ ॥

चारअंगुल मनुष्यके हड्डीकी कील मंत्रसे अभिमंत्रितकर शत्रुके दरवाजे गाडनेसे शीघ्रही उच्चाटन होजाता हैं ॥ १३ ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय करालाय अमुकं
पुत्रबांधवैस्सह शीघ्रमुच्चाटय उच्चाटय स्वाहा
ठः ठः ठः । मन्त्रस्यायुतजपात्सिद्धिः ॥

'ओंनमो भगवते' से 'ठः ठः ठः' तक उच्चाटनका मंत्रहै यह विधानसे दश हजार जपनेपर सिद्ध होजाता है ।

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे उच्चाटनप्रयोगो
नाम षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

सप्तम पटल ।

सर्वजनवशीकरण.

ईश्वर उवाच-अथाग्रे संप्रवक्ष्यामि वशीकरणमुत्तमम् ।
यत्प्रयोगाद्वशं यांति नरा नार्यश्च सर्वशः ॥ १ ॥

शिवजी बोले-(हे दत्तात्रेयजी !) अब श्रेष्ठ वशीकरण प्रयोग वर्णन करताहूं जिसके करनेसे सम्पूर्ण नर नारी वशमें होजातेहैं ॥ १ ॥

ब्रह्मदंडीवचाकुष्ठचूर्णं ताम्बूलमध्यतः ।
दापयेद्यं रवौ वारे स वश्यो वर्त्तते सदा ॥ २ ॥

रविवारके दिन ब्रह्मदंडी, वच और कुटके चूर्णको पानमें रखकर जिसे दिलवादे वह सदा वशीभूत रहताहै ॥ २ ॥

गृहीत्वा वटमूलं च जलेन सह घर्षयेत् ।
विभूत्या संयुतं भाले तिलकं लोकवश्यकृत् ॥ ३ ॥

बडकी जडको जलमें घिसकर विभूति मिलाय मस्तकमें तिलक लगानेसे मनुष्य सबजनोंको वशीभूत करताहै ॥ ३ ॥

पुष्ये पुनर्नवामूलं करे समभिमंत्रितम् ।
बद्ध्वा सर्वत्र पूज्योसौ सर्वलोकवशंकरः ॥ ४ ॥

पुष्य नक्षत्रमें मंत्रसे अभिमंत्रितकर पुनर्नवाकी जडको हाथमें बांधनेसे मनुष्य सर्वत्र पूजनीय होकर सबको वशीभूत करताहै ॥ ४ ॥

कपिलापयसा युक्तं पिष्ट्वापामार्गमूलकम् ।
ललाटे तिलकं कृत्वा वशीकुर्य्याज्जगत्त्रयम् ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

चिरचिटकी जडको कपिला गौके दूधमें पीस मस्तकमें तिलक लगानेसे मनुष्य त्रिलोकीको वशीभूत करताहै ॥ ५ ॥

गृहीत्वा सहदेवीं च छायाशुष्कां तु कारयेत् ।
ताम्बूलेन तु त च्चूर्ण सर्वलोकवशंकरम् ॥ ६ ॥

सहदेईको छायामें सुखाय चूर्णकर पानके साथ खिलानेसे सब जनोंको वश करताहै ॥ ६ ॥

रोचनासहदेवीभ्यां तिलको लोकवश्यकृत ॥ ७ ॥

गोरोचन और सहदेईका तिलक लगानेसे मनुष्य सब जनोंको वशीभूत करताहै ॥ ७ ॥

गृहीत्वौदुम्बरं मूलं ललाटे तिलकं चरेत् ।
प्रियो भवति सर्वेषां दृष्टमात्रो न संशयः ॥ ८ ॥

गूलरकी जडका तिलक मस्तकमें लगानेसे मनुष्य देखतेही सबको प्रिय होजाताहै और पानमें रखकर गूलरकी जड सेवन करानेसे सब जनोंको वशीभूत करताहै ॥ ८ ॥

सिद्धार्थदेवदाल्योश्च गुटिकां कारयेद् बुधः ।
मुखे निक्षिप्य भाषेत सर्वलोकवशंकरम् ॥ ९ ॥

सरसों और देवदालीकी गोली बनाय मुखमें रखकर भाषण करनेसे मनुष्य सब जनोंको वशीभूत करताहै ॥ ९ ॥

कुंकुमं नागरं कुष्टं हरितालं मनःशिला ।
अनामिकाया रक्तेन तिलकं सर्ववश्यकृत् ॥ १० ॥

केसर, सोंठ, कुट, हरताल और मनशिलमें अनामिका अंगुलीका रुधिर मिलाय मस्तकपर तिलक लगानेसे मनुष्य सबको वशीभूत करताहै ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

गोरोचनं पद्मपत्रं प्रियंगू रक्तचन्दनम् ।
एषां तु तिलकं भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥ ११ ॥

गोरोचन, कमलपत्र, कांगनी और लालचन्दनको मस्तकमें लगाकर मनुष्य सबको वश करताहै ॥ ११ ॥

गृहीत्वा श्वेतगुंजां च छायाशुष्कां तु कारयेत ।
कपिलापयसा सार्द्धं तिलकं लोकवश्यकृत् ॥ १२ ॥

सफेद घुंघुचीको छायामें सुखाय कपिला गौके दूधमें घिस तिलक लगानेसे मनुष्य सबको वशमें करताहै ॥ १२ ॥

श्वेतार्कं च गृहीत्वा च च्छायाशुष्कं तु कारयेत् ।
कपिलापयसा सार्द्धं तिलकं लोकवश्यकृत् ॥ १३ ॥

सफेद आकको छायामें सुखाय कपिला गौके दूधके साथ घिस तिलक लगानेसे मनुष्य सबको वशीभूत करताहै ॥ १३ ॥

श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु कपिलादुग्धमिश्रिताम् ।
लेपमात्रे शरीराणां सर्वलोकवशंकरम् ॥ १४ ॥

सफेद दूबको कपिला गौके दूधमें मिलाय शरीरपर लेप करनेसे मनुष्य सबको वश करताहै ॥ १४ ॥

बिल्वपत्रं तु संग्राह्यं मातुलुंगं तथैव च ।
अजादुग्धेन तिलकं सर्वलोकवशंकरम् ॥ १५ ॥

बेलकी पत्ती बिजौरानींबूके रसमें पीस बकरीका दूध मिलाय तिलक लगानेसे मनुष्य सबको वशीभूत करता है ॥ १५ ॥

कुमारीमूलमादाय विजयाबीजसंयुतम् ।
तिलकं क्रियते भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥ १६ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

घीग्वारकी जड और भांगके बीजोंका तिलक बनाय मस्तकपर लगानेसे मनुष्य सबको वशीभूत करता है ॥ १६ ॥

हरितालं चाश्वगन्धा सिंदूरं कदलीरसः ।
एषां तु तिलकं भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥ १७ ॥

हरताल, असगंध और सिन्दूरको केलेके रसमें मिलाय मस्तकपर तिलक लगानेसे मनुष्य सब जनोंको वश करता है ॥ १७ ॥

अपामार्गस्य बीजानि च्छागदुग्धेन पेषयेत् ।
अनेन तिलकं भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥ १८ ॥

चिरचिटेके बीजोंको बकरीके दूधमें पीस उसका मस्तकपर तिलक लगानेसे मनुष्य सब जनोंको वश करताहै ॥ १८ ॥

ताम्बूलं तुलसीपत्रं कपिलादुग्धपेषयेत् ।
अनेन तिलकं भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥ १९ ॥

पान और तुलसीके पत्तोंको कपिला गौके दूधमें पीस मस्तकपर तिलक लगानेसे मनुष्य सबको वशीभूत करताहै ॥ १९ ॥

ॐ नमो नारायणाय सर्वलोकान्मम वशान्कुरु-
कुरु स्वाहा (अस्य मन्त्रस्यायुतजपात्सिद्धिः) ॥

'ओं नमो नारायणाय' से 'स्वाहा' तक सर्वजनवशीकरणका मंत्र है, यह दशहजार जपनेसे सिद्ध होताहै ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे सर्वलोकवशीकरणं
नाम सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

अष्टम पटल।

स्त्रीवशीकरण.

रविवारे गृहीत्वा तु कृष्णधत्तूरपुष्पकम् ।
शाखां लतां गृहीत्वा तु पत्रं मूलं तथैव च ॥ १ ॥

महादेवजी बोले (हे दत्तात्रेयजी !) रविवारके दिन काले धतूरेको पुष्प, शाखा, लता, पत्ते और जडसहित लावे ॥ १ ॥

पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनं समम् ।
तिलकः स्त्रीवशकरो यदि साक्षादरुन्धती ॥ २ ॥

और उसमें कपूर, केशर एवं गोरोचन मिलाय तिलक बनाकर मस्तकपर लगावे तो अरुन्धतीकी समान स्त्रीको भी वशीभूत करताहै ॥ २ ॥

काकजंघा वचा कुष्ठं शुक्रं शोणितमिश्रितम् ।
दत्ते तु भोजने बाला वशीकरणमद्भुतम् ॥ ३ ॥

काकजंघा[1], वच और कूठको (चूर्णकर) अपने वीर्य और रक्तमें मिलाय जिस स्त्रीको भोजनमें दे तो अद्भुत वशीकरण होताहै ॥ ३ ॥

चिताभस्म वचा कुष्ठं रोचनाकुंकुमैः समम् ।
चूर्णं स्त्रीशिरसि क्षिप्तं वशीकरणमद्भुतम् ॥ ४ ॥

चिताकी भस्म, वच, कूठ, गोरोचन और केसरको समान भाग लेकर चूर्ण बनाय स्त्रीके शिरपर डालनेसे अद्भुत वशीकरण होताहै ॥ ४ ॥

---

१ काकजंघानामकी जडी होतीहै।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

भौमवारे लवङ्गं च लिङ्गच्छिद्रे विनिक्षिपेत ।
बुधे निष्कास्य ताम्बूले दद्यात्सा वशगा भवेत् ॥५॥

मंगलके दिन लौंगको लिंगके छिद्रमें रक्खे और बुधके दिन उसे निकाल पानमें रख जिस स्त्रीको खिलावै वह वशीभूत होजातीहै ॥ ५ ॥

करपादनखानां च भस्म ताम्बूलपत्रके ।
रविवारे प्रदातव्यं वशीकरणमद्भुतम् ॥ ६ ॥

हाथ पैरोंके नखोंकी भस्म बनाय पानमें रख रविवारके दिन जिस स्त्रीको दीजाय वही वशीभूत होजातीहै ॥ ६ ॥

जिह्वामलं दन्तमलं नासाकर्णमलं तथा ।
ताम्बूलेन प्रदातव्यं वशीकरणमद्भुतम् ॥ ७ ॥

जीभका मैल, दाँतोंका मैल, नाकका मैल और कानके मैलको ले पानमें रख स्त्रीको देनेसे अद्भुत वशीकरणहोता है ॥ ७ ॥

घूकमांसं गृहीत्वा तु खाद्ये पेये प्रदापयेत ।
सिद्धयोगो ह्ययं ज्ञेयो वशीकरणमद्भुतम् ॥ ८ ॥

उल्लू पक्षीका मांस खिलाने पिलानेसे अद्भुत वशीकरण होताहै इसको सिद्धयोग जानो ॥ ८ ॥

वामपादतलात्पांसुं वनितायाः शनौ हरेत ।
तस्य पुत्तलिकां कुर्य्यात्तस्याः केशान्नियोजयेत् ॥९॥
नीलवस्त्रैर्वेष्टयित्वा स्ववीर्यं तु भगे क्षिपेत् ।
सिन्दूरेण समायुक्तं निखनेद्वारदेशके ॥ १० ॥
उल्लङ्घनाद्वशं याति प्राणैरपि धनैरपि ।
कृतज्ञः स्ववशं कुर्य्यान्मोक्ते च चिरं भुवि ॥ ११ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

शनिके दिन स्त्रीके बायें पैरके तलेकी धूलि लेकर पुतली बनावे और उस स्त्रीके केश पुतलीके केशके स्थानपर लगावै ॥ नीले कपडेमें लपेटी उस पुतलीके भगमें अपना वीर्य डाले और मस्तकपर सिंदूर लगाय दरवाजे पर गाढ दे ॥ उस स्थानको लांघनेसे वह स्त्री धन और प्राणसे मनुष्यके वशीभूत होजातीहै, कृतज्ञ पुरुष ऐसे स्त्रीको वशकर चिर कालतक आनन्द भोगता है ॥ ९–११ ॥

ताम्बूलरसमध्ये च पिष्ट्वा तालं मनःशिलाम् ।
भौमे च तिलकं कृत्वा वशीकुर्य्याच्च योषितः॥१२॥

मंगलके दिन पानके रसमें मनशिलको पीस तिलक लगानेसे मनुष्य स्त्रियोंको वशीभूत करताहै ॥ १२ ॥

गोरोचनं पद्मपत्रे लिखित्वा तिलकं कृतम् ।
शनिवारे कृते योगे वशीभवति निश्चितम् ॥ १३ ॥

शनिवारके दिन गोरोचनसे कमलके पत्तेपर स्त्रीका नाम लिख फिर उसीका तिलक लगानेसे निश्चय ही स्त्री वशीभूत होजाती है ॥ १३ ॥

गृहीत्वा मालतीपुष्पं कृत्वा तु पटवर्तिकाम् ।
भृगुवारे नृकपाले एरंडतैलकज्जलम् ॥ १४ ॥
अञ्जयेन्नेत्रयुगले दृष्टिमात्रे वशीभवेत् ।
विना मन्त्रेण सिद्धिः स्यान्नान्यथा मम भाषितम्१५॥

चमेलीके फूलोंको सूतके कंपडेमें लपेट बत्ती बनाय अंडीके तेलमें शुक्रवारके दिन मनुष्यकी खोपडीके बीच दीपक जलाय काजल पारै ॥ फिर उस काजलको दोनों नेत्रोंमें आंजै तो उसके देखते ही स्त्रियें वशीभूत होजाती हैं, मेरा कहा यह सिद्ध प्रयोग है इसमें मंत्रकी भी आवश्यकता नहीं है ॥ १४ ॥१५॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

ॐ नमः कामाक्ष्यै देव्यै अमुकां मे वशं कुरु कुरु स्वाहा। (सपादलक्षजपात्सिद्धिर्भवति)।

'ॐ नमः कामाक्ष्यै' से 'स्वाहा' तक स्त्रीवशीकरणका मंत्र है सवालाख जपनेसे यह सिद्ध होता है।

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे स्त्रीवशीकरणं नामाष्टमः पटलः ॥ ८ ॥

नवम पटल।

पुरुषवशीकरण.

गोरोचनं योनिरक्तं कदलीरससंयुतम्।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा पतिं तु स्ववशं नयेत् ॥ १ ॥

महादेवजी बोले (हे दत्तात्रेयजी!) गोरोचन, योनिरक्त और केलेका रस मिलाय तिलक बनाकर लगानेसे स्त्री अपने पतिको वश करलेती है ॥ १ ॥

पञ्चांगं दाडिमं पिष्ट्वा श्वेतसर्षपसंयुतम्।
योनिलेपे पतिं दासं करोत्येव च दुर्भगा ॥ २ ॥

अनारके पंचांग और सफेद सरसोंको पीस योनिपर लेपकर दुर्भगा भी स्त्री अपने पतिको दास बनालेती है ॥ २ ॥

गृहीत्वा मालतीपुष्पं कटुतैलेन पाचितम्।
भगे यल्लेपयेन्नारी रतौ मोहयते पतिम् ॥ ३ ॥

चमेलीके फूलोंको कडुवे तेलमें पचाय जो स्त्री सम्भोग समयमें अपने काममंदिरमें लेपकरे तो वह अपने पतिको मोहित करलेती है ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा । (अस्य लक्षजपात्सर्वसिद्धिः) ।

'ॐ नमो महायक्षिण्यै' से 'स्वाहा' तक पतिवशीकरणका मंत्र है, यह लाखवार जप करनेसे सिद्ध होता है ।

राजवशीकरण ।

कुंकुमं चन्दनं चैव कर्पूरस्तुलसीदलम् ।
गवां क्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं परम् ॥ ४ ॥

केशर, चन्दन, कपूर और तुलसीदलको गौके दूधमें पीस तिलक लगानेसे राजाको वश करताहै ॥ ४ ॥

हरितालं चाश्वगंधा कर्पूरश्च मनशिला ।
अजाक्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं परम् ॥ ५ ॥

हरताल, असगंध, कपूर और मनशिलको बकरीके दूधमें मिलाय तिलक लगानेसे मनुष्य राजाको वशीभूत करताहै ॥ ५ ॥

तालीसकुष्ठतगरैर्लिप्तां क्षौमीं सुवर्तिकाम् ।
सिद्धार्थतैले निक्षिप्य कज्जलं नरमस्तके ॥ ६ ॥
पातयेदंजनात्तस्मात्सर्वदा भुवनत्रये ।
दृष्टिगोचरमायांतः सर्वो भवति दासवत् ॥ ७ ॥

तालीस, कूट, तगर, इनको पीस रेशमी वस्त्रमें लपेट वत्ती बनाय मनुष्यकी खोपडीमें सरसोंका तेल भर बत्ती जलाय कज्जल पारै ॥ इस काजलको नेत्रोंमें लगाने से जो कोई मनुष्य दृष्टिगोचर हो वही दासके समान वश होजाताहै ॥ ६ ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

करे सौदर्शनं मूलं बद्धा राजप्रियो भवेत् ।
सिंहीमूलं हरेत्पुष्ये कटौ बद्धा नृपप्रियः ॥ ८ ॥

सुदर्शनकी जडको हाथमें बाँधनेसे राजाका प्रिय होताहै । काकडासिंही की जडको पुष्य नक्षत्रमें लाकर कमरमें बाँधे तो राजाका प्यारा होताहै ॥८॥

हरेत्सौदर्शनं मूलं पुष्यभे रविवासरे ।
कर्पूरं तुलसीपत्रं पिष्ट्वा तु वस्त्रलेपने ॥ ९ ॥
विष्णुक्रान्ताबीजतैले तस्य प्रज्वाल्य दीपकम् ।
कज्जलं पारयेद्रात्रौ शुचिपूर्वं समाहितः ॥ १० ॥
कज्जलं चाञ्जयेन्नेत्रे राजवश्यकरं परम् ।
चक्रवर्ती भवेद्वश्यो ह्यन्यलोकस्य का कथा ॥ ११ ॥

रविवारके दिन पुष्यनक्षत्र होनेपर सुदर्शनकी जड लाय कपूर और तुलसीदलोंके साथ पीसकर वस्त्रपर लेपन करै ॥ पीछे विष्णुक्रान्ताके बीजोंके तेलमें उसकी बत्ती बनाय दीपक जलाकर रात्रिमें कज्जल पारै ॥ उस काजलको नेत्रोंमें लगानेसे राजाको वश करता है, इस काजलके प्रतापसे चक्रवर्ती राजा भी वशीभूत होजाता है औरकी बातही क्या है ॥ ९–११ ॥

भौमवारे दर्शदिने कृत्वा नित्यक्रियां शुचिः ।
वने गत्वा ह्यपामार्गवृक्षं पश्येदुदङ्मुखः ॥ १२ ॥
तत्र विप्रं समाहूय पूजां कृत्वा यथाविधि ।
कर्षमेकं सुवर्णस्य दद्यात्तस्मै द्विजन्मने ॥ १३ ॥
तस्य हस्तेन गृह्णीयादपामार्गस्य बीजकम् ।
मौनेन स्वगृहे गच्छेत्कृत्वा बीजांस्तु निस्तुषान् ॥ १४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

रमेशं हृदये ध्यात्वा राजानं खादयेच्च तान् ।
येन केनाप्युपायेन यावज्जीवं भवेद्वशे ॥ १५ ॥

मंगलवारी अमावस्याके दिन स्नान पूजन आदि नित्यकी क्रियाको कर वनमें जाय उत्तरको मुखकरके अपामार्गके वृक्षको देखे ॥ और उसस्थानमें ब्राह्मणको बुलाय विधानसे उस वृक्षका पूजन करै फिर पूजाकराई सोलह मासे सुवर्ण ब्राह्मणको दे ॥ उस ब्राह्मणके हाथसे अपामार्गके बीजोंको निक-लवाय उन बीजोंको लेकर अपने घर मौनभावसे चलाआवे फिर बीजोंकी भूसी निकाल दे ॥ रमेशका ध्यान कर किसी उपायसे यह राजाको खिलादे तो जीवनपर्यन्त राजा वशीभूत रहे ॥ १२–१५ ॥

अपामार्गस्य बीजन्तु गृहीत्वा पुष्यभास्करे ।
खाने पाने प्रदातव्यं राजवश्यकरं परम् ॥ १६ ॥

रविवारके दिन पुष्यनक्षत्र होनेपर अपामार्गके बीज लाय खानपानमें देनेसे राजा वश होता है ॥ १६ ॥

ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपतिं मे वश्यं कुरुकुरु स्वाहा ॥ (एकलक्ष-जपान्मन्त्रसिद्धिः) ।

'ॐ नमो भास्कराय' से 'स्वाहा' तक राजवशीकरणका मंत्र है यह एक लाख जपनेसे सिद्ध किया जाता है ।

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे राजवश्यो नाम
नवमः पटलः ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

दशम पटल।

आकर्षण प्रयोग.

ईश्वर उवाच–आकर्षणविधिं वक्ष्ये शृणु सिद्धं प्रयत्नतः ।
राज्ञः प्रजायाः सर्वेषां सत्यमाकर्षणं भवेत् ॥ १ ॥

शिवजी बोले (हे दत्तात्रेयजी!) अब सिद्ध आकर्षणकी विधिको कहताहूं तुम सावधानीसे सुनो जिससे राजा प्रजा आदि सबका सच्चा आकर्षण होताहै ॥ १ ॥

कृष्णधत्तूरपत्राणां रसे गोरोचनं युतम् ।
श्वेतचण्डातलेखन्या भूर्जपत्रे लिखेत्ततः ॥ २ ॥
मन्त्रनाम लिखेन्मध्ये तापयेत्खादिराग्निना ।
शतयोजनगो वापि शीघ्रमायाति नान्यथा ॥ ३ ॥

काले धतूरेके पत्तोंके रसमें गोरोचन मिलाय सफेद कनेरकी कलमसे भोजपत्रपर मंत्र लिखे ॥ मंत्रके बीच अमुकके स्थानमें जिसका नामलिखे और खैरकी आगसे तपावे तो सौयोजनतक पहुँचाहुआ भी शीघ्र आजाताहै ॥ २ ॥ ३ ॥

नृकपाले लिखेन्मन्त्रं रोचनाकेशरैस्सह ।
तापयेत्खादिराङ्गारे त्रिसन्ध्यासु प्रयत्नतः ।
मन्त्रं जपेत्सुसंसिद्धं कर्षयेदुर्वशीमपि ॥ ४ ॥

मनुष्यकी खोपडीमें गोरोचन और केशरसे मंत्रको लिख खैरके अंगारेसे तीनों संध्याओंमें तपावे और मंत्रको जपे तो उर्वशी अप्सराको भी आकर्षित करलेगा ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

ब्रह्मदंण्डीं समादाय पुष्यार्के तां तु चूर्णयेत् ।
कामार्तां कामिनीं दृष्ट्वा उत्तमाङ्गे विनिक्षिपेत् ।
पृष्ठतः सा समायाति नान्यथा मम भाषितम् ॥ ५ ॥

रविवारके दिन पुष्य नक्षत्र होनेपर ब्रह्मदंडीको लाकर चूर्ण करै और कामपीडित कामिनीके शिरपर वह चूर्ण डाले तो कामिनी पीछे २ चली-आतीहै यह मेरा सत्यवचन जानो ॥ ५ ॥

अनामिकाया रक्तेन लिखेन्मन्त्रं तु भूर्जके ।
यस्य नाम लिखेन्मध्ये मधुमध्ये च निक्षिपेत् ॥ ६ ॥
तदा आकर्षणं याति सिद्धयोग उदाहृतः ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम् ॥७ ॥

अनामिका उंगलीके रक्तसे भोजपत्रपर मंत्रके बीच जिसका नाम लिख-कर शहतमें डालदे ॥ उसका आकर्षण होता है, इस सिद्धयोगको जिस किसीको नहीं दे यह मेरा सत्य वचन है ॥ ६ ॥ ७ ॥

ॐ नमो आदित्यरूपाय अमुकस्याकर्षणं कुरु-
कुरु स्वाहा । (अयुतजपान्मंत्रसिद्धिः) ॥

'ॐ नमो आदित्य–'से॰'स्वाहा' तक आकर्षणका मंत्र हैं यह दशहजार जपनेसे सिद्ध होता है ।

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे आकर्षणप्रयोगो
नाम दशमः पटलः ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

एकादश पटल ।

इन्द्रजाल.

ईश्वर उवाच-इन्द्रजालं विना रक्षा जायते न सुनिश्चितम् ।
रक्षामंत्रो महामंत्रः सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ १ ॥

शिवजी बोले (हे दत्तात्रेयजी !) विना इन्द्रजालके जाने निश्चित रूपसे रक्षा नहीं होती है अत एव अब इन्द्रजाल और रक्षाके मंत्र (कहताहूं) जो सब सिद्धियोंको देनेवाले हैं ॥ १ ॥

ॐ नमो नारायणाय विश्वंभराय इन्द्रजालकौतुकानि दर्शयदर्शय सिद्धिं कुरुकुरु स्वाहा ॥
(एकलक्षजपान्मंत्रसिद्धिः)

उपरोक्त इन्द्रजालका कौतुकादि दिखानेका मंत्र है यह एक लक्ष जपनेसे सिद्ध होता है ।

ॐ नमः परब्रह्मपरमात्मने मम शरीररक्षां कुरुकुरु स्वाहा । (अयुतजपान्मंत्रसिद्धिर्भवति) ॥

उपरोक्त शरीरकी रक्षाका मंत्र है, यह दशहजार जपनेसे सिद्ध होता है ।

वेष्टितं घुणतालस्य पंचांगैः कनकं तथा ।
दृष्टिमात्राद्दृष्टिबन्धं नान्यथा मम भाषितम् ॥ २ ॥

घुणतालवृक्षके पंचांगको और धतूरेके पंचांगको मिलाय (गलेमें बांधे) तो दृष्टिमात्रसे दृष्टिबंध होता है यह मेरा सत्य वचन है ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

कार्पासबीजं सर्पास्ये भौमवारे च रोपयेत् ।
उद्भूतं बीजकार्पासं बालैरण्डस्य तैलके ।
तद्वर्त्तिं ज्वालयेद्रात्रौ सर्पवद्दृश्यते ध्रुवम् ॥ ३ ॥

मंगलके दिन सर्पके मुखमें कपासके बीज बोवे उस्से जो कपास उत्पन्न हो उसकी बत्ती बनाय अंडीके तेलमें डाल रात्रिमें दीपक जलावे तो सर्प ही सर्प दिखाई दें ॥ ३ ॥

वृश्चिकस्य मुखे बीजं क्षिपेत्कार्पासकं तथा ।
तद्वर्त्तिं ज्वालयेद्रात्रौ वृश्चिको भवति ध्रुवम् ॥
वर्त्तिशान्तिः प्रकर्त्तव्या महाकौतुकशामिका ॥ ४ ॥

बीछूके मुखमें कपासके बीज बोदे, जब कपास उत्पन्न हो तव उसकी बत्ती बनाय रात्रिके समय दीपक जलावे तो बीछीही बीछी दृष्टि आवें, बत्ती के निकालनेपर महाकौतुक शान्त होजातेहैं ॥ ४ ॥

भौमे कार्पासबीजानि नकुलस्य मुखे क्षिपेत् ।
संध्यायां ज्वालयेद्वर्त्तिं नकुलो दृश्यते ध्रुवम् ॥ ५ ॥

मंगलके दिन कपासके बीजोंको नौलेके मुखमें छोडे फिर कपास होनेपर उसकी बत्ती वनाय संध्यासमय दीपकमें जलानेसे नौलेही नौले दीख पडते हैं ॥ ५ ॥

उलूकस्य कपाले तु घृतदीपेन कज्जलम् ।
पारयित्वांजयेन्नेत्रे रात्रौ पठति पुस्तकम् ॥ ६ ॥

उल्लू पक्षीकी खोपडीमें घीका दीपक जलाय काजल पारे फिर उस काजलको नेत्रोंमें लगानेसे रात्रिमें पुस्तक पढ़सक्ताहै ॥ ६ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

चन्द्रे कार्पासबीजानि मार्जारस्य मुखे क्षिपेत् ।
तद्वर्त्तिं ज्वालयेद्रात्रौ मार्जारो दृश्यते ध्रुवम् ॥ ७ ॥

सोम वारको बिल्लीके मुखमें कपासके बीज डाले फिर बत्ती बनाकर रात्रिः में दीपक जलानेसे बिल्लीही बिल्ली दीखती हैं ॥ ७ ॥

एवं यस्य मुखे क्षिप्तं तदुद्भवसुवर्त्तिकम् ।
दीपं प्रज्वालयेद्रात्रौ दृश्यते हि सुनिश्चितम् ॥ ८ ॥

इस प्रकार जिसके मुखमें कपासके बीज बोवे फिर उसकी बत्ती वनाकर रात्रिमें जलावे तो वह निश्चय दृष्टि आता है ॥ ८ ॥

ये च केचन जीवाश्च वर्तते जगतीतले ।
क्षिप्त्वा मुखेऽकोलबीजं निक्षिपेत्पृथिवीतले ॥ ९ ॥

तद्बीजं मुखमध्यस्थं त्रिलोहे वेष्टितं कुरु ।
तद्रूपी च भवेत्सद्यो नान्यथा मम भाषितम् ॥ १० ॥

पृथिवीमें जितने जीव हैं उनमेंसे किसीके मुखमें अंकोलके बीजोंको भर पृथ्वीमें गाड दे ॥ उन बीजोंसे जो वृक्ष उत्पन्न हो उसके बीजोंको लोंहेके त्रिकोण यंत्रमें लपेटकर मुखमें रक्खे तो मनुष्य उसी जीवके समान अन्य पुरुषोंके दृष्टि आवे ॥ ९ ॥ १० ॥

खञ्जरीटं सजीवन्तु गृहीत्वा फाल्गुने क्षिपेत् ।
पञ्जरे रक्षयेत्तावद्यावद्भाद्रपदो भवेत् ॥ ११ ॥
अदृश्यो जायते सत्यं नेत्रेणापि न दृश्यते ।
करेण तु शिखा ग्राह्या रूप्ययंत्रे च निक्षिपेत् ॥ १२॥
गुटिका मुखमध्यस्था अदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ १३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

जीवित खंजन पक्षीको फाल्गुनके महीनेमें लेकर पिंजरेमें बन्द करे और भादोंतक उसे रहनेदे ॥ भादोंके महीनेमें वह खंजन निश्चय नेत्रोंसे नहीं दीखेगा तब उसको हाथसे पकडकर उसकी चोटी उखाड ले और उस चोटीको चाँदी मढाकर गुटका बनाय मुखमें रक्खे तो निश्चय अदृश्य होजाताहै अर्थात् दूसरोंको नहीं दीखता है ॥ ११–१३ ॥

अंकोलस्य तु बीजानि निक्षिप्य तैलमध्यतः ।
धूपं दत्त्वा तु तत्तैलं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ १४ ॥
तडागे निक्षिपेत्पाद्मं बीजं तत्तैलसंयुतम् ।
तत्क्षणाज्जायते योगिंस्तडागात्कमलोद्भवः ॥ १५ ॥
तत्तैलमाम्रबीजे तु निक्षिपेद्बिन्दुमात्रतः ।
आम्रवृक्षस्तदुत्पन्नः क्षणमात्रात्फलान्वितः ॥ १६ ॥

अंकोलके बीजोंको तेलमें डालदे फिर धूप दे तो वह तेल सिद्धिदायक होजाताहै ॥ कमलके बीजोंको तेलमें भिगोकर तलावमें डाले तो उसी समय कमलके फूल उत्पन्न होते हैं ॥ यदि उस तेलको बूंदभरभी आमकी गुठलीपर डालदियाजाय तो उसीसयय फलसहित आमका वृक्ष उत्पन्न होजाताहै ॥ १४–१६ ॥

घूकविष्ठां गृहीत्वा त्वैरंडतैलेन पेषयेत् ।
यस्यांगे निक्षिपेद्बिन्दुमदृश्यो जायते नरः ॥ १७ ॥

उल्लूपक्षीकी वीठको अंडीके तेलमें मिलाय जिसके अंगपर बूंदभर डालदियाजाय तो वह अदृश्य होजाताहै ॥ १७ ॥

मातुलुङ्गस्य बीजानां तैलं ग्राह्यं प्रयत्नतः ।
लेपयेत्ताम्रपात्रे तन्मध्याह्ने च विलोकयेत् ॥ १८ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

बिजौरे नींबूके बीजोंका तेल यत्नसे निकाल ताम्रपत्रपर लगाय मध्याह्न कालके सूर्यके सामने रखकर देखे-॥ १८ ॥

रथेन सह चाकाशे दृश्यते भास्करो ध्रुवम् ।
विना मंत्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धयोग उदाहृतः ॥१९॥

तो रथ सहित सूर्य भगवान् आकाशमें दिखाई पडेंगे यह सिद्ध योग विनाही मंत्रके सिद्धि देताहै ॥ १९ ॥

वाराहीक्रान्तिकामूलं सिद्धार्थस्नेहलेपितम् ।
मुखे प्रक्षिप्य लोकानां दृष्टिबन्धं करोत्यलम्॥ २० ॥

बिलाईकंद और कटेलीकी जडको सरसोंके तेलमें मिलाय जिसके मुखपर फेंके तो उसकी दृष्टि बँधजातीहै ॥ २० ॥

भौमवारे गृहीत्वा तु मृत्तिकां रिपुमूत्रतः ।
कृकलासमुखे क्षिप्त्वा कंकवृक्षं च बंधयेत् ॥ २१ ॥
मूत्रबंधो भवेत्तस्य उद्धते च पुनः सुखी ।
विनामंत्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धयोग उदाहृतः ॥ २२ ॥

मंगलके दिन शत्रुके मूत्रस्थानकी मट्टी लेकर गिरगिटके मुखमें भर धतूरेके वृक्षसे बांध दे ॥ तो उस शत्रुका मूत्र बन्द होजाताहै जब गिरगटको खोल उसके मुखसे मिट्टी निकाले तब सुखी होजाताहै, यह सिद्ध योग विंनाही मंत्रसे सिद्धि देताहै ॥ २१ ॥ २२ ॥

रविवारे सकृद्धन्याद्दीर्घतुंडीं तदा निशि ।
ततः सोमे गृहीत्वा तु मृत्तिकां रिपुमूत्रतः ॥ २३ ॥
तच्चर्म्मणि क्षिपेच्छत्रुमूत्रबन्धनकारिका ।
उद्धृते च सुखी चैव सिद्धयोग उदाहृतः ॥ २४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

रविवारके दिन रात्रिसमय एकही वारमें छछूंदरको मारे सोमवारको शत्रुके मूत्रस्थानकी मिट्टी लाकर ॥ उस मारीहुई छछूंदरकी खालमें भरे तो शत्रुका मूत्र बंद होजाता है (यदि उस खालमें मट्टीभरीहुई छछूंदरके लकडी मारे तो शत्रुको पीडा होनेलगती है, मूत्र बंदहोनेसे कष्ट पाकर शत्रु मरजाता है) जब छछूंदरकी खालसे मिट्टी निकाललीजाय तब सुखी होजाता है ॥ २३ ॥ २४ ॥

सिन्दूरं गंधकं तालं समं पिष्ट्वा मनःशिलाम् ।
धृते तल्लिप्तवस्त्रे तु ध्रुवमग्निश्च जायते ॥ २५ ॥

सिन्दूर, गंधक, हरताल और मनशिलको समान ले पीस वस्त्रपर लेप करे तो वह वस्त्र निश्चय अग्निके समान दिखाई देगा ॥ २५ ॥

श्वेताञ्जनं समादाय पुष्यागस्त्यरसेन च ।
पिष्ट्वा सप्तदिनं यावदष्टमेऽह्नि यथाविधि ॥ २६ ॥
अञ्जनं चाञ्जयेन्नेत्रे दृश्यन्ते चाह्नि तारकाः ॥ २७ ॥
कुक्कुटस्याण्डमादाय तच्छिद्रे पारदं क्षिपेत् ॥
सन्मुखे भास्करं कृत्वा आकाशं गच्छति ध्रुवम्॥२८॥
विना मंत्रेण सिद्धिश्च सिद्धयोग उदाहृतः ॥ २९ ॥

सफेद सुरमेको अगस्त्यके रसमें सात दिनतक घोटे आठवें दिन विधानपूर्वक ॥ उस अंजनको आखोंमें लगानेसे दिनमें तारे दृष्टि आतेहैं ॥ मुर्गीके अंडेमें पारा भर सूर्यके सामने धरनेसे वह अंडा निश्चय आकाशको उडजाता है ॥ यह सिद्ध योग बिनाही मंत्रसे सिद्धि देता है ॥ २६–२९ ॥

अर्कक्षीरं वटक्षीरं क्षीरमौदुम्बरं तथा ।
गृहीत्वा पात्रके क्षिप्तं जलपूर्णं करोति च
दुग्धं सञ्जायते तत्र महाकौतुककौतुकम् ॥ ३० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

आकका दूध, बरगदका दूध और गूलरका दूध लेकर पात्रमें डाले पीछे उस पात्रको जलसे भरदे तो उस जलका दूध ही दूध विदित होगा यह महा-कौतुक है॥ ३० ॥

गृहीत्वा विजयाबीजं तत्तैल तु समाहरेत् ।
तत्तैलमहिफेनञ्च विषं जातीफलं तथा ॥ ३१ ॥
धत्तूरबीजचूर्णन्तु गृहीत्वा च समं समम् ।
नवनीतेन तैलेन सर्वमौषधपेषणम् ॥ ३२ ॥
अष्टयामकृते तंत्रे महाकौतुककौतुकम् ।
तत्तैलबिन्दुमात्रेण लिंगलेपं च कारयेत् ॥ ३३ ॥
भोगेच्छा सर्वदा तस्य दृढं दीर्घं भविष्यति ॥ ३४ ॥

भांगके बीजोंका तेल निकाले उस तेलमें अफीम, विष, जायफल और धतूरेके बीजोंका चूर्ण समान भाग मिलाय मक्खन वा तेलसे सब औषधियोंको आठ पहरतक खरल करै ॥ तो वह महाकौतुक रूप होजाताहै उस तेलकी बूंदभी यदि कामध्वजापर लगाई जाय तो भोगकी इच्छा सदा रहै एवं लिंग दृढ और दीर्घ होजायगा ॥ ३१–३४ ॥

षण्मुखं मृत्तिकाभाण्डं गृहीत्वा रविवासरे ।
तस्य मध्ये स्थापयेत्तदर्ककीलं नवांगुलम् ॥ ३५ ॥
श्वेतदूर्वासंयुतं हि चाश्वगन्धामनःशिला ।
ताम्बूलसंयुतं कृत्वा तुलसीदलमेव च ॥ ३६ ॥
अपामार्गस्य पत्रन्तु धात्रीपत्रं तथैव च ।
वटपत्रं तथा मध्ये घृतं मिष्टान्नदुग्धके ॥ ३७ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

मुखं वस्त्रेण संवेष्ट्य निखनेत्सस्यमध्यके ।
तस्योपरि भूर्जपत्रे यंत्रं पंचदशं लिखेत् ॥ ३८ ॥
शलभाखुमृगाणां च शृगालानां तथैव हि ।
पशुपक्षिनराणाञ्च चौराणां कीलनं भवेत् ॥ ३९ ॥
वसुन्धरा सस्यपूर्णा न विघ्नैः परिभूयते ।
यस्मैकस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम् ॥४०॥

रविवारके दिन छःमुखकी मट्टीकी हाँडी लाकर उसमें नौ अंगुलकी आकके वृक्षकी कील रक्खे और उसमें सफेद दूब, असगंध, मनशिल, पान, तुलसीका दल अपामार्गके पत्ते, आँमलेके पत्ते, बरगदके पत्ते, घी, मीठा, दूध डाले पीछे उस हाँडीके मुखको वस्त्रसे लपट धान्ययुक्त क्षेत्र (हरेभरेखेत) में जाकर गाड दे उसके ऊपर भोजपत्रपर पन्द्रहका यंत्र लिखकर स्थापित करै तो टीडी, मृग, मूषक, सियार, तथा वनैले जीवजन्तु, पशु, पक्षी, मनुष्य, चोर आदिका कीलन उसी समय होजाताहै और वह भूमि (जिसमें हाँडी गाडी है) धान्यसे परिपूर्ण होतीहै किसी प्रकारका विघ्न नहीं होता यह प्रयोग प्रत्येक मनुष्यको नहीं देना चाहिये ॥ ३९–४० ॥

पुष्यार्के तु समानीय मूलं श्वेतार्कसम्भवम् ।
अंगुष्ठप्रमितां तस्य प्रतिमां तु प्रपूजयेत् ॥ ४१ ॥
गणनाथस्वरूपन्तु भक्त्या रक्ताश्वमारजैः ।
कुसुमैश्चापि गन्धाद्यैर्हविष्याशी जितेन्द्रियः ॥ ४२ ॥
पूजयेन्नाममंत्रैश्च तद्बीजानि नमोन्तकैः ।
यान्यान्प्रार्थयते कामानेकमासेन तांल्लभेत् ॥ ४३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

प्रत्येककामसिद्धयर्थं मासमेकं प्रपूजयेत् ।
गणेशबीजमाह । ॐ अंतरिक्षाय स्वाहा ।
अनेन मंत्रेण पूजयेत् । ॐ ह्रीं पूर्वदयां ॐ
ह्रीं फट्स्वाहा ॥ रक्ताश्वमारजपुष्पाणि
क्षौद्रयुतानि जुहुयात् । वांछितं ददाति । ॐ
ह्रींश्रीं मानसँसिद्धिकरीं ह्रीं नमः ।अनेन मंत्रेण
रक्तकुसुममेकं जप्त्वा नित्यं क्षिपेत् । ततो भग-
वती वरदा अष्टगुणानामेकं गुणं ददाति ॥ ४४ ॥

पुष्यनक्षत्रयुक्त रविवारको सफेद आककी जडको अंगूठे बराबर लाय उसकी प्रतिमा बनाय पूजन करै ॥ फिर हविष्यान्न (खीर) खाय इन्द्रियोंको जीत श्रीगणेशजीके स्वरूपका भक्तिके साथ लाल कनेरके फूल और चन्दनादिस ॥ उन्हींके (गणेशजीके) बीजमंत्रके अंत 'नमः' शब्द युक्त करके पूजनकरै और जिस कामनासे करै वह कामना एक मासमें पूर्ण होजायगी ॥ प्रत्येक मनोरथकी सिद्धिके निमित्त एक मास पूजन करना चाहिये 'ॐ अन्तारिक्षाय स्वाहा' यह गणेशजीका बीजमंत्र है । 'ॐ ह्रीं पूर्वदयां ॐ ह्रीं फट् स्वाहा' इनको पढ लालकनेरके फूलोंकी हवनमें आहुति दे इस भांतिसे करनेपर देवता मनोरथ पूर्ण करते हैं । इसके अतिरिक्त "ह्रीं श्रीं मानसिद्धिकरीं ह्रीं नमः" इस मंत्रको पढकर प्रतिदिन हाथमें लालफूल लेकर चढावै, तो वरदेनेवाली भगवती आठ गुणोंमेंसे एक गुण देती हैं ॥ ४१–४४ ॥

कृत्तिकायां स्नुहीवृक्षवन्दाकं धारयेत्करे ।
वाक्यसिद्धिर्भवेत्तस्य महाश्चर्यमिदं स्मृतम् ॥ ४५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

कृत्तिका नक्षत्रमें थूहरके वन्देको हाथमें बांधनेसे वाक्यसिद्धि होती है यह महा आश्चर्ययुक्त प्रयोग है ॥ ४५ ॥

अनेन ग्राहयेत्स्वातीनक्षत्रे बदरीभवम् ।
वन्दाकं तत्करे धृत्वा यद्वस्तु प्रार्थ्यते जनैः ॥ ४६ ॥
तत्क्षणात्प्राप्यते सर्वमत्र मंत्रस्तु कथ्यते ।
ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा ॥ अनेन ग्राहयेत् ॥ ४७ ॥

स्वाति नक्षत्रमें पूर्वोक्त मंत्रसे बेरीके वन्देको लाकर हाथमें बाँध जिस वस्तुको चाहे ॥ वह वस्तु उसको उसी समय प्राप्त होजातीहै. 'ॐ अन्तारिक्षाय स्वाहा' इसी मंत्रसे वंदाको अभिमंत्रित करके बाँधे ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे इन्द्रजालकौतुकदर्शनं नामैकादशः पटलः ॥ ११ ॥

द्वादश पटल।

यक्षिणीसाधन.

ईश्वर उवाच-शृणु सिद्धं महायोगिन्यक्षिणीमंत्रसाधनम् ॥
यस्य साधनमात्रेण नृणां सर्वे मनोरथाः ॥ १ ॥

शिवजी बोले-हे महायोगिन् ! (दत्तात्रेयजी) अब यक्षिणीसाधनकी विधिको सुनो जिस्के अनुष्ठानसे मनुष्योंके सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होतेहैं ॥ १॥

आषाढीपूर्णिमायां च कृत्वा क्षौरादिकाः क्रियाः ।
सितेज्ययोरमौढ्ये तु साधयेद्यक्षिणीं नरः ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

. प्रतिपद्दिनमारभ्य श्रावणेन्दुबलान्विते ।
मासमात्रं प्रयोगं तु निर्विघ्नेन समाचरेत् ॥ ३ ॥

आषाढके महीनेमें पूर्णमासीके दिन क्षौर आदि कराकर गुरु, शुक्रके उदयमें मनुष्य यक्षिणीसाधन करै ॥ किसी आचार्यके मतसे चन्द्रमाके बलवान होने पर श्रावणवदी प्रतिपदासे यक्षिणीसाधनका आरम्भ करैं और इस प्रयोगको एक मासमें विघ्नरहित समाप्त करै ॥ २ ॥ ३ ॥

निर्जने बिल्ववृक्षस्य मूले कुर्याच्छिवार्चनम् ।
षोडशोपचारकैस्तु रुद्रपाठसमन्वितम् ॥ ४ ॥

निर्जन स्थानमें बेलके वृक्षकी जडमें बैठकर शिवजीका षोडशोपचारसे रुद्रपाठके साथ पूजन करै ॥ ४ ॥

त्र्यम्बकेत्यस्य मंत्रस्य जपं पंचसहस्रकम् ।
दिवसेदिवसे कृत्वा कुबेरस्य च पूजनम् ॥ ५ ॥

'त्र्यंबकं यजामहे–इस मंत्रका पांचहजार जप करै और प्रतिदिन कुबेरजीका पूजन करै ॥ ५ ॥

यक्षराज नमस्तुभ्यं शंकरप्रियबान्धव ।
एकां मे वशगां नित्यं यक्षिणीं कुरु ते नमः ॥ ६ ॥
इति मंत्रं कुबेरस्य जपेदष्टोत्तरं शतम् ।
ब्रह्मचर्य्येण मौनेन हविष्याशी भवेद्दिवा ॥ ७ ॥

शंकरजीके प्यारे बन्धु हे यक्षराज ! तुमको प्रणाम हो आप कृपाकरके एक यक्षिणीको मेरे आधीन करदो ॥ उपरोक्त छटा श्लोक कुबेरजीका मंत्र है । इस मंत्रको मौनधारणकर ब्रह्मचर्यके साथ एकसौ आठवार जपैं और दिनमें हविष्यान्नको भोजन करैं ॥ ६ ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

अथ यक्षिण्यः कथ्यन्ते–१ महायक्षिणी २ सुरसुन्दरी ३ मनोहरी ४ कनकावती ५ कामेश्वरी ६ रतिकरी ७ पद्मिनी ८ नटी ९ अनुरागिणी १० विशाला ११ चन्द्रिका १२ लक्ष्मी १३ शोभना १४ मदना इन्हीं चौदह यक्षिणियोंका साधन इस ग्रंथमें वर्णन किया है।

महायक्षिणीसाधन।

रात्रेस्तु मध्यमे यामे विनिद्रो मितभोजनः।
बिल्ववृक्षं समारुह्य जपेन्मंत्रमिमं सदा ॥ ८ ॥

मंत्रस्तु–ॐह्रींक्लींऐंश्रींमहायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः ॥

अर्द्धरात्रिमें निद्राको त्याग अल्प भोजन कर वेलके वृक्षकी जडमें आसन लगाय "ॐ ह्रीं क्लीं ऐं श्रीं महायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः" इस मंत्रको निरन्तर जपै ॥ ८ ॥

इति मंत्रस्य च जपं सहस्रत्रयसंमितम्।
कुर्याद्बिल्वसमारूढो मासमात्रमतंद्रितः ॥ ९ ॥
मध्वामिषबलिं तत्र कल्पयेत्संस्कृतं पुरः।
नानारूपधरा तत्रागमिष्यति च यक्षिणी ॥ १० ॥

उपरोक्त मंत्रका बेलके नीचे बैठ एक महीनेतक निद्राको त्याग तीनहजार मंत्र जपै ॥ और मदिरा मांसकी बलि दे, बलिको पहिलेहीसे अपने समीप रखलेवे क्योंकि अनेक रूपोंको धारणकर वहाँपर यक्षिणी आवेगी ॥९॥ १० ॥

तां दृष्ट्वा न भयं कुर्याज्जपेत्संसक्तमानसः।
यस्मिन्दिने बलिं भुक्त्वा वरं दातुं समर्थयेत ॥११॥
तदा वरान्वै वृणुयात्तांस्तान्वै मनसेप्सितान्।
चेत्प्रसन्ना यक्षिणी स्यात्सर्वं दद्यान्न संशयः ॥ १२ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

उस आई यक्षिणीको देख निर्भयतासे जप करतारहै जब वह वलिको ग्रहण-कर वरदेनेको तैय्यारहो ॥ तब जो जो इच्छा हो सोसो उससे मांगले, यक्षिणी प्रसन्नहोकर निःसन्देह सब कुछ देतीहै ॥ ११ ॥ १२ ॥

अशक्तस्तु द्विजैः कुर्य्यात्प्रयोगं सुरपूजितम् ।
सहायानथ वा गृह्य ब्राह्मणैः साधयेद्व्रतम् ॥ १३ ॥

यदि इसका अनुष्ठान करनेमें समर्थ न हो तो ब्राह्मणोंकी सहायतासे इसका साधन करै ॥ १३ ॥

तिस्रः कुमारिका भोज्याः परमान्नेन नित्यशः॥१४॥
सिद्धे धनादिके चैव सदा सत्कर्म चाचरेत् ।
कुकर्मणि व्ययश्चेत्स्यात्सिद्धिर्गच्छति नान्यथा ॥१५॥

और प्रतिदिन उत्तम अन्नसे तीन कुमारियोंको भोजन करावै ॥ यक्षिणीके सिद्ध होनेपर जो धन मिले उसे सत्कार्यमें लगावै यदि असत् कार्यमें वह धन लगेगा तो सिद्धि जातीरहेगी ॥ १४ ॥ १५ ॥

सुरसुन्दरीसाधन ।

ॐ ह्रीं आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा इति मंत्रः।
पवित्रगृहं गत्वा पूजनं कृत्वा गुग्गुलधूपं दत्त्वा त्रिसंध्यं पूजयेत्त्रिसहस्रं नित्यं जपेत् । मासाभ्यन्तरे आगतायै चन्दनोदकेनार्घो देयः ॥ मातृभगिनीभार्य्याकृत्यं करोति । यदा माता भवति सिद्धद्रव्याणि ददाति । यदि भगिनी भवति तदा ह्यपूर्वं वस्त्रं ददाति । यदि भार्या

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

भवति तर्हि सर्वैश्वर्यं सर्वेषां परिपूरयेत् । वर्ज-येदन्यस्त्रिया सहशयनम् । अन्यथा विनश्यति ॥१६॥

'ॐ ह्रींआगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा' यह सुरसुन्दरीका मंत्र है । पवित्र-स्थानमें जाय पूजन करै फिर गूगलकी धूपदे तीनों संध्याओंमें पूजनकर प्रतिदिन तीनहजार मंत्रका जपकरै तो एक मासके भीतरही सुरसुन्दरी आती है, आनेके समय जलमें चन्दन मिलाय उस जलसे अर्घ्यदे। माता, बहन और स्त्री इन तीन रीतिसे वह साधकके संग रहती है । माता बनकर रहनेसे सिद्ध द्रव्य देती है । बहन बनकर रहनेसे वह अपूर्व वस्त्र देती है और स्त्री बनकर रहनेसे सब प्रकारके ऐश्वर्य देकर साधकका मनोरथ पूर्ण करती है । जब स्त्री बनकर रहे तब साधक अन्यस्त्रीके साथ शयन न करे करनेसे मरजाता है॥१६॥

मनोहरीसाधन ।

नदीसंगमे गत्वा चन्दनेन मंडलं कृत्वा अगरु-धूपं दत्त्वा मासोपरि आगतां पूजयेत् । यदा आगच्छति तदा चन्दनेनार्घो देयः । पुष्पफलै-रेकचित्तेनार्चनं कर्त्तव्यम् । अर्द्धरात्रे नियत-मागच्छति । आगतायां सत्यामाज्ञां देहि सुवर्णशतं च प्रतिदिनं ददाति ॥ ॐआग-च्छतु मनोहरि स्वाहा ॥ मंत्रः ॥ १७ ॥

मनोहरी यक्षिणीके साधन करनेके लिये नदीके संगममें जाय चन्दनसे मंडल बनाकर अगरूकी धूपदे महीनेके उपरान्त यक्षिणीके आनेके लिये पूजन करै । जब आवें तब चन्दनका अर्घदे पुष्प फलादिद्वारा एकाग्र मनसे पूजन

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

करै । आधीरातके समय सुरसुन्दरी आती है आनेपर सत्य आज्ञा दे तो प्रसन्न होकर प्रतिदिन सौ सुवर्णमुद्रा देती है । इसका मंत्र मूलमें स्पष्ट लिखा है १७॥

कनकावतीसाधन ।

ॐ ह्रीं कनकावति मैथुनप्रिये स्वाहा ॥ मंत्रः ॥
वटवृक्षतलं गत्वा मद्यं मासं च दापयेत् । एकसहस्रमन्त्रान् जपेत् । एवं सप्तदिनं कुर्यात् । अष्टमरात्रौ सा सर्वालङ्कारयुता आगच्छति । साधकस्य भार्या भवति । द्वादशजनानां वस्त्रालङ्कारभोजनानि ददाति ॥ १८ ॥

'ॐ ह्रीं कनकावति मैथुनप्रिये स्वाहा' यह कनकावतीका मंत्र है बरगदके वृक्षके नीचे जाय मद्य मांसकी बलि दे और एक हजार मंत्र सात दिनतक जपै । आठवें दिनकी रात्रिमें सम्पूर्ण अलङ्कारों से युक्त हो कनकावती आती हैं । और साधककी भार्या होजातीहैं । १२ मनुष्योंको वस्त्र आभूषण और भोजन देतीहैं ॥ १८ ॥

कामेश्वरीसाधन ।

ॐ आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा । इति मंत्रः ।
भूर्जपत्रे गोरोचनेन प्रतिमां विलिख्य तां देवीं पूजयेत् । शय्यामारुह्य एकाकी सहस्रं जपेत् । मासान्तं वा पूजयेत् । घृतदीपो देयः । पश्चान्मौनी भूत्वा पूजयेत् । ततोर्द्धरात्रे नियतमागच्छति । साधकस्य भार्या भवति ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

प्रतिदिनं शयने दिव्यालंकारान् परित्यज्य गच्छति। परस्त्री परिवर्जनीया इति ॥ १९ ॥

'ॐ आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा' यह कामेश्वरी यक्षिणीका मंत्रहै। भोजपत्रपर गोरोचन से प्रतिमा लिख यक्षिणीका पूजन करै, शय्यापर विराजमान होकर एक हजार मंत्र महीनेभरतक जपै और पूजन करै, घृतका दीपक बालै, फिर मौन धारणकर पूजन करै, अनन्तर आधीरातके समय कामेश्वरी आतीहैं। और साधककी भार्या होजातीहैं एवं प्रतिदिन शयन करके दिव्य अलंकारों को छोडकर चलीजातीहैं, इस दशामें साधक अन्य स्त्रीको त्याग दे ॥ १९ ॥

रतिप्रियासाधन।

ॐ आगच्छ रतिप्रिये स्वाहा। इति मंत्रः। पटे चित्ररूपिणीं लिखित्वा कनकवस्त्रां सर्वालंकारभूषिताम् उत्पलहस्तां कुमारीं जातीफलेन पूजयेत्। यदि भगिनी भवति तदा योजन मात्रात्स्त्रियमानीय समर्पयति वस्त्रालंकारभोजनानि ददाति ॥ २० ॥

'ॐ आगच्छ रतिप्रिये स्वाहा' यह रतिप्रिया यक्षिणीका मंत्र है। कपडेपर देवीका चित्र लिख पीतवस्त्र एवं सम्पूर्ण अलंकारोंसे अलंकृत कर कमल हाथमें धारे हुए कुमारीका पूजनकर जायफल निवेदनकरै। जो भगिनी होजावें तो ४ कोशसे स्त्रीको लाकर दें एवं वस्त्रालंकार भोजन देती हैं ॥ २० ॥

पद्मिनी, नटी और अनुरागिणिओंका साधन।

१ ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनि स्वाहा ॥ २ ॐ ह्रीं आगच्छ नटि स्वाहा। ३ ॐ ह्रीं आगच्छ अनु-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

रागिणि स्वाहा। मंत्रा एते। कुंकुमेन भूर्जपत्रे प्रतिमां विलिख्य गंधाक्षतपुष्पधूपदीपविधिना सम्पूज्य त्रिसंध्यं त्रिसहस्रं जपेत् मासमेकं यावत्। ततः पूर्णिमायां विधिवत् पूजा कर्त्तव्या घृतदीपं प्रज्वालयेत्। सकलरात्रिपर्यन्तं जपेत्। अत्र केवलं मंत्रभेदः। प्रभाते नियतसमये आगच्छति दिव्यरसायनं ददाति ॥ २१ ॥

'ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनि स्वाहा' यह पद्मिनी यक्षिणीका मंत्र है।

'ॐ ह्रीं आगच्छ नटि स्वाहा' यह नटी यक्षिणीका मंत्र है।

'ॐ ह्रीं आगच्छ अनुरागिणि स्वाहा' यह अनुरागिनी यक्षिणीका मंत्र है। उपरोक्त तीनों यक्षिणियोंके साधनकी एकही रीति है, केशरसे भोजपत्रपर प्रतिमा लिख गंध,पुष्प, अक्षत, धूप, दीपसे भलीभाँति पूजन कर तीनों संध्याओंमें तीन हजार मंत्र जपै, एकमासतक ऐसेही प्रतिदिन पूजन करै। फिर पूर्णिमाके दिन घृतका दीपक वाल विधानसे पूजा करै और सारीरात निद्राको त्याग मंत्र जपै प्रभात समय साधकके समीप यक्षिणी आती है और दिव्य रसायन देतीहै २१

विशालासाधन।

ॐ ऐं विशाले त्रां त्रीं क्लीं स्वाहा। मंत्रः।
चिञ्चावृक्षतले लक्षं मंत्रमावर्तयेच्छुचिः।
शतपुष्पोद्भवैः पुष्पैः सघृतैर्होममाचरेत ॥
विशाला च ततस्तुष्टा दत्ते दिव्यं रसायनम् ॥२२॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

'ॐ ऐं विशाले त्रां त्रीं क्लीं स्वाहा' यह विशाला यक्षिणीका मंत्र है। इमलीके पेडतले बैठकर पवित्रताके साथ एक लक्ष मंत्र जपै फिर इमली वा सौंफके फूलोंको घृतमें मिलाय उनसे हवन करै तो विशाला यक्षिणी प्रसन्न होकर साधकको दिव्य रसायन देती है॥ २२॥

चन्द्रिकासाधन.

ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः क्रीं क्लीं स्वाहा। इति मंत्रः।
शुक्लपक्षे जपेत्तावद्यावत्संदृश्यते विधुः।
प्रतिपत्पूर्वपूर्णान्तं नवलक्षमिदं जपेत्॥
अमृतं चन्द्रिकादत्तं पीत्वा जीवोऽमरो भवेत्॥ २३॥

'ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः क्रीं क्लीं स्वाहा' यह चन्द्रिका यक्षिणीका मंत्रहै। शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे जपका आरम्भ करै और जबतक चन्द्र दीखे तबतक मंत्र जपकर पूर्णमासीतक नौ लाख मंत्र जपै तो चन्द्रिका यक्षिणी प्रसन्न होकर साधकको अमृत देतीहै उस अमृतको पीनेसे साधक अमर होजाता है॥ २३॥

लक्ष्मीसाधन.

ॐ ऐं लक्ष्मीं श्रीं कमलधारिणीं कलहंसि स्वाहा।
स्वगृहे संस्थितो रक्तैः करवीरप्रसूनकैः।
लक्षमावर्तयेन्मंत्रं होमं कुर्य्याद्दशांशतः॥ २४॥
होमे कृते भवेत्सिद्धा लक्ष्मीनाम्नी च यक्षिणी।
रसं रसायनं दिव्यं विधानञ्च प्रयच्छति॥ २५॥

'ॐ ऐं लक्ष्मीं श्रीं' से 'स्वाहा'तक लक्ष्मी यक्षिणीका मंत्र है। अपने घरमें बैठकर लालकनेरके फूलोंसे पूजन करै और एक लाख मंत्रको जप दशांश हवन करै ऐसा करनेसे लक्ष्मी सिद्ध होकर साधकको दिव्य रसायन देती है॥ २४॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

शोभनासाधन.

ॐ अशोकपल्लवाकारकरतले शोभनीं श्रीं: क्षः स्वाहा।
रक्तमालाम्बरो मंत्रं चतुर्दशदिनैर्जपेत् ।
ततः सिद्धा भवेद्देवी शोभना भोगदायिनी ॥ २५ ॥

'ॐ अशोक' से 'स्वाहा' तक शोभना यक्षिणीका मंत्र है। लालरंगके वस्त्रोंको धारणकर लालवर्णकी मालासे चतुर्दशीके दिन मंत्र जपनेसे शोभना देवी प्रसन्न होकर साधकको भोग देती है ॥ २५ ॥

मदनासाधन.

ॐ ऐं मदने मदनविद्रावणे अनंगसंगमं देहिदेहि
क्रीं क्रीं स्वाहा ॥
लक्षसंख्यं जपेन्मंत्रं राजद्वारे शुचिः स्थिरः ।
सक्षीरैर्मालतीपुष्पैर्घृतहोमो दशांशतः ।
मदना यक्षिणी सिद्धा गुटिकां संप्रयच्छति ।
तया मुखस्थया दृश्यश्चिरस्थायी भवेन्नरः ॥ २६ ॥

'ॐ ऐं मदने'से 'स्वाहा' तक मदना यक्षिणीका मंत्र है पवित्रतासे स्थिरचित्त होकर राजद्वारमें एक लाख मंत्र जपै और चमेलीके फूल दूध एवं घृतसे दशांश हवन करै, तो मदना याक्षिणी सिद्ध होकर गुटिका देती है उसको मुखमें रखनेसे मनुष्य अदृश्य और चिरस्थायी होता है ॥ २६ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे यक्षिणीसाधनप्रयोगो नाम द्वादशः पटलः ॥ १२ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

त्रयोदश पटल।

रसायन.

ईश्वर उवाच ॥ अथाग्रे कथयिष्यामि रसायनविधिं वरम्।
कुबेरतुल्यो भवति यस्य सिद्धौ नरो भुवि ॥ १ ॥

शिवजी बोले (हे दत्तात्रेयजी!) अब रसायनकी उत्तम विधिको वर्णन करूंगा जिसके साधन करनेसे मनुष्य सिद्ध होकर कुबेरजीके समान होजाताहै १॥

गोमूत्रं हरितालं च गंधकं च मनश्शिलाम्।
समंसमं गृहीत्वा तु यावच्छुष्कं तु कारयेत् ॥ २ ॥

गोमूत्र, हरताल, गंधक, मनशिल इनको लाकर जबतक सूखे नहीं खरल करै ॥ २ ॥

गोमूत्रं रक्तवर्णाया गंधकं रक्तवर्णकम्।
एकादशदिनं यावद्रक्ष्यं यत्नेन वै शुचि ॥ ३ ॥

उपरोक्त प्रयोगमें लालवर्णकी गौका मूत्र और लालरंगका हरताल ले और ग्यारहदिनतक पवित्रतासे यत्नके साथ उसे घोटे ॥ ३ ॥

गोलं कृत्वा द्वादशेऽह्नि रक्तवस्त्रेण वेष्टयेत्।
चतुरंगुलमानेन मृदं लिप्त्वा विशोषयेत् ॥ ४ ॥

बारहवें दिन गोला बनाकर लालवस्त्रसे लपेट उसपर चार अंगुल मट्टीका लेपकर सुखावै ॥ ४ ॥

पंचहस्तप्रमाणेन भूमौ गर्त्तं तु कारयेत्।
पलाशकाष्ठलोष्ठैस्तु पूरयेद् द्रव्यमध्यगम् ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

और पाँचहाथ गहरा एक कुंड पृथ्वीमें खोदे उसमें ढाककी लकडी जलावे उसीके बीचमें इस गोलाको रक्खे ॥ ५ ॥

अग्निं दद्यात्प्रयत्नेन स्वांगशीतं समुद्धरेत् ।
ताम्रपत्रे सुसन्तप्ते तद्भस्म तु प्रदापयेत् ॥ ६ ॥

फिर सावधानीसे आँच जलकर शीतल होजाय तब गोलेको निकाल तपाये हुए ताँबेके पत्रपर उस गोलेकी भस्म डाले ॥ ६ ॥

गुंजैकं तत्क्षणात्स्वर्णं जायते ताम्रपत्रकम् ।
अरण्ये निर्जने देशे शिवालयसमीपतः ॥ ७ ॥

वनमें वा निर्जन स्थानमें अथवा शिवालयके समीप इस क्रियाको करनेसे घुंघुचीकी बराबर ताम्रपत्र उसी समय सुवर्ण होजाता है ॥ ७ ॥

शुक्लपक्षे सुचन्द्रेऽह्नि प्रयोगं साधयेत्सुधीः ।
त्र्यम्बकेतिचमंत्रस्य जपं दशसहस्रकम् ॥ ८ ॥

शुक्लपक्षमें जिस दिन चन्द्र बलवान हो उसी दिन बुद्धिमान पुरुष 'त्र्यंबकम्—' इस मंत्रका दशहजार जपकराय इस प्रयोगका आरम्भ करे ॥ ८ ॥

प्रत्यहं कारयेद्विद्वान्भोजयेद्रुद्रसम्मितान् ।
यावत्सिद्धिर्नजायेत तावदेतत्समाचरेत् ॥ ९ ॥

जबतक सिद्धि प्राप्त न हो तबतक ग्यारह ब्राह्मणोंको प्रतिदिन भोजन करावै ॥ ९ ॥

द्रव्यमर्दनमंत्रः—ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वर्णादीनामीशाय रसायनस्य सिद्धिं कुरु २ फट् स्वाहा । प्रतिदिनं मर्दनसमये अयुतजपात्सिद्धिः ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

उपरोक्त मर्दनमंत्र को पढताहुआ खरलमें रसायनकी सामग्री डालकर घोटे। दशहजार जपनेसे यह मंत्र सिद्ध होताहै ॥ १० ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे रसायनविधिवर्णनं नाम त्रयोदशः पटलः ॥ १३ ॥

चतुर्दश पटल।

कालज्ञान।

ईश्वर उवाच-अथाग्रे संप्रवक्ष्यामि कालज्ञानविनिर्णयम्।
यस्य विज्ञानमात्रेण कालज्ञानं विधीयते ॥ १ ॥

महादेवजी बोले-(हे दत्तात्रेयजी !) अब मैं कालज्ञानका वर्णन करूंगा जिसके ज्ञान होनेसे कालके ज्ञानको जानलेताहै ॥ १ ॥

न दृष्टा नासिका येन नेत्रं च समलाक्षते।
षण्मासाभ्यन्तरे मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम् ॥ २ ॥

जिसको अपनी नासिका और नेत्र न दीख पडैं वह छः महीनेमें मरजाता है ॥ २ ॥

न दृष्टाऽरुन्धती येन सप्तर्षीणां च मध्यतः।
षण्मासाभ्यन्तरे मृत्युर्यदि रक्षति चेश्वरः ॥ ३ ॥

जिसको आकाशमंडलमें सप्तर्षियोंके बीच अरुन्धतीका तारा न दीखे उसकी भगवानसे रक्षा पानेपर भी छह मासके बीचमें ही मृत्यु होजातीहै ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

स्नानकालस्य समये मृत्युज्ञानं निरीक्ष्यते ।
उरः शुष्कं भवेद्यस्य षण्मासाभ्यन्तरे मृतिः ॥ ४ ॥

स्नान करनेके समय यदि हृदय सूखजाय तो जान लो कि ६ महीनेके बीचमें मृत्यु होगी ॥ ४ ॥

रात्रौ चन्द्रो दिवा सूर्यो मासमेकं निरन्तरम् ।
भवेन्मृत्युश्च तुस्तस्य षण्मासाभ्यन्तरे ध्रुवम् ॥ ५ ॥

रात्रिमें चन्द्र (वामस्वर) और दिनमें सूर्य (दक्षिणस्वर) एक महीनेतक निरन्तर चले तो ६ महीनेके भीतरही मृत्यु होजातीहै ॥ ५ ॥

सम्पूर्णं वहते सूर्यः सोमश्चैव न दृश्यते ।
पक्षेण जायते मृत्युः कालज्ञैः परिभाषितम् ॥ ६ ॥

जो दिनरात दहना स्वर चले और बाँया न चले तो १५ दिनमें उसकी मृत्यु होजाती है ऐसा कालके जाननेवालोंने कहाहै ॥ ६ ॥

मासं चैव तु षण्मासं पक्षं चैव त्रिमासकम् ।
पंचरात्रं वहेच्चैकस्तस्य मृत्युर्न संशयः ॥ ७ ॥

जिसका एक स्वर ६ महीने, ३ महीने, १५ दिन या ५ रात्रि भी निरन्तर चले तो उसकी मृत्यु जानो ॥ ७ ॥

शुक्लपक्षे वहेद्वामं कृष्णपक्षे च दक्षिणम् ।
उभयोश्च त्रिदिवसान्दृश्येते चन्द्रसूर्यकौ ॥ ८ ॥

शुक्लपक्षमें वांया और कृष्णपक्षमें दहना स्वर एवं दोनों पक्षोंमें दोनों स्वर तीन २ दिन चलते हैं ॥ ८ ॥

पंचभूतात्मकं दीपं चन्द्रस्नेहेन पूरितम् ।
रक्षेच्च सूर्यवातेन तेन जीवः स्थिरो भवेत् ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

इस पंचतत्त्वात्मक शरीररूपी दीपकमें तेलरूपी चन्द्रस्वर (वामनाडी, है सूर्यरूपी दक्षिणस्वर वायुसे दीपककी रक्षा करता है जिसमें यह जीव अचल रहे ॥ ९ ॥

आत्मादीपः सूर्यज्योतिरायुः स्नेहकलात्मकः ।
कायकज्जलसंसारे वृत्तिरेषा तनोर्मता ॥ १० ॥

यह आत्मारूपी दीपकमें सूर्यरूपी ज्योति आयुरूपी तेलसे पूर्ण है सो इसमें कायारूपी कागज परता है मनुष्योंकी वृत्तिके समान देहकी वृत्ति जानो १०

बुद्धिज्ञानक्रियाहीनो विपरीतस्तु जायते ।
द्विमासेन भवेन्मृत्युर्नेत्रभ्रमणकष्टतः ॥ ११ ॥

बुद्धि, ज्ञान, क्रियाकी हीनता और विपरीतता होनेसे और नेत्रोंके चलानेमे कष्टका अनुभव होनेसे दो मासमें मृत्यु होती है ॥ ११ ॥

शशांकं चारयेद्रात्रौ दिवा पश्येद्दिवाकरम् ।
इत्यभ्यासरतो नित्यं स योगी नात्र संशयः ॥ १२ ॥

जो वास्तवमें योगी है वह रात्रिमें बांया और दिनमें दहने स्वर चलानेका अभ्यास करलेते हैं ॥ १२ ॥

गतौ च पादचलनं खंडितं खंडितं पदम् ।
मासेन मृत्युमाप्नोति ह्यर्धपक्षे विशेषतः ॥ १३ ॥

चलतेसमय पैर अटपटे पडें एवं धूलमें सने दीखपडे तो एक मासमें निश्चय मृत्यु होजातीहै ॥ १३ ॥

द्वादशदलचक्रस्थं मृत्युकालं च वीक्षयेत् ।
चैत्रादिमाससंख्याश्च लिखेद्द्वादशके दले ॥ १४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

मेषादिराशयः स्थाप्याः सूर्याद्याश्च ग्रहास्तथा ।
जन्मर्क्षं जन्मराशिश्च वीक्ष्यतां मृत्युकालकः ॥१५॥

१२ दलका १ चक्र बनाय उसमें मृत्युके समयको देखे, चैत्रादि १२ महीनोंको चक्रके १२ दलोंमें लिखे ॥ फिर मेषादि १२ राशियोंको स्थापनकर नवग्रहोंको स्थापित करै पीछे उसमें जन्मकी राशि और जन्मके नक्षत्रको मृत्युकालचक्रमें देखे ॥ १४ ॥ १५ ॥

शनिभौमौ राहुकेतू राशिवेधे तु कष्टता ।
ऋक्षविद्धे राशिविद्धे मासे मृत्युर्भविष्यति ॥ १६ ॥

शनि, मंगल, राहु, केतुसे राशिका वेध होने पर कष्ट होताहै. नक्षत्रका वेध और राशिका वेध होनेसे एक महीनेमें मृत्यु होती है ॥ १६ ॥

सूर्यविद्धे मनस्तापो बुधे सौख्यं प्रवर्त्तते ।
जीवे च तीर्थयात्रा स्याच्चन्द्रे स्त्रीसुखसंपदः ॥ १७ ॥

सूर्यके वेधसे मनको ताप; बुधके वेधसे सुख, गुरुके वेधसे तीर्थयात्रा और चन्द्रके वेधसे स्त्री एवं सुखसम्पत्ति प्राप्त होती है ॥ १७ ॥

अहोरात्रं यदैकस्य वहनं मरुतो भवेत् ।
तदा तस्य भवेत्त्वायुः सम्पूर्णं वत्सरत्रयम् ॥ १८ ॥

यदि अहोरात्र एक ही स्वर चले तो मनुष्यकी सम्पूर्ण आयु तीन वर्षकी रहजाती है ॥ १८ ॥

अहोरात्रद्वयं शश्वत्पिंगलायाः सदागतिः ।
तस्य वर्षद्वयं प्रोक्तं जीवितं तत्त्ववेदिभिः ॥ १९ ॥
त्रिरात्रं वहते यस्य वायुरेकपुटे स्थितः ।
संवत्सरं तदा चायुः प्रवदन्ति मुनीश्वराः ॥ २० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

जिसकी दो रातदिन पिंगला नाडी चले तत्व जाननेवालोंने उसकी दोवर्षकी आयु कही है ॥ जिसका तीनरात्रितक एकही स्वर चले उसकी मुनिवरोंने एक वर्षकी आयु कही है ॥ १९ ॥ २० ॥

छायां विधोर्न ध्रुवमृक्षमालामालोकयेद्यो न च मातृचक्रम् । खण्डं पदं यस्य तु कर्दमादौ कफश्च्युतो मज्जति चाम्बुचुम्बी ॥ २१ ॥

जिसे चन्द्रकी छाया, ध्रुव तारा, नक्षत्रमाला, मातृमंडल न दीखै, कीच आदिमें पैर धरनेसे खंडित जानपडे, और कफ जलमें गिरनेसे नीचे बैठजाय तो उसे अरिष्ट जानो ॥ २१ ॥

अतीव तुच्छं बहु चाल्पहेतोरतीतसात्म्यः सदसत्प्रवृत्तौ । अप्यंगुलिक्रान्तविलोचनान्तो न मेचकं चान्द्रकमीक्षते यः ॥ २२ ॥

जो सहसा कम वा अधिक भोजन करनेलगे, अच्छे वा बुरे काममें प्रवृत्त होजाय, और नेत्रोंको मुंदनेपर जिसे चन्द्रिकासमेत तिलयुक्त अनुभव सिद्ध मोर न दीखे उसे अनिष्ट जानो ॥ २२ ॥

अक्षैर्लक्षितलक्षणे च पयसि सूर्येन्दुबिम्बे तथा प्राचीदक्षिणपश्चिमोत्तरदिशां षड्द्वित्रिमासैककम् । छिद्रं पश्यति चेत्तदा दशदिनं धूम्राकृतिं पश्चिमे ज्वालां पश्यति सद्य एव मरणं कालोचितज्ञानिनाम्

जो रोगी जलमें पूर्ण चन्द्रमा और सूर्यके प्रतिबिम्बमें पूर्वकी और दक्षिणकी एवं उत्तर और पश्चिमकी ओर छिद्र देखे तो वह क्रमानुसार ६ । २ ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

३ । १ मासतक जीताहै. जो सूर्य और चन्द्रमाके प्रतिबिम्बको धुंधला देखे तो दश दिनमें मृत्यु होतीहै और जो सूर्यचन्द्रके प्रतिबिम्बमें छेद्रा देखे तो उसकी शीघ्र मृत्यु होगी यह कालके ज्ञाताओंने कहाहै ॥ २३ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे कालज्ञानकथनं नाम चतुर्दशः पटलः ॥ १४ ॥

पञ्चदश पटल।

अनाहार ।

ईश्वर उवाच-अन्त्राणि कृकलासस्य करंजस्य च बीजकम् ।
पिष्ट्वा तु वटिकां कृत्वा त्रिलोहेन तु वेष्टयेत् ।
तां वक्रे धारयेद्योऽसौ क्षुत्पिपासा न बाधते ॥ १ ॥

महादेवजी बोले (हे दत्तात्रेयजी !) गिरगटकी आंतें और कंजेकी मींगी को पीसकर गोली बनाये त्रिलोहसे वेष्टित करै उसको मुखमें रखनेसे भूख और प्यास नहीं लगती है ॥ १ ॥

पद्मबीजं महाशालिं छागीदुग्धे च पेषयेत् ।
आद्वादशदिनं भुज्यात्साज्यं तत्पायसं ततः ॥ २ ॥

कमलके बीज और चावलोंको बकरीके दूधसे पीस घी मिलाय खीर बनावे उस खीरको बारह दिन खानेसे भूक नहीं लगती है ॥ २ ॥

अपामार्गस्य बीजानि दुग्धाज्याभ्यां च पाचयेत् ।
पायसं महिषीक्षीरे भुक्तं मासं क्षुधापहम् ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

अपामार्गके बीजोंके चूर्णको दूध और घी मिलाकर पचावै फिर भैंसके दूधमें खीर बनाकर खानेसे एक मासतक भूख नहीं लगती है ॥ ३ ॥

कोकिलाक्षस्य बीजानि भृंगाबीजयुतानि वै ।
ताम्बूलमूलयुक्तानि तथा घृतयुतानि च ॥ ४ ॥
छागीदुग्धेन सम्पेष्य कुर्य्याद् वै वटिकां नरः ।
भक्षयेत्प्रातरुत्थाय क्षुत्पिपासा न बाधते ॥ ५ ॥

तालमखानेके बीज, भृंगराजके बीज, पानकी जड और घी मिलाय बकरीके दूधसे पीस गोली बनाकर जो मनुष्य प्रातःकाल भक्षण करे तो उसको भूख प्यास नहीं सताती है ॥ ४ ॥ ५ ॥

धात्र्यपामार्गबीजानि पद्मबीजयुतानि वै ।
तुलसीमूलयुक्तानि कुर्यात्तद्वटिकां बुधः ॥ ६ ॥
तस्या भक्षणमात्रेण तस्योपरि गवां पयः ।
क्षुत्पिपासां हरेन्नित्यं नान्यथा मम भाषितम् ॥ ७ ॥

आंवलेके बीज अपामार्गके बीज, कमलके बिज और तुलसीदलोंको मिलाय मनुष्य गोली बनावै ॥ और प्रातःकाल गोली खाकर गौका दूध पीनेसे भूख प्यास नहीं लगती है यह अनाहारप्रयोग मेरा कहाहुआ सत्य जानो ॥६॥७॥

सरसैरंडपत्रैश्च पुष्पैश्चापि सुलक्षयेत ।
तस्मान्मूलं समादाय ताम्बूले दृढमात्रतः ॥ ८ ॥
भक्षणं प्रातरुत्थाय क्षुत्पिपासाहरं परम् ।
अनाहारप्रयोगोयं नान्यथा मम भाषितम् ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

अंडके कोमल फूल पत्तोंको देख उसकी जड लावै और पानमें भलीभाँतिसे रखकर प्रातःकाल उठकर खानेसे भूखप्यास जातीरहती है इस अनाहारके प्रयोगको मेरा कहा सत्य जानो ॥ ८ ॥ ९ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे अनाहारप्रयोगो नाम पंचदशः पटलः ॥ १५ ॥

षोडश पटल।

आहार।

ईश्वर उवाच-बन्धूकस्य च वृक्षस्य पिष्ट्वा पुष्पफलानि वै।
योऽसौ भुंक्ते घृतैस्सार्द्धं भोजनं भीमसेनवत् ॥ १ ॥

शिवजी बोले (हे दत्तात्रेयजी) दुपहरिया वृक्षके फल और फूलोंको पीसकर घीके साथ खानेसे भीमसेनके समान अधिक भोजन करता है ॥ १ ॥

शनौ विभीतवृक्षस्य सन्ध्यायामभिमंत्रितम्।
प्रातः पत्राणि संगृह्य भोजनेऽङ्घ्रितले न्यसेत् ॥२॥

शनिचरके दिन भिलावेके वृक्षको संध्यासमय अभिमंत्रित कर आवे और प्रातःकाल उसके पत्तोंको लाय चरणतले दाबकर भोजन करै तो अधिक भोजन करेगा ॥ २ ॥

गृहीत्वा मंत्रितं मंत्री विभीततरुपल्लवम्।
धारयेद्दक्षिणे हस्ते पुष्कलाहारभुग्भवेत् ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

मंत्रसे अभिमंत्रितकर मिलावेके पत्ते तोडकर दहने हाथमें बाँध भोजन करे तो अधिक भोजन करेगा ॥ ३ ॥

आहारे सत्प्रयोगोऽयं भोजनं भीमसेनवत् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ ४ ॥
ॐ नमः सर्वभूताधिपतये हुंफट् स्वाहा ।

'ॐ नमः सर्वभूताधिपतये हुं फट् स्वाहा' यह मंत्र है । इस मंत्रसे अभिमंत्रितकर इस श्रेष्ठ प्रयोगका अनुष्ठान करनेसे भीमसेनकी समान मनुष्य भोजन करसक्ताहै इस प्रयोगको हर किसीको न देकर गुप्त रक्खे ॥ ४ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे आहारप्रयोगो
नाम षोडशः पटलः ॥ १६ ॥

सप्तदश पटल ।

निधिदर्शन.

ईश्वर उवाच ॥ शिरीषवृक्षपंचांगं कटुतैलेन पाचितम् ।
धत्तूरबीजसंयुक्तं विषेणैव युतं तथा ॥ १ ॥

शिवजी बोले–हे दत्तात्रेयजी ! सिरस वृक्षके पंचांगको लेकर कडुए तेलमें पकावै फिर उसमें धतूरेके बीज और विष मिलावै ॥ १ ॥

पंचांगं करवीरस्य श्वेतगुंजासमन्वितम् ।
उलूकविष्ठासंयुक्तं गंधकं च मनःशिला ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: KS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

धूपं दत्त्वा जपेन्मंत्रं निधिस्थाने विशेषतः ।
पलायन्ते निधिं त्यक्त्वा यथा युद्धेषु कातराः ॥३॥
राक्षसा भूतवेताला देवदानवपन्नगाः ।
सुखेनाशु निधिं प्राप्य परमानन्दभुग्भवेत् ॥ ४ ॥
मंत्रः-ॐ नमो विघ्नविनाशाय निधिदर्शनं कुरु-
कुरु स्वाहा ॥

कनेरके पंचांगमें सफेद घुंघुची, उल्लूकी बीट, गंधक और मनशिल मिलावै फिर मंत्र पढकर निधिस्थानमें उसकी धूप देनेसे निधिस्थानको छोडकर जैसे कायर पुरुष युद्धसे भागजातेहैं ॥ वैसेही राक्षस, भूत, वेताल, देव दानव और पन्नग भागजातेहैं. तब सुखसहित निधिको पाय मनुष्य परमानन्दको भोगताहै ॥२-४॥ 'ॐ नमो विघ्नविनाशाय०' यह मंत्रहै ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंबादे निधिदर्शनं
नाम सप्तदशः पटलः ॥ १७ ॥

अष्टादश पटल

वन्ध्यापुत्रवतीकरण.

ईश्वर उवाच-जन्मवंध्याः काकवंध्या मृतवत्साः काचित्स्त्रियः
तासां पुत्रप्रापणाय कथयामि विधिं वरम् ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

शिवजी बोले जन्मवन्ध्या (जिनके संतान हुईही नहीं) काकवन्ध्या (जिनके एक बार संतान होकर फिर नहीं होती) और मृतवत्सा (जिनकी संतान होकर मरजाती हैं) इनके पुत्रप्राप्तिके कारण श्रेष्ठ विधिको कहताहूं ॥१॥

पत्रमेकं पलाशस्य गर्भिणीपयसान्वितम् ।
ऋत्वन्ते तच्च पीतं चेद्वन्ध्या पुत्रवती भवेत् ॥ २ ॥
एवं सप्तदिनं कुर्याच्छोकोद्वेगविवर्जितम् ।
पतिसंगगता सा चं नात्र कार्या विचारणा ॥ ३ ॥

ढाकके पत्तोंको गर्भवती स्त्रीके दूधमें पीस ऋतुकालके उपरान्त वंध्या स्त्री पीनेसे पुत्रवती होती है ॥ उक्त प्रयोगको सातदिनतक शोक और उद्वेगको त्यागके करै तो वह पतिके सहवास करनेसे निःसन्देह पुत्रवती होती है ॥ २ ॥ ३ ॥

समूलपत्रां सर्पाक्षीं रविवारे समुद्धरेत् ।
एकवर्णगवां क्षीरे कन्याहस्तेन प्रेषयेत् ॥ ४ ॥
ऋतुकाले पिबेद्वंध्या पलार्द्धं तद्दिनेदिने ।
क्षीरं शाल्यन्नमुद्गौ च लघ्वाहारं प्रदापयेत् ।
एवं सप्तदिनं कृत्वा वंध्या भवति पुत्रिणी ॥ ५ ॥

रविवारके दिन जडसहित सर्पाक्षी वृक्षको उखाड एक वर्णवाली गौके दूधमें कन्याके हाथसे पिसावे ॥ और ऋतुकालमें उसको १ तोला प्रतिदिन पीवे साथमें दूध भात मूंग आदि हलका अन्न भोजन करै तो वंध्या स्त्री पुत्रवती होती है ॥ ४ ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

एकमेव तु रुद्राक्षं सर्पाक्षीं कर्षमात्रिकाम् ।
पूर्ववच्च गवां क्षीरे ऋतुकाले प्रदापयेत् ॥ ६ ॥
महागणेशमंत्रेण रक्षां तस्याश्च कारयेत् ॥ ७ ॥
मंत्रः-मदनमहागणपते रक्षामृतं मत्सुतं देहि ॥

एक रुद्राक्ष, दोतोले सर्पाक्षी एक रंगवाली गौके दूधमें कन्याके हाथसे पिसाय ऋतुकालमें स्त्रीको पिलावे और महागणेशके मंत्रसे रक्षा करै ॥ मंत्र मूलमें स्पष्ट लिखा है ॥ ६ ॥ ७ ॥

उद्वेगं भयशोकौ च व्यायामं परिवर्जयेत् ।
अनंगमुष्णाशीतं च दिवा निद्रां तथैव च ॥ ८ ॥
न कर्म कारयेत्किञ्चिद्वर्जयेच्छीतमातपम् ।
न तया परमां सेवां कारयेत्पूर्ववत्क्रियाम् ॥ ९ ॥
पतिसंगाद्गर्भलाभो नात्र कार्या विचारणा ॥ १० ॥

उद्वेग, भय, शोक, व्यायामको छोडदे कामक्रीडा गर्मी सर्दी और दिनमें सोना त्यागदे परिश्रमका काम न करै अधिक सर्दी और गर्मीके कामोंको त्यागदे ॥ अधिक सेवा और पूर्वकी समान काम न करावै तो पतिके सहवाससे निश्चय पुत्र प्राप्त होगा ॥ ८-१० ॥

पत्रं श्वेतकदम्बस्य बृहतीमूलमेव च ।
एतानि समभागानि अजाक्षीरेण पेषयेत् ॥ ११ ॥
त्रिरात्रं पंचरात्रं वा पिबेदेवं महौषधिम् ।
सत्यं पुत्रवती वन्ध्या नान्यथा मम भाषितम् ॥१२॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

सफेद कदम्बके पत्ते और बडी कटाईकी जडको बराबर ले बकरीके दूधमें पीसे फिर इस महौषधिको तीन वा पाँचरात्रि पीवे तो वन्ध्या स्त्री निश्चय पुत्रवती होती है ॥ ११ ॥ १२ ॥

कृष्णापराजितामूलमजाक्षीरेण संपिबेत् ।
ऋतुस्नाता त्रिधा या तु वंध्या गर्भधरा भवेत् ॥१३॥

काली विष्णुक्रान्ताकी जडको बकरीके दूधके साथ ऋतुकालके पीछे तीन दिन पीनेसे वंध्या स्त्री गर्भको धारणकरती है ॥ १३ ॥

तुरंगगंधाघृतवारिसिद्धं
साज्यं पयः स्नानदिने च पीत्वा ।
प्राप्नोति गर्भं विषयं चरन्ती
वन्ध्यापि पुत्रं पुरुषप्रसंगात् ॥ १४ ॥

असगंधको घी और जलमें सिद्ध करै पीछे उसे घी और दूधके साथ ऋतुस्नानके दिन पिलावे और शयनकरनेके समय घृत पिये तो वंध्या स्त्री पतिके संगसे गर्भ धारण करती है ॥ १४ ॥

सपिप्पलीकेशरशृंगवेरं क्षुद्रायणं गव्यघृतेन
पीतम्। वंध्यापि पुत्रं लभते हठेन योगोत्तमोऽयं
हि शिवेन प्रोक्तः ॥ १५ ॥

पीपल, केशर, अदरख और छोटी गोल मिर्चको घीके साथ पीनेसे वंध्या स्त्री पतिसहवाससे गर्भ धारणकरती है यह उत्तम योग शिवजीने कहा है ॥१५॥

शीततोयेन संपिष्य शरपुंख्याश्च मूलकम् ।
पिबेद्गर्भधरा नारी सा वंध्या पतिसंगतः ॥ १६ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

शरपुंखेकी जडको शीतल जलमें पीसकर पीनेसे वंध्या स्त्रीभी पतिसंगसे गर्भको धारण करती है ॥ १६ ॥

समूला सहदेवी च संग्राह्या पुष्यभास्करे ।
छायाशुष्कं च चूर्णन्तु एकवर्णगवां पयः ॥
पूर्ववद्या पिबेन्नारी वंध्या भवति पुत्रिणी ॥ १७ ॥

पुष्यनक्षत्रयुक्त रविवारके दिन जडसमेत सहदेवीके वृक्षको लाय छायामें सुखाकर चूर्णकरै उस चूर्णको एकरंगवाली गौके दूधके साथ पूर्व कही रीतिके अनुसार पीनेसे वंध्या स्त्री पुत्रवती होती है॥ १७ ॥

नागकेशरचूर्णन्तु नूतने गव्यदुग्धके ।
पिबेत्सप्तदिनं दुग्धं घृतैर्भोजनमाचरेत् ॥
ऋत्वन्ते लभते गर्भं सा नारी पतिसंगतः ॥ १८ ॥

नागकेशरका चूर्ण नई व्याई हुई गौके दूधके साथ ऋतुस्नानके उपरान्त सात दिन पिवै और घी दूधका भोजन करै तो वह नारी पतिके सहवाससे गर्भको धारण करती है ॥ १८ ॥

गोक्षुरस्य च बीजन्तु पिबेन्निर्गुण्डिकारसैः ।
त्रिरात्रं पंचरात्रं च वंध्या भवति पुत्रिणी ॥ १९ ॥

गोखुरूके बीजोंका चूर्ण निर्गुंडीके रसमें तीन वा पांच दिन पीनेसे वंध्या स्त्री पुत्रवती होती है ॥ १९ ॥

कर्कोटबीजचूर्णन्तु एकवर्णगवां पयः ।
घृते पिबेच्च मासन्तु बन्ध्या भवति पुत्रिणी ॥ २० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

कर्कोटवृक्षके बीजोंका चूर्ण एक रंगवाली गौके दूध और घीके साथ एक मासपीनेसे बंध्या स्त्री पुत्रवती होती है ॥ २० ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे: वंध्यापुत्रवतीकरणं नामाष्टादशः पटलः ॥ १८ ॥

एकोनविंश पटल।

मृतवत्साजीवन।

ईश्वर उवाच-गर्भः सञ्जातमात्रो वा पक्षे मासे च वत्सरे।
म्रियते द्वित्रिवर्षादिर्यस्याः सा मृतवत्सका ॥ १ ॥

शिवजी बोले(हे दत्तात्रेयजी!) जिस स्त्रीके गर्भ रहतेही गिरजाय, वा गर्भमें बालक खंडित होजाय वा बालक उत्पन्न होतेही मरजाय या दो तीन वर्षका बालकहोकर मरजाय तो उसस्त्रीको मृतवत्सा कहते हैं ॥ १ ॥

गृहीत्वा शुभनक्षत्रे ह्यपामार्गस्य मूलकम्।
गृहीत्वा लक्ष्मणामूलं एकवर्णगवां पयः ॥ २ ॥
पीत्वा सा लभते गर्भं दीर्घजीवी सुतो भवेत्।
यस्मैकस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम् ॥ ३ ॥

शुभ नक्षत्रमें अपामार्गकी जड ओर लक्ष्मणाकी जड लाकर एक रंगवाली

---

१ जिसके गौके दूधके समान सफेदफूल, पानके समान दल और बीचमें लाल रेखा हो उसे लक्ष्मणा कहते हैं ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

गौके दूधके साथ ॥ पीनेसे स्त्री गर्भधारणकर दीर्घजीवी पुत्रको प्राप्त करती है इस मेरे सत्य प्रयोगको हरेक मनुष्यको न दे ॥ २ ॥ ३ ॥

वंध्या कर्कोटिकाकन्दं भृंगराजेन पेषयेत् ।
ऋतुकाले त्र्यहं पीत्वा दीर्घजीविसुतं लभेत् ॥ ४ ॥

कूष्मांडीकी जडको भांगरेके रसमें पीस ऋतुकालके उपरान्त ३ दिन पीनेसे बंध्या स्त्री दीर्घजीवी पुत्रको प्राप्त करती है ॥ ४॥

मार्गशीर्षे तथा ज्येष्ठे पूर्णायां लेपिते गृहे ।
नूतनं कलशं पूर्णं गन्धतोयैश्च कारयेत् ॥ ५ ॥

अगहन वा जेठकी पूर्णिमाको घर लीप नवीन कलश स्थापित करै और उसमें चन्दन आदिसे युक्त सुगंधित जल भरै ॥ ५ ॥

कदलीस्तंभसंयुक्तं नवरत्नसमन्वितम् ।
सुवर्णमुद्रिकायुक्तं षट्कोणस्थितमंडलम् ॥ ६ ॥
तन्मध्ये पूजयेद्देवीमेकान्ते नामविश्रुताम् ।
गन्धपुष्पाक्षतैर्धूपैर्दीपनैवेद्यसंयुतैः ॥ ७ ॥

और उसके आगे षट्कोण यंत्र लिख चारोंओर केलेके खम्भे गाढ नवरत्नोंकी बंदनवार लगाय सुवर्णकी अंगूठी यंत्रके बीचमें रक्ख और एक मन होकर गंध पुष्पाक्षत धूप दीप नैवेद्यसे आगे लिखी देवियोंका नाम लेकर पूजन करै ॥ ६ ॥ ७ ॥

वाराही च तथा चैन्द्री ब्राह्मी माहेश्वरी तथा ।
कौमारी वैष्णवी देवी षट्सु पत्रेषु मातरः ॥ ८ ॥
पूजयेन्मंत्रभावेन तथा सप्तदिनावधि ।
अष्टमेऽह्नि सुतं चैकं कन्यानवकसंयुतम् ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

भोजयेद्दक्षिणां दद्यात्पश्चात्कृत्वाभिवादनम् ।
विसृज्य देवतां चाथ नद्यां तत्कलशादिकम् ॥१०॥
प्रतिवर्षमिदं कुर्य्यादीर्घजीवी सुतो भवेत् ।
सिद्धियोगो ह्ययं ज्ञेयो गोपनीयः प्रयत्नतः ॥ ११ ॥
मंत्रः-ॐपरब्रह्मपरमात्मने अमुकीगृहे दीर्घ-
जीविसुतं कुरुकुरु स्वाहा ॥

१ वाराही, २ ऐन्द्री, ३ ब्राह्मी ४ माहेश्वरी, ५ कौमारी और ६ वैष्ण-वीका उपरोक्त षट्कोण दलके चक्रमें मंत्रभावसे ७ दिन पूजन करै आठवें दिन एक कुमार और नौ कुमारियोंको भोजनकराय दक्षिणा दे फिर उनको प्रणामकर देवियोंको विसर्जनकर कलशको नदीमें विसर्जन करैं ॥ प्रत्येक वर्ष इसभांति अनुष्ठान करनेसे दीर्घजीवी पुत्र उत्पन्न होता है तत्काल सिद्धि देने-वाला यह प्रयोग यत्नके साथ गुप्त रक्खे 'ॐ परब्रह्मपरमात्मने०' इत्यादि मंत्र है ॥ ८-११ ॥

या बीजपूरद्रुममूलमेकं क्षीरेण सिद्धं हविषा
विमिश्रम् । ऋतौ निपीय स्वपतिं प्रयाति दीर्घा-
युषं सा तनयं प्रसूते ॥ १२ ॥

जो दाडिमवृक्षकी जड दूधसे सिद्धकर घी मिलाय ऋतुस्नानके पीछे पीकर पतिके पास जाय तो वह दीर्घजीवी पुत्रको उत्पन्न करती है ॥ १२ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे मृतवत्सासुतजीवनप्रकारो नामैकोनविंशतितमः पटलः ॥ १९ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

zed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jal

विंश पटल ।

काकवंध्याकी चिकित्सा.

ईश्वर उवाच ॥ पूर्वं पुत्रवती या सा पश्चाद्वंध्या भवेद्यदि ।
काकवंध्या तु सा ज्ञेया चिकित्सा तत्र कथ्यते ॥१॥

शिवजी बोले हे दत्तात्रेयजी ! जो एकही वार संतान उत्पन्न करके पीछे वंध्या होजाय उसको काकवंध्या कहतेहैं अब उसकी चिकित्सा कहताहूं ॥ १ ॥

विष्णुक्रान्तां समूलां च पिष्ट्वा माहिषदुग्धके ।
महिषीनवनीतेन ऋतुकाले च भक्षयेत् ॥ २ ॥
एवं सप्तदिनं कुर्य्यात्पथ्ययुक्तं च पूर्ववत् ।
सा गर्भं लभते नारी काकवंध्या सुशोभनम् ॥ ३ ॥

विष्णुक्रान्ताको जडसहित भैंसके दूधमें पीस और भैंसकेही मक्खनके साथ ऋतुस्नानके पीछे सात दिन खाय और पूर्वकी समान हलका भोजन करै तो काकवंध्या नारी सुन्दर गर्भको धारण करती है ॥ २ ॥ ३ ॥

अश्वगंधीयमूलं तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ।
योजयेन्महिषीक्षीरैः पलार्द्धं भक्षयेत्सदा ॥ ४ ॥
सप्ताहाल्लभते गर्भं काकवंध्या न संशयः ।
यस्मैकस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम् ॥ ५ ॥

पुष्यनक्षत्रयुक्त रविवारके दिन असगंधकी जड लाय भैंसके दूधमें आधे पलभर सदा भक्षणकरै ॥ इस भाँति ७ दिनके सेवन करनेसे काकवंध्या

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

नारी निश्चय गर्भको धारण करती है हरेक मनुष्यको मेरे कहे इस सत्य प्रयोगको न दे ॥ ४ ॥ ५ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे काकवंध्याचिकित्सावर्णनं नाम विंशतितमः पटलः ॥ २० ॥

एकविंश पटल ।

जयकी विधि.

ईश्वर उवाच-मार्गशीर्षस्य पूर्णायां शिखीमूलं समुद्धरेत् ।
बाहौ शिरसि वा धार्यं विवादे विजयी भवेत् ॥१॥

शिवजी बोले-(हे दत्तात्रेयजी) मार्गशीर्षकी पूर्णिमाके दिन चितावृक्षकी जडको उखाड भुजामें वा शिरमें धारणकरे तो विवादमें विजय होती है ॥१॥

करे सौदर्शनं मूलं बद्ध्वा रणकुले जयी ।
आर्द्रायां वटवृन्दां वा हस्ते बद्ध्वाऽपराजितः ॥ २ ॥

हाथमें सुदर्शनकी जड बांधनेसे रणमें जय होती है, आर्द्रा नक्षत्रमें बरगदका बंदा वा अपराजितका बंदा हाथमें बांधनेसे रणमें जय मिलती है ॥ २ ॥

तदृक्षे चूतवृन्दाकं गृहीत्वा धारयेत्करे ।
संग्रामे जयमाप्नोति जयां स्मृत्वा जयी तथा ॥ ३ ॥

आर्द्रानक्षत्रमें आमका बंदा हाथमें बांधनेसे संग्राममें जय प्राप्त होती है और जयादेवीका स्मरण करनेसेभी जय प्राप्त होती है ॥ ३ ॥

कृत्तिका वा विशाखा वा भौमवारेण संयुता ।
तद्दिने घटितं शास्त्रं संग्रामे जयदायकम् ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

कृत्तिका वा विशाखा नक्षत्र मंगलवारके दिन हो तो शस्त्र बनवावे उस दिनका बना शस्त्र संग्राममें जय देता है ॥ ४ ॥

गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे श्वेतगुंजां समूलिकाम् ।
धारयेद्दक्षिणे हस्ते संग्रामे विजयी भवेत् ॥ ५ ॥

पुष्य नक्षत्रमें सफेद घुंघुचीको जडसहित उखाड दहने हाथमें धारणकरनेसे संग्राममें जय होती है ॥ ५ ॥

धत्तूरं करवीरं च अपामार्गस्य मूलकम् ।
हरितालयुतं कुर्यात्तिलकं सुदिने कृती ॥ ६ ॥
अजाक्षीरेण संपेष्य रणे राजकुले जयी ।
विरोधे दूतकार्ये च नान्यथा मम भाषितम् ॥ ७ ॥

धतूरे, कनेर और अपामार्गकी जड हरतालके साथ बकरीके दूधमें पीस तिलक लगानेसे राजदरबारमें, विरोधमें और दूतके कार्यमें निश्चय जय प्राप्त होती है ॥ ६ ॥ ७ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे जयसंवादो नामैकविंशतितमः पटलः ॥ २१ ॥

द्वाविंश पटल ।

वाजीकरण.

ईश्वर उवाच ॥ बलेन नारी परितोषमेति न हीनवीर्यस्य कदापि सौख्यम् । अतो बलार्थं रतिलम्पटस्य वाजीविधानं प्रथमं प्रवक्ष्ये ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

शिवजी बोले (हे दत्तात्रेयजी !) बलसे नारी प्रसन्न होती है अतएव बलहीन पुरुषको कभी सुख नहीं होता इसकारण रतिके अभिलाषी पुरुषों की निर्बलता दूर करनेके लिये प्रथम वाजीकरणको कहताहूं ॥ १ ॥

निक्षिपेन्मृण्मये पात्रे चूतवृक्षस्य वल्कलम् ।
तस्योपरि जलं क्षिप्त्वा ततो वस्त्रेण रक्षयेत् ॥ २ ॥

आमकी छालको लेकर मिट्टीके पात्रमें रक्खे फिर उसमें जल डालकर वस्त्रसे ढक दे ॥ २ ॥

प्रातर्दुग्धेन सहितं यः पिबेन्मदनातुरः ।
धातुवृद्धिकरं लोके बलपुष्टिकरं नृणाम् ॥ ३ ॥

प्रातसमय जो पुरुष दूधके साथ पिये तो धातुकी वृद्धि हो एवं बलवान और पुष्ट हो ॥ ३ ॥

कुमारीकंदमादय गोक्षीरेण च यः पिबेत् ।
बलपुष्टिकरं धातुर्जायते नात्र संशयः ॥ ४ ॥

घीग्वारकी जडको गौके दूधके साथ पीनेसे मनुष्य निश्चय बलवान होजाता और उसकी धातु पुष्ट होतीहै ॥ ४ ॥

भिण्डीफलं गृहीत्वा तु रविवारे च पूर्ववत् ।
छायाशुष्कं च तच्चूर्णमश्वगन्धासमन्वितम् ॥ ५ ॥
मुशली गोक्षुरं चैव विजयाबीजसंयुतम् ।
एकवर्णगवां क्षीरे यः पिबेट्टङ्कमात्रतः ॥ ६ ॥
बलपुष्टिकरं देहे स्तम्भकं धातुवृद्धिकृत् ।
सिद्धयोगमिमं कृत्वा कामदेवो भवेन्नरः ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

रविवारके दिन भिण्डीके फलको ले पूर्व समान छायामें सुखाय उसका चूर्ण करै फिर असगंध मुशली, गोखुरू और भाँगके बीज मिलाय जो मनुष्य ४ मासे गौके दूधके साथ पीवे तो उसका शरीर बलवान एवं पुष्ट होता है और उसकी धातु अचल होकर बढती है इस सिद्धयोगसे मनुष्य कामदेवकी समान रूपवान होजाता है ॥ ६--७ ॥

अश्वत्थफलमानीय छायाशुष्कं तु कारयेत् ।
दुग्धसार्द्धं पिबेत्सत्यं जायते मकरध्वजः ॥ ८ ॥

पीपलके फलको ले छायामें सुखाय चूर्णकर दूधके साथ पीनेसे निश्चय कामदेवके समान बलवान होजाताहै ॥ ८ ॥

गृहीत्वा ह्यमृतामूलं रविवारेऽभिमंत्रितम् ।
छायाशुष्कं तस्य चूर्णं शर्करासहितं परम् ॥ ९ ॥
महापुष्टिकरं पुंसां तस्योपरि गवां पयः ।
यस्मैकस्मै न दातव्यं रक्षणीयं सुयत्नवत् ॥ १० ॥

रविवारको गिलोयकी जड ले मंत्रसे अभिमंत्रित कर छायामें सुखाय चूर्णकर चीनी मिलावै ॥ फिर उसे खाय ऊपरसे गौका दूध पीवे तो मनुष्यको महा पुष्टि देताहै इस प्रयोगकी यत्नसे रक्षा करै हरेकको नदे ॥ ९ ॥ १० ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे वाजीकरणप्रयोगो नाम द्वाविंशतितमः पटलः ॥ २२ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

त्रयोविंश पटल ।

द्रावणादिकथन.

ईश्वर उवाच-सिता चोशीरतगरकुसुंभक्षौद्रलेपनम् ।
द्रावणं कुरुते स्त्रीणां विना मंत्रेण सिद्ध्यति ॥ १ ॥

शिवजी बोले (हे दत्तात्रेयजी!) मिश्री, खस और तगरको शहतमें मिलाय कामध्वजापर लेप करनेसे संभोग समयमें स्त्री शीघ्र स्खलित होजाती है ॥१॥

बृहतीफलमूलानि पिप्पलीमरिचानि च ।
मधुना रोचनासार्द्धं लिंगे लिंपेद्द्रवः स्त्रियाः ॥ २ ॥

कटेरीके फल और जड लेकर पीपल, मरिच, गोरोचन और शहतके साथ मिलाय इन्द्रियपर लेप करनेसे रतिकालमें स्त्री द्रवित होजाती है ॥ २ ॥

गंधकं च शिलाघृष्टं लेपयेत्क्षौद्रसंयुतम् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम् ॥३॥

गंधकको शहतके साथ पत्थरपर घिसकर लेप करनेसे स्त्री शीघ्र द्रवीभूत होती है यह मेरा कहाहुआ सत्य प्रयोग हरएक मनुष्यको नहीं देना ॥ ३ ॥

वीर्यस्तम्भनप्रयोग.

कर्पूरष्टंकणं सूतं तुल्यं मुनिरसं मधु ।
मर्दयित्वा लिंपेल्लिङ्गं स्थित्वा यामं तथैव च ॥ ४ ॥
ततः प्रक्षालयेल्लिंगं रमेद्रामां यथोचिताम् ।
वीर्यस्तंभकरं पुंसां सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

कपूर, सुहागा, और पारेको बराबर ले शहतमें घोट कामध्वजापर लेप करै और एक पहरके पीछे ॥ कामध्वजाको धोडाले फिर उचित समयमें रमण करनेसे पुरुषका वीर्य स्तंभित होता है यह सिद्ध प्रयोग मैंने कहा है ॥४॥५॥

मधुना पद्मबीजानि पिष्ट्वा नाभिं प्रलेपयेत् ।
यावत्तिष्ठत्यसौ लेपस्तावद् वीर्यं न मुंचति ॥ ६ ॥

कमलगट्टोंको शहतके साथ पीस नाभिपर लेप करै जबतक यह लेप नाभिपर रहेगा तबतक पुरुषका वीर्य नहीं गिरेगा ॥ ६ ॥

सूकरस्य तु दंष्ट्राग्रं दक्षिणं च समाहरेत् ।
कट्यां बद्ध्वा पटेनैव शुक्रस्तंभः प्रजायते ॥ ७ ॥

सूकरकी दाहिनी दाडको ले वस्त्रसे लपेट कमरमें बांधकर रमण करनेसे वीर्य स्तंभित होताहै ॥ ७ ॥

तुलसीबीजचूर्णन्तु ताम्बूलैस्सह भक्षयेत् ।
न मुंचति नरो वीर्यं नाडीनां सप्तकावधि ॥ ८ ॥

तुलसीके बीजोंका चूर्ण पानमें रखकर खानेसे रमणकालमें सात घडीतक पुरुषका वीर्य नहीं गिरताहै ॥ ८ ॥

इन्द्रवारुणिकामूलं पुष्ये नग्नः समुद्धरेत ।
कटुत्रयैर्गवां क्षीरे सम्पिष्य गोलकीकृतम् ॥ ९ ॥
छायाशुष्कं स्थितं चास्ये वीर्यस्तम्भकरं परम् ।
नीलीमूलं स्मशानस्थं कट्यां बद्ध्वा तु वीर्यधृक् ॥ १० ॥

पुष्यनक्षत्रमें नग्न होकर इन्द्रायणकी जडको उखाड सोंठ मिर्च पीपलके साथ गौके दूधमें पीस गोली बनावै इन गोलियोंको छायामें सुखावै इस गोलीको मुखमें रखनेसे वीर्य स्तंभित होताहै । स्मशानमें स्थित नीली वृक्षकी जडको लाकर कमरमें बाँधनेसे वीर्य स्तंभित होताहै ॥ ९ ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

रक्तापामार्गमूलं तु सोमवारे निमंत्रयेत ।
भौमे प्रातस्समुद्धृत्य कट्यां बद्धा तु वीर्यधृक् ॥ ११ ॥

लाल अपामार्गकी जडको सोमवारके दिन न्योता देआवे और मंगलवार को प्रातःसमय उखाडकर कमरमें बांधनेसे वीर्य स्तंभित होताहै ॥ ११ ॥

तिलगोक्षुरयोश्चूर्णं छागीदुग्धे च पाचितम् ।
शीतलं मधुना युक्तं भक्षितं द्रावकं स्त्रियाः ॥ १२ ॥

तिल और गोखरूका चूर्ण बकरीके दूधमें पकावै शीतल होनेपर शहत मिलाय भक्षण करनेसे रमण समय स्त्री स्खलित होजाय और पुरुषका वीर्य रुका रहै ॥ १२॥

चटकांडं गृहीत्वा तु नवनीतेन पेषयेत् ।
तेन प्रलेपयेत्पादौ शुक्रस्तंभः प्रजायते ॥
यावन्न स्पृशते भूमिं तावद् वीर्यं न मुंचति ॥ १३ ॥

चटकपक्षीके अंडेको लेकर मक्खनमें पीस चरणके तलवोंमें लेप करनेसे वीर्यस्तांभित उस समयतक रहता है जबतक भूमिपर चरण न रक्खै ॥ १३ ॥

डुंडुभो नामतः सर्पः कृष्णवर्णस्तमाहरेत् ।
तस्यास्थि धारयेत्कट्यां नरो वीर्यं न मुंचति ॥
विमुंचति विमुक्ते तु सिद्धयोग उदाहृतः ॥ १४ ॥

डुंडुभनामके काले सर्पकी हड्डीको कमरमें बांधनेसे पुरुषका वीर्य नहीं गिरता इस सिद्धयोगके प्रतापसे जब वह हड्डी कमरसे खोलीजाय तभी वीर्य गिरता है ॥ १४ ॥

आमलक्या वल्कलानां जलेन क्षालयेद्भगम् ।
वृद्धापि कामिनी कामं बालावत्कुरुते रतिम् ॥१५॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

प्रतिदिन आंवलेके वक्कलोंको जलमें पीसकर उस जलसे यदि काममन्दिरको धोवे तो वृद्धा नारीभी बालाकी समान रति करती है ॥ १५ ॥

खसपलशुंठिकाथः षोडशशेषेण गुडेन निशि पीतः ।
कुरुते रतौ न पीतो रेतःपतनं विनाऽम्लेन ॥ १६ ॥

एकपल खस लेकर सोंठके काथमें सोलहवां भाग गुड मिलाय रात्रिके समय पीकर रतिकरे तो जबतक खटाई न खाय तबतक पुरुषका वीर्य स्खलित नहीं होता है ॥ १६ ॥

केशरञ्जनप्रयोग.

त्रिफलालौहचूर्णन्तु वारिणा पेषयेत्समम् ।
द्वयोस्तुल्येन तैलेन पचेन्मृद्वग्निना क्षणम् ॥ १७ ॥
तैलतुल्ये भृंगरसे तत्तैलं तु विपाचयेत् ।
स्निग्धभांडगतं भूमौ स्थितं मासात्समुद्धरेत् ॥१८॥
सप्ताहं लेपयेद्वेष्ट्य कदल्याश्च दलैः शिरः ।
निर्वाते क्षीरभोजी स्यात्क्षालयेत्त्रिफलाजलैः ॥१९॥
नित्यमेवं प्रकर्त्तव्यं सप्ताहाद्रंजनं भवेत् ।
यावज्जीवं न सन्देहः कचाः स्युर्भ्रमरोपमाः ॥ २० ॥

त्रिफलेका (हड बहेडा आमलेका) चूर्ण और लोहचूर्ण समान लेकर जलमें पीसे फिर दोनोंके बराबर तेल डाल मंद २ आँचसे पकावै ॥ शीतल होनेपर उस तेलकी बराबर भांगरेका रस मिलाय आँचमें पकावै फिर चिकने वर्तनमें भरकर पृथ्वीमें गाडदे महीनेभरके पीछे निकाले ॥ उस तेलको शिरमें ७ दिनतक लगावै और ऊपरके केलेके पत्तेको ऐसे लपेटे जिसमें वायु नं लगसके इन दिनोंमें दूध पीवै और खोलनेके समय त्रिफलेके जलसे धोडा-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

ले इस सात दिनके प्रयोगसे केशरंजन होताहै केशरंजन होनेपर जीवनपर्यन्त मनुष्यके शिरके बाल भौंरेके समान काले बने रहतेहैं ॥ १७–२० ॥

काश्मर्या मूलमादौ सहचरकुसुमं केतकीनां च मूलं लौहं चूर्ण सभृंगं त्रिफलजलयुतं तैलमेभिर्विपक्वम् । कृत्वा वै लोहभांडे क्षितितलनिहितं मासमेकं विधाय केशाकाशप्रकाशा भ्रमरकुलनिभा लेपनादेव कृष्णाः ॥ २१ ॥

कुम्हेरनकी जड, पियावाँसाके फूल, केतकीकी जंड, भांगरा, त्रिफला, जल और तेलको मिलाय लोहेके वर्तनमें रखकर पकावै फिर एक मासतक पृथ्वीमें गडा रहनेदे उपरान्त निकालकर केशोंमें लगावै तो केश भौंरेके समान काले और लम्बे होजातेहैं ॥ २१ ॥

त्रिफला लौहचूर्णं च इक्षुर्भृङ्गरसस्तथा ।
कृष्णमृत्तिकया सार्द्धं भांडे मासं निरोधयेत् ॥
तल्लेपाद्रंजयेत्केशांश्चतुर्मासे स्थिरो भवेत ॥ २२ ॥

त्रिफला, लोहचूर्ण, ईख, और भांगरेके रसको बरावर ले और सबकी आधी काली मट्टी मिलाय एक महीनेतक गडारक्खे फिर केशोंपर लेपकरनेसे चार मासतक बाल काले बनेरहते हैं ॥ २२ ॥

लोहकिट्टं जपापुष्पं पिष्ट्वा धात्रीफलं समम् ।
त्रिदिनं लेपयेच्छीघ्रं त्रिमासावधि रंजनम् ॥ २३ ॥

लोहेकी कीट, गुडहलके फूल और आमलोंको बरावर लेकर पीस तीन दिनतक केशोंमें लेप करे तो केश तीन मासतक काले बने रहते हैं ॥ २३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

लोमशातन.

हरितालसुधालेपं कृत्वा लेपस्य वारिणा सद्यः ।
निपतंति केशनिचयाः कौतुकमिदमद्भुतं कुरुते॥२४॥

हरताल और चूनेको समान लेकर चूनेके पानीसे पीस लेप करनेसे बाल अतिशीघ्र गिरजातेहैं और देखनेमें बडा कौतुक मालूम होताहै ॥ २४ ॥

रम्भाजलैः सप्तदिनं विभाव्य भस्मानि कम्बो-
र्मसृणानि पश्चात् । तालेन युक्तानि विलेपन-
न्तु रोमाणि निर्मूलयति क्षणेन ॥ २५ ॥

केलेके जलसे शंखकी भस्मको सातदिन भावना दे हरताल मिलाय भली-भाँतिसे घोटे फिर रोमस्थानपर लगातेही रोम गिर जातेहैं ॥ २५ ॥

पलाशचिंचातिलमाषशंखान्दहेदपामार्गसपि-
प्पलानपि। मनशिलातालकचूर्णलेपात्करोति
निर्लोम शिरः क्षणेन ॥ २६ ॥

ढाक, इमली, तिल, उडद, शंख, अपामार्ग, पीपल, मनशिल और हरतालके चूर्णमें चूना मिलाय लेपकरनेसे क्षणमात्रमें केश गिरजातेहैं और फिर नहीं निकलतेहैं ॥ २६ ॥

लिंगवर्द्धन.

वराहवसया लिंगं मधुना सह लेपयेत् ।
स्थूलं दृढं च दीर्घं च मुसलाकृति जायते ॥ २७॥

सुअरकी चर्वीमें शहत मिलाय कामध्वजापर लेप करनेसे कामध्वजा स्थूल, दृढ और मूसलकी समान लम्बी होजाती है ॥ २७ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे श्रीदत्तात्रेयेश्वरसंवादे द्रावणादिकथनं
नाम त्रयोविंशतितमः पटलः ॥ २३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

चतुर्विंश पटल।

भूतग्रहादिनिवारण.

ईश्वर उवाच-बिल्वमूलं देवदारु गोशृंगं च प्रियंगु च।
पिष्ट्वा धूपो निहन्त्याशु भूतग्रहज्वरादिकान् ॥ १ ॥
शाकिन्यो राक्षसाः प्रेताः पिशाचा ब्रह्मराक्षसाः ॥
ऐकाहिको द्व्याहिकश्च ज्वरो नश्यति तत्क्षणात् ॥२॥

शिवजी बोले (हे दत्तात्रेयजी !) बेलकी जड, देवदारु, बबूर, प्रियंगूके फूल इन सबको बराबर ले पीसकर धूप बनावे उस धूपके देनेसे भूतबाधा ग्रहबाधा ज्वरादिक नष्ट होते हैं ॥ शाकिनी, राक्षस, प्रेत, पिशाच जनित पीडा एवं दोदिनमें आनेवाला ज्वर उसीसमय दूर होजाता है ॥ १ ॥ २ ॥

शिरीषनिम्बयोः पत्रं गोशृंगस्य च त्वग्वचा।
वंशत्वक्शिखिपुच्छं च कंगुना च घृतं समम् ॥
धूपो बालग्रहान्हन्ति ह्येतन्मन्त्रेण मंत्रितः ॥ ३ ॥
मंत्रः-ॐ द्रुतं मुञ्च उड्डामरेश्वर आज्ञापयति स्वाहा॥

शिरस और नीमके पत्ते एवं बबूरकी छाल, मोरकी पूछ,कांगनी धान और घीको बराबर लेकर इनकी नीचेलिखे मंत्रको पढकर धूप देनेसे बालग्रह नष्ट होजाते हैं ॥ ३ ॥ 'ॐ द्रुतं मुञ्च उड्डामरेश्वर आज्ञापयति स्वाहा' यह मंत्र है।

श्रीवासं सैन्धवं कुष्ठं वचां तैलं घृतं वसा।
धूपो बालग्रहे देयो ग्रहराक्षसशान्तये ॥ ४ ॥

चंदन, सेंधा, कूठ, वच, तेल, घी और चर्बीको बराबर ले धूप देनेसे बालग्रह और राक्षसजनित भय दूर होजाताहै ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

पुनर्नवानिम्बपत्रसर्षपघृतैर्विरचितो धूपः ।
गर्भिण्या बालानां सततं रक्षाकरः कथितः ॥ ५ ॥

सोंठ, नीमके पत्ते, सरसों, घी इनको बराबर मिलाय धूप देनेसे बालकोंकी निरन्तर रक्षा रहती है ॥ ९ ॥

पुष्यार्के श्वेतगुंजाया मूलमुद्धृत्य धारयेत् ।
बालानां कंठदेशे तु डाकिनीभयनाशनम् ॥ ६ ॥

पुष्यनक्षत्र युक्त रविवारके दिन सफेद घुंघुचीकी जड ऊखाडकर बालकके गलेमें बांधनेसे डाकिनीका भय जातारहताहै ॥ ६ ॥

दाडिमस्य च वृन्दाकं ज्येष्ठर्क्षे तु समुद्धरेत् ।
द्वारबंधे च बालानां सर्वग्रहनिवारणम् ॥ ७ ॥

आर्द्रानक्षत्रमें दाडिमीका बंदा लाकर घरके दरवाजेपर बांधदे तो सब ग्रहजनित पीडा दूर होजातीहै ॥ ७ ॥

नृसिंहमंत्रबीजन्तु सकृदुच्चरितं हरेत् ।
डाकिनीप्रेतभूतानि तमः सूर्योदयो यथा ॥ ८ ॥

नृसिंहमंत्रः-ॐ नमो नृसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाचडाकिनीकुलोन्मूलनाय स्तम्भोद्भवाय समस्तदोषान् हरहर विसरविसर पचपच हनहन कम्पयकम्पय मथमथ ह्रींह्रींह्रीं फट्फट् ठः ठः एह्येहि रुद्र आज्ञापयति स्वाहा ॥"

उपरोक्त नृसिंह भगवान्के बीजमंत्रको एक वार पढनेसेही डाकिनी, भूत प्रेतजनित पीडा दूर होजातीहै जैसे सूर्योदयसे अंधकार दूर होजाता है ॥ ८ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

श्वेतापराजितापत्रं जपापत्रं द्वयो रसम् ।
नस्यं कुर्य्यात्पलायन्ते डाकिनीदानवादयः ॥ ९ ॥

सफेद अपराजिताके पत्ते, और जयंतीके पत्तेका रस निकाल नस्य लेनेसे डाकिनी दानवादिक भाग जातेहैं ॥ ९ ॥

सिंहव्याघ्रादिभयनिवारण ।

पुष्यार्के तु समानीय श्वेतार्कस्य च मूलकम् ।
धारयेद्दक्षिणे हस्ते सिंहव्याघ्रभयं नहि ॥ १० ॥

पुष्यनक्षत्रयुक्त रविवारके दिन सफेद आककी जडको लाकर दहिने हाथमें बांधनेसे सिंहव्याघ्रादिका भय नष्ट होताहै ॥ १० ॥

गृहीत्वा शुभनक्षत्रे कृष्णधत्तूरमूलकम् ।
धारयेद्दक्षिणे हस्ते व्याघ्रबाधाभयं नहि ॥ ११ ॥

शुभनक्षत्रमें काले धत्तूरेकी जड लाकर दहिनें हाथ बांधनेसे व्याघ्रका भय नहीं रहताहै ॥ ११ ॥

सर्पभयनिवारण ।

आस्तिकं मुनिराजं च नमस्कृत्य पुनः पुनः ।
स्वप्ने सर्पभयं नास्ति तथा सर्पनिवारणम् ॥ १२ ॥

आस्तिक मुनिराजको वारंवार नमस्कार करनेसे स्वप्नमेंभी सर्पका भय नहीं रहता और उसे देख सर्प भागजातेहैं ॥ १२ ॥

गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे ह्यमृतामूलकं पुनः ।
तन्मालां धारयेत्कंठे सर्पबाधाभयं नहि ॥ १३ ॥

पुष्यनक्षत्रमें गिलोयकी जड लाकर उसकी माला बनाय गलेमें धारण करनेसे सर्पका भय नहीं रहताहै ॥ १३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

वृश्चिकभयनाशन ।

गृहीत्वा शुभनक्षत्रे अपामार्गस्य मूलकम् ।
धारयेद्दक्षिणे कर्णे वृश्चिकाद्भीर्न विद्यते ॥ १४ ॥

शुभ नक्षत्रमें अपामार्गकी जड लाकर दहने कानमें धारण करनेसे बीछीका भय नहीं रहताहै ॥ १४ ॥

अग्निभयनिवारण ।

गृहीत्वा रविवारे च श्वेतकरवीरमूलकम् ।
धारयेद्दक्षिणे हस्ते ह्यग्निबाधाभयं नहि॥ १५ ॥
मंत्रः–ॐ नमोऽग्निरूपाय ह्रीं नमः । अनेन मन्त्रेण सप्ताञ्जलिजलं वह्निमध्ये निक्षिपेत्तदा अग्निशान्तिर्भवति ॥ १६ ॥

रविवारके दिन सफेद कनेरकी जड लाकर दहिने हाथमें धारण करनेसे अग्निका भय दूर होजाताहै ॐ नमोऽग्निरूपाय ह्रीं नमः । इस मंत्रको पढकर सात अंजली जल अग्निमें छोडदे तो अग्नि शान्त होजातीहै ॥ १५ ॥ १६ ॥

इति श्रीदत्तात्रेयतंत्रे दत्तात्रेयेश्वरसंवादे भूतग्रहादिनिवारणं नाम चतुर्विंशतितमः पटलः ॥ २४ ॥

॥ समाप्तोयं ग्रंथः ॥

पुस्तक मिलनेका पता–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बंबई.

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयकी परमोपयोगी स्वच्छ शुद्ध और सस्ती पुस्तकें ।

यह विषय आज २५ । ३० वर्षसे अधिक हुआ भारतवर्षमें प्रसिद्धहै कि, इस छापाखानेकी छपी हुई पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दर प्रतीत तथा प्रमाणित हुई हैं. सो इस यन्त्रालय में प्रत्येक विषय की पुस्तकें जैसे-वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, छन्द, ज्योतिष, काव्य, अलंकार, चम्पू नाटक, कोष, वैद्यक, साम्प्रदायिक तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दी भाषाके प्रत्येक अवसर पर विक्रीके अर्थ तैयार रहतेहैं । शुद्धता स्वच्छता तथा कागजकी उत्तमता और जिल्द की बँधाई देशभरमें विख्यात है । इतनी उत्तमता होनेपर भी दाम बहुत ही सस्ते रक्खे गये हैं और कमीशनभी पृथक् काट दियाजाताहै । ऐसी सरलता पाठकों को मिलना असंभवहै संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अवश्य अपनी २ आवश्यकतानुसार पुस्तकों के मँगानेमें त्रुटि न करना चाहिये. ऐसा उत्तम, सस्ता और शुद्ध माल दूसरी जगह मिलना असम्भव है 'सूचीपत्र' मँगा देखो ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना—खेतवाड़ी—बंबई.

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry.

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

itized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry